राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम आई रोड जयपुर 302001

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लिमिटेड
५ ई रानी झांसी रोड नई दिल्ली ११ ५५

श्रेष्ठ रूसी बाल-कथाएं

चित्रकार – गेओर्गी यूदिन
अनुवादक – योगेन्द्र नागपाल

ГУТТАПЕРЧЕВЫЙ МАЛЬЧИК
Сборник
Рассказы русских писателей
для детей

На языке хинди

THE GUTTAPERCHA BOY
An anthology
Russian and Soviet Classics
for Children Series

In Hindi

संकलन, भूमिका और
लेखक परिचय ई० मत्याशोव

संकलन, भूमिका, हिन्दी अनुवाद और चित्र • प्रगति प्रकाशन • १९८०
दूसरा संस्करण १९८९
सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-002410 2

अनुक्रम

प्रेम की लेखनी

१९ वी सदी के महान लेखको दोस्तोयेव्स्की, चेखोव, तोलस्तोय के नाम सारा ससार जानता है। ये लेखक और इनका साहित्य रूस का राष्ट्रीय गौरव हैं। हम सोवियत लोगो को १९ वी सदी के अपने साहित्य पर गर्व है, क्योकि यह मानव प्रेम से, मानव वेदनाओ के प्रति सहानुभूति और मानव सुख के सपने से जन्मा साहित्य है। हमे अपने साहित्य पर गर्व है क्योकि यह सदा भलाई का साहित्य रहा है, हिसा, क्रूरता और जातीय शत्रुता का पर्दाफाश करता रहा है और ससार के सभी लोगो की मैत्री एव भाईचारे का सदेश देता रहा है। हमे अतीत के रूसी साहित्य पर गर्व है, क्योकि वह सदा सत्य और न्याय की रक्षा करता था, उन लोगो के समर्थन मे आवाज़ बुलद करता था, जो अन्याय और बुराई का शिकार थे।

१९ वी शताब्दी के रूसी लेखको मे एक भी ऐसा नही था, जिसने बच्चो के बारे मे या बच्चो के लिए न लिखा हो। बच्चो को ही हमारे साहित्यकार

जनता का, देश का भविष्य मानते थे। वे वडो की क्रूरता से और समझ के अभाव से बच्चो की रक्षा करने की चेष्टा करते थे। उन्हे इस बात की चिता थी कि किस तरह बच्चे बुद्धिमान, बलवान, भले और सुखी लोग बने।

रूस मे १६ वी सदी जनता की कगाली और कष्टो का युग थी। १८६१ तक देश मे भूदास प्रथा थी। इस प्रथा के अनुसार किसी जमीदार की जमीन पर जो भी किसान रहता था वह उसका दास होता था। जमीदार किसानो को वेच और खरीद सकता था। उसके मन मे आता तो वह उन्हे कोडे मार-मारकर उनकी जान ले सकता था और कोई उससे पूछनेवाला नही था। १८६१ मे जार ने भूदास प्रथा खत्म कर दी, लेकिन इसके बाद भी जनता के जीवन मे कोई विशेष सुधार नही हुआ। पहले की ही भाति अमीर अमीर थे और गरीब गरीब। पहले की ही तरह गरीब आदमी भूख, जीतोड मेहनत और अमीरो के जुल्मो से पीडित था।

बच्चो की दशा विशेषत दयनीय थी। यहा तक कि अमीर घरो के बच्चे भी, जिन्हे किसी बात की तगी न थी और जिन्हे पढने-लिखने के अवसर प्राप्त थे, वे भी जीवन के सच्चे आनन्द और आजादी से वचित थे। और गरीबो के बच्चो को तो छोटी उम्र से ही दो जून की रोटी कमाने के लिए मेहनत करनी पडती थी, प्राय वे सभी अनपढ रहते थे, उन्हे निरतर कठिनाइयो से जूझना पडता था और बहुधा असमय ही वे मौत का ग्रास बनते थे।

फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की ने एक कहानी लिखी थी 'क्रिस्मस और बालक'। इस कहानी का नन्हा नायक गरीबो के ठडे रैनबसेरे मे रात को मर गई मा के पास जागता है। वह सोचता है कि मा सो रही है और बाहर चला जाता है। घरो की खिडकियो मे वह देखता है कि कैसे खाते-पीते लोग क्रिस्मस मना रहे है। आखिर मे वह भूखा, ठड से ठिठुरता हुआ एक मकान की दीवार के पास ही खुले अहाते मे सो जाता है और फिर अपनी मा की तरह कभी भी नही जागता।

बेशक, दोस्तोयेव्स्की ने यह कहानी इन अभागो के लिए नही लिखी थी, जो पढ भी नही सकते थे। उन्होंने यह कहानी उन बच्चो के लिए लिखी थी, जो गर्म घरो मे रहते थे और सुदर पुस्तके पढते थे ताकि उनके दिलो मे दुखियो के लिए करुणा और सहानुभूति जागे।

एक दूसरे महान रूसी लेखक अन्तोन चेखोव ने लिखा था "बचपन मे मैने बचपन न देखा"। वह एक छोटे से शहर के छोटे से दुकानदार के बेटे थे। छोटी उम्र मे ही उन्हे घर का काम करना पडा, पिता की दुकान मे हाथ बटाना पडता था, और दुकान ऐसी थी कि वहा गर्मियो मे भी सीलन और ठड होती थी। इन अभावो ने उनके स्वास्थ्य की जड काट दी। चवालीस वर्ष की आयु मे तपेदिक से उनकी मृत्यु हो गई। बच्चो के बारे मे चेखोव की कहानिया प्रेम, करुणा और बाल-आत्मा की गहरी समझ से ओतप्रोत है। इनमे न केवल दुख की, बल्कि हसी-खुशी की भी बहुत सी बाते है। बचपन मे उन्होने स्वय बहुत कम खुशी पाई थी, अत वह भली भाति समझते थे कि बच्चो को इस खुशी की कितनी आवश्यकता होती है और अपनी रचनाओ मे उन्हे इसे प्रदान करने का प्रयत्न करते थे। वह बडो का यह आह्वान करते थे कि बच्चो के साथ उनके सम्बन्ध "सबोध सत्य" पर आधारित होने चाहिए। चेखोव के मित्र लेखक कुप्रिन ने अपने सम्मरणो मे लिखा हे कि किस तरह मृत्यु से कुछ समय पूर्व क्रीमिया मे चेखोव की एक चार साल की बच्ची से मैत्री हो गई "नन्ही बच्ची और अधेड, उदास मनुष्य, विख्यात लेखक के बीच एक विशिष्ट, गम्भीरता और विश्वास भरी मित्रता के सम्बन्ध स्थापित हो गए। बडी देर तक वे दोनो बरामदे मे बेच पर बैठे रहते थे, चेखोव बडे ध्यान से, एकाग्रचित्त होकर बच्ची की बाते सुनते थे "

बच्चो का स्वर सुन पाना, उनके जीवन का सच्चा चित्रण करना, उन्हे शिक्षा देने से पहले उन्हे समझने का यत्न करना—सभी रूसी लेखको ने इस पथ का अनुसरण किया। लेव तोलस्तोय कहते थे "स्कूली छात्र भले ही नन्हे मानव है, लेकिन ऐसे मानव है, जिनकी हमारे जैसी ही आवश्यकताए हैं और जो हमारे भाति ही सोचते-विचारते है।" रूसी बाल-साहित्य की शक्ति इसी बात मे है कि बच्चो से बातचीत करते हुए वह उनका आदर करता है।

हमारे महान लेखक बच्चो के लिए साहित्य को वह सजीव सूत्र मानते थे, जो "बच्चो के कमरे से बाहर ले जाता है और सारे ससार से जोडता है'। *ये मामिन-सिबिर्याक के शब्द है, जिन्होंने बच्चो के चरित्र-निर्माण मे पुस्तको की* भूमिका के बारे मे लिखा था

"मेरे लिए अभी तक प्रत्येक बाल-पुस्तक जीवनदायिनी है, क्योकि वह बाल-आत्मा को जगाती है, बच्चे के विचारो को निश्चित दिशा मे बढाती है और लाखो बाल-हृदयो के स्पदन मे उसके हृदय का स्पदन मिलाती है। बाल-पुस्तक वसती किरण है, जो बाल-आत्मा की सुप्त शक्तियो को जागृत करती है और इस उर्वरा धरती पर डाले गए बीजो को उगाती है। इस पुस्तक की बदौलत ही सब बच्चे एक विराट आत्मिक परिवार के सदस्य बन जाते है, जिसमे कोई नृवशीय और भौगोलिक सीमाए नही होती।"

बच्चो के प्रति अपने गम्भीर रुख की बदौलत ही रूसी लेखक बाल-पुस्तको की रचना मे अपने उत्तरदायित्व को भली भाति समझते थे। प्रसिद्ध कहानी 'मुमू' के लेखक इवान तुर्गेनेव ने लिखा था "बच्चो के लिए अच्छी पुस्तके लिखना अत्यत कठिन है। इसके लिए विषय का गम्भीर एव पूर्ण अध्ययन, मानव हृदय और विशेषत बाल-हृदय का ज्ञान, सरल और स्पष्ट भाषा मे, लीपा-पोती और फूहडपन के बिना बात कहने की योग्यता तथा धीरज ही पर्याप्त नही है। यह सब तो होना ही चाहिए और इसके अतिरिक्त लेखक के नैतिक एव सामाजिक विकास का उच्च स्तर होना भी नितात आवश्यक है।"

यह अतिम शर्त – "नैतिक एव सामाजिक विकास का उच्च स्तर" – विशेषत महत्वपूर्ण है। बच्चो के लिए लिखनेवाला सर्वप्रथम नैतिक दृष्टि से अच्छा व्यक्ति होना चाहिए। उसे एक अच्छा नागरिक होना चाहिए – उसके मन मे अपने जनगण, अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम होना चाहिए। अपने उच्च नागरिक और नैतिक गुणो के बल पर ही रूसी लेखक बच्चो के लिए अपने जमाने के जीवन का सच्चा चित्रण कर सके, उन्होने बुराइया नही छिपाई और अच्छाई को भी नही भूले।

मामिन-सिबिर्याक ने एक बार लिखा "हमारे रूसी जीवन की कमिया, उसकी बुराइया सभी रूसी लेखको का मनपसद विषय है। लेकिन यह तो केवल नकारात्मक पहलू हुआ, दूसरा सकारात्मक पहलू भी तो होना चाहिए। वरना, हम जी न सकते, सास न ले सकते, सोच न सकते कहा है यह जीवन? कहा है वे रहस्यमयी स्रोत, जिनसे रूस का यातनाओ भरा इतिहास रिसता रहा है? कहा है वे पथ जिन पर हमारे महाबली चला करते थे?"

इन सब प्रश्नो का उत्तर इस पुस्तक मे सकलित कहानिया देती है। इनमे पिछली सदी के बुर्जुआ-जारशाही रूस के जीवन का पचास वर्ष का काल प्रतिबिम्बित हुआ है।

इन कहानियो को पढते हुए तुम इनके लेखको और नायको के साथ पुराने मास्को और सेट पीटर्सबर्ग की झलक देखोगे, क्रीमिया के सूर्य स्नात तट पर टहलोगे और साइबेरिया की खुली सडक पर चलोगे, जहा साय-साय करती ठडी हवाए बहती है और शरद ऋतु की कभी न खत्म होनेवाली बारिश बरसती है। कल्पना के पख तुम्हे गर्मियो मे उराल के जगलो मे ले जाएगे, जहा पहाडियो और फर वृक्षो के घने कुजो मे हिरन विचरते है। और तुम देखोगे कोहकाफ की चोटिया, हिद महासागर मे पहुचोगे, जहा रूसी मल्लाह जहाज पर ससार का चक्कर लगा रहे होते है। 'बेझिन चरागाह' कहानी के लेखक के साथ तुम गर्मियो की छोटी सी रात रूस के केद्रीय भाग मे, काली मिट्टीवाले उपजाऊ इलाके मे बिताओगे, जहा दक्षिणी रूस के वनहीन सपाट मैदान – स्तेपिया – उत्तर के घने जगलो से मिलते है और खेत आज भी उतने ही खुले है तथा नदिया वैसे ही मथर गति से बहती है, जैसे सौ साल पहले।

रूस के इन पथो पर, इन रास्तो पर, जो हजारो मील तक चले गए है, तुम किसानो, शिकारियो, कारीगरो, सरकस के नटो, लाइनमैनो, फौजी अफसरो, सिपाहियो, मल्लाहो, कालेपानी से भागे कैदियो, शिक्षको, अमीर साहबो और उनके नौकरो – भाति-भाति के लोगो से मिलोगे।

और तुम्हे अपने बहुत से हमउम्र भी मिलेगे – नगरो और देहातो के गरीब बच्चे, अभागे अनाथ, जिनके माता-पिता असमय ही मर गए, या जिन्हे गरीबी की वजह से अपने बच्चो को कही कुछ काम सिखाने के लिए बिठाना पडता था, ताकि वे इन्सान बन सके। साथ ही ऐसे शहजादे भी मिलेगे, जो अपने बाप की दौलत और नौकरो की जी-हुजूरी से बिगड गए।

ध्यान देने लायक बात है रूसी लेखक जब बच्चो के बारे मे लिखते है, तो वे प्राय सदा ही बच्चो के कष्टो, दुखो की बात करते है। 'हिरनौटा' कहानी का नन्हा ग्रिशूक सख्त बीमार है। 'घर की ललक' कहानी मे बालक को रास्ते मे सर्दी लग जाती है और वह बीमार पड जाता है। दोस्तोयेव्स्की की

कहानी का नायक दुखी है, क्योकि मास्टर और क्लास के लडके हर वक्त उसका मजाक उडाते रहते है। 'कोहकाफ का वदी' कहानी मे तातार बच्ची दीना रूसी अफसर झीलिन की पीडा को अपनी पीडा की तरह महसूस करती है। लेओनीद अन्द्रेयेव की कहानी मे बावर्चिन का बेटा पेत्का दहाडे मार-मारकर रोता है, क्योकि उसे शहर लौटना होगा, जहा सुबह से शाम तक कोल्हू के बैल की तरह काम मे जुता रहना होगा, मालिक की गालिया सुननी होगी और थप्पड खाने होगे। ग्रिगोरोविच की कहानी 'रबड का पुतला' का नायक सरकस मे तमाशा दिखाते हुए ऊचे बास से गिरकर मर जाता है।

"पर यह तो केवल नकारात्मक पहलू है," मामिन-सिबिर्याक के साथ हम भी आपत्ति कर सकते थे, अगर इन सब कहानियो के लेखको ने इस अधकारमय, असह्य जीवन का उज्ज्वल पहलू न दिखाया होता, अगर इन कहानियो मे दरिद्रता, अन्याय और दुख के पहाडो मे से भलाई और सत्य के सशक्त सोते न फूटते होते।

रूस के एक सबसे बडे मानवतावादी लेखक अतोन चेखोव की कहानी 'लाखी' एक कुत्ते के बारे मे है। लेखक ने यह विषय अकारण ही नही चुना। चेखोव ने लिखा था "बच्चो के जीवन और यादो मे घरेलू जानवरो की भूमिका निस्सदेह हितकर होती है। हम मे कौन ऐसा है जिसे नही याद—ताकतवर, पर उदार कुत्ते, पिजडे मे मरती चिडिया और बूढी बिल्लिया, जो हमे हमेशा माफ करती थी, जब हम शरारत मे उनकी दुम दबाकर उन्हे भयानक पीडा पहुचाते थे? मुझे तो कभी-कभी लगता है कि हमारे घरेलू जीवो मे जो सहनशीलता, वफादारी, निष्पटता और सब कुछ माफ करने की भावना पाई जाती है, उसका बच्चे के मनोमस्तिष्क पर जितना प्रबल और सकारात्मक प्रभाव पडता है, उतना मास्टर जी की नीरस बातो का नही।"

'लाखी' वफादारी की कहानी है। यह एक कुतिया की कहानी है, जो शराबी तरखान लुका और उसके पोते फेद्युश्का की कोठरी मे रहती थी। उसे मार भी खानी पडती थी और भूख भी सहनी पडती थी, पर वह इसे ही अपना घर मानती थी और इन लोगो को अपने करीबी लोग। अचानक कुतिया शहर के भीड-भडक्के मे खो जाती है। जानवरो का तमाशा दिखानेवाला सरकस का

कलाकार उसे अपने घर ले जाता है, उसे अच्छा खाना खिलाता है, तरह-तरह के करतब सिखाता है, उसके साथ नेकी और प्यार का वर्ताव करता है। लेकिन कुछ महीने बाद कुतिया जब अपने पहले मालिको को देखती है, तो वह उनके पास भाग जाती है। और सच्चे अर्थो मे सुखी महसूस करती है। कहानी पढते हुए हम भी कुतिया, तरखान लुका और बालक फेद्युश्का के साथ खुश होते है, क्योकि कुतिया का लौट आना प्रेम की विजय है, जो न अच्छे खाने से और न मीठी बातो से खरीदा जा सकता है।

मामिन-सिबिर्याक की कहानी 'हिरनौटा' भी वफादारी की, प्रेम की सर्वविजयी शक्ति की कहानी है। बीमार बच्चा ग्रिशूक अपने दादा से हिरनौटे का शिकार कर लाने को कहता है। बूढे शिकारी के लिए पहाडो मे भटकना आसान नही, पर वह पोते की जान बचाने की खातिर तीन दिन तक ताइगा जगल मे भटकता रहता है और आखिर हिरन की खुरी देख लेता है। फिर वह काफी देर तक हिरनौटे को नही ढूढ पाता, क्योकि मा हिरनी अपनी जान खतरे मे डालकर शिकारी को अपने बच्चे से दूर ले जाने की कोशिश करती है। पर बूढा भी हठी है। आखिर वह हिरनौटे को ढूढ लेता है। और तभी एक अप्रत्याशित बात होती है। हम पढते है "बस एक क्षण और, और नन्हा हिरनौटा अतिम चीख के साथ घास पर लुढक जाता, पर इसी क्षण बूढे शिकारी को याद हो आया कि कितनी वीरता के साथ इसकी मा इसकी रक्षा कर रही थी, यह भी याद हो आया कि कैसे उसके ग्रिशूक की मा ने अपनी जान देकर बेटे को भेडियो का निवाला होने से बचाया था। बूढे येमेल्या के दिल पर सहसा एक चोट सी लगी, और उसने बदूक नीची कर ली।"

कहानी का अत अनुपम है। येमेल्या अपनी टूटी-फूटी झोपडी मे लौटता है, वह बीमार पोते की बात पूरी न कर सका था। वह बच्चे को अपने असफल शिकार की कहानी सुनाता है। और बच्चा हसता है। रात बीते तक वह दादा से पूछता रहता है कि हिरनौटा कैसा था और कैसे वह भाग गया। लेखक इन शब्दो के साथ कहानी खत्म करता है " बच्चा सो गया और सारी रात उसे सपने मे नन्हा सा पीला-पीला हिरनौटा दिखाई देता रहा, जो जगल मे अपनी मा के साथ घूम रहा था, बूढा भी अलावघर पर सो रहा था और नीद मे मुस्करा रहा था।"

इस सीधी-सादी सी कहानी मे कितना मर्म है ! इसमे प्रेम के नाम पर, जिसे प्रेम करते हो उसके लिए किए गए आत्मबलिदान के सौदर्य का गुणगान किया गया है। और इसमे यह भी दिखाया गया है कि कैसे भलाई भलाई को जन्म देती है जानवर के प्रति सहृदयता दिखाई तो उससे इन्सान का भी भला हुआ। शिकारी दादा की सहृदयता और जिदा बच गए हिरनौटे के लिए खुशी ग्रिशूक के लिए मारे गए पशु के मास से अधिक आरोग्यकर सिद्ध होती है।

बच्चे और बडे उनके बीच सम्बन्धो का चित्रण करते हुए रूसी लेखक सदा बच्चो का पक्ष लेते है। ग्रिगोरोविच की कहानी 'रबड का पुतला' के कलाबाज बेक्कर से हमे नफरत होती है क्योकि वह बडा और बलवान होते हुए भी अपनी शक्ति का उपयोग नन्हे पेत्या की रक्षा के लिए नही करता, बल्कि उसके दिल मे डर बिठाने, उससे अपनी हर बात मनवाने के लिए करता है। स्तन्युकोविच की कहानी 'मक्सीम्का' मे अमरीकी जहाज का कप्तान भी घिनौना है, जो हब्शियो को चोरी-चोरी बेचता है। जब नीग्रो लडका मल्लाहो को बताता है कि कैसे उसका मालिक उसे पीटता था, तो पाठक को सचमुच इस बात पर खुशी होती है कि दुष्ट कप्तान जहाज दुर्घटना मे मर गया।

बडे सदा बच्चो से अधिक ताकतवर होते है। पर बच्चे केवल उनकी ताकत पर ही निर्भर नही होते। वे बडो पर इसलिए भी निर्भर होते है कि बडे उन्हे रोटी, कपडा देते है, रहने को जगह देते है। परतु जो आदमी अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इस निर्भरता का लाभ उठाता है, वह दुष्ट है, बुराई करता है। रूसी साहित्य यही मानता था और उस मानव का यशगान करता था, जिसके मन मे बच्चो के लिए प्रेम है, जो बच्चो की सेवा करता है, उन्हे मुसीबतो मे, अन्याय से बचाता है।

तेलेशोव की कहानी 'घर की ललक' मे हम कालेपानी से भाग आए अपराधी को देखते है, जो बीमार पड गए बच्चे को बचाने के लिए उसे शहर मे ले जाता है और पुलिस के हाथ पडता है। हम नही जानते कि उसने क्या अपराध किया था। लेकिन हम देखते है कि वह स्वेच्छा से अपनी आजादी और, हो सकता है, जीवन की भी बलि देता है, ताकि एक अनजान बच्चे को मौत के मुह मे बचा सके। और उसका यह पराक्रम हमारे हृदय को छू जाता है।

हम एड्वर्ड्स जोकर पर भरोसा करने लगते है, जो पेत्या को वेक्कर के घूसो से बचाता है। हमे शराबी मल्लाह भी अच्छा लगता है, जो स्तान्युकोविच की कहानी मे नीग्रो बच्चे को सरक्षण देता है, प्यार से उसका नाम मक्सीम्का रखता है, अपनी थोडी सी रसद मे से उसके लिए जूते और कपडे सीता है और यहा तक कि बच्चे के प्रति अपना उत्तरदायित्व और पिता का स्नेह अनुभव करते हुए वह पहले की तरह नशे में धुत्त होना भी छोड देता है।

इस पुस्तक की कहानियो मे तुम्हे कुछ जिद्दी, बिगडे बच्चे मिलेगे, जैसे कि 'मदारी' कहानी का त्रिल्ली। पर तुम इन कहानियो मे कोई दुष्ट, नीच या कमीना बच्चा नही पाओगे, जैसे कि कुछ बडे इन कहानियो मे है। त्रिल्ली जैसे बच्चे भी अपने स्वार्थ के लिए स्वय इतने दोषी नही है, जितने कि उनका लालन-पालन करनेवाले बडे लोग। बच्चो मे तो मानव स्वभाव के सभी सद्गुण सहज रूप मे होते है, वे निष्कपट और निर्दोष होते है। 'बेभिन चरागाह' कहानी का लेखक हमे अनपढ भूदास बच्चो के अधविश्वासो मे भी कैसी सहज सरलता और सच्ची काव्यमयता दिखाता है! और 'कोहकाफ का बदी' मे दुबली-पतली दीना का हृदय सहानुभूति, अनुकम्पा और प्रेम का कैसा अथाह स्रोत है!

बच्चो म जाति या नस्ल का कोई अधविश्वास नही होता, जा कुछ बडो मे पाया जाता है। दीना को अपने पिता के कैदी पर रहम आता है और वह उसकी मदद करती है, हालाकि गाव वाले रूसियो को अपना दुश्मन समझते है। दीना के लिए झीलिन सबसे पहले एक भला आदमी है, जो खिलौने बनाकर बच्चो को खुशिया बाटता है। 'मक्सीम्का' कहानी मानव-बधुत्व की भावना मे पगी है। रूसी मल्लाहो के बीच नन्हा नीग्रो बालक अपने आप को इन्सान महसूस करता है, बडो की हितचिता और स्नेह पाता है और इसका जवाब बाल-हृदय के असीम प्रेम और लगाव से देता है।

बडो का अनुभव उन सब के लिए सदा बहुत महत्वपूर्ण होता है, जो अभी किशोर है, अनुभवहीन है। बचपन मे बोए गए भलाई के बीज बडो के बर्ताव मे भलाई की पुष्टि पाकर ही सबसे अच्छी तरह विकसित होते हैं। मौत के खतरे के सामने भी झीलिन जिस साहस और आत्मसम्मान का परिचय देता है, वह आकर्षक है। गार्शिन की कहानी 'सिग्नल' के लाइनमैन सेम्योन का पराक्रम

अनुपम है। वह अपनी जान खतरे म डालकर सवारी गाडी को उलटने मे बचाता है। और हमे यह देखकर हैरानी नही होती कि वही वसीली, जिसने रेलवे के अफसरो के अन्याय का बदला लेने के लिए रेल उखाड दी थी, सेम्योन का खून से रगा रूमाल उठा लेता है और गाडी को रोकता है। हमे इस पर आश्चर्य नही होता, क्योकि सेम्योन की आत्मबलिदान की तत्परता देखकर, यह देखकर कि किस तरह वह अपनी जान देकर भी बेगुनाह लोगो को बचाना चाहता है, कुछ और किया ही नही जा सकता। सेम्योन की यह तत्परता सभी तर्कों से अधिक अच्छी तरह हमारे मन मे यह बात बिठाती है कि मानव प्रेम और अत-करण ही मनुष्य के कर्मो का सबसे बडा मापदड है।

ये कहानिया पढकर तुम इन पर मनन करना। याद करना कि कैसे दोस्तो-येव्स्की के नायक को यह बात सताती है कि मा से मिलने पर उसने रुखाई बरती थी, कैसे मा के प्रति जो प्रेम उसने प्रकट नही किया वह उसके मन को कचोटता है। कल्पना मे उराल के शिकारी येमेल्या के साथ शिकार पर जाना और सेम्योन के साथ तेजो से चली आ रही रेलगाडी के रास्ते पर खडे हो जाना। और तुम देखोगे कि यहा वर्णित घटनाए भले ही दुख भरी है, लेकिन फिर भी जीवन आशाहीन नही, उसमे ऐसा भी कुछ है, जिसके लिए खुश होना, कष्ट सहना और सघर्ष करना चाहिए। तुम देखोगे कि भलाई हर जगह है, एक आदमी से दूसरे मे फैलती है और इस तरह वह अमर है, वह एक जादुई शक्ति की भाति एक आत्मा से दूसरी को मिलाती है, बच्चो और बडो को एक सूत्र मे पिरोती है, अधे को दृष्टि और मूर्ख को बुद्धि प्रदान करती है, बुरे को भला और उदासीन को सहृदय बनाती है, सभी लोगो को एक मानव परिवार मे बाधती है।

जब मामिन-सिबिर्याक की पुस्तक 'सुनो कहानी, बिटिया रानी' प्रकाशित हुई थी, तो उन्होंने अपनी माता को लिखा था "यह मेरी प्यारी पुस्तक है – यह प्रेम की लेखनी से लिखी गई है, इसलिए यह शेष सभी रचनाओ से अधिक समय तक बनी रहेगी।"

'हिरनौटा' पुस्तक मे सकलित कहानिया इसीलिए आज तक पढी जाती है कि ये "प्रेम की लेखनी" से लिखी गई है।

इन कहानियो के लिखनेवाले कब के इस ससार मे नही रहे। पुराने जमाने का गरीबी और भुखमरी का मारा रूस भी कब का वैसा नही रह गया। लेकिन सोवियत सघ के विशाल विस्तार मे अब उन लोगो के वशज और आत्मिक उत्तराधिकारी रहते है, जिन्होने पुराने जमाने मे भलाई के लिए श्रम किया, कष्ट उठाए। हमारे समसामयिक लोग धरती के प्रति, प्रकृति के प्रति, श्रम के प्रति, बच्चो और सभी लोगो के प्रति प्रेम को उन दिनो से धरोहर मे मिली अमर ज्योति के रूप मे अपने विचारो ओर कार्यों मे बनाए हुए है। यह वही प्रेम भावना है, जिसका गुणगान युवा पीढी के लिए लिखी अपनी रचनाओ मे रूस के महान लेखको ने किया था।

ईगर मत्याशोव

अन्तोन चेख़ोव

लाखी
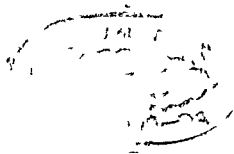
कहा जाता है कि लाखी कहानी म चेखोव न पशुओ को साधनेवाले विख्यात सरकस कलाकार व्लादीमिर दूरोव के साथ हुई घटना वर्णित की है।

महान मानवतावादी लेखक चेखोव पशु पक्षियो को बहुत प्यार करते थे। उनके घर म सदा कोई न कोई पशु पक्षी रहते थे। इनम डक्शड नस्ल के कुत्त ब्रोम और सीना थे, दोगले पिल्ले लाखी और बेलालोबी (सफेद माथेवाला) थे, एक सारस भी उन्होंने पाल रखा था। दूरोव चेखोव क अच्छे मित्र थ। उन्हान पशुओ को साधने की नई विद्या की नीव रखी। इस विद्या की विशिष्टता यह थी कि दूरोव चाबुक की मदद से नही, बल्कि प्रम एव स्नेह से तथा प्रात्साहन देकर जानवरा को तरह तरह क करतब सिखाते थे। दूरोव के पोते परपोते अब तक इस परम्परा को बनाए हुए ह। वे सोवियत सरकस मे काम करते ह।

चेखोव को सरकस देखने का शौक था।

लाखी कहानी पहली बार नोवये व्रेम्या' समाचारपत्र म २५ दिसम्बर १८८७ को छपी। इसके पाच वष पश्चात ही चेखाव इसे बच्चो के लिए पुस्तक के रूप म छाप सके। पुस्तक अत्यत लोकप्रिय हुई। खाने के समय बच्चे एकटक मुझे देखते रहते है और इस इतजार म रहते हे कि मै कोई बहुत ही बुद्धिमत्तापूर्ण बात कहूगा। उनके विचार मे मै मधावी हू क्योकि मैन लाखी' की कहानी लिखी है —अपने भाई को एक पत्र म चेखाव न मजाक के साथ लिखा था। उनके जीवनकाल मे (१८६०—१६०४) लाखी के दस सस्करण छपे। आज तक यह सोवियत बच्चो की एक सबसे प्रिय पुस्तक है।

बच्चो को अन्तोन पाव्लोविच चेखोव की दूसरी कहानिया—'वान्का', 'भगोडा', स्तेपी लडके घटना नीद आ रही है और 'बच्चे भी बहुत पसद है। सरल और सुदर भाषा मे लिखी इन कहानियो मे लोगो और जीवन का गहरा ज्ञान है हल्की उदासी का पुट लिए मृदु चेखोवी हास्य है और है ऐसे जीवन का स्वप्न, जो मानव के जीने योग्य हो अवरूप सुदर और काव्यमय हो।
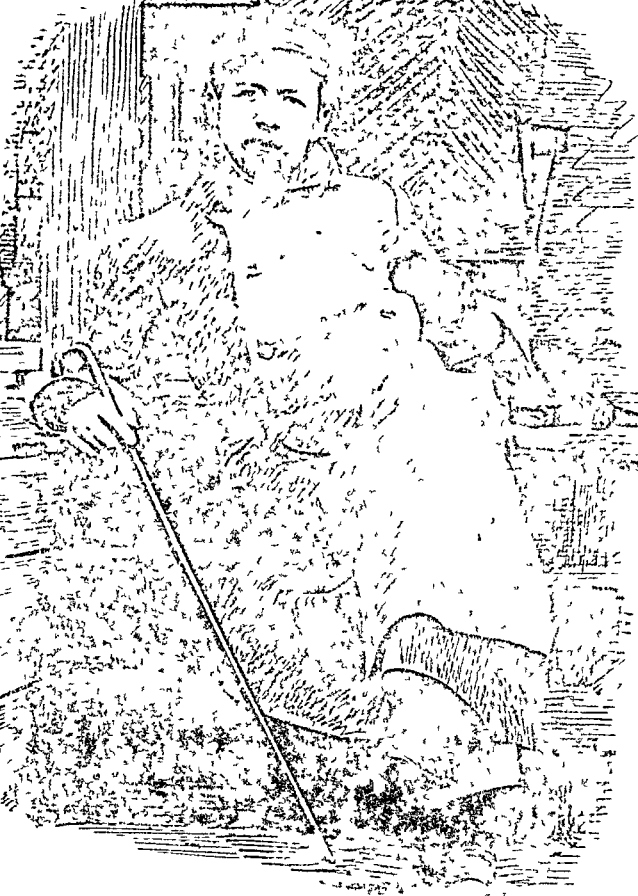
१ वेहूदे तौर-तरीके

दोगली नस्ल की छोटी सी सुर्खी कुतिया, जिसकी थूथनी बिल्कुल लोमडी जसी थी, फुटपाथ पर आगे-पीछे दौड रही थी और बेचैन सी इधर-उधर देख रही थी। कभी-कभी वह रुक जाती, रोते हुए ठड से अकडा एक पजा या दूसरा पजा ऊपर उठाती और यह समझने की कोशिश करती कि आखिर वह भटक कैसे गई।

उसे अच्छी तरह यह याद था कि उसने दिन कैसे विताया और कैसे आखिर मे इस अनजाने फुटपाथ पर आ पहुची।

दिन यो शुरु हुआ कि उसके मालिक लुका अनेक्मान्द्रिच नाम के तरखान ने कनटोप पहना, लाल कपडे मे लपेटकर लकडी की कोई चीज बगल मे दवाई और चिल्लाया

लाखी, चल!"

अपना नाम सुनकर दोगली कुतिया ठिये के नीचे से निकली, जहा वह

छीलन पर सो रही थी, जिस्म तोटा और मालिक के पीछे हो ली। लुका अलेक्सान्द्रिच के ग्राहक बहुत ही दूर रहते थे, इसलिए उनके घर तक पहुचने से पहले तरखान को कई बार भठियारखाने मे जाना पडता था और बूद-दो बूद से गला तर करना पडता था। लाखी को याद था कि रास्ते मे उसके तौर-तरीके खासे बेहूदा रहे थे। इस खुशी से कि मालिक उसे घुमाने ले जा रहा है, वह उछल-कूद रही थी, घोडा-ट्रामो के पीछे भौकती हुई दौडती थी, अहातो मे घुस जाती थी और दूसरे कुत्तो का पीछा करती थी। अक्सर वह तरखान की नजरो से ओझल हो जाती। वह रुक जाता और गुस्से मे उस पर चीखता-चिल्लाता। एक बार तो चेहरे पर ऐसा भाव लाकर कि मानो उसे खा ही जाएगा, उसने लाखी का लोमडी जैसा कान मुट्ठी मे भरकर ऐठा और एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बोला

"कमबखत! तेरा सत्या नास हो!"

ग्राहको को सामान पहुचाकर लुका अलेक्सान्द्रिच दो मिनट को बहन के घर गया, वहा चबैने के साथ कुछ पी, फिर जान पहचान के एक जिल्दसाज के यहा गया, वहा से भठियारखाने मे, भठियारखाने से एक और रिश्तेदार के यहा, वगैरह, वगैरह। सक्षेप मे यह कि जब लाखी इस अनजान फुटपाथ पर पहुची तो शाम हो रही थी और तरखान नशे मे धुत्त था। वह जोर-जोर से हाथ हिलाते हुए आहे भर रहा था और बडबडा रहा था

"पाप मे जन्मा मा ने गर्भ मे मेरे! ओह, हमारे पाप! पाप! अब चले जाते है सडक पर, बत्तिया देख रहे हैं, मर जाएगे तो नरक की आग मे जलेगे।"

या फिर वह मस्ती मे आ जाता, लाखी को अपने पास बुलाता और उसे कहता

"अरी लाखी, तू तो बस एक जानवर है और कुछ नही। आदमी के सामने तो तू वैसे ही है, जैसे तरखान के सामने दो कौडी का बढई।"

जब वह उससे यो बाते कर रहा था, तभी अचानक बैड बजने लगा। लाखी ने सिर घुमाया और देखा कि सडक पर सिपाहियो की एक टुकडी सीधी उसकी ओर बढी आ रही है। लाखी बैड-बाजे का शोर नही सह सकती थी

वह उसे झिझोड डालता था। लाखी बौखला उठी और किकियाने लगी। उसे यह देखकर बडी हैरानी हुई कि मालिक न तो डरा ही, न चीखा-चिल्लाया और भौंका ही बल्कि मुह फैलाकर मुस्कराने लगा तनकर खडा हो गया और पूरे पजे से सल्यूट मारा। यह देखकर कि मालिक तो विरोध कर नही रहा, लाखी और भी जोर से रोने लगी बदहवास हो गई और सडक के दूसरी ओर भाग गई।

जब उसके होश ठिकाने आए तो बैंड नही बज रहा था और सिपाही भी नही थे। वह सडक पार करके उस जगह आई, जहा उसने मालिक को छोडा था, पर मालिक वहा था ही नही। वह आगे दौडी फिर पीछे, एक बार फिर सडक पार की, पर मालिक तो मानो जमीन में समा गया था। लाखी फुटपाथ सूघने लगी ताकि मालिक की गध से पता लगा सके कि वह किधर गया, पर कोई कमबख्त इससे पहले रबड के नए गैलोश * पहने उधर से गुजर गया था और अब सारी भीनी महकें रबड की बू से दब गई थी, सो लाखी को कुछ पता न चल पा रहा था।

लाखी आगे-पीछे दौड रही थी, पर मालिक नही मिल रहा था और उधर अधेरा होता जा रहा था। सडक के दोनो ओर बत्तिया जल गई, घरो की खिडकियो में भी रोशनी हो गई। हिम के बडे-बडे फाहे गिर रहे थे और उनसे सडक, घोडो की पीठे और कोचवानो की टोपिया सभी कुछ सफेद रग में रगा जा रहा था, हवा में अधेरा जितना गहराता जा रहा था, चारो ओर की वस्तुए उतनी ही सफेद होती जा रही थी। लाखी के पास से, उसकी नजरो के सामने अधेरा करते हुए, उसे ठुकराते हुए अनजान ग्राहक लगातार आ जा रहे थे। (लाखी सभी इन्सानो को दो बिल्कुल असमान हिस्सो में बाटती थी एक थे मालिक और दूसरे ग्राहक। दोनो के बीच बहुत बडा अतर था मालिको को उसे मारने-पीटने का हक था और ग्राहको को वह खुद काटने का अधिकार रखती थी।) सारे ग्राहक कही जाने की जल्दी में थे और कोई उसकी ओर ध्यान नही दे रहा था।

---

* बारिश के दिनो में चमडे के जूतो के ऊपर पहने जानेवाली रबड की जूतिया। —स०

जव विल्कुल अधेरा छा गया तो लाखी हताश और भयभीत हो गई। वह किसी घर के दरवाजे से सटकर वैठ गई और जोर-जोर से रोने लगी। लुका अलेक्सान्द्रिच के साथ सारे दिन की इस "याना" ने उसे थका डाला था, उसके कान और पजे ठड से अकड रहे थे और साथ ही उसे वडे जोरो की भूख लगी थी। सारे दिन मे सिर्फ दो वार उसके मुह मे कुछ गया था जिल्दसाज के यहा उसने थोडी सी लेई खाई थी और एक भठियारखाने मे उसे सलामी का छिलका मिल गया था-वस और कुछ नही। अगर वह इन्सान होती तो शायद सोचती

"नही, ऐसे जीना नामुमकिन है! इससे तो गोली मार लेना वेहतर है!"

२ रहस्मय अजनवी

पर वह कुछ नही मोच रही थी और वस रोती जा रही थी। जब हिम के फाहो से उसकी मारी पीठ और सिर ढक गए और वह निढाल होकर ऊघने लगी, तभी दरवाजे की चिटकनी खुली, चरमराहट हुई और दरवाजा लाखी की वगल मे आ लगा। वह उछलकर खडी हो गई। खुले दरवाजे मे से कोई आदमी निकला, जो ग्राहको की श्रेणी का था। लाखी चिचियाई थी और उसके पैरो तले आ गई थी, इसलिए वह उसकी ओर ध्यान दिए विना नही रह मकता था। वह लाखी पर झुका और पूछने लगा

"अरे तू कहा से आई? चोट लग गई क्या? वेचारी कुतिया अच्छा नाराज मत हो मेरे से गलती हो गई।"

लाखी ने वरौनियो पर लटक रहे हिमकणो के पीछे से अजनवी की ओर देखा और अपने सामने एक नाटे से, गोल-मटोल आदमी को पाया। उसकी दाढी-मूछे साफ मुडी हुई थी और चेहरा भरा हुआ था। सिर पर वह ऊचा टोप पहने था और उसके ओवरकोट के वटन खुले थे। उगलियो से उसकी पीठ पर गिरा हिम झाडते हुए वह कहता जा रहा था

"अरे, तू किकियाती क्यो है? तेरा मालिक कहा है? लगता है तू खो गई? वेचारी कुतिया! अव हम क्या करे?"

अजनबी की आवाज मे अपनेपन और स्नेह का आभास पाकर लाखी ने उसका हाथ चाटा तथा और भी अधिक दयनीय स्वर मे मिमियाने लगी।

"है तो तू बडी प्यारी!" अजनबी ने कहा। "बिल्कुल लोमडी है! अच्छा, तो क्या करे? चल मेरे साथ ही चल! शायद तू किसी काम आ जाए पुच-पुच!'

उसने लाखी को पुचकारा और हाथ से इशारा किया, जिसका सिर्फ एक मतलब हो सकता था "चल!' और लाखी चल दी।

यही कोई आधे घटे बाद वह एक बडे से कमरे मे बैठी थी और सिर एक ओर को झुकाए कौतूहल के साथ अजनबी को देख रही थी, जो मेज पर खाना खा रहा था। खाना खाते हुए वह लाखी की ओर भी कुछ टुकडे फेकता जा रहा था पहले उसने उसे रोटी दी और पनीर का हरा छिलका दिया, फिर गोश्त की बोटी, आधा समोसा, मुर्गी की हड्डिया। लाखी भूख के मारे यह सब इतनी जल्दी खा गई कि स्वाद का उसे पता ही नही चला। जितना ज्यादा वह खाती जा रही थी, उतनी ही उसकी भूख तेज हो रही थी।

उसे इस तरह टूट-टूटकर खाते देखकर अजनबी कह रहा था "ओह, तेरे मालिक तुझे खाना नही देते लगते! निरा हड्डियो का पुतला है तू।"

लाखी ने बहुत खा लिया था, पर उसका पेट नही भरा था, बस खाने का खुमार चढ गया था। खाने के बाद वह कमरे के बीचोबीच टागे फैलाकर लेट गई। उसके सारे शरीर मे मीठी कसक सी हो रही थी। वह दुम हिलाने लगी। उधर उसका नया मालिक आरामकुर्सी मे बैठा सिगार पी रहा था और इधर वह दुम हिलाते हुए यह मसला हल कर रही थी कि कहा रहना बेहतर है—अजनबी के यहा या तरखान के घर? अजनबी के घर मे कोई खास चीज नही है, आरामकुर्सियो, सोफे, लैम्प और कालीनो के अलावा उसके कमरे मे कुछ भी नही है, कमरा खाली-खाली लगता है, तरखान का सारा घर चीजो से भरा हुआ है उसके पास मेज है, ठिया है, छीलन का ढेर है, रदे, रुखानिया, आरिया है, पिजडे मे चिडिया है और लकडी का छोटा सा टब है अजनबी के घर मे किसी चीज की गध नही आती, तरखान के घर मे सदा धूल छाई रहती है और सरेस, वार्निश और छीलनो की बढिया गध आती है। पर अजनबी

के यहा एक बहुत अच्छी बात है – वह खाने को बहुत कुछ देता ह और इन्साफ से यह भी कहना चाहिए कि जब लाखी उसके सामने मेज तले बेठी थी और गदगद सी उसकी ओर देख रही थी, तो उसने एक बार भी उसे ठोकर नही मारी, पैर नही पटके और एक बार भी नही चिल्लाया "धुत! कमबख्त कही की!"

सिगार पीकर नया मालिक बाहर गया और दो मिनट मे ही छोटा सा गद्दा उठाए लौट आया।

"ऐ, कुतिया, इधर आ," सोफे के पास एक कोने मे गद्दा रखते हुए उसने कहा। "लेट जा यहा। सो जा!"

फिर उसने लैम्प बुझा दिया और बाहर चला गया। लाखी ने गद्दे पर लेटकर आखे मूद ली। बाहर से कुत्तो के भौकने की आवाज आई, वह भी जवाब मे भौकना चाहती थी, पर अचानक उसके मन पर गहरी उदासी छा गई। उसे लुका अलेक्सान्द्रिच और उसके बेटे फेद्युश्का की, ठिये तले आरामदेह जगह की याद हो आई उसे याद आया कि जाडो की लबी शामो मे, जब तरखान रदा चला रहा होता था या ऊचे-ऊचे अखबार पढता था तो फेद्युश्का अक्सर उसके साथ खेला करता था वह उसकी पिछली टागे पकडकर उसे ठिये के नीचे से निकाल लेता और ऐसे-ऐसे तमाशे करता कि लाखी की आखो आगे तितरिया नाचने लगती और सारे जोड दुखते। वह उसे पिछले पैरो पर चलाता, उसकी घटी बनाता, यानी उसकी दुम पकडकर जोर-जोर से हिलाता, जिससे लाखी चीखती और भौकती, वह उसे तम्बाकू सुघाता सबसे दर्दनाक यह खेल था फेद्युश्का गोश्त की बोटी को धागे मे बाध देता और लाखी को देता, जब लाखी बोटी निगल जाती, तो वह ठहाके मारता हुआ उसके पेट मे से बोटी निकाल लेता। यादे जितनी तीखी होती जा रही थीं, उतने ही उदास स्वर मे वह जोर-जोर से किकिया रही थी।

परतु शीघ्र ही उदासी पर थकावट और गर्माहट छा गई लाखी को नीद आने लगी। उसकी कल्पना मे कुत्ते दौडने लगे, वह झबरीला कुत्ता भी उनमे था, जिसे आज उसने सडक पर देखा था, उसकी आख पर सफेद दाग था और नाक के पास बालो के गुच्छे। फेद्युश्का हाथ मे रुखानी उठाए उस कुत्ते

का पीछा करने लगा, सहसा उसके वदन पर भी झबरीले वाल उग आए, वह खुशी-खुशी भौकने लगा और लाखी के पास आ पहुचा। उन दोनो ने वडे प्रेम से एक दूसरे की नाक सूघी और वाहर सडक पर दौड गए

३ नई और वडी अच्छी जान-पहचान

लाखी जब जागी तो उजाला हो चुका था और वाहर से ऐसा शोर आ रहा था, जैसा केवल दिन के समय होता है। कमरे मे कोई भी न था। लाखी ने जिस्म तोडा, जम्हाई ली और उखडी-उखडी सी कमरे का चक्कर लगाने लगी। उसने सारे कोने और फर्नीचर सूघा, ड्योढी मे झाककर देखा पर वहा कोई दिलचस्प चीज न मिली। ड्योढी के दरवाजे के अलावा कमरे मे एक और दरवाजा भी था। कुछ देर सोचने के वाद लाखी ने दोनो पजो से उसे खरोचा, खोला और अगले कमरे मे चली गई। यहा एक पलग पर फ्लेनिल का कम्वल ओढे ग्राहक सो रहा था। वह पहचान गई कि यह कल वाला अजनवी ही है।

वह गुर्राने लगी, पर फिर कल का खाना याद करके दुम हिलाने और सूघने लगी।

उसने अजनबी के कपडे और बूट सूघे और यह पाया कि उनसे घोडे की तेज गध आती है। इस कमरे मे एक और दरवाजा था, वह भी भिडा हुआ था। लाखी ने उसे खरोचा, छाती से उस पर जोर डाला और खोल लिया। दरवाजा खुलते ही वहा से वडी अजीब सी गध आई, जिससे लाखी एकदम चौकन्नी हो गई। उसे लग रहा था कि कोई अप्रिय घटना होगी। गुर्राते और इधर-उधर झाकते हुए वह मैले दीवारी कागज वाले छोटे से कमरे मे घुसी और डर के मारे फौरन पीछे हट गई। उसने एक बिल्कुल ही अप्रत्याशित और भयावह दृश्य देखा था। फर्श तक गर्दन और सिर झुकाए, पख फैलाए एक हल्का सुरमई हस फुफकारता हुआ सीधा उसकी ओर बढता आ रहा था। एक ओर को गद्दे पर सफेद बिल्ला लेटा हुआ था। लाखी को देखकर वह उछला, उसने पीठ कमान की तरह तानी, दुम ऊची कर ली, रोये खडे किए और वह भी फुफकारने लगा। कुतिया स्वामी डर गई, पर वह यह दिखाना नही चाहती

थी, सो जोर से भौंकती हुई विल्ले की ओर लपकी विल्ले ने पीठ और भी ज्यादा तान ली, फुफकार भरी और पजा लाखी के सिर पर मारा। लाखी झट से पीछे हट गई, चारो पैरो पर बैठ गई और जोर-जोर से चीखते हुए भौकने लगी, तभी हस ने पीछे से आकर अपनी चोच उसकी पीठ पर दे मारी। लाखी उछली और हस पर झपटी

"क्या हो रहा है यह ?" गुस्से भरी जोरदार आवाज आई और गाउन पहने, दातो मे सिगार दवाए अजनबी कमरे मे आ गया। 'क्या है यह सव ? चलो अपनी-अपनी जगह।"

विल्ले के पास आकर उसने उसकी पीठ पर ठोगा मारा और कहा "लेट जा, मुए!"

हस की ओर मुडकर वह चिल्लाया

"इवान इवानिच, चलो अपनी जगह!"

विल्ले ने चुपके से अपने गद्दे पर लेटकर आखे मूद ली। उसकी थूथनी और मूछो के भाव से लग रहा था कि वह खुद भी इस वात पर खुश नही है कि ताव मे आकर लडने लगा। लाखी रोनी सी होकर किकियाने लगी, हस ने अपनी गर्दन तान ली और जल्दी-जल्दी कुछ बोलने लगा। वह बडे जोश से और साफ-साफ कुछ कह रहा था, पर बिल्कुल कुछ भी समझ मे न आता था।

"अच्छा, अच्छा!" मालिक ने जम्हाई लेते हुए कहा। "मिल-जुलकर रहना चाहिए।" उसने लाखी को सहलाया और बोलता गया "तू डर नही यहा सब अच्छे हैं, कोई तुझे कुछ नही कहेगा। ठहर, तुझे हम पुकारेगे कैसे ? नाम के बिना तो काम नही चल सकता।"

अजनवी थोडी देर सोचता रहा, फिर वोला

"हु, तेरा नाम होगा मौसी। समझी ? मौसी!"

और कुछ बार "मौसी, मौसी" कहकर वह बाहर चला गया। लाखी वैठ गई और देखने लगी। बिल्ला जरा भी हिले-डुले बिना गद्दे पर वैठा हुआ था और सोने का बहाना कर रहा था। हस गर्दन तानकर और एक ही जगह पर पैर बदलते हुए वडे जोर-शोर से कुछ कहता जा रहा था। वह शायद वडा

अक्लमद हस था, लबा सा भाषण देकर वह शान के साथ पीछे हट जाता और ऐसे देखता मानो खुद ही अपने भाषण पर मुग्ध हो रहा हो उसकी बाते सुनकर और गुराहट से उसका जवाब देकर लाखी सारे कोने सूघने लगी। एक कोने मे छोटा सा टब रखा था, जिसमे उसे भीगे हुए मटर के दाने और रोटी के टुकडे दिखे। उसने मटर चखा – अच्छा नही लगा, गीली रोटी के टुकडे चखे – और खाने लगी। हस ने इस बात का जरा भी बुरा नही माना कि अनजान कुतिया उसका खाना खा रही है, उल्टे वह और भी जोर-शोर से बोलने लगा और अपना विश्वास दिखाने के लिए खुद भी वहा चला आया और मटर के कुछ दाने खा लिए।

४ अजूबे ही अजूबे

थोडी देर बाद अजनबी फिर आया और अपने साथ एक अजीब सी चीज लाया, जो दर जैसी थी। लकडी के जैसे-तैसे बने इस दर की आडी डडी पर एक घटी लटक रही थी और पिस्तौल बधी हुई थी, घटी की लटकन और पिस्तौल की लिबलिबी से डोरी बधी हुई थी। अजनबी ने इस दर को कमरे के बीचोबीच रख दिया, बडी देर तक कुछ खोलता, बाधता रहा, फिर हस की ओर देखकर बोला

"इवान इवानिच, आइए!"

हस उसके पास गया और प्रतीक्षा की मुद्रा मे खडा हो गया।

"अच्छा, जी," अजनबी बोला, "तो शुरू से शुरू करते है। सबसे पहले झुककर आदाब बजाओ। जल्दी से!"

इवान इवानिच ने गर्दन तानी, चारो ओर सिर झुकाने लगा और पजा पीछे उठा लिया।

"शाबाश अब ढेर हो जाओ!"

हस पीठ के बल लेट गया और पजे ऊपर उठा लिए। कुछ और ऐसे ही मामूली से तमाशो के बाद अजनबी ने सहमा अपना सिर पकड लिया, चेहरे पर डर का भाव ले आया और चिल्लाया

"आग ! आग ! बचाओ !"

इवान इवानिच दौडा-दौडा दर के पास गया, डोरी चोच मे पकडी और घटी बजाने लगा।

अजनबी बहुत खुश हुआ। उसने हस की गर्दन सहलाई और बोला

"शाबाश, इवान इवानिच ! अच्छा, तुम यह कल्पना करो कि तुम जौहरी हो और हीरे-जवाहरात बेचते हो। अब यह कल्पना करो कि तुम दुकान पर आए और देखा वहा चोर घुस आए है। ऐसी हालत मे तुम क्या करोगे ?"

हस ने दूसरी डोरी चोच मे पकडी और खीच दी, तभी जोरदार धमाका हुआ। लाखी को घटी की आवाज बडी अच्छी लगी थी ओर धमाके से तो वह बावली हो उठी, दर के चारो ओर दौडने और भौकने लगी।

"मौसी, चलो अपनी जगह !" अजनबी चिल्लाया। "चुप रहो !"

इवान इवानिच का काम इस धमाके के साथ ही खत्म नही हुआ। इसके बाद घटे भर तक अजनबी उसे अपने इर्द-गिर्द बागडोर पर दौडाता रहा और कोडा सटकारता रहा। हस को दौडते हुए बाधाओ के ऊपर से और छल्ले में से कूदना पडता था, सीखपा होना पडता था, यानी दुम पर बैठकर पजे हवा मे हिलाने पडते थे। लाखी टकटकी लगाए इवान इवानिच को देख रही थी, वह खुशी से भौकने लगती और उसके पीछे दौडने लगती। आखिर हस को भी और खुद को भी थकाकर अजनबी ने माथे से पसीना पोछा और आवाज दी

"मार्या, जरा खव्रोन्या इवानव्ना को तो बुलाओ इधर !"

थोडी देर मे घुरघुराहट सुनाई दी लाखी गुर्राने लगी, बडी बहादुर सी बन गई, पर फिर भी अजनबी के पास आ गई। दरवाजा खुला, किसी बुढिया ने अदर भाककर देखा और कुछ कहकर एक काले से, बहुत ही बदसूरत सूअर को अदर घुसेड दिया। लाखी की गुर्राहट की जरा भी परवाह न करते हुए सूअर ने अपना थूथना ऊपर उठाया। लगता था कि वह अपने मालिक, बिल्ले और इवान इवानिच को देखकर बडा खुश है। उसने बिल्ले के पास आकर अपना थूथना उसके पेट मे लगाया, फिर हस से कुछ बाते करने लगा। यह सब वह जिस तरह कर रहा था और जैसे अपनी दुम हिला रहा था,

उससे लगता था कि वह नेक स्वभाव का है। लाखी ने तुरत ही भाप लिया कि ऐसो पर गुर्राना और भौकना वेकार है।

मालिक ने दर हटाया और चिल्लाया

"फ्योदर तिमफेइच, पधारिए!"

विल्ला उठा, अलसाहट के साथ जिस्म तोडा और अनमना सा, मानो अहसान करता हुआ सूअर के पास आ गया।

"तो चलो, मिस्री पिरामिड से शुरू करे," मालिक बोला।

वह बडी देर तक कुछ समझाता रहा, फिर बोला "एक दो तीन " उसके तीन कहते ही इवान इवानिच ने पख फडफडाए और सूअर की पीठ पर जा सवार हुआ जब वह पखो और गर्दन से सतुलन करता हुआ सूअर के कडे बालो वाली पीठ पर टिक गया, तब फ्योदर तिमफेइच सुस्ताया हुआ सा, यह दिखाते हुए कि उसे इस सब तमाशे से कुछ नही लेना-देना है, कि यह सब वेकार की बाते है, सूअर की पीठ पर चढ गया, फिर अनिच्छा से हस पर जा चढा और पिछली टागो पर खडा हो गया। इसे ही अजनबी मिस्री पिरामिड कहता था। लाखी वेहद खुश हो उठी, किकियाई, पर तभी बिल्ले ने जम्हाई ली और सतुलन खो वैठने से वह हस की पीठ से गिर गया। इवान इवानिच भी डगमगाया और गिर पडा। अजनबी चिल्लाने और हाथ झटकने लगा, फिर से कुछ समझाने लगा। घटे भर तक पिरामिड बनाते रहने के बाद अथक मालिक इवान इवानिच को विल्ले की सवारी करना सिखाने लगा, फिर विल्ले को सिगार पीना, इत्यादि।

आखिर अजनबी ने माथे से पसीना पोछा और बाहर निकल गया। और इस तरह यह पाठ खत्म हुआ। फ्योदर तिमफेइच ने घिन के साथ फुफकार भरी, गद्दे पर लेट गया और आखे मूद ली। इवान इवानिच टब की ओर चल दिया और सूअर को बुढिया ले गई। अनगिनत नई छापो के कारण दिन बीतते पता भी न चला। शाम को लाखी का गद्दा मैले दीवारी कागज वाले कमरे मे रख दिया गया और रात उसने फ्योदर तिमफेइच तथा हस के साथ काटी।

५ वाह! क्या कमाल है!

एक महीना बीत गया।

लाखी इस बात की आदी हो गई थी कि रोज शाम को उसे मजेदार खाना मिलता था और मौसी कहकर पुकारा जाता था। अजनबी और नए साथियो की भी वह आदी हो गई थी। जिदगी बडे मजे से बीत रही थी।

सभी दिन एक ही तरह से शुरू होते थे। आम तौर पर इवान इवानिच सबसे पहले जागता था। वह तुरत ही मौसी या बिल्ले के पास जाता, गर्दन तानकर बडे जोर-शोर से कुछ कहने लगता, पर पहले की ही भाति उसकी कोई बात समझ मे न आती। कभी-कभी वह अपनी लबी गर्दन ऊपर उठाकर लबे एकालाप करता। पहले कुछ दिन तक तो लाखी यह सोचती रही कि वह बहुत अक्लमद है, इसीलिए इतना बोलता है, पर थोडे दिन बीतने पर उसके मन मे हस के लिए कोई आदर न रहा। अब जब वह अपना लबा भाषण झाड-ता हुआ उसके पास आता, तो वह दुम नही हिलाती थी, बल्कि उसके साथ निरे बक्की जैसा ही बर्ताव करती थी, जो सबको तग करता है, सोने नही देता। उसका कोई लिहाज किए बिना वह गुर्राकर उसे झाड देती थी।

जनाब फ्योदर तिमफेइच के तौर-तरीके बिल्कुल ही और थे। वह सुबह जागने पर कोई आवाज नही करता था, हिलता-डुलता भी नही था और न आखे ही खोलता था। वह तो बडी खुशी से जागता ही न क्योकि साफ लगता था कि उसे इस जिदगी से कोई लगाव नही है। किसी बात मे उसकी दिलचस्पी न थी, हर चीज को वह लापरवाही और आलस्य से देखता था, किसी की उसे कोई परवाह न थी, यहा तक कि अपना स्वादिष्ट खाना खाते हुए भी वह घिन से फुफकारता रहता था। लाखी सुबह उठकर कमरो का चक्कर काटने और कोने सूघने लगती। सिर्फ उसे और बिल्ले को सारे घर मे घूमने की इजाजत थी। इवान इवानिच को मैले दीवारी कागज वाले कमरे की दहलीज लाघने का हक नही था और सूअर अहाते मे किसी कोठरी मे रहता था, केवल पाठ के समय अदर आता था। मालिक देर से उठता था। जी भर के चाय पीने के बाद वह तुरत ही अपने तमाशो मे लग जाता। रोजाना कमरे मे दर, कोडा

और छल्ले लाए जाते और रोजाना प्राय वही सब दोहराया जाता। पाठ तीन-चार घंटे चलता। कभी-कभी तो इसके बाद फ्योदर तिमफेइच यों लड़खड़ाता, जैसे कि नशे में हो, इवान इवानिच अपनी चोंच खोलकर हाफता, मालिक का चेहरा लाल सुर्ख हो जाता और उसके माथे से पसीना पोछे न पोछा जाता। इन पाठों और खाने की बदौलत दिन तो बडे रोचक रहते, पर शाम को लाखी ऊबती रहती। आम तौर पर शाम को मालिक हंस और बिल्ले को लेकर चला जाता था। अकेली रह जाने पर मौसी अपने गद्दे पर लेट जाती और उदास होने लगती उस पर अनजाने ही धीरे-धीरे उदासी छा जाती थी, जैसे कमरे में अंधेरा छाता है। इसकी शुरूआत यों होती कि कुतिया का न भौंकने, न कुछ खाने या कमरों में दौड़ने का और यहां तक कि देखने तक का मन न करता। फिर उसकी कल्पना में दो अस्पष्ट सी आकृतियां प्रकट होतीं, न जाने वे कुत्ते होते या लोग, प्यारे से, पर अनबूझ चेहरे, उनके प्रकट होते ही मौसी दुम हिलाने लगती और उसे लगता कि उसने उन्हें कहीं देखा है, कि वह उन्हें प्यार करती थी नींद आने लगती, तो उसे लगता कि इन आकृतियों से सरेस, छीलन और वार्निश की गंध आती है।

जब वह नए जीवन की बिल्कुल आदी हो गई और मरियल सी लेंगी के बजाय ऐसी मोटी-तगड़ी कुतिया बन गई, जिसकी अच्छी तरह देखभाल होती है, तो पाठ से पहले एक दिन मालिक ने उसे सहलाया और बोला

"मौसी, अब कुछ काम करना चाहिए। बहुत निठल्ली बैठ ली तुम। मैं तुम्हें कलाकार बनाना चाहता हूं बनोगी कलाकार?"

और वह उसे कई चीजें सिखाने लगा। पहले पाठ में उसने पिछली टांगों पर खड़े होना और चलना सीखा। मौसी को यह बहुत अच्छा लगा। दूसरे पाठ में उसे पिछले पंजों पर कूदकर मालिक के हाथ से चीनी की डली लेनी थी, जो वह उसके सिर के काफी ऊपर हाथ में पकड़े हुए था। फिर अगले पाठों में उसने नाचना, बागडोर पर दौड़ना, बाजे के साथ आवाजें निकालना, घंटी बजाना और पिस्तौल चलाना सीखा। महीने भर बाद वह आराम से मिस्री पिरामिड में फ्योदर तिमफेइच का स्थान ले सकती थी। वह बड़ी तत्परता से सब कुछ सीखती और अपनी सफलता पर खुश थी। जीभ निकालकर बागडोर

पर दौडना, छल्ले मे कूदना और बूढे फ्योदर तिमफेइच की सवारी करना इस सब मे उसे बडा मजा आता था। जब भी कोई तमाशा वह अच्छी तरह कर लेती, तो खुशी से जोर-जोर मे भौकने लगती, उस्ताद भी हैरान होता, खुशी मे झूम उठता और कहता

"वाह! क्या कमाल है! क्या कमाल है! तुम जरूर लाजवाब रहोगी, मौसी! कमाल है!"

मौसी "कमाल" शब्द की भी इतनी आदी हो गई कि हर बार जब मालिक यह शब्द कहता तो वह उछलकर खडी हो जाती, इधर-उधर देखती, मानो यह उसका नाम हो।

६ बेचैनी भरी रात

मौसी ने कुत्तो का सपना देखा कि जमादार लबे डडे वाला झाडू लिए उसका पीछा कर रहा है और डर के मारे उसकी आख खुल गई।

अधेरे कमरे मे सन्नाटा था और बहुत उमस थी। पिस्सू काट रहे थे। मौसी को पहले कभी भी अधेरे से डर नही लगा था, अब न जाने क्यो वह भयभीत हो उठी थी और भौकने को मन हो रहा था। पास के कमरे मे मालिक ने जोर से उसास भरी, फिर थोडी देर बाद सूअर अपनी कोठरी मे घुरघुराया और फिर से सन्नाटा छा गया। खाने की बात सोचो, तो मन को चैन मिलता है, सो मौसी यह सोचने लगी कि कैसे उसने आज फ्योदर तिमफेइच के खाने मे से मुर्गी की टाग चुरा ली थी और बैठक मे अल्मारी और दीवार के बीच छिपा दी थी, जहा ढेर सारी धूल और मकडी का जाला है। अच्छा हो, जाकर देख आए वह टाग सही-सलामत है कि नही? हो सकता है, मालिक को वह मिल गई हो और वह उसे खा गया हो। पर सुबह होने से पहले वह कमरे से बाहर नहीं निकल सकती—ऐसा यहा का नियम है। मौसी ने आखे मूद ली, ताकि जल्दी से सो जाए। वह अपने अनुभव से जानती थी कि जितनी जल्दी सो जाओ, उतनी ही जल्दी सुबह हो जाती है। पर अचानक उससे थोडी ही दूर कही अजीब सी चीख हुई, जिससे वह काप उठी और चारो पैरो पर खडी

हो गई। यह इवान इवानिच चीखा था, पर उसकी चीख हमेशा की तरह वक्की की विश्वास भरी चीख नही थी, यह तो कोई तीखी, डरावनी, अस्वाभाविक चीख थी, जैसे फाटक खोले जाने पर चरमराता है। अधेरे मे मौसी को न कुछ दिखा, न समझ मे आया, उसका डर और भी ज्यादा बढ गया और वह धीरे से गुर्राई।

कुछ समय बीता, इतना ही जितना अच्छी हड्डी को चिचोडने के लिए चाहिए, चीख फिर नही सुनाई दी। मौसी धीरे-धीरे निश्चित हो गई और ऊघने लगी। उसे सपने मे दो बडे, काले-काले कुत्ते दिखे, जिनके पुट्ठो और बगलो पर पिछले साल के बालो के गुच्छे थे, वे लकडी के बडे से टब मे से गदले पानी मे मिल ली जूठन खा रहे थे। टब मे से सफेद भाप उठ रही थी और जायकेदार गध आ रही थी, कभी-कभी कुत्ते मुडकर उसकी ओर देखते, खीसे निपोडते और गुर्राते "तुझे तो नही देगे!" पर घर मे से भेड की खाल का ओवरकोट पहने जमादार निकला और उसने चाबुक से उन्हे भगा दिया, तब मौसी टब के पास गई और खाने लगी, पर जैसे ही जमादार फाटक से बाहर गया, दोनो काले कुत्ते गुर्राते हुए उस पर टूट पडे, अचानक फिर तीखी चीख सुनाई दी।

"कै-कै-के!" इवान इवानिच चिल्लाया।

मौसी जाग गई, उछली और गद्दे पर खडी-खडी ही हूकने लगे। उसे लग रहा था कि यह इवान इवानिच नही, कोई दूसरा, बाहर का कोई चिल्ला रहा है। कोठरी मे भी सूअर फिर से घुरघुराया।

जूतो के घिसटने की आवाज सुनाई दी और गाउन पहने, हाथ मे मोमबत्ती पकडे मालिक अदर आया।

टिमटिमाती रोशनी मैले दीवारी कागज और छत पर नाचने लगी और उसने अधेरे को भगा दिया। मौसी ने देखा कि कमरे मे कोई बेगाना नही है। इवान इवानिच फर्श पर बैठा था, सो नही रहा था। उसके पख फैले हुए थे और चोच खुली थी, उसकी शक्ल-सूरत से लगता था मानो वह बहुत थक गया हो और उसे प्यास लगी हो। बूढा फ्योदर तिमफेइच भी नही सो रहा था। हो न हो, वह भी चीख से जाग गया होगा।

"इवान इवानिच, क्या हुआ तुम्हे?" मालिक ने हस से पूछा। "क्यो चीख रहे हो? बीमार हो क्या?"

हस चुप था। मालिक ने उसकी गर्दन और पीठ सहलाई और बोला "कैसा सनकी है भई तू। खुद भी नही सो रहा, दूसरो को भी नही सोने देता।"

मालिक चला गया, अपने साथ रोशनी ले गया, और फिर से अधेरा घिर आया। मौसी को डर लग रहा था। हस चीख नही रहा था, पर उसे फिर यह लगने लगा कि अधेरे मे कोई बेगाना खडा है। सबसे डरावनी बात तो यह थी कि इस बेगाने को काटा नही जा सकता था, क्योकि वह अदृश्य था और उसकी कोई आकृति न थी। न जाने उसे क्यो यह ख्याल आ रहा था कि आज रात को जरूर कोई बुरी बात होगी। फ्योदर तिमफेइच भी शात नही था। मौसी को सुनाई दे रहा था कि कैसे वह अपने गद्दे पर करवटे बदल रहा है, जम्हाइया ले रहा है और सिर भटक रहा है।

बाहर कही किसी ने फाटक खटखटाया और कोठरी मे सूअर घुरघुराया। मौसी किकियाने लगी, अगली टागे सामने बढा दी और उनपर सिर रख लिया। फाटक पर हुई खटखट, न जाने क्यो सो न रहे सूअर की घुरघुराहट, यह अधेरा और सन्नाटा—इस सबमे उसे वैसा ही कुछ उदासी भरा और भयावह लग रहा था, जैसा इवान इवानिच की चीख मे था। सब कुछ बेचैन, परेशान था। क्यो? कौन है यह बेगाना, जो दिखाई नही देता? मौसी के पास क्षण भर को दो धूमिल सी, हरी-हरी चिगारिया चमकी। उनकी सारी जान-पहचान के दौरान पहली बार फ्योदर तिमफेइच मौसी के पास आ बैठा था। उसे क्या चाहिए? मौसी ने उसका पजा चाटा और यह पूछे बिना कि वह क्यो आया है, हौले से, तरह-तरह की आवाज निकालते हुए हूकने लगी।

"कै-कै!" इवान इवानिच चीखा। "कै-कै!"

फिर से दरवाजा खुला और मोमबत्ती लिए मालिक अदर आया। हस पहले जैसी मुद्रा मे ही चोच खोले, पख फैलाए बैठा था। उसकी आखे बद थी।

"इवान इवानिच!" मालिक ने आवाज दी।

हस हिला-डुला नही। मालिक उसके सामने फर्श पर बैठ गया, पल भर चुपचाप देखता रहा और बोला

"इवान इवानिच! क्या हुआ? मर रहा है तू क्या? ओह, अब मुझे याद आया," उसने अपना सिर पकड लिया। "मुझे पता है, यह सब क्यो हो रहा है। आज तू घोडे के पैर तले आ गया था न, इसीलिए! हे भगवान! हे भगवान!"

मौसी की समझ मे नही आ रहा था कि मालिक क्या कह रहा है। पर उसके चेहरे से वह देख रही थी कि उसे किसी बहुत ही बुरी बात के होने की आशका है। उसने अधेरी खिडकी की ओर थूथनी बढाई। उसे लग रहा था कि उसमे से कोई बेगाना झाक रहा है, और वह हूकने लगी।

"वह मर रहा है, मौसी!" मालिक ने कहा और हाथ ऊपर को उठाकर झटके। "हा, हा, मर रहा है। तुम्हारे कमरे मे मौत आ गई है। क्या करे हम?"

मालिक का चेहरा पीला पड गया था। वह घबराया हुआ था। गहरी सासे भरते और सिर हिलाते हुए वह अपने सोने के कमरे मे चला गया। मौसी को अधेरे मे रहते डर लग रहा था, सो वह भी उसके पीछे चल दी। पलग पर बैठकर मालिक ने कई बार कहा

"हे भगवान, क्या करे?"

मौसी उसके पैरो के पास चक्कर काट रही थी। उसे कुछ समझ मे नही आ रहा था कि उसका मन इतना उदास क्यो है, क्यो सब इतने परेशान हो रहे है। यह सब समझने की कोशिश मे वह मालिक की हर हरकत को गौर से देख रही थी। फ्योदर तिमफेइच विरले ही कभी अपना गद्दा छोडता था, अब वह भी मालिक के कमरे मे आ गया और उसके पैरो के पास लोटने लगा। वह रह-रहकर यो सिर झटकता, मानो उसमे से कोई बुरा विचार निकाल डालना चाहता हो, और पलग के नीचे यो झाक रहा था, जैसे कि वहा कुछ हो। मालिक ने रकाबी ली, कमरे मे लगे हाथ धोने के छोटे से ड्रम मे से पानी उसमे डाला और फिर से हस के पास गया।

"इवान इवानिच, लो, पी लो," उसके सामने रकाबी रखते हुए उसने लाड से कहा। "पी ले, भैया।"

पर इवान इवानिच हिल-डुल नही रहा था और न ही आखे खोल रहा था। मालिक ने उसका सिर रकाबी पर झुकाया और चोच पानी मे डाली,

पर हस नही पी रहा था। उसने पख और भी फैला दिए और उसका सिर रकाबी पर रखा रह गया।

"नही, अब कुछ नही किया जा सकता!" मालिक ने उसास ली। "सब खत्म हो गया। गया इवान इवानिच!"

और उसके गालो पर चमकीली बूदे नीचे ढरकने लगी, वैसी ही बूदे, जैसी बारिश के समय खिडकियो पर होती हैं। मौसी और फ्योदर तिमफेइच कुछ नही समझ पा रहे थे, मालिक से सटे जा रहे थे और भयभीत से हस को देख रहे थे।

"बेचारा इवान इवानिच!" ठडी सास भरते हुए मालिक कह रहा था। "मैं तो सोच रहा था कि बसत मे तुझे दाचा पर ले जाऊगा और हरी-हरी घास पर तेरे साथ घूमूगा। मेरे प्यारे जानवर, मेरे अच्छे साथी, तू अब नही रहा! तेरे बिना मै क्या करूगा?"

मौसी को लग रहा था कि उसके साथ भी ऐसा ही होगा, यानी वह भी ऐसे ही, न जाने क्यो आखे बद कर लेगी, टागे फैला देगी, मुह खोल लेगी और सब भयभीत से उसे देखेगे। प्रत्यक्षत फ्योदर तिमफेइच के दिमाग मे भी ऐसे ही विचार घूम रहे थे। बूढा बिल्ला इससे पहले कभी भी इतना मायूस और निराश नजर नही आया था।

पौ फट रही थी। छोटे कमरे मे अब वह अदृश्य बेगाना नही था, जिससे मौसी को इतना डर लग रहा था। जब बिल्कुल उजाला हो गया, तो जमादार आया, हस के पजे पकडकर उसे कही ले गया। थोडी देर बाद बुढिया आई और टब ले गई।

मौसी बैठक मे गई और अल्मारी के पीछे झाककर देखा मालिक ने मुर्गी की टाग नही खाई थी, वह अपनी जगह पर ही, जाले और धूल मे पडी हुई थी। पर मौसी का मन उखडा हुआ था, उसे रोना आ रहा था। उसने टाग को सूघा भी नही, सोफे तले जाकर बैठ गई और पतली सी आवाज़ मे किकियाने लगी।

७ और तमाशा फेल हो गया

एक शाम को मालिक मैले दीवारी कागज वाले कमरे मे आया और हाथ रगडते हुए बोला

"अच्छा जी "

वह और कुछ कहना चाहता था, पर कहे बिना ही बाहर चला गया। मौसी पाठो के दौरान उसके चेहरे और लहजे के उतार-चढाव को समझना सीख गई थी, सो वह जान गई कि वह उत्तेजित और चितित है, लगता है, गुस्से मे भी है। थोडी देर बाद वह लौटा और बोला

"आज में मौसी और फ्योदर तिमफेइच को अपने साथ ले जाऊगा। मिस्री पिरामिड मे मौसी आज इवान इवानिच का स्थान लेगी। ओफ, क्या है यह सब! कुछ तैयार नही, सीखा नही गया, रिहर्सले कम हुई है! बदनाम हो जाएगे, तमाशा फेल हो जाएगा!"

वह फिर से बाहर चला गया और मिनट भर बाद ही फर का ओवरकोट और ऊचा टोप पहने लौट आया। बिल्ले के पास जाकर उसने अगली टागो से उसे पकडा और उठाकर अपने ओवरकोट तले छाती पर छिपा लिया। फ्योदर तिमफेइच इस सबमे बिल्कुल उदासीन लगता था, यहा तक कि उसने आखे भी नही खोली। प्रत्यक्षत, उसके लिए सब बराबर था वह लेटा रहे या उसे टागे पकडकर उठा लिया जाए, गद्दे पर लेटा रहे या मालिक की छाती पर ओवरकोट तले दुबका रहे।

"मौसी, चलो," मालिक ने कहा।

कुछ भी समझे बिना और दुम हिलाते हुए मौसी उसके पीछे चल दी। पल भर बाद ही वह स्लेज गाडी मे मालिक के पावो मे बैठी थी और सुन रही थी कि कैसे वह ठड से सिकुडता हुआ और घबराता हुआ बुदबुदा रहा था

"बदनाम हो जाएगे! तमाशा फेल हो जाएगा!"

स्लेज गाडी एक बहुत बडे, अजीब से मकान के पास रुकी, जो औधे पडे डोगे जैसा था। उस मे शीशे के तीन दरवाजे थे, जो दर्जन भर बत्तियो मे जगमगा रहे थे। दरवाज़े शोर करते हुए खुलते और मुहो की तरह वहा

आ-जा रहे लोगो को निगल जाते। यहा लोग बहुत थे, कई घोडे आकर रुक रहे थे, पर कुत्ते कही नज़र न आते थे।

मालिक ने मौसी को उठाया और ओवरकोट के नीचे घुसेड लिया, जहा फ्योदर तिमफेइच पहले से ही बैठा हुआ था। वहा अधेरा और उमस थी, पर गरमाहट भी। क्षण भर को दो धूमिल सी, हरी-हरी चिगारिया चमकी – कुतिया के ठडे, सख्त पजो से परेशान होकर बिल्ले ने आखे खोली थी। मौसी ने उसका कान चाटा, आराम से बैठने की फिक्र मे वह कुलबुलाने लगी, बिल्ले को अपने ठडे पजो तले दबा दिया, अनजाने मे सिर ओवरकोट से बाहर निकाल लिया, पर तुरत ही गुर्राई और फिर से अदर घुस गई। उसे लगा कि उसने एक विशाल कमरा देखा है, जिसमे बहुत कम रोशनी है। कमरा अजीब-अजीब से भयानक जीवो से भरा हुआ था, कमरे के दोनो ओर बाडो और पिजडो के पीछे से डरावने थूथने दिख रहे थे घोडो के, सीगोवाले, लमकन्ने और एक बहुत ही बडा, मोटा थूथना, जिस पर नाक की जगह पूछ थी और मुह से दो चिचोडी हुई हड्डिया निकली हुई थी।

बिल्ले ने मौसी तले फटी-फटी आवाज मे म्याऊ की, पर तभी ओवरकोट खुल गया, मालिक ने कहा "हप!" और मौसी तथा फ्योदर तिमफेइच नीचे कूद गए। वे अब एक छोटे से कमरे मे थे, जिसकी मटमैली सी दीवारे लकडी के पटरो की बनी हुई थी। यहा एक छोटी सी शीशे वाली मेज, एक स्टूल और कोनो मे टगे कपडो के अलावा और कुछ भी नही था। लैम्प या मोमबत्ती की जगह पखेनुमा तेज बत्ती जल रही थी, जो दीवार मे गडी एक नली पर लगी हुई थी। फ्योदर तिमफेइच ने अपने रोये चाटे, जो मौसी तले दब गए थे और जाकर स्टूल के नीचे लेट गया। अभी भी घबराते और हाथ रगडते हुए मालिक कपडे उतारने लगा उसने सिर्फ ओवरकोट या कोट ही नही उतारा, बल्कि इस तरह कपडे उतारे जैसे कि वह घर पर कम्बल तले लेटने से पहले उतारता था, यानी वह सिर्फ अतरीय पहने रहा – पूरी बाहो की बनियान और तग पायजामा। फिर वह स्टूल पर बैठ गया और शीशे मे देखते हुए अपने आप को न जाने क्या-क्या करने लगा – देखकर आश्चर्य होता था। सबसे पहले उसने सिर पर नक्ली बालो का विग पहना जिसके बीचोबीच माग थी और दोनो

ओर बालो से सीग से बने हुए थे, फिर उसने चेहरे पर सफेद सा कुछ पोत लिया और सफेद रग के ऊपर भौहे, मूछे और लाली बनाई। इतने मे ही उसके तमाशे खत्म नही हुए। चेहरे और गर्दन को लीप-पोतकर वह बहुत ही अजीबो-गरीब पोशाक पहनने लगा। मौसी ने पहले कभी भी न घर पर और न ही सडक पर किसी को ऐसे कपडे पहने देखा था। कल्पना कीजिए बोरे जैसी खुली पतलून की, जो बडे-बडे फूलोवाले छीट के कपडे की बनी हुई थी। ऐसा कपडा शहरो के आम घरो मे पर्दो के लिए और फर्नीचर पर चढाने के काम आता है। पतलून बगलो तक ऊची थी, उसका एक पायचा कत्थई छीट का था और दूसरा चमकीली पीली छीट का। पतलून मे समाकर मालिक ने ऊपर से छीट का सिघाडेदार कालर वाला कुर्ता पहना, जिसकी पीठ पर सुनहरा सितारा बना हुआ था, अलग-अलग रग के मोजे पहने और फिर हरी जूतिया।

मौसी तो चकाचौध हो गई। सफेद मुह वाली बोरे जैसी आकृति से मालिक की गध आती थी, उसकी आवाज भी जानी-पहचानी, मालिक जैसी ही थी, मगर ऐसे क्षण भी आते जब मौसी के मन मे सदेह उठने लगता। तब उसका जी होता इस भडकीली आकृति से दूर भागे और भौकने लगे। नई जगह, पखेनुमा बत्ती, नई गधे, मालिक के साथ हुआ कायाकल्प—इस सबसे उसके मन मे अजीब सा डर समा रहा था और उसे लग रहा था कि जरूर उसका सामना किसी डरावने जीव से होगा, जैसे कि नाक की जगह दुम वाला मोटा थूथना। ऊपर से दीवार के पीछे दूर कही वह बैड-बाजा बज रहा था, जिसे मौसी सह नही सकती थी और कभी-कभी अनबूझ दहाड भी सुनाई देती। बस फ्योदर तिमफेइच को एकदम निश्चित पडे देखकर ही उसका थोडा ढाढस बध रहा था। वह मजे मे स्टूल के नीचे लेटा ऊघ रहा था, जब स्टूल हिलता तब भी वह आखे नही खोलता था। सफेद वास्कट और लबा काला कोट पहने एक आदमी ने अदर झाककर देखा और कहा

"अभी मिस अरावेला जा रही हैं। उसके बाद आपकी बारी है।'

मालिक ने कोई जवाब नही दिया। उसने मेज के नीचे से बडा अटैची निकाला और बैठकर इतजार करने लगा। उसके हाथो और होठो से साफ लग रहा था कि वह घबरा रहा है, मौसी उसकी कापती सास सुन रही थी।

"मि० जार्ज, चलिए!" दरवाजे के पीछे से किसी ने आवाज़ दी।

मालिक उठा, छाती पर तीन बार सलीब का निशान बनाया, फिर स्टूल के नीचे से बिल्ले को निकाला और अटैची मे घुसेड दिया।

"चलो, मौसी!' मालिक ने हौले से कहा।

मौसी कुछ नही समझी, मालिक के पास आ गई, उसने मौसी का सिर चूमा और उसे फ्योदर तिमफेइच के पास रख दिया। और फिर अधेरा छा गया मौसी बिल्ले को दवा रही थी, अटैची को खरोच रही थी, डर के मारे उसके मुह से आवाज नही निकल रही थी, अटैची यो हिल रहा था, मानो लहरो पर उछल रहा हो

"लो जी मै आ गया!" मालिक जोर से चिल्लाया। "लो जी मैं आ गया!"

मौसी ने महसूस किया कि इस चीख के बाद अटैची किसी सख्त चीज से टकराया और फिर उसका हिलना-डुलना बद हो गया। जोर से चिघाडने की आवाज आई किसी को थपथपाया जा रहा था और यह कोई, शायद नाक की जगह दुम वाला थूथना इतनी जोर से चिघाड रहा था कि अटैची का ताला खडखडा उठा। चिघाड के जवाव मे मालिक वारीक, तीखी आवाज मे हसा, घर पर वह कभी भी ऐसे नही हसता था।

"हा-हा-हा!" चिघाड को दवाने की कोशिश करते हुए वह चिल्लाया। "माहेवान मेहरवान! मैं सीधा स्टेशन से आ रहा हू। मेरी नानी इस दुनिया से चलती बनी है और मेरे लिए यह बक्सा छोड गई है! बडा भारी है, हो न हो सोने से भरा होगा हा-हा-हा! अभी देखते है कितने लाख है इसमे!"

अटैची का ताला चटका। मौसी की आखे तेज रोशनी से चुधिया गई, वह उछलकर अटैची से बाहर निकली, शोर-गुल से बौखला गई और बडी तेजी से मालिक के इर्द-गिर्द दौडने लगी, जोर-जोर से भौकने लगी।

"धत् तेरे की!" मालिक चिल्लाया। "फ्योदर तिमफेइच! मौसी! आ गए मेरे प्यारे रिश्तेदार! भाड मे जाओ तुम!"

वह पेट के वल रेत पर गिर गया, बिल्ले और मौसी को पकड लिया, उन्हे बाहो मे भरने, गले लगाने लगा। जब वह उसे अपने आलिगन मे कस रहा था तो मौसी ने जल्दी मे एक नजर उस दुनिया पर डाली, जहा किस्मत

उसे ले आई थी। उसकी भव्यता पर वह आश्चर्यचकित और विमुग्ध हो गई, पल भर को स्तब्ध रह गई, फिर मालिक के हाथो से निकल भागी और इन छापो के तीव्र प्रभाव मे लट्टू की तरह घूमने लगी। नई दुनिया विशाल थी और तेज प्रकाश से भरपूर, जिधर भी नजर डालो, फर्श से छत तक चेहरे ही चेहरे थे, चेहरे ही चेहरे बस और कुछ नही।

"मौसी, तशरीफ रखो!" मालिक चिल्लाया।

मौसी को याद था कि इसका क्या अर्थ है। वह तुरत उछलकर कुर्सी पर चढकर बैठ गई। उसने मालिक की ओर देखा। उसकी आखे सदा की तरह गम्भीर और स्नेह भरी थी, किंतु चेहरा और खास तौर पर मुह और दात चौडी, जड मुस्कान से विकृत थे। वह ठहाके मारकर हस रहा था, उछल-कूद रहा था, कधे बिचका रहा था और यह दिखा रहा था कि हजारो लोगो की उपस्थिति मे उसे बडा मजा आ रहा है। मौसी ने उसके उल्लास पर विश्वास कर लिया, सहसा अपने रोम-रोम से उसे यह आभास हुआ कि ये हजारो चेहरे उसे देख रहे है, उसने लोमडी जैसी अपनी थूथनी ऊपर उठाई और खुशी से किकियाने लगी।

"मौसी आप यहा बैठिए," मालिक ने कहा। "हम फ्योदर तिमफेइच के साथ थोडा नाच ले।"

फ्योदर तिमफेइच उदासीनता से इधर-उधर देखता हुआ इस प्रतीक्षा मे खडा था कि कब उसे ये बेवकूफी भरी हरकते करने को कहा जाएगा। वह अनमना सा, लापरवाही से नाच रहा था, उसकी गतियो, उसकी दुम और मूछो से यह साफ दिख रहा था कि वह इस भीड और सारी रौनक को तुच्छ मानता था, मालिक और उसका अपना तमाशा उसके लिए छिछोरा था अपने हिस्से का नाच नाचकर उसने जम्हाई ली और बैठ गया। मालिक बोला

"हा, तो मौसी, चलो, हम पहले गाएगे और फिर नाचेगे। अच्छा?"

उसने जेब से बासुरी निकाली और बजाने लगा। मौसी सगीत नही सह सकती थी, वह बेचैनी से कुलबुलाने लगी और हूकने लगी। चारो ओर से तालियो की गडगडाहट और कोलाहल सुनाई दिया। मालिक ने झुककर सलाम किया और जब सब शात हो गया तो फिर से बासुरी बजाने लगा बासुरी

वहुत ऊची तान मे वज रही थी, जव ऊपर कही दर्शको मे किसी ने आश्चर्य के साथ ज़ोर से आह भरी।

"वापू!" वाल स्वर चिल्लाया। "यह तो लाखी है!"

"लाखी है ही!" नशे से कापते पुरुष स्वर ने हामी भरी। "हा, लाखी है! फेद्युश्का, मुदा की मार पडे, यह तो लाखी ही है! पुच-पुच-पुच!"

गैलरी मे किसी ने सीटी वजाई, और दो स्वर, एक वच्चे का और एक पुरुष का ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे

"लाखी! लाखी!"

मौसी ठिठक गई, उसने उधर देखा जिधर से चिल्लाने की आवाज़ आ रही थी। दो चेहरे एक वालोवाला, नशे मे मुस्कराता हुआ और दूसरा–गोल-मटोल, लाल और सहमा सा–उसकी आखो मे वैसे ही चौध गए, जैसे पहले तेज प्रकाश चौधा था।

उसे याद हो आया, वह कुर्सी से गिर पडी, रेत पर लोटने लगी, फिर उठी और खुशी से किकियाती हुई इन चेहरो की ओर दौड चली। कर्णभेदी कोलाहल हुआ, जिसमे ज़ोर-ज़ोर की सीटिया और एक वच्चे की तीखी चीख साफ सुनाई दे रही थी

"लाखी! लाखी!"

मौसी ने उछलकर रिंग की मुडेर पार की, फिर किसी के कधे के ऊपर से होती हुए वॉक्स मे पहुच गई, अगली कतार मे पहुचने के लिए ऊची दीवार लाघनी चाहिए थी, मौसी कूदी, पर ऊपर तक न पहुच पाई, दीवार पर नीचे फिसलने लगी। फिर वह एक हाथ से दूसरे हाथ मे जाने लगी, कई हाथ, चेहरे चाटती हुई ऊपर ही ऊपर वढती गई और आखिर गैलरी मे पहुच गई।

आधे घटे वाद लाखी सडक पर उन लोगो के पीछे जा रही थी, जिनसे सरेस और वार्निश की गध आ रही थी। लुका अलेक्सान्द्रिच लडखडा रहा था, पर उसे इतना अनुभव था कि उसके पाव उसे अपने आप ही नाली से दूर-दूर लिए जा रहे थे।

"पाप के गरत मे लोटा मेरे गरभ मे " वह वडवडा रहा था। "अरी

लाखी, तू तो बस एक भूल है। आदमी के सामने तो तू वैसे ही है, जैसे तरखान के सामने दो कौडी का बढई।"

उसके साथ-साथ फेद्युश्का बाप का टोप पहने चल रहा था। लाखी उनकी पीठो को देख रही थी और उसे लग रहा था कि वह न जाने कब से उनके पीछे चल रही है और खुश हो रही हे कि जीवन का क्रम पल भर को भी नही टूटा।

मैले दीवारी कागज वाला कमरा, हस, फ्योदर तिमफेइच, स्वादिष्ट खाना और सरकस — यह सब उसे याद आया, पर अब यह एक लबा, उलझा-पुलझा सपना ही लग रहा था।

इवान तुर्गेनेव

बेझिन चरागाह

१८५२ में 'शिकारी के शब्दचित्र' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। इसके लेखक इवान तुर्गेनेव का नाम तब बहुत कम लोगों ने ही सुना था। रूसी साहित्य में यह पहली ऐसी कृति थी, जिसमें मध्य रूस के मौलिक सौंदर्य—रई के खेतों, जमीन से सटे गांवों, गंदी सरायों, उजले वनों, मथर नदियों, खेतों के बीच चली गई खुली सड़कों की छवि उतारी गई। इन कहानियों के अधिकांश नायक भूदास किसान हैं—अनपढ़, किंतु सयाने, प्रतिभावान और साफ मन के लोग। इस पुस्तक ने लेखक की कीर्ति फैलाई। इन कहानियों में एक थी 'बेझिन चरागाह', जिसमें लेखक ने किसान बच्चों का, जन किंवदंतियों का काव्यमय वर्णन किया है।

इस कहानी के अलावा 'शिकारी के शब्दचित्रों' की कुछ और कहानियों—'बिर्यूक', 'ल्गोव' तथा 'गायक'—को भी बाल साहित्य में स्थान मिला। तुर्गेनेव की कहानी 'मुमू' बाल साहित्य की एक बेजोड़ रचना है। यह एक कुत्ते की कहानी है, जिसे उसके मालिक भूदास जमादार गरासिम को मालकिन के भोंडे हुक्म पर डुबाना पड़ा।

लेव तोलस्तोय के अनुरोध पर तुर्गेनेव ने 'बाल विश्राम' पत्रिका के लिए 'बटेर' कहानी लिखी। उन्होंने शार्ल पेरों की बाल कथाओं का भी फ्रांसीसी से रूसी में अनुवाद किया और उनके लिए भूमिका लिखी।

इवान सेर्गेयेविच तुर्गेनेव का जन्म १८१८ में हुआ और मृत्यु १८८३ में।
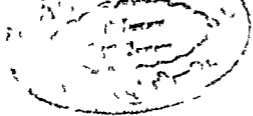
जुलाई का एक सुहावना दिन था। ऐसे दिन मौसम के उतार-चढाव बीत चुकने पर ही अवतरित होते है। सुवह तडके से ही आकाश स्वच्छ होता है। ऊपा आग सी नही दमक उठती, वस एक कोमल गुलावी प्रकाश चारो ओर फैल जाता है। न तो दमघोट सूखे के दिनो की भाति अग्निल, लाल-भभूका और न ही झझा की पूर्ववेला जैसा धूमिल लौहित, अपितु दिव्य आभामय उज्ज्वल सूर्य वादल की लवी, पतली पट्टी तले से हौले से उदय होता है, ताजगी छिटकाता है और फिर उसकी लाल-नीली धुध मे समा जाता है। वादल की पट्टी के ऊपरी किनारे पर प्रकाश-सर्प वल खाते है, चादी के वर्क से चमचमाते है और फिर किरणे इठलाती है, आह्लादित प्रकाश पुज भव्य पखो पर ऊपर उठने लगता है। प्राय दोपहर के समय आकाश मे सूर्य ऊचे गोल-गोल वादल छा जाते है—सुनहरे-सुरमई और दूधिया गोट मे टके। प्लावित नदी के वक्ष पर छितरे वे थिर द्वीपो मे लगत हैं, गहरी पारदर्शी नीलवर्ण जलराशि का

असीम विस्तार इन्हे पखारता है। दूर, आकाश के उतार मे वे एक दूसरे के पास पास आते जाते है, आपस मे गुथते है और उनके बीच नीलिमा अब नही दिखती पर वे स्वय भी आकाश जैसे ही आसमानी रग के होते है – आलोक और गरमाहट मे पगे हुए। क्षितिज का रग हल्का नील कमल सा होता है और दिन भर नही बदलता, चारो ओर एक सा रहता है। कही भी कालिमा नही छाती, घटाए नही उमडती। बस कही-कही ही आकाश धरती की ओर आसमानी हाथ बढा देता है यह झीनी बरखा है। साझ घिरते न घिरते ये बादल विलीन हो जाते हैं। धुए जैसे अनिश्चित आकार के, कालापन लिए उनके अतिम अवशेष डूबते सूरज के सामने रूई के गुलाबी ढेरो से उतर आते हैं। जिस शात भाव से सूर्य उदय हुआ था, उसी शात भाव से वह अस्ताचल को चला जाता है। और वहा झुटपुटे की चादर ओढती धरती के ऊपर कुछ देर तक लालिमा छाई रहती है। सभाल कर ले जाई जा रही दीप शिखा की भाति साझ का तारा टिमटिमा उठता है। ऐसे दिनो मे सब रग कोमल होते है, उजले कितु चटकीले नही। चारो ओर हृदयस्पर्शी मृदुता का वातावरण होता है। ऐसे दिनो मे गर्मी काफी तेज होती है, कभी-कभी तो खेतो की ढुलवानो पर से भाप सी उठती दिखती है, पर हवा इस तपस को उडा ले जाती है और स्थिर मौसम के पक्के चिह्न – धूल के बगूले ऊचे सफेद सतूनो से खेतो को पार करते सडको पर उडते जाते है। स्वच्छ खुश्क हवा मे चिरायते, काटी हुई रई और कूटू की गध मिली होती है। रात घिरने से दो घडी पहले तक भी नमी का एहसास नही होता। किसान फसल काटने को ऐसे ही मौसम की कामना करते है।

ठीक ऐसे ही दिन तूला प्रात के चेर्न जिले मे मै जगली मुर्गो का शिकार करने निकला था। मैंने काफी सारी चिडिया मार ली थी और मेरा भरा हुआ झोना बेरहमी से कधे मे गड रहा था। साझ ढल रही थी, अस्त हो गए सूरज की किरणे आकाश को आलोकित नही कर रही थी, पर तो भी वह उजला था, गोधूलि की शीतल आभा मे धुधलका गहराता हुआ बढ रहा था। तब कही जाकर मैंने घर लौटने का निश्चय किया। तेज-तेज कदम भरते हुए मैंने झाडियो का मैदान पार किया, टीले पर चढ गया, लेकिन मेरी आशा के विपरीत न तो दाई ओर बलूत कुज था, न दूर कही छोटा सा सफेद गिरजा

नजर आ रहा था, यहा तो बिल्कुल ही दूसरी, अनजान जगह थी। नीचे एक सकरी घाटी फैली हुई थी और बिल्कुल सामने तेज ढलान पर एस्प वृक्षो का घना झुरमुट चला गया था। मै हैरान-परेशान सा रुक गया, इधर-उधर नजर दौडाई। "धत् तेरे की! मै तो बिल्कुल दूसरी जगह पहुच गया ज्यादा दाई ओर को चला आया," मैंने सोचा। अपनी गल्ती पर चकित होता हुआ मैं फुर्ती से टीले पर से उतर गया। तत्क्षण अप्रिय सी, थिर सीलन ने मुझे घेर लिया, मानो मैं किसी तहखाने मे उतर आया था। घाटी के तल पर घनी ऊची घास की एकदम गीली, सफेद, सपाट चादर बिछी हुई थी, उस पर चलते हुए मन कापता था। मैंने जल्दी-जल्दी घाटी पार की और बाए घूमता हुआ एस्प वन के बगल-बगल चलने लगा। एस्पो के ऊघते शिखरो के ऊपर चमगादड उडने लगे थे। अस्पष्ट से निर्मल आकाश मे फरफराते वे रहस्यमयी जीव से लगते थे। आकाश मे काफी ऊचे एक छोटा बाज अपने घोसले पर लौटने की जल्दी मे तेजी से सीधा उडता चला गया। मै सोच रहा था "बस, उस छोर तक पहुचते ही आगे सडक होगी। हा, पाच फर्लाग का चक्कर तो लग ही गया!"

आखिर मैं जगल के उस छोर तक पहुच गया, पर वहा कोई सडक न थी। मेरे सामने नीची-नीची झाडिया फैली हुई थी और उनके पीछे दूर-दूर तक वीरान खेत दिख रहा था। मैं फिर रुक गया। "क्या माजरा है? आखिर कहा आ पहुचा मैं?" मैं यह याद करने लगा कि मैं दिन भर किधर-किधर गया था। "अरे हा, ये तो पराखिनो की झाडिया है।" आखिर मेरे मुह से निकला। "और वह वहा सिन्देयेव कुज होना चाहिए वैसे आ गया मै इतनी दूर? अजीब बात है! अब फिर दाए चलना चाहिए।"

मैं झाडियो के बीच से दाई ओर को बढने लगा। उधर रात घिरती आ रही थी, काली घटा की तरह बढती जा रही थी। लगता था कि साझ की धुध के साथ चारो ओर से अधेरा उठ रहा है और ऊपर से भी छितर रहा है। मैं किसी पगडडी पर जा पहुचा। पगडडी पर घास उग आई थी, न जाने कब से कोई उस पर नही चला था। ध्यान मे आगे देखता हुआ मैं उस पर चलने लगा। चारो ओर सब कुछ तेज़ी से काला पडता जा रहा था और निस्तब्धता छाती जा रही थी—बस कभी-कभार कोई बटेर चहक उठता था। अपने कोमल

पखो पर निश्शब्द उडता कोई निशाचर पछी मुझसे टकराता-टकराता बचा और सहमा सा एक ओर को अधेरे मे गोता लगा गया। मैंने झाडियो का मैदान पार कर लिया और खेत मे मेड-मेड चलने लगा। अब दूर की चीजे मुश्किल से ही नजर आ रही थी चारो ओर धुधला मफेद खेत फैला हुआ था। उसके पार उमडता-घुमडता अधेरा पल-पल बढता जा रहा था। थिर हो चली हवा मे मेरे कदमो की दबी-दबी आवाज गूज रही थी। धूमिल पड गया आकाश फिर से नीला हो रहा था, पर यह रात की नीलिमा थी। तारे छिटक गए, झिलमिलाने लगे।

जिसे मै कुज ममझे था, वह काला, गोलाकार टीला निकला। "आखिर कहा आ गया मैं?" मेने फिर से कहा, तीसरी बार थमा और प्रश्न भरी दृष्टि मे अपने अग्रेजी नस्ल के पीले-चितकबरे कुत्ते दिआन्का की ओर देखा, जो बिलाशक मभी चौपायो मे सबसे अक्लमद है। पर सबमे अक्लमद कुत्ते ने बस दुम हिला दी, अपनी थकी-थकी आखे झपकाई और कोई काम की सलाह नही दी। मुझे उसके सामने शर्म आई ओर मैं यकायक आगे बढ चला, मानो सहसा मुझे यह पता चल गया हो कि किधर जाना चाहिए। टीले का चक्कर काटकर उसे पार किया ओर एक घाटी मे जा पहुचा, जो अधिक गहरी न थी। यहा चारो ओर जमीन जुती हुई थी। मुझे एक अजीब सी अनुभूति हुई।

यह घाटी विशाल कडाहे की शक्ल की थी, हल्की सी ढलान नीचे को चली गई थी। और नीचे तलहटी मे कुछ बडे-बडे सफेद पत्थर सीधे-सतर खडे थे, लगता था मानो वे किमी गुप्त मत्रणा के लिए वहा रेग आए हो। घाटी मे मब कुछ इतना अचल और मूक था, इतना सपाट था, उसके ऊपर आसमान ऐसा मनहूम मा लगता था कि मेरा कलेजा बैठ गया। पत्थरो के बीच कोई जीव धीमी मी, दयनीय आवाज मे चिचियाया। मैंने जल्दी-जल्दी टीले पर लौटने की की। अभी तक मैंने घर का रास्ता ढूढ लेने की आशा न खोई थी, पर अब मैं ममझ गया कि बिल्कुल भटक गया हू। चारो ओर घने अधकार मे डूबी जगहो को पहचानने की कोई कोशिश न करते हुए मैं तारो को देखता नाक की मीध मे अललटप्पू चल दिया कोई आधे घटे तक मैं यो ही मुश्किल मे पैर घमीटता चलता रहा। लगता था कि पहले कभी भी मैं ऐसे निर्जन इलाके

मे नही आया, कही कोई आग नही टिमटिमा रही थी, कोइ आवाज नही सुनाई दे रही थी। एक के बाद एक हल्की ढलान वाले टीले आ रहे थे खेतो के सिलसिले का कोई अत न था, झाडिया अचानक ऐन नाक के सामने जमीन मे से निकल पडती थी। मैं चलता जा रहा था और सोच रहा था कि बस अब कही लेटकर रात काट लू, पर तभी मैने अपने आप को एक अथाह गर्त के किनारे पाया।

आगे बढा पाव मैंने जल्दी से पीछे हटा लिया। रात के प्राय अभेद्य अधकार मे मुझे बहुत नीचे एक विशाल मैदान दिखा। चौडी नदी ने उसे अर्द्धवृत्त म घेर रखा था, जो मेरे से दूर को जा रहा था। जब-तब नजरो मे टकराती नदी की अस्पष्ट सी, फौलादी झिलमिल से उसके बहाव का आभास हो रहा था। जिस टीले पर मै खडा था वह एकदम सीधी कगार के रूप मे नीचे चला गया था। घनी नीली रिक्तता मे टीले की विशाल काली आकृति अलग मे दिख रही थी। मेरे ठीक नीचे कगार और मैदान के बीच एक कोना सा बन गया था। यहा नदी प्राय थिर ही थी, काले दर्पण सी। टीले की खडी ढलान की ओट मे नदी के पास एक दूसरे के निकट ही दो अलावो की लाल लपटे उठ रही थी, धुआ छोड रही थी। उनके इर्द-गिर्द लोग हिलडुल रहे थे परछाइया मडरा रही थी, कभी-कभी छोटे से--घुघराले बालो वाले सिर का अगला हिस्सा चमक उठता था।

अब मै पहचान गया कि मै कहा आ भटका हू। यह चरागाह हमारे इलाके मे 'बेझिन चरागाह' के नाम से जानी जाती है। पर घर लौटने की अब हिम्मत न रही थी, वह भी रात मे। थकावट के मारे खडा न हुआ जा रहा था। मैंने तय किया कि अलावो के पास जाता हू ओर इन लोगो के साथ बची-खुची रात काट लेता हू। मेरा ख्याल था कि ये लोग मवेशियो को हाट मे ले जानेवाले चरवाहे है। मैं सही-सलामत नीचे उतर गया, पर जिस आखिरी टहनी को मैंने पकड रखा था, उसे हाथ से छोड भी न पाया था कि दो बडे-बडे, झबरीले सफेद कुत्ते गुस्से से भौकते हुए मेरी ओर लपके। अलावो के पास से बच्चो की खनकती आवाजे आई। दो-तीन लडके तुरत उठ खडे हुए। उन्होंने चिल्लाकर पूछा "कौन है?", मैंने जवाब दिया और वे दौडे-दौडे मेरी ओर आए, कुत्तो

को हटा लिया, जो मेरे दिआन्का को आया देखकर खास तौर पर हैरान थे। में लडको के पास चला गया।

अलाव के इर्द-गिर्द बैठे लोगो को चरवाहा समझना मेरी भूल थी। ये तो पडोस के गाव के लडके थे, जो घोडो के झुड की रखवाली कर रहे थे। गर्मियो के दिनो मे हमारे यहा घोडो को रात मे ही चरागाहो मे छोडा जाता है दिन मे मक्खिया और कुकुरमाछिया उन्हे तग कर मारे। गोधूलि की वेला मे घोडो को चरागाह मे ले जाना और प्रभात वेला मे वापिस हाक लाना – किसान बच्चो के लिए इससे बढकर खुशी का काम ओर कोई नही। नगे सिर, भेड की खाल के पुराने कोट कसे वे मरियल सी, पर तेज तर्रार घोडो पर सवारी गाठते है। चिल्लाते हुए, हू-हा करते, टागे-बाहे हिलाते, ऊचे-ऊचे उछलते वे घोडो को दौडा ले जाते है, खिलखिलाकर हसते जाते है। सडक पर अपने पीछे धूल के पीले सतूने छोडते जाते है, घोडो की टापे दूर तक सुनाई देती है, कनौतिया खडी किए वे दौडते जाते है, आगे-आगे अपनी दुम हवा मे उठाए निरतर चाल बदलता कोई झबरा सुरग घोडा दौडता जाता है, जिसकी अयाल मे गोखरू उलझे होते हे।

मैंने लडको को बताया कि मै भटक गया हू और उनके पास बैठ गया। उन्होने मुझसे पूछा कि मै कहा से आया हू, फिर चुप हो गए, एक ओर को हट गए। हमने कुछ देर बाते की। मैं एक बूची झाडी के नीचे लेट गया और इधर-उधर देखने लगा। बडा ही मनमोहक दृश्य था अलावो के इर्द-गिर्द लाल दमक का घेरा थरथरा रहा था और अधेरे से टकराकर मानो ठिठक जाता था, कभी-कभार कोई लपट तेज ही उठती और इस घेरे की परिधि के बाहर प्रकाश की द्रुत कौध फैल जाती, कोई अग्नि जिह्वा पतली-पतली सूखी टहनियों को चाटती और तुरत ही विलीन हो जाती, और कभी टेढी-मेढी लबी-लबी परछाइया अलावो तक बढ आती प्रकाश अधकार से जूझ रहा था। कभी-कभी लौ धीमी पड जाती और प्रकाश का घेरा सिकुड जाता आगे बढ आए अधकार मे से सहसा किसी घोडे का सिर – धारीदार कुम्मैत या नुकरा, भावहीन आखे गाडकर हमारी ओर देखता, लबी घास तेजी से चरता और फिर से झुककर तुरत ही ओझल हो जाता। बस घोडे के घास चरने और फुफकारने की ही

आवाज सुनाई देती रहती। उजली जगह मे से यह देखना कठिन होता है कि अधकार मे क्या हो रहा ह, अत लगता था कि आसपास सब कुछ काले परदे मे छिपा हुआ है। हा, दूर क्षितिज के पास टीले और जगल धुधले-धुधले धब्बो के रूप मे दिख रहे थे। काला तारो से भरा, ओर-छोर विहीन आकाश अपनी सारी रहस्यमय गरिमा मे हमारे सिरो के ऊपर छाया हुआ था। रूस की गर्मियो की रात की विशिष्ट, अभिभूत कर देनेवाली और ताजगी भरी सुगध फेफडो मे भर रही थी और उससे हृदय मे मीठी कसक उठ रही थी। चारो ओर कही कोई ध्वनि, कोई स्वर न था। बस कभी-कभार ही पास की नदी मे किसी वडी मछली के उछलने से जोर से छपछपाहट होती और दोड आई लहर से तट के सरकडो मे हुई हल्की सी आहट सुनाई देती सिर्फ अलाव ही धीरे-धीरे तड-तड करते जल रहे थे।

लडके इन अलावो के इर्द-गिर्द ही वैठे थे और वे दो कुत्ते भी वैठे थे, जो मुझे काट खाने को इतने उतावले हो उठे थे। काफी देर तक वे मेरी उपस्थिति को शाति से स्वीकार नही कर पा रहे थे और उनीदे से आखे मिचमिचाते और तिरछी नजरो से अलावो की ओर देखते हुए रह-रहकर गुर्रा उठते – मानो उनका असाधारण अभिमान उन्हे कचोटता। पहले वे गुर्राते रहे, फिर धीरे-धीरे किकियाने लगे, मानो इस बात पर खेद प्रकट कर रहे हो कि अपनी इच्छा पूरी नही कर सकते। कुल पाच लडके थे वहा फेद्या, पव्लूशा, इल्यूशा, कोस्त्या और वान्या। (उनकी बातचीत से मुझे उनके नाम पता चले और अब मैं तुरत ही पाठको को उनसे परिचित कराना चाहता हू।)

लडको मे सबसे वडा था फेद्या। वह लगभग चौदह बरस का लगता था। सुघड शरीर, सुदर, किंतु कुछ छोटे-छोटे नाक-नक्श, सुनहरी घुघराले बाल ओर होठो पर सदा छाई रहनेवाली मुस्कान, जिसमे प्रसन्नता भी थी और अन्यमनस्कता भी। उसके हाव-भाव से साफ लगता था कि वह किसी खाते-पीते घर का है और जरूरत से मजबूर होकर नही, बल्कि मौज करने यहा चरागाह मे आया है। वह चटकीली छीट की, पीली गोटवाली कमीज पहने था। नया छोटा कोट उसने ओढ रखा था, जो उसके सकरे कधो पर खिसक-खिसक जाता था। नीली सी पेटी मे कघा लटक रहा था। पिडलियो तक ऊचे बूट जो वह

पहन था, उसके अपने ही थे, उसके पिता के नही। दूसरे लडके पव्लूशा के काले बाल उलझे पुलझे थे, आखे सुरमई, कल्ले चौडे, चेहरा पीला सा, चेचक के दागो से छलनी बडा लेकिन अच्छे तराशवाला मुह। कुल जमा उसका सिर काफी वडा था, जैसा कि हमारे यहा कहा जाता है–हाडी जसा, बदन ठिगना और बेढब सा था। यह तो मानना पडेगा कि लडका देखने मे सुदर नही था, पर फिर भी वह मुझे अच्छा लगा वह एकदम सीधे देखता था और उसकी आखो मे बुद्धिमत्ता का भाव था। उसकी आवाज मे भी शक्ति का आभास होता था। अपनी वेश-भूषा पर वह गर्व नही कर सकता था घर की कती बुनी कमीज और पैवद लगी पतलून–यही था उसका सारा पहनावा। तीसरे बालक इल्यूशा का चेहरा खासा मामूली सा था–लम्बूतरा, चुधी सी आखे, और तोते सी नाक। उसके चेहरे पर किसी ठस, चिडचिडी बेचैनी की छाप थी। होठ भिचे हुए थे और उनमे जरा भी गति न थी, भौहे भी सिकुडी की सिकुडी ही थी–मानो अलाव से वह बराबर चुधिया रहा हो। उसके हल्के पयाल के रग के, प्राय सफेद से बालो की लटे चिपकी सी फैल्ट टोपी के नीचे से जहा तहा निकली हुई थी। वह रह-रहकर दोनो हाथो से अपनी टोपी को कानो पर खीचता था। उसकी टागो और पावो पर मोजो की जगह कपडे की चौडी पट्टिया लिपटी हुई थी और उनके ऊपर वह छाल की जूतिया पहने था। मोटी डोरी तीन बार उसकी कमर पर लिपटी हुई थी और उसके काले रग के झगले को अच्छी तरह सभाले हुए थी। पव्लूशा और वह देखने मे बारह साल से ज्यादा के नही लगते थे। चौथा, कोस्त्या कोई दस बरस का था। उसके विचारमग्न और उदास से चेहरे को देखकर मुझे कौतूहल हो रहा था। उसका सारा चेहरा छोटा सा, दुबला-पतला, नीचे को नुकीला था–गिलहरी जैसा, होठ मुश्किल से नजर आते थे, किंतु उसकी बडी-बडी काली आखे और उनकी तरल चमक एक विचित्र सा प्रभाव डालती थी। वे मानो कोई ऐसी बात कहना चाहती थी, जिसे जबान, कम से कम उसकी जबान, शब्दो मे व्यक्त करने मे असमर्थ थी। वह नाटे कद और कमजोर बदन का था। कपडे भी वह मामूली से ही पहने थे। आखिरी लडके वान्या पर तो पहले मेरी नजर ही नही पडी वह एक चौडी सी चटाई तले आराम से जमीन पर पडा हुआ था, कभी-कभार ही

वह अपना घुघराले वालो वाला सिर चटाई के नीचे से वाहर निकालता था। इस लडके की उम्र सात वरस मे ज्यादा न थी।

सो, मैं एक ओर को झाडी तले लेटा हुआ चुपके-चुपके लडको को देख रहा था। एक अलाव पर छोटा सा पतीला लटक रहा था, उसमे आलू उवल रहे थे। पव्लूशा उन पर नजर रख रहा था, घुटनो के वल खडा होकर वह उवलते पानी मे खपची डालकर देख रहा था। फेद्या कोहनी टेककर लेटा हुआ था, उसके कोट का दामन फैला हुआ था। इल्यूशा कोस्त्या के पास वैठा था और पहले की ही भाति भौहे सिकोडे हुए था। कोस्त्या सिर एक ओर को झुकाए कही दूर नजरे गडाए हुए था। वान्या अपनी चटाई तले हिले-डुले विना लेटा हुआ था। मैंने सोने का वहाना किया। धीरे-धीरे लडको की वातचीत का सिलसिला फिर से शुरु हो गया।

पहले उन्होने कुछ इधर-उधर की वाते की, कल के काम की, घोडो की, और फिर सहसा फेद्या ने मानो बीच मे छूट गई वातचीत का सिलसिला फिर से पकडते हुए इल्यूशा से कहा

"अच्छा तो, तूने घर-भुतने को देखा था?"

"नही देखा तो नही, वह दिखाई देता भी नही," इल्यूशा ने फटी-फटी, मरियल सी आवाज मे जवाव दिया। उसका स्वर चेहरे के हाव-भाव से एकदम मेल खाता था। "हा, उसकी आवाज सुनी थी सो भी मैंने अकेले ने नही।"

"कहा डेरा डाले है वह?" पव्लूशा ने पूछा।

"पुरानी मिल मे।"

"अरे! तू क्या मिल मे जाता है?"

"और नही तो क्या। मेरा भाई अव्यूश्का और मैं कागज चिकनाते है।'

"वाह रे, कामगार बन गया!"

"अच्छा तो कैसे तूने आवाज सुनी थी?" फेद्या ने पूछा।

"अभी वताता हू। हुआ यह कि अव्यूश्का और मैं, और वह फ्योदर मिखेयेव्स्की, और इवाश्का कसोइ, साथ मे वह लाल टीले वाला इवाश्का भी, और इवाश्का सुखारूकव और दूसरे भी लडके, वस पूरी पाली के ही लडके थे हम सो हमे मिल मे रात काटनी पडी, काटनी तो क्या पडी, वह

हमारा मुखिया नजारव बोला कि भई लडको कल काम बहुत है, तो तुम क्या बेकार अब घर जाओगे, मत जाओ। सो हम वही रुक गए। सब लेट गए पास-पास ही और तभी अव्यूश्का कहने लगा कि भाइयो अगर कही यहा घर-भुतना आ गया तो? और बस उसके इतना कहने की देर थी कि हमारे ऊपर कोई चलने लगा, हम लोग तो नीचे की मजिल मे लेटे हुए थे, और वह ऊपर डग नाप रहा था, जहा चक्के है। वह ऐसे टहल रहा था और तख्ते तो बस उसके बोझ से मारे झुके जा रहे थे, चरमरा रहे थे, हमारे सिरो के ऊपर से होता हुआ वह गुजर गया ओर अचानक चक्के पर जोर से पानी गिरने लगा, चक्का खडखडाया खडखडाया और लो चल दिया, और पानी के डट्टे तो बद थे। हम हरान यह किसने डट्टे उठा दिए कि पानी बहने लगा। चक्का थोडी देर घूमा और फिर रुक गया। अब वह ऊपर के दरवाजे की ओर चल दिया और जीने मे उतरने लगा वडे इत्मीनान मे वह उतरता जाए, मीढिया तो जैसे उसके बोझ मे कराह उठी आखिर वह हमारे दरवाजे तक आ गया, थोडी देर खडा रहा खडा रहा और फिर दरवाजा एकदम सारा का सारा खुल गया। हमारी तो बस सिट्टी-पिट्टी गुम! पर देखा तो कुछ है ही नही और अचानक देखते क्या है कि एक टकी का जाल हिलने लगा, फिर वह उठा, उठता गया, फिर नीचे हो गया, हवा मे यो घूमा जैसे कोई उसे फटक रहा हो और फिर अपनी जगह जा टिका। अब एक दूसरी टकी के पास एक काटा अपनी खूटी से उतर गया और फिर खूटी पर जा लटका, फिर मानो कोई दरवाजे की ओर चल दिया और अचानक ऐसे जोर से कोई खासा-खखारा, बडी भारी-भारी आवाज मे। हम सब तो बस एक दूसरे से चिपक गए, सिर दुबकाने लगे तोबा कितना डर गए थे हम!"

"ओहो!" पव्लूशा बोला। 'पर वह खासा क्यो?"

पता नही, शायद सीलन थी, इसलिए।"

थोडी देर तक सब चुप रहे।

"क्यो आलू उबल गए क्या?' फेद्या ने पूछा।

पव्लूशा ने छपटी मे छूकर देखे।

नही अभी कच्चे ह बाप रे, कैसे जोर का छपाका हुआ।' नदी

की ओर मुह मोडकर वह बोला, 'जरूर कोई बडी मछली है वह देखो, तारा टूटा।"

"लो, मैं एक मजेदार किस्सा सुनाता हू,' कोस्त्या अपनी पतली सी आवाज मे बोलने लगा। "सुनो भाइयो अभी उस दिन बापू ने मेरे सामने यह बात सुनाई थी।"

"अच्छा तो सुना," फेद्या ने मानो आज्ञा देते हुए कहा।

"गव्रीला को तो तुम जानते ही हो, वही जो गाव मे बढई है।"

"हा, जानते है।"

"पता है क्यो वह हमेशा इतना उदास, खोया-खोया रहता है, कभी हसता-बोलता नही, पता है? सुनो, मैं बताता हू बापू बता रहे थे कि एक दिन वह गया जी जगल मे, जगली अखरोट बीनने। गया जो जगल मे, तो वहा रास्ता भूल गया, न जाने कहा जा पहुचा, कहा भटक गया। इधर भी जाए, उधर भी जाए, पर नही, कही रास्ता मिले ही नही। ऊपर से रात घिरती आ रही थी। लो जी, आखिर वह एक पेड तले बैठ गया। सोचने लगा कि चलो, सुबह होने तक यही बैठ लेता हू। सो जी वह बैठा-बैठा ऊघने लगा और सो गया। अचानक सुनता क्या है कि कोई उसे पुकार रहा है। इधर-उधर देखा पर कोई है ही नही। वह फिर ऊघने लगा, फिर वही पुकार सुनाई दी। वह फिर ताकने लगा, आखिर जी देखता क्या है कि उसके सामने पेड की डाली पर जलपरी बैठी है, झूलती जा रही है, उसे बुला रही हे और खुद हसी से लोट-पोट हो रही है अब, भैया जी, रात तो चादनी थी, ऐसी चादनी कि बस एक-एक पत्ता दिखाई देता था। सो, लो जी वह उसको बुलाए जाए, और खुद ऐसी गोरी-चिट्टी डाली पर बैठी हुई थी, जैसे डेस मछली या रोच या फिर वो कार्प मछली भी यो चादी सी चमकती है अब, भैया जी, गव्रीला बढई के होश हवास गुम, उधर वो जलपरी उसे इशारे किए जाए, हस-हसकर बुलाती जाए। गव्रीला तो उठकर चल ही दिया था, पर यह समझो कि भगवान ने उसके दिल मे डाल दी उसने अपनी छाती पर सलीब का निशान बना ही लिया पता है कितनी मुश्किल हुई थी उसे ऐसा करने मे, वह कह रहा था हाथ तो जैसे पत्थर का हो गया था, उठता ही न था। ओफ, कमबख्त,

चल! बस भैया जी, जैसे ही उसने सलीब का निशान बनाया जलपरी का हसना बद, और लगी वह फूट-फूटकर रोने रोती जाए, रोती जाए, बालो से आखे पोछती जाए, और बाल तो उसके हरे-हरे थे, जैसे तुम्हारा मन। सो जी, गव्रीला उसे देखता रहा, देखता रहा और आखिर पूछ बैठा अरी जलपरी, तू रोती क्यो है?' जलपरी ने भी उसे तुरत जवाब दिया, बोली अगर तू सलीब का निशान न बनाता, तो आखिरी दिन तक मौज से मेरे साथ रहता, रोना मुझे इसी बात का है, इसीलिए मैं दुखी हू कि तूने सलीब का निशान बनाया, पर मै अकेली दुखी नही रहूगी, जा, तू भी मरते दम तक अब दुखी रहेगा। लो जी, बस इतना कहकर वह तो गायब हो गई और गव्रीला को भी फौरन घर का रास्ता समझ मे आ गया बस, तभी से वह इतना उदास-उदास रहने लगा है।"

'हु, देखो तो!" कुछ देर की खामोशी के बाद फेद्या बोला। "कैसे कोई यह भुतनी-वुतनी ईसाई आत्मा को भ्रस्ट कर सकती है—आखिर गव्रीला ने उसका कहना तो माना नही था?"

'बस, ऐसे ही होता है।" कोस्त्या बोला। "गव्रीला भी कहे था कि उसकी आवाज इतनी पतली और दयनीय थी जैसे कोई मेढकी हो।"

तेरे बापू ने खुद यह बात सुनाई थी क्या?" फेद्या पूछे जा रहा था।

"हा। म बिस्तर मे लेटा था, सब कुछ सुन रहा था।'

"गजब की बात हे! उसे भला काहे की उदासी! हा, भई, जरूर वह जलपरी को भा गया होगा, तभी तो वह उसे बुला रही थी।"

"अजी हा, भा गया!" इल्यूशा बोल पडा। 'जरूर भाएगा! वह तो उसे गुदगुदाकर मार डालना चाहती थी, समझे। इन जलपरियो का काम ही यही हे।'

'यहा भी तो जलपरिया होगी," फेद्या ने कहा।

"नही, यह जगह साफ ह," कोस्त्या ने जवाब दिया। "बस यह नदी ही पास है, और तो कुछ नही।"

सब चुप हो गए। अचानक कही दूर सुदीर्घ, बिल्कुल विलाप जैसी चीख गूजी। यह रात्रि की उन रहस्यमयी ध्वनियो मे से एक थी, जो गहन नीरवता

मे सहसा उत्पन्न हो जाती है, हवा मे उठती है, गुजायमान होती रहती है और फिर धीरे-धीरे विलीन होती हुई दूर चली जाती है। कान लगाए तो लगता है कोई आवाज नही है, पर एक हल्की सी गूज गूजती रहती है।

ऐसा लगता था मानो ऐन आसमान के पास किसी ने बहुत ही लबी चीख छोडी और फिर जगल मे कोई उसके जवाब मे तीखी आवाज़ मे खिलखिलाकर हसा और नदी के वक्ष पर सरसरी सी फुफकार बढ गई। लडको ने एक दूसरे की ओर देखा, सिहर उठे

"ईसा हमारे साथ है!" इल्यूशा बुदबुदाया।

"वाह रे, कबूतरो!" पव्लूशा चिल्लाया। 'क्यो काप उठे? देखो, आलू उबल गए।" सब लडके पतीले के पास आ गए और गरम-गरम भाप छोडते आलू खाने लगे, सिर्फ वान्या ही हिला-डुला नही। "अरे, खाएगा नही क्या?" पव्लूशा ने पूछा।

पर वह अपनी चटाई के नीचे से नही निकला। पतीला जल्दी ही खाली हो गया।

"अच्छा, तुमने सुना, अभी उस दिन हमारे यहा वर्नावित्सी मे क्या हुआ?" इल्यूशा ने बात छेडी।

"बाध के पास?" फेद्या ने पूछा।

"हा, हा, वही, टूटे बाध के पास। वह है असली भुतहा जगह, और इतनी वीरान। चारो ओर खड्ड, गड्ढे, निचाने है और इतने साप है वहा "

"अच्छा, बता तो क्या हुआ वहा?"

"सुनो, क्या हुआ वहा। तुझे फेद्या शायद पता नही, पर वहा एक आदमी डूब गया था, बहुत पहले जब पानी गहरा था। तो उसकी कब्र भी वही पर है। वैसे तो अब कब्र बस जरा सी ही दिखती है, एक ढूह सा ही रह गया है तो हुआ यह कि कुछ दिन पहले कारिंदे ने येर्मील शिकारिये को बुलाया। वह येर्मील है न, जो शिकारी कुत्तो को पालता है। कुत्ते तो उसके सब मर गए है, पता नही क्यो उसके पास रहते ही नही, कभी नही रहे, वैसे काम वह अपना खूब जानता है। अच्छा तो कारिंदे ने येर्मील को बुलाया और बोला कि जा डाक ले आ। हमारे यहा हमेशा येर्मील डाक लेने जाता है। सो येर्मील शहर

चला गया, बस वहा उसने कुछ देर-वेर कर दी, वापस जब चला, तो पिए हुए था। घोडे पर वह आ रहा था, रात पड गई, चादनी रात तो आया येर्मील बाध पर से, बस ऐसा रास्ता निकला उसका। लो जी, चला आ रहा येर्मील शिकारिया और देखता क्या है कि जहा वो कब्र है न, वही ढूह पर एक मेमना टहल रहा है—ऐसा घुघराले रेशो वाला, सफेद-सफेद। सो येर्मील ने सोचा क्यो न मैं इसे उठा लू। क्या यहा बेकार जाएगा। बस वह घोडे से उतरा और मेमने को गोद मे उठा लिया। मेमना भी चुपके से गोद मे आ गया। बस उसे उठाकर येर्मील घोडे की ओर चल दिया, और घोडा लगा थूथनी फेरने, फुफकारने, पर खैर उसने घोडे को फटकारा और मेमने को लेकर उस पर सवार हो गया, आगे चल दिया। मेमने को उसने अपने सामने रखा हुआ था। वह मेमने की ओर देखे और मेमना भी सीधा उसकी आखो मे आखे डालकर देखता जाए। बस डर गया जी येर्मील शिकारिया याद नही पडता कि कभी कोई मेमना यो ताकता हो, पर खैर कोई बात नही, वह मेमने को सहलाने लगा, बोला 'पुच-पुच-पुच!' लो जी मेमने ने भी दात निकाले और बोल पडा 'पुच-पुच-पुच'

कहानी कहनेवाले के मुह से यह आखिरी शब्द निकला भी न था कि सहसा दोनो कुत्ते एकबारगी उठ खडे हुए, जोर-जोर से भौकते हुए अलाव से दूर लपके और अधेरे मे ओझल हो गए। सब लडके डर गए, वान्या झट से अपनी चटाई तले से निकल आया, पव्लूशा चिल्लाता हुआ कुत्तो के पीछे दौडा। उनके भौकने की आवाज दूर होती जा रही थी बौखला उठे घोडो के झुड की बेचैनी भरी भगदड की आवाज आई। पव्लूशा जोर से चिल्लाया "भूरे! भूचका!" कुछ क्षण बाद कुत्तो का भौकना बद हो गया, पव्लूशा की आवाज अब दूर से आ रही थी कुछ और क्षण बीते, लडके हैरान-परेशान से एक दूसरे की ओर देख रहे थे, मानो यह प्रतीक्षा करते हुए कि क्या होगा सहसा तेज़ी से दौडते घोडे की टापे सुनाई दी, घोडा अलाव के बिल्कुल पास ही झटके मे रुक गया, उसका अयाल पकडकर पव्लूशा फुर्ती से नीचे कूद पडा। दोनो कुत्ते प्रकाश के घेरे मे उछल आए और तुरत ही अपनी लाल-लाल जीभे बाहर निकाले बैठ गए।

"क्या हुआ ? क्या था ?" लडको ने पूछा।

"कुछ नही," पावेल ने जवाब दिया और घोडे की ओर हाथ हिलाया। "ऐसे ही कुत्तो को कुछ खटका हुआ होगा। मैंने सोचा था, भेडिया आ गया," लापरवाही से उसने बात पूरी की। वह पूरी छाती फुलाकर सास ले रहा था।

मै बरबस विमुग्ध सा पव्लूशा को देखने लगा। इस क्षण वह बहुत अच्छा लग रहा था। उसका असुदर मुखडा घोडा दौडाने से दमक उठा था और उससे बहादुरी और दृढता झलकती थी। हाथ मे एक सटी तक भी लिए बिना, रात को वह अकेले ही, बेझिझक भेडिये का सामने करने लपका था। "कितना प्यारा लडका है!" उसे देखते हुए मैं सोच रहा था।

"देखे है क्या यहा भेडिए ?" डरपोक कोस्त्या ने पूछा।

"यहा हमेशा बहुत होते है," पव्लूशा ने जवाब दिया। "पर वे तो जाडो मे ही तग करते है।"

वह फिर से अलाव के पास बैठ गया। जमीन पर बैठते हुए उसने एक कुत्ते के झबरीले सिर पर हाथ रख लिया। कुत्ता खुश हो गया, बडी देर तक उसने सिर नही घुमाया और तिरछी नजर से कृतज्ञता और गर्व के साथ पव्लूशा को देखता रहा।

वान्या फिर से चटाई के नीचे दुबक गया।

"हा तो, इल्यूशा, कैसी डरावनी बाते तू सुना रहा था," फिर से फेद्या ने बातो का सिलसिला शुरू किया, सम्पन्न घर का होने के नाते उसे लडको की बातचीत मे अगुवाई करनी पडती थी। (खुद वह कम ही बोलता था, मानो अपना मान बनाए रखने के लिए)। "इधर ये कुत्ते भी न जाने क्यो भौक पडे। सचमुच ही मैंने सुना था कि तुम्हारी वह जगह भूतो का अड्डा है।"

"वर्नावित्सी ? और नही तो क्या। पूरा अड्डा ही है! कहते है वहा कई बार बूढे मालिक को देखा है—स्वर्गीय मालिक को। लबा कप्तान पहने घूमता रहता है, आहे भरता जाता है और जमीन पर कुछ ढूढता रहता है। सुना है एक बार त्रफीमिच बाबा ने उसे वहा देखा था, पूछने लगा 'मालिक क्या ढूढ रहे है ?''

पूछा था उसने ?" आश्चर्यचकित फेद्या बीच मे बोल उठा।

हा, पूछा था।"

"वडा वहादुर है तब तो वह तो क्या जवाव दिया उसने।"

'वोला, 'तोड़ वूटी* ढूढ रहा हू'। ऐसे खोखली आवाज मे कहा तोड़-वूटी। 'मालिक, तोड़-वूटी का क्या करोगे?' वोला 'कब्र का वोझ नही सहा जाता। वाहर निकलना चाहता हू, वाहर '"

"जग देखो तो थोडा जिया था क्या! और जीना चाहता है," फेद्या ने कहा।

"क्या अजूबा है!" कोस्त्या वोला। "मैं तो सोचता था कि शनिवार वाले श्राद्ध को ही मरे हुओ को देखा जा सकता है।"

"मरे हुओ को तो कभी भी देखा जा सकता है," इल्यूशा ने विश्वासपूर्वक वात का सूत्र पकडा। मैं देख रहा था कि गाव के अधविश्वासो के वारे मे वही सबसे ज्यादा जानता है। "शनिवार वाले श्राद्ध को तो तुम जीते हुओ को भी देख सकते हो, उनको, जिनकी उस साल मरने की वारी है। वस रात को गिरजे के ओसारे पर वैठ जाओ और सडक की ओर देखते रहो। वस जिनकी मरने की वारी है, वे आते दिखेगे। हमारे यहा पिछले साल वुढिया उल्याना देखने गई थी।"

"देखा उसने किसी को?" कोस्त्या ने कौतूहल से पूछा।

"और नही तो क्या। पहले तो वह वडी देर वैठी रही। कुछ दिखा नही, न कुछ सुनाई दिया वस लगता था कही एक कुत्ता रह-रहकर भौक उठता था अचानक देखती क्या है कि सडक पर एक लडका चला आ रहा है। सिर्फ एक कमीज पहने। वह ध्यान से देखने लगी—इवाश्का फेदासेयेव चला आ रहा था "

"वही, जो वसत मे मर गया?' फेद्या ने वात काटी।

"हा, वही। चलता आ रहा था और सिर नही उठा रहा था पर उल्याना वुढिया उसे पहचान गई फिर देखती है कि एक वुढिया चली आ

---

* तोड वूटी—लोक विश्वास के अनुसार ऐसी वूटी, जिससे सभी कुडे, ताले टूट जाते है।—स०

रही है   वह ध्यान से देखने लगी, देखती जाए, देखती जाए   हे भगवान! – यह तो वह खुद ही चली आ रही थी।"

"सच?" फेद्या ने पूछा।

"हा, सचमुच वही थी।"

"पर वह तो अभी मरी नही?"

"तो क्या, साल तो अभी पूरा नही हुआ। उसकी हालत तो देखो जैसे-तैसे प्राण अटके हुए है।"

फिर से सब शात हो गए। पव्लूशा ने मुट्ठी भर सूखी टहनिया आग मे डाली। सहसा तेज हो उठी लौ मे वे एकदम काली-काली दिखी, तडतडाने, धुआ छोडने और ऐठने लगी, जले सिरे ऊपर को उठ-उठ जाते थे। थरथराती हुई चमक चारो ओर फैली, खास तौर पर ऊपर को। सहसा न जाने कहा से एक सफेद कबूतर प्रकाश की परिधि मे उड आया, सहमा-सहमा सा एक ही जगह पर मडराया, गरम दमक से चमचमा उठा और पख फडफडाता हुआ गायब हो गया।

"लगता है भटक गया है," पव्लूशा बोला, "अब उडता जाएगा, जब तक कही टकरा नही जाएगा। जहा टकराएगा बस वही रात काटेगा।"

"पव्लूशा, हो सकता है, यह कोई पवित्र आत्मा स्वर्ग को जा रही हो? है?" कोस्त्या ने कहा।

पाव्लूशा ने एक और मुट्ठी टहनियो की आग पर फेकी।

"हो सकता है," आखिर उसने जवाब दिया।

"अच्छा, पव्लूशा, यह तो बता, तुम्हारे यहा शलामवो मे भी वो दैवी चमत्कार* हुआ था?" फेद्या ने फिर से बात छेडी।

"जब वो सूरज दिखाई देना बद हो गया था? क्यो नही।"

"खूब डर गए होगे तुम लोग तो?"

"हा, हम अकेले थोडे ही डरे थे। हमारा मालिक भी हमे पहले से बताता रहा था कि हमे दैवी चमत्कार देखने को मिलेगा, पर जब अधेरा हुआ, तो

---

* ग्रामीण लोग सूर्य ग्रहण को यही कहते थे। – ले०

मुना है, खुद ही ऐसा डर गया कि पूछो मत और वो जो उसकी वावर्चिन है न उमने तो जैसे ही अधेरा हुआ उठाकर मारी हाडिया-वाडिया तोड डाली। वोली अब कौन खाएगा! कयामत का दिन आ गया।' वस सारा खाना चूल्हे म गिर गया। हमारे गाव मे तो भैया ऐसी-ऐसी अफवाह फैल गई कि अब सफेद भेडिये धरती को रौदेगे, लोगो को फाडकर खा जाएगे, आसमान से खूनी पछी झपटेगे, और नही तो त्रीश्का ही प्रकट होगा।

"कौन त्रीश्का?" कोस्त्या ने पूछा।

"तुझे पता नही?" इल्यूशा वडे जोश मे वोल उठा। "अरे वाह रे, किस गाव का हे तू, जो तुझे इतना भी नही पता कि त्रीश्का कौन है? घर के घोघचू ही है तुम्हारे गाव वाले, निरे घोघचू। अरे, त्रीश्का ऐसा अद्भुत आदमी होगा, जो एक दिन आएगा, और वो अद्भुत आदमी आएगा ऐसा कि कोई उसे पकड नही सकेगा और न उसका कुछ विगाडा जा सकेगा ऐसा अद्भुत आदमी होगा। अव मान लो किसान उसे पकडना चाहगे डडे, लाठिया लेके उसे पकडने निकलेगे, घेर लेगे, और वह उनकी आखो मे ऐसी धूल झोकेगा कि वे एक दूसरे को ही मार डालेगे। उसे मान लो, जेल मे वद कर देगे, वह पीने को पानी मागेगा, उसी मे डुवकी लगा लेगा और वस गायव हो जाएगा। उसे वेडियो, जजीरो मे कस देगे, वह ताली वजाएगा और वे सव वही गिर जाएगी। बस यह त्रीश्का गाव-गाव, नगर-नगर घूमता फिरेगा और भैया रे, ऐसा धूर्त, ऐसा कुटिल होगा यह त्रीश्का कि सभी भले लोगो को, ईसा के भक्तो को भटकाएगा और कोई उसका कुछ बिगाड नही सकेगा ऐसा अद्भुत, धूर्त आदमी होगा वह!"

"हा, ऐसा ही होगा वह," पव्लूशा ने धीर-गभीर स्वर मे अपनी वात जारी रखी। "वस उसी का इतजार था हमारे यहा। वडे-वडे कह रहे थे कि जैसे ही वो दैवी चमत्कार लगेगा, तभी त्रीश्का आ पहुचेगा। तो लो जी, चमत्कार भी हो गया। और सव लोग घरो से निकल आए, खेत मे जमा हो गए, देखने लगे कि क्या होता है। हमारे यहा तो, तुम्हे पता ही है, जगह खुली है। अचानक देखते क्या है कि उधर टीले की ओर से कोई आदमी आ रहा है, ऐसा कमाल का अजीवोगरीव सिर उसका। सव चिल्ला पडे 'हाय

त्रीश्का आ गया! हाय त्रीश्का आ गया!' और भाग खडे हुए! हमारे गाव का मुखिया नाले मे जा कूदा, उसकी घरवाली फाटक मे ही फस गई, चीखने-चिल्लाने लगी, अपने कुत्ते को ही इतना डरा दिया कि वह जजीर तोडकर वाड के पार कूदा और दुम दबाकर जगल मे भाग गया। और वो कूज्का का बाप है न, दराफेइच, वह जई के खेत मे दुबक गया, और लगा बटेर की तरह चीखने 'शायद, पछी पर तो हत्यारा हाथ न ही उठाए।' ओह ऐसी भगदड मची कि पूछो मत! आदमी वो हमारे गाव का ही था ववीला, जो लकडी के पीपे बनाता है। उसने मटका खरीदा था और खाली मटका सिर पर डाले आ रहा था।"

सब लडके हसने लगे और फिर पल भर को चुप हो गए, जैसा कि प्राय खुली हवा मे बतिया रहे लोगो के साथ होता है। मैंने चारो ओर नजर दौडाई भव्य रात थी, साझ ढले की ओसीली ताजगी की जगह अब मध्य रात्रि की खुश्क गरमाहट ने ले ली थी। नीद मे डूबे खेतो पर रात का मुलायम परदा पडा हुआ था और उसके उठने मे, प्रभात की पहली सरसराहट, पहली चहक होने मे, ओस की पहली बूदो की झिलमिलाहट होने मे अभी काफी देर थी। आकाश पर चाद नही था, उसके देर से निकलने के दिन थे। अनगिनत सुनहरे तारे टिमटिमाते हुए मथर गति से आकाश गगा की ओर बढते प्रतीत होते थे। और सचमुच ही उन्हे निहारते हुए लगता था मानो हम स्वय पृथ्वी की अतहीन, भवर सी गति का अनुभव कर रहे हो। सहसा नदी पर एक के बाद एक दो वार अजीब सी, दयनीय चीख गूजी और फिर कुछ क्षण पश्चात दूर से आई

कोस्त्या काप उठा "क्या है यह?"

"बगुला चीखा है," पव्लूशा ने शात भाव से कहा।

"बगुला," कोस्त्या ने दोहराया। "पव्लूशा, कल शाम को मैंने क्या सुना था, शायद तुझे पता हो "

"क्या सुना था तूने?"

"अभी बताता हू। मै कामेन्नया ग्रिदा से शाश्किनो जा रहा था, पहले तो मैं हेजल की झाडियो के झुरमुट मे चलता रहा, फिर वो जो छोटी सी चरागाह है न उसमे चलने लगा, पता है, जहा वह खोह की ओर को रास्ता है,

वहा, तुझे पता होगा, एक वडा गड्ढा है, जिसमे वसत मे पिघली बर्फ का पानी भरा रहता है। गड्ढा सारा नरकट के झाड-झखाड से भरा है। वस इसी गड्ढे के पास से मैं जा रहा था कि भैया अचानक गड्ढे मे कोई कराह उठा, ऐसी दद भरी आवाज थी "आ-आ-ह – आ-आ-ह " मैं तो भैया रे वुरी तरह से डर गया साझ का वकत और वो आवाज ऐसी दर्दीली थी। लगता था, वस मैं खुद भी रो पडगा। क्या हो सकता था यह ? है ?"

"इस गड्ढे मे पार साल चोरो ने वनपाल अकीम को डुवो दिया था," पव्लूशा ने राय दी। "हो सकता है उसकी आत्मा विलख रही हो "

"हे भगवान," कोस्त्या की वडी-वडी आखे भय और विस्मय से और भी फैल गई। "मुझे तो पता ही नही था कि अकीम को वहा डुवोया था, नही तो मैं डर के मारे मर ही जाता।"

"कहते है, ऐसे छोटे-छोटे मेढक भी होते है," पव्लूशा ने अपनी वात जारी रखी। "वे भी वोलते है तो रोते लगते है।"

"मेढक ? नही, वो मेढक नही थे मेढक कैसे (नदी पर वगुले ने फिर चीत्कार किया।) ओफ कमवखत!" कोस्त्या के मुह से वरवस निकला। "जैसे वन-भुतना चीख रहा हो।"

"वन-भुतना नही चीखता, वह तो गूगा है," इल्यूशा ने वात पकडी, "वह तो वस तालिया वजाता है "

"तुमने देखा है क्या वन-भुतने को?" फेद्या ने चुटकी लेते हुए पूछा।

"नही, देखा नही। और भगवान न करे, कभी सामना हो। पर दूसरो ने देखा है। अभी थोडे दिन पहले हमारे गाव के एक आदमी को उसने भटकाया था, वडी देर तक वह जगल मे भटकता रहा, वस एक ही मैदान के चक्कर काटता रहा मुश्किल से दिन चढे कही घर पहुचा।"

"तो क्या, देखा था उसने?"

"हा, देखा था। कहता था, वहुत वडा है वह, अधियाला, ऐसा चिथडो मे लिपटा सा और पेड के पीछे छिपता जाता है, ठीक तरह से कुछ नही दिखता, जैसे कि वस चादनी से छिप रहा हो और अपनी इत्ती वडी-वडी आखे झपकाता जाता है, घूरता जाता है

"ओह! थू!" थोडा कापते और कधे बिचकाते हुए फेद्या ने दुतकारा।
"पता नही क्यो यह गदगी धरती पर फैली हुई है?" पावेल ने कहा।
"देख, बुरा मत कह, कही सुन न ले," इल्यूशा बोला।
फिर से चुप्पी छा गई।
"देखो भाइयो, देखो," सहसा वान्या का बाल स्वर सुनाई दिया। "देखो तो भगवान के प्यारे-प्यारे तारो को, मधुमक्खियो से मडरा रहे हैं।"
उसने चटाई के नीचे से अपना ताजगी भरा मुखडा बाहर निकाला, मुट्ठी पर ठोडी रखी और धीरे-धीरे अपनी मृदु आखे ऊपर उठाई। सब लडको की आखे आसमान की ओर उठ गई और फिर देर तक वही टिकी रही।
"वान्या," फेद्या दुलार से बोला, "तेरी बहन अन्यूत्का ठीक-ठाक है न?"
"हा, ठीक है," वान्या ने थोडा तुतलाते हुए जवाब दिया।
"उससे कहियो—हमारे यहा क्यो नही आती?"
"पता नही।"
"कह देना कि आया करे।"
"कह दूगा।"
"उस से कहियो मैं उसे मिठाई दूगा।"
"मुझे देगा?"
"तुझे भी दे दूगा।"
वान्या ने एक उसास भरी।
"नही, मुझे नही चाहिए। तुम उसे ही दे देना, वह इतनी भली है।"
वान्या ने फिर से अपना सिर जमीन पर टिका लिया। पव्लूशा खडा हो गया और खाली पतीला उठाकर चल दिया।
"कहा चला?" फेद्या ने पूछा।
"नदी पर, पानी लेने प्यास लगी है।"
कुत्ते भी उठकर उसके पीछे चल दिए।
"देख, नदी मे गिर मत जाइयो!" इल्यूशा ने चिल्लाकर कहा।
"गिरेगा क्यो?" फेद्या बोला। "सभलकर रहेगा।"
"हु, सभलकर रहेगा। कुछ भी हो सकता है वह झुकेगा, पानी भरने

लगेगा और जल-भुतना उसका हाथ पकडकर खीच लेगा। फिर लोग कहेगे कि जी वह तो पानी मे गिर गया गिरा-विरा क्या ? वो देखो सरकडो मे पहुच गया," आहट सुनते हुए उसने कहा।

सचमुच ही सरकडो मे ऐसी सरसराहट हुई, जैसे कोई उन्हे हाथ से हटा रहा हो।

"अच्छा, क्या यह सच है कि अकुलीना बावली उसी दिन से हुई, जब वह पानी मे गिरी थी ?" कोस्त्या ने पूछा।

"हा, तभी से। देखो तो क्या हाल हो गया। सुना है, पहले बडी सुदर थी। जल-भुतने ने उसका दिमाग खराब कर दिया। उसे यह उम्मीद नही होगी कि अकुलीना को इतनी जल्दी निकाल लेगे। बस उसने उसे अपने यहा, नदी के तल पर, खराब कर दिया।"

(इस अकुलीना को मैने अपनी आखो कई बार देखा था। चीथडो मे लिपटी बेहद दुबली, कोयले सा काला चेहरा, आखे एकदम भावशून्य, हर वक्त खीसे निपोडे वह कही सडक पर घटो एक ही जगह खडी रहती है, अपनी हडियल बाहे छाती पर बाधे और धीरे-धीरे पैर बदलती डोलती रहती है, जैसे पिजडे मे बद कोई जगली जानवर हो। उसे कुछ भी कहो वह कुछ नही समझती, बस कभी-कभी ठहाके मारके हसने लगती है।)

"सुना है," कोस्त्या कह रहा था, "अकुलीना इसीलिए नदी मे जा कूदी थी कि उसके प्रेमी ने उसे धोखा दिया था।"

"हा, इसीलिए।"

"याद है, एक वास्या था ?" कोस्त्या ने दुखद स्वर मे कहा।

' कौन वास्या ?" फेद्या ने पूछा।

"वही, जो डूब गया था," कोस्त्या ने जवाब दिया। "इसी नदी मे। कितना अच्छा लडका था ! ओह, कितना अच्छा ! और मा उसकी, फेक्लीस्ता, उसे कितना प्यार करती थी, अपने वास्या को ! उसे जैसे पता था कि बेटे की पानी मे ही मौत आएगी। गर्मियो मे हम सब बच्चे नदी मे नहाने जाते, तो वह भी हमारे साथ हो लेता, मा उसकी डर के मारे पीली पड जाती। दूसरी लुगाइयो को कुछ परवाह नही, वे अपने कपडे धोने की लकडी की लबी

चिलमचिया उठाए चली जाती। पर, वो फेक्लीस्ता चिलमची जमीन पर रख देती और पुकारने लगती 'लौट आ, मेरे लाल! मत जा, मेरी आखो के तारे!' भगवान जाने डूब भी कैसे गया। तट पर ही तो खेल रहा था, मा भी वही थी, कटी घास के ढेर लगा रही थी अचानक उसने सुना कि कोई पानी मे बुलबुले छोड रहा है, पलटकर देखा तो बस वास्या की टोपी ही पानी पर तैर रही थी। बस तभी से फेक्लीस्ता की अकल मारी गई है। बेटा जहा डूबा था न, उसी जगह आकर लेट जाती है, और भैया रे, लेटकर बस वही गान छेड देती है, – याद है, वास्या वो गाना गाया करता था? – बस वही गान वह भी छेडती है और खुद रोती जाती है, भगवान के आगे अपना दुखडा रोती है "

"लो, पव्लूशा आ रहा है," फेद्या ने कहा।

पानी से भरा पतीला हाथ मे लिए पव्लूशा अलाव के पास आया। थोडी देर चुप रहकर बोला

"क्यो, भाइयो, मामला तो गडबड है।"

"क्या हुआ?" कोस्त्या ने चट से पूछा।

"मैंने वास्या की आवाज सुनी है।"

सब एकदम सिहर उठे।

"अरे, अरे, यह क्या कहता है, तू?" कोस्त्या जल्दी-जल्दी बुदबुदाया।

"भगवान कसम। मै पानी की ओर झुकने लगा, तभी सुनता क्या हू, कोई वास्या की आवाज मे मुझे पुकार रहा है और जैसे पानी के नीचे से आवाज आ रही है 'पव्लूशा, ऐ पव्लूशा, इधर आ।' मैं तुरत पीछे हट गया। हा, पानी भर लिया।"

"हे भगवान! हे भगवान!" लडको ने सलीब का निशान बनाते हुए कहा।

"यह तो जल-भुतने ने तुझे बुलाया होगा," फेद्या ने कहा। "हम अभी-अभी वास्या की ही बाते कर रहे थे।"

"ओह, यह तो बुरा सगुन है," इल्यूशा ने धीरे-धीरे बोलते हुए कहा।

"कोई बात नही, हुआ करे," पव्लूशा ने दृढतापूर्वक कहा और बैठ गया। "जो भाग मे लिखा है होकर रहेगा।"

लडके शात हो गए। पव्लूशा के शब्दो का उन पर गहरा असर पडा लगता था। वे मानो सोने की तैयारी करते हुए आग के सामने परसने लगे।

"अरे, यह क्या?" सहसा कोस्त्या ने उठकर पूछा।

पव्लूशा ने कान लगाकर सुना।

"चाहे उड रहे है, चहक रहे है।"

"कहा उडे जा रहे है?"

"उन देशो को, जहा कहते है कभी जाडा नही पडता।"

"क्या ऐसे देश भी हैं?"

"हा, है।"

"दूर है?"

"बहुत दूर, गरम समुद्रो के पार।"

कोस्त्या ने उसास भरी और आखे मूद ली।

लडको के पास आए मुझे तीन घटे हो चले थे। आखिर चाद निकल आया था। मै तो उसे तुरत देख ही नही पाया इतना छोटा और पतला था वह। चद्र विहीन रात पहले की ही भाति राजसी वैभव के साथ फैली हुई थी हा, अब कई तारे, जो थोडी देर पहले आकाश मे बहुत ऊचे दिख रहे थे, धरती के अधेरे सिरे की ओर झुक रहे थे, चारो ओर पूर्ण नीरवता थी, जैसी कि केवल रात्रि के अतिम पहर मे ही होती है, सब कुछ गहरी, अटूट नीद मे डूबा हुआ था, पौ फटने से पहले की नीद मे। हवा मे फैली गधे अब क्षीण पड रही थी, मानो फिर से नमी आती जा रही थी गर्मियो की राते कितनी छोटी होती है! बुझते अलाव के साथ-साथ लडको की बातचीत भी खत्म होती जा रही थी कुत्ते तो ऊघ ही रहे थे, तारो के झिलमिलाते मद प्रकाश मे जहा तक मुझे दीख पडता था, घोडे भी सिर लटकाए सो रहे थे अलस बेसुधी ने मुझे घेर लिया और मेरी आख लग गई।

ताजी हवा का झोका मेरे चेहरे को छूता हुआ बढ गया। मैंने आखे खोली पौ फट रही थी। ऊषा की लाली अभी कही नही छाई थी, पर पूरब मे उजाला हो चला था चारो ओर सब कुछ दिखने लगा, धुधला-धुधला ही, पर दिख रहा था। हल्का सुरमई आकाश उजला होता जा रहा था, उसमे ठडा, नीला

रग भरता जा रहा था। तारे कही टिमटिमाते और ओझल हो जाते, धरती का दामन गीला हो गया था, पत्तियो पर ओस थी। कही-कही से जीवन की ध्वनिया और स्वर आने लगे और प्रभात की बयार फरफराती हुई धरती पर बहने लगी। उसके मधुर स्पर्श से मेरे शरीर मे हल्का सा मीठा-मीठा कपन हुआ। मैं झटपट उठा और लडको के पास गया। धीमे-धीमे सुलगते अलाव के इर्द-गिर्द वे बेसुध सोए पडे थे। केवल पव्लूशा ही आधा उठा और ध्यान से मेरी ओर देखने लगा।

मैने सिर हिलाकर उससे विदा ली और नदी के किनारे-किनारे चल पडा। नदी से भाप उठ रही थी। मैं कोई डेढ मील ही गया हूगा कि मेरे चारो ओर से—भीगी चरागाह मे, और दूर, सामने—जगल से जगल तक फैले हरे-हरे टीलो पर, और पीछे—धूल भरी लबी सडक पर, झिलमिलाती, लाल झाडियो पर और झीने पडते कोहरे तले लज्जा से अपना नीला वक्ष उघाडती नदी पर नया आलोक बरसने लगा, पहले लाल, फिर रक्तिम और फिर सुनहरी हर चीज स्पदित हो रही थी, जाग रही थी, गा रही थी, कलरव कर रही थी, चहक रही थी। ओस की बडी-बडी बूदे सर्वत्र हीरो सी चमक उठी, सामने से गिरजे के घटे के सुस्पष्ट, मानो प्रभात की शीतलता से निखरे स्वर हवा मे तैरते आए और फिर सहसा थकावट मिटा चुके घोडो का झुड मेरे पास से गुजर गया। मेरे परिचित लडके ही उन्हे हाके लिए जा रहे थे।

मुझे खेदपूर्वक इतना और कहना पड रहा है कि उसी वर्ष पव्लूशा नही रहा। वह डूबा नही, घोडे से गिरकर मर गया। दुख की बात है लडका बडा अच्छा था!

१८८४ म लिखी गई कहानी 'हिरनौटा' के लेखक द्मीत्री मामिन सिबिर्याक का जन्म उराल म हुआ और यही उन्होने जीवन के अधिकाश वर्ष बिताए। उराल पहाडो और जगलो का इलाका है जहा १८वी सदी के आरम्भ मे जार प्योत्र प्रथम के जमाने मे रूसी सौदागरो न नाहे के कारखाने बनाये थ। लेखक ने अपने सस्मरणो मे लिखा था "अभी तक मेरी आखो के आगे लकडी का वह पुराना घर है जिसकी पाच खिडकिया चौक पर खुलती थी। उसकी खूबी यह थी कि एक ओर उसकी खिडकिया यूरोप म खुलती थी और दूसरी ओर – एशिया म। मेरे पिता मुझे दूर की पहाडिया दिखाते हुए बताया करते थ वह देखो वे पहाड एशिया म ह हम यूरोप और एशिया की सीमा रेखा पर रहते हैं

लेखक के पिता एक कारखाने के पादरी थे और कोई खास अमीर आदमी नही थे लेकिन उन्ह किताबो का बडा शौक था। वह अपनी आमदनी का बडा भाग किताबे खरीदन पर खर्च करत थ। बेटे को पिता से यह साहित्य प्रेम विरासत म मिला।

मामिन सिबिर्याक उराल के सौदागरो कारखानेदारो और आम लोगो के बारे म उपन्यास लिखते थे। उन दिनो उराल के आम लोग खानो और मिलो मे मजदूरी भी करते थे और साथ ही खेती भी। लेनिन ने मामिन सिबिर्याक के बारे मे कहा था उस लेखक की रचनाओ म हम उराल के लोगो के विशिष्ट जीवन, उनके रहन सहन के सजीव दृश्य पाते ह

मामिन सिबिर्याक ने बच्चो के लिए लगभग १३० रचनाए रची। इनम सबसे प्रसिद्ध है जानवरो के बारे म कहानियो की पुस्तक सुनो कहानी, बिटिया रानी । इसके अलावा नदी किनारे गीत नियाम और हिरनौटा कहानिया भी बहुत लोकप्रिय है। इन रचनाओ म उराल की प्रकृति का काव्यमय चित्रण है और मेहनतकश रूसी व्यक्ति की उच्च नैतिकता उजागर की गई ह।

१९१२ म साठ वर्ष की आयु म मामिन सिबिर्याक का देहात हुआ।

(१)

बहुत दूर कही उराल पहाडो के उत्तरी भाग के घने जगल मे तीच्की नाम का एक गाव था। गाव मे सिर्फ ग्यारह घर थे, या यो कहिए कि दस, क्योकि ग्यारहवा घर सबसे अलग बिल्कुल जगल के पास ही था। गाव के चारो ओर चीड आदि सदाबहार पेडो का वन ऊची दीवार सा खडा था। फर वृक्षो की चोटियो के पीछे कुछ पहाड दिखाई देते थे। इन विशाल नीले-सुरमई पहाडो ने तीच्की को चारो ओर से अपने घेरे मे बद कर रखा था। सबसे पास था 'झरनो का पहाड', जिसकी सफेद चोटी खराब मौसम मे धुधले बादलो के पीछे छिप जाती थी। 'झरनो के पहाड' से बहुत से सोते और झरने बहते थे। ऐसा ही एक झरना तीच्की तक आता था और सर्दी-गर्मी – बारहो महीने – लोग उसका ठडा, ओस सा निर्मल जल पीते थे।

तीच्की मे घर बेतरतीब बने हुए थे, जिसका जहा मन आया बना लिया। दो घर एक नदी के तट पर थे, एक – पहाड की तेज ढलान पर और बाकी –

नदी किनारे इधर-उधर बने हुए थे – तितर-बितर हो गई भेडो के समान। तीच्की मे कोई गली भी नही थी, घरो के बीच बस एक पगडडी चली गई थी। तीच्की वालो को गली की जरूरत ही नही थी, क्योकि उनके पास कोई घोडा-गाडी तक न थी, जिसे वे गली मे चलाते। गर्मियो मे यह गाव दुर्गम दलदलो और झाड-झखाड भरे जगल से घिरा होता था, सो सकरी जगली पगडडियो से भी वहा मुश्किल से ही पहुचा जा सकता था और वह भी सदा नही। बारिशो के दिनो मे पहाडी नदिया उफनती और तीच्की के शिकारियो को तीन-तीन दिन तक पानी उतरने का इतजार करना पडता।

तीच्की के सभी मर्द शिकार के धत्ती थे। सर्दिया हो या गर्मिया वे जगल मे ही घुसे रहते थे – अच्छा था कि जगल भी बगल मे ही था। हर मौसम का अपना शिकार होता था जाडो मे वे भालू, मार्टेन, भेडिये और लोमडी का शिकार करते थे, शरद मे गिलहरी का, वसत मे जगली बकरियो और गर्मियो मे भाति-भाति के पक्षियो का शिकार करते थे। सक्षेप मे, बारहो महीने उनको भारी काम करना होता था, जो अकसर खतरे से खाली नही होता था।

जगल के बिल्कुल पास ही बने घर मे बूढा शिकारी येमेल्या अपने नन्हे पोते ग्रिशूक के साथ रहता था। येमेल्या का लकडी के लट्ठो का बना घर जमीन मे धसा हुआ लगता था, उसमे बस एक ही खिडकी थी। छत की लकडिया कब की सड चुकी थी, चिमनी ईटो का ढेर बनकर रह गई थी। येमेल्या के घर के चारो ओर बाड नही थी, न ही फाटक था और न कोई कोठरी ही। घर के दरवाजे पर बने लट्ठो के चबूतरे तले रात को भूखा लीस्को हूकता रहता था। लीस्को पूरे गाव का एक सबसे अच्छा शिकारी कुत्ता था। हर बार शिकार पर निकलने से पहले येमेल्या बेचारे लीस्को को तीन दिन तक भूखा रखता था, ताकि वह अच्छी तरह शिकार ढूढे।

"दादा दादा अब तो हिरन हिरनौटो के साथ घूम रहे होगे। है न, दादा " एक दिन शाम को नन्हा ग्रिशूक दादा से पूछ रहा था। उसके मुह से बोल मुश्किल से निकल रहे थे।

"हा बेटे, हिरनौटो के साथ घूम रहे है," पेड की छाल से अपने लिए जूता बनाते हुए दादा ने जवाब दिया।

"दादा, हिरनौटा ले आओ, तो कितना अच्छा रहे, है दादा?"

"हा, हा, बेटे, लाएगे। क्यो नही लाएगे। गर्मिया आ गई है, अब हिरन हिरनौटो के साथ कुकुरमाछियो से बचने के लिए घने झुरमुटो मे छिपेगे। बस तभी मैं हिरनौटे का शिकार कर लाऊगा। तुम थोडा सब्र रखो।"

लडके ने कुछ जवाब नही दिया, बस एक ठडी सास भरी। ग्रिशूक सिर्फ छह बरस का था, पिछले दो महीनो से वह लकडी के तख्त पर हिरन की गर्म खाल ओढे पडा हुआ था। बसत मे, जब बर्फ पिघल रही थी, तभी उसे सर्दी लग गई थी और वह तब से ठीक ही नहीं हो पा रहा था। उसका सावला चेहरा पीला पड गया था, लबा हो गया था, आखे बडी बडी लगने लगी थीं, नाक तीखी हो गई थी। येमेल्या देख रहा था कि पोता दिन पर दिन घुलता जा रहा है, पर समझ नही पा रहा था कि क्या करे। जडी-बूटियो का काढा बनाकर भी पिलाता रहा था, दो बार उसे हम्माम मे भी ले गया था—पर बच्चे की हालत सुधर नही रही थी। ग्रिशूक खाता भी कुछ नही था। रोटी का टुकडा चबा लेता और बस। बसत से बकरी का नमक लगा मास बचा हुआ था, पर ग्रिशूक उसकी ओर देखना तक नही चाहता था।

छाल के जूते बन चले थे। दादा सोच रहे थे देखो तो, क्या चाहता है—हिरनौटा जैसे-तैसे हासिल करना ही होगा।"

येमेल्या सत्तर बरस का हो चला था—बाल सफेद, कमर झुकी हुई, शरीर दुबला-पतला और लबी-लबी बाहे। येमेल्या के हाथो की उगलिया मुश्किल से मुडती थीं, मानो वे काठ की बनी हो।

पर चलता वह फुर्ती से था और थोडा-बहुत शिकार भी कर लेता था। हा, बूढे की नजर जवाब देने लग गई थी, खास तौर पर जाडो मे जब धवल हिम झिलमिलाता था, हीरो की कनियो की तरह चमकता था, तब बूढे येमेल्या को बहुत तकलीफ होती थी। येमेल्या की आखो की वजह से ही चिमनी ढह गई थी और छत सड गई थी और खुद भी वह अक्सर घर पर बैठा रहता था, जबकि दूसरे लोग जगल मे होते थे।

बूढे के लिए चैन से घर पर आराम मे रहने के दिन आ गए थे, पर कोई उसकी जगह सभालनेवाला नही था, ऊपर से ग्रिशूक को भी बस उसी का

सहारा रह गया था, बूढे येमेल्या को उसकी देखभाल करनी थी ग्रिशूक के बाप को तीन साल पहले ताप हुआ था, उसी मे वह मर गया था। मा जाडे की एक शाम को बेटे के साथ गाव से घर लौट रही थी, जब भेडियो ने उन्हे आ घेरा था। यह चमत्कार ही था कि बच्चा बच गया। मा की टागो पर जब भेडिये टूट पडे थे, तो उसने बेटे को अपने शरीर से ढक लिया था और ग्रिशूक बच गया था।

बूढे दादा को पोते का पालन-पोषण करना पडा, ऊपर से यह बीमारी आ गई। मुसीबत कभी अकेली नही आती

(२)

जून महीने के आखिरी दिन थे। तीच्की मे इन्ही दिनो सबसे ज्यादा गर्मी पडती थी। बूढे और बच्चे ही घरो पर रह गए थे। शिकारी जगलो मे हिरनो का शिकार करने जा चुके थे। येमेल्या के घर मे बेचारा लीस्को तीन दिन से भूख से हूक रहा था, जैसे भेडिये जाडो मे हूकते है।

"लगता है, येमेल्या शिकार पर जा रहा है," गाव मे औरते कह रही थी।

यह सच था। सचमुच ही, थोडी देर मे येमेल्या तोडेदार बदूक हाथ मे लिये घर से निकला, कुत्ते को खोला और जगल की ओर चल दिया। वह छाल के नए जूते पहने था, कधे पर झोला लटक रहा था, जिसमे रोटी थी। उसने फटा-पुराना कफ्तान* और सिर पर हिरन की खाल का कनटोप पहन रखा था। बूढा कई बरसो से हल्की टोपी नही पहन रहा था, सर्दी-गर्मी मे हिरन की खाल का कनटोप ही पहने रहता था जो उसके गजे सिर की पाले मे भी और गर्मी से भी अच्छी तरह रक्षा करता था।

"अच्छा ग्रिशूक बेटे, अब तुम मेरे आने तक ठीक हो जाओ," येमेल्या

---

* लम्बे ओवरकोट जैसा पहनावा। – स०

ने चलते हुए पोते से कहा। "बुढिया मलान्या तुझे देख जाया करेगी, मैं जाकर तेरे लिए हिरनौटा लाता हू।"

"दादा, हिरनौटा लाओगे न?"

"कहा तो बेटे, ले आऊगा।"

"पीला-पीला हिरनौटा?"

"हा, बच्चे, पीला-पीला "

"अच्छा, मैं तुम्हारी बाट जोहूगा देखना, गोली चलाओगे, तो निशाना न चूकना "

येमेल्या कई दिनो से हिरनो के शिकार पर जाने की सोच रहा था, लेकिन पोते को अकेले नही छोडना चाहता था। मगर अब उसकी हालत कुछ सुधरी लगती थी, सो बूढे ने किस्मत आजमाने का फैसला किया था। और बूढी मलान्या भी ग्रिशूक की देखभाल करने को तैयार हो गई थी—घर पर अकेले बैठे रहने से यही अच्छा था।

जगल येमेल्या के लिए घर के समान ही था। वह जगल को जानता भी कैसे नही, जबकि सारी उम्र वह बदूक और कुत्ते के साथ जगल मे घूमता रहा था। चारो ओर सौ मील तक वह सारी पगडडिया, सारी निशानिया जानता था।

अब जून के अत मे जगल बडा ही सुहावना लग रहा था। तरह-तरह की घास और बूटियो मे रग-बिरगे फूल खिल रहे थे, हवा मे भीनी-भीनी महक थी और आकाश मे गर्मियो का स्निग्ध सूरज चमक रहा था, जगल और घास पर, कलकल बहती नदी और दूर के पहाडो पर प्रकाश बरसा रहा था।

हा, जिधर नजर जाती, वही मनभावना दृश्य नजर आता था। येमेल्या कई बार रुका—सास लेने को और इधर-उधर देखकर आखो से सुख पाने को।

जिस पगडडी पर वह जा रहा था, वह साप की तरह बल खाती, बडे-बडे पत्थरो और चट्टानो के तेज उभारो से बचकर निकलती हुई पहाड पर चली गई थी। बडे-बडे पेड काटे जा चुके थे, रास्ते के आस-पास भोज के नए पेड और मधु लवग की झाडिया उग रही थी, रोवान वृक्षो के हरे छत्र फैले हुए थे। जहा-तहा नए फर वृक्षो के घने झुरमुट भी थे—रास्ते के पास ही उनकी

हरी बाड बनी होती, पजेनुमा, झबरीली टहनिया फैली होती। पहाड के बीच तक पहुचकर एक जगह से दूर के पहाडो और तीच्की का खुला नजारा दिखता था। गाव गहरी, तग घाटी के तल पर खोया हुआ था। किसानो के घर यहा से काले धब्बो से लगते थे। येमेल्या आखो को धूप से बचाते हुए देर तक अपने घर को देखता रहा और पोते के बारे मे सोचता रहा।

पहाड से उतरकर जब वे फर वृक्षो के घने जगल मे घुसे तो येमेल्या ने कहा "चल, लीस्को, ढूढ!"

लीस्को को दो बार कहने की जरूरत नही थी। वह अपना काम अच्छी तरह जानता था। अपनी नुकीली थूथनी से जमीन सूघता हुआ वह हरे झुरमुट मे खो गया। थोडी देर को ही पीले चकत्तोवाली उसकी पीठ नजर आई।

शिकार शुरू हो गया था।

भीमकाय फर वृक्षो की नुकीली चोटिया आसमान तक उठी लगती थी। झबरीली टहनिया एक दूसरे मे गुथी हुई थी और उनसे शिकारी के सिर के ऊपर अभेद्य छत बनी हुई थी, जिसमे से कही-कही ही सूरज की किरण इठलाती चली आती थी और पीली सी काई पर सुनहरा चकत्ता बना देती थी या पर्णांग की चौडी पत्ती को चमका देती थी। ऐसे जगल मे घास नही उगती, येमेल्या कालीन जैसी नरम काई पर चला जा रहा था।

कुछेक घटो तक शिकारी इस जगल मे भटकता रहा। लीस्को तो मानो धरती मे समा गया था। बस, कभी-कभार ही पाव तले टहनी चटक जाती या कोई चटकीला कठफोडवा एक पेड से उडकर दूसरे पर जा बैठता। येमेल्या बडे ध्यान से चारो ओर सब कुछ देख रहा था कही कोई निशानी तो नही है, हिरन अपने सीगो से कोई टहनी तो नही तोड गया, काई पर कही खुरो के निशान तो नही। जगल मे कही-कही काई के बीच जमीन उभरी हुई थी और इन उभारो पर घास उगती थी। येमेल्या देख रहा था कि यह घास कही नुची हुई है कि नही। अधेरा घिरने लगा था। बूढे को थकावट महसूस होने लगी थी। रात काटने का भी कोई इतजाम करना था। "शायद हिरनो को दूसरे शिकारियो ने डरा दिया है," येमेल्या सोच रहा था। पर तभी लीस्को

के किकियाने की हल्की सी आवाज सुनाई दी, और आगे कही टहनिया चटकी। येमेल्या फर के तने से सटककर खडा हो गया और इतजार करने लगा।

यह हिरन ही था। दस सीगो वाला सुदर हिरन, सभी वन्य पशुओ मे सबसे भव्य जीव। लो, उसने अपने सीगो को पीठ से लगा लिया और ध्यान से सुनने लगा, हवा को सूघने लगा, ताकि पलक झपकते ही बिजली की तरह हरे झुरमुट मे गायब हो जाए।

बूढे येमेल्या ने हिरन को देख लिया, पर वह बहुत दूर था गोली वहा तक नही पहुचेगी। लीस्को झुरमुट मे लेटा हुआ, सास रोके गोली चलने का इतजार कर रहा था, उसके नथुनो मे हिरन की गध थी।

गोली चली और हिरन तीर की तरह भाग उठा। येमेल्या का निशाना चूक गया था, लीस्को भूख के मारे हूक उठा। बेचारे कुत्ते को हिरन के भूने मास की गध आ रही थी, बडी सी हड्डी दिखाई दे रही थी, जो मालिक उसे देगा, लेकिन इसके बजाय उसे भूखे पेट सोना पड रहा था। बहुत ही बुरी बात थी।

"चलो, मौज लेने दो उसे हमे तो हिरनौटा पाना है सुना तूने, लीस्को?" रात को सौ साला फर वृक्ष के नीचे आग के पास बैठे हुए येमेल्या कह रहा था।

कुत्ता अपनी नुकीली थूथनी अगले पजो पर रखे दुम हिला रहा था। उसके भाग मे आज बस रोटी का सूखा टुकडा ही लिखा था, जो येमेल्या ने उसे दिया।

(३)

तीन दिन तक येमेल्या जगल मे भटकता रहा और सब बेकार हिरनौटे के साथ हिरन उसकी नजर मे नही आए। बूढे को लग रहा था कि उसमे अब और हिम्मत नही रही, मगर खाली हाथ घर लौटने का साहस भी वह नही कर पा रहा था। लीस्को बिल्कुल उदास हो गया था और दुबला पड गया था, हालाकि इस बीच दो-एक छोटे-छोटे खरगोश उसने पकड लिए थे।

तीसरी रात भी उन्हे जगल मे आग के पास काटनी पड रही थी। सपने मे भी बूढे येमेल्या को पीला सा हिरनौटा दिखता था, जैसा ग्रिशूक ने लाने को कहा था, बूढा देर तक निशाना बाधता रहता, पर हर बार हिरन भाग निकलता। लीस्को को भी शायद हिरन दिख रहे थे, क्योकि वह कई बार किकियाया था और भौकने लगा था।

चौथे दिन जब शिकारी और कुत्ता बिल्कुल निढाल हो गए थे, अचानक ही उन्हे हिरन और हिरनौटे के निशान मिल गए। वे पहाड की ढलान पर फर के घने झुरमुट मे थे। सबसे पहले तो लीस्को ने वह जगह ढूढी, जहा हिरन ने रात काटी थी और फिर घास मे खोई खुरी भी सूघ निकाली।

"हिरनी और हिरनौटा है," घास पर छोटे और बडे खुरन्यास देखते हुए येमेल्या सोच रहा था। "आज सुबह यही थे लीस्को, ढूढ, भैया, ढूढ "

चिलचिलाती धूप थी, हवा मे तपस थी। कुत्ता जीभ बाहर निकाले झाडिया और घास सूघ रहा था, येमेल्या मुश्किल से टागे घसीट रहा था। अचानक जानी-पहचानी चटक और सरसराहट सुनाई दी। लीस्को घास पर सपाट हो गया, जरा भी हिल-डुल नही रहा था। येमेल्या के कानो मे पोते के शब्द गूज रहे थे "दादा, हिरनौटा लाना पीला हिरनौटा हो।" वह रही हिरनी। कितनी सुदर थी हिरनी। वह जगल के सिरे पर खडी थी और सहमी सी सीधे येमेल्या की ओर देख रही थी। कीडे-मकोडो का झुड उसके ऊपर मडरा रहा था, जिससे वह रह-रहकर सिहर उठती थी

"नही, तू मुझे धोखा नही दे पाएगी," येमेल्या अपने घात-स्थान से बाहर निकलते हुए सोच रहा था।

हिरनी काफी पहले ही शिकारी की गध पा चुकी थी, पर वह निडर होकर उसकी हरकतो को देखे जा रही थी।

"मुझे हिरनौटे से दूर ले जाना चाहती है," रेग-रेगकर उसके पास पहुचते हुए येमेल्या के मन मे आया।

बूढा निशाना बाधना ही चाहता था कि हिरनी सावधानी से थोडी दूर भाग गई और फिर खडी हो गई। येमेल्या फिर अपनी बदूक के साथ रेगने लगा।

फिर वह हौले-हौले हिरनी के पास पहुचा और फिर से ज्यो ही उसने गोली चलानी चाही, हिरनी भाग खडी हुई।

कई घटो तक येमेल्या बडे धीरज से हिरनी का पीछा करता रहा। वह बुदबुदा रहा था "नही तू हिरनौटे मे दूर नही जा पाएगी।"

मनुष्य और पशु का यह द्वद्व साझ ढले तक चलता रहा। शिकारी को छिपे बैठे हिरनौटे से दूर ले जाने की चेष्टा मे मा ने दस बार अपनी जान खतरे मे डाली। बूढे येमेल्या को अपने शिकार की इस निडरता पर गुस्सा भी आ रहा था और हैरानी भी हो रही थी। आखिर बचकर तो वह जा नही पाएगी कितनी बार उसने इस तरह अपनी बलि दे रही मा को मारा था! लीस्को परछाई की भाति अपने मालिक के पीछे-पीछे रेग रहा था, और जब हिरन नजरो से बिल्कुल ओझल हो गया, तो हौले से अपनी गर्म नाक उसकी टाग पर मारी।

बूढे ने पलटकर देखा और फौरन नीचे झुक गया। उससे कोई बीस गज दूर मधु लवग की झाडी तले वही पीला हिरनौटा खडा था, जिसकी खोज मे वह तीन दिन से भटक रहा था। बडा प्यारा हिरनौटा था, कुछ ही हफ्तो का –पीले-पीले रोये और पतली टागे, सुदर सिर पीछे को उठा हुआ था, और जब वह ऊपर की टहनी को पकडना चाहता तो अपनी लचीली गरदन खीचता।

शिकारी के हृदय की धडकन मानो थम गई थी, उसने बदूक का घोडा चढाया और नन्हे, असहाय जीव के सिर का निशाना साधा

बस एक क्षण और, और नन्हा हिरनौटा अतिम चीख के साथ घास पर लुढक जाता, पर इसी क्षण बूढे शिकारी को याद हो आया कि कितनी वीरता के साथ इसकी मा इसकी रक्षा कर रही थी, यह भी याद हो आया कि कैसे उसके ग्रिशूक की मा ने अपनी जान देकर बेटे को भेडियो का निवाला होने से बचाया था। बूढे येमेल्या के दिल पर सहसा एक चोट सी लगी, और उसने बदूक नीची कर ली। हिरनौटा पहले की ही तरह झाडी के पास टहल रहा था, पत्तिया नोच रहा था और जरा सी आहट सुनने को चौकन्ना था। येमेल्या ने जल्दी से खडे होकर सीटी बजाई, नन्हा हिरनौटा बिजली की तरह झाडियो मे गायब हो गया।

"वाह रे, कैसे दौडता है," बूढा कह रहा था और कुछ सोचते हुए मुस्करा रहा था। "तीर सा उड गया देखा, लीस्को, भाग गया हमारा हिरनौटा! ठीक है, अभी तो उसे बडा होना है देख तो, कितना फुर्तीला है!"

बूढा देर तक एक ही जगह पर खडा-खडा मुस्कराता रहा, हिरनौटे को याद करता रहा।

दूसरे दिन येमेल्या अपने घर लौटा।

"दादा हिरनौटा लाए?" ग्रिशूक ने पूछा, जो बडी बेसब्री से दादा के लौटने का इतजार करता रहा था।

"नही, ग्रिशूक, पर मैंने देखा था उसे!"

"पीला था?"

"हा, पीला-पीला, और थूथनी काली। झाडी के नीचे खडा पत्तिया नोच रहा था मैंने निशाना साधा "

"और चूक गए?"

"नही, ग्रिशूक मुझे तरस आ गया नन्हे हिरनौटे पर, हिरनी पर। मैंने सीटी बजाई और बस हिरनौटा चौकडिया भरता झाडियो मे गायब हो गया। भाग गया, कमबख्त "

बूढा येमेल्या बडी देर तक पोते को यह बताता रहा कि कैसे वह तीन दिन तक जगल मे हिरनौटे को खोजता रहा था और कैसे वह उससे बचकर भाग निकला। लडका सुनता रहा और बूढे दादा के साथ जी खोलकर हसता रहा।

"मैं तुम्हारे लिए जगली मुर्गा लाया हू, ग्रिशूक," कहानी खत्म करते हुए येमेल्या दादा ने कहा। "इसे मैं न मारता, तो भेडिये खा जाते।"

जगली मुर्गे को छील-छालकर साफ किया गया और पतीले मे डाल दिया गया। लडके ने खुशी-खुशी शोरबा पिया। सोने से पहले उसने कई बार दादा से पूछा

"दादा, हिरनौटा भाग गया?"

"हा, बेटे, भाग गया "

"पीला था?

"हा, सारा पीला-पीला था, बस थूथनी और खुर काले थे।"

यह सब सुनते-सुनते ही बच्चा सो गया और सारी रात उसे सपने मे नन्हा सा, पीला-पीला हिरनौटा दिखाई देता रहा, जो जगल मे अपनी मा के साथ घूम रहा था, बूढा भी अलावघर पर सो रहा था और नीद मे मुस्करा रहा था।

निकोलाई तेलेशोव

घर की ललक

निलोनाई तलगोव ने लबी उम्र पाई। उनका जन्म १८६७ म हुआ—रूस म भूदास प्रथा खत्म किए जाने के केवल छह वरस बाद और मृत्यु १६५७ म हुई, जब महान अक्तूबर क्राति हुए चालीस वर्ष बीत चुके थ।

युवावस्था मे तेलेशोव ने ज्ञान प्रसार का काम किया। वह बच्चो के लिए कहानिया और कविताओ के सग्रह छापते थे, मास्को के पास ही एक स्कूल उन्होने खोला। १८६४ म चेखोव के परामर्श पर तलेशोव ने साइबेरिया की यात्रा की, ताकि जनता के जीवन का अच्छी तरह देख जान सके।

उन दिनो जार की सरकार रूस के यूरोपीय भाग के गरीब किसानो को साइबेरिया के निर्जन इलाको म बसा रही थी। उराल पार के क्षेत्र म रेल लाइन न के बराबर ही थी। किसान अपने परिवारो के साथ घोडागाडियो पर यात्रा करते थे। लबे रास्ते मे वे भूखे रहते थे रोगो के शिकार होते थे, ठड मे मरते थे, बच्चे अनाथ हो जाते थे, मा बाप बच्चो के बिना रह जाते थे। साइबेरिया के केद्रीय भाग म तेलेशोव ने बहुत सी ऐसी बैरके देखी जो इन किसानो के बेघरबार हो गए बच्चो से भरी हुई थी। साइबेरिया से लौटने पर तलेशोव ने लिखा इन बच्चो के माता पिता या तो रास्ते मे मर गए, या फिर बाकी परिवार को कगाली और भूख से बचाने की कोशिश म अपने बच्चे को, जिसके बचने की उन्हे कोई उम्मीद न थी, छोडकर आगे बढ गए। उनके पास न इतनी शक्ति है, न इतना पैसा ही कि वे रुककर बच्चे के मर जाने का इतजार करे और वे उसे मरा हुआ ही मानकर आगे बढ जाते है। बेशक, इस तरह छोडे गए अधिकाश बच्चे बीमारी से ठीक नही हो पाते, पर ऐसा भी होता है कि बच्चे की हालत सुधर जाती है और फिर वह खुदाई औलाद बन जाता है।"

तेलेशोव की सबसे अच्छी कहानिया इन अभागे बच्चो के बारे म ही हैं। मा बाप बीमार निकोला को छोडकर चले गए, वह ठीक हो गया और किसी का नही रह गया—यह है गरीबी' कहानी। 'नया साल' कहानी मे लेखक ने यह बताया है कि किस तरह बूढे सिपाही मीत्रिच को इन अभागे बच्चो पर तरस आता है और वह अपना पेट काटकर उनके लिए नए साल पर त्योहार मनाने का प्रबध करता है। १८६६ मे प्रकाशित 'घर की ललक' ऐसे बालक की कहानी है, जो साइबेरिया जाते हुए अनाथ हो गया और वापस घर लौटने की कोशिश करता है।

(१)

गर्मियो की उजली रात थी। चादनी मे जीवन की उमग थी और सहज शाति खेतो-मैदानो और सडको पर वह चादी बरसा रही थी, जगल को अपनी किरणो से बीध रही थी ओर नदियो मे सोना घोल रही थी इसी रात को बैरक के दरवाजे मे से दस-ग्यारह बरस का, घुघराले बालो और पीले चेहरे वाला एक लडका – स्योम्का चुपके-चुपके बाहर निकला। उसने इधर-उधर नजर दौडाई, छाती पर सलीब का निशान बनाया और सहसा सिर पर पैर रखकर उस मैदान की ओर दौडा, जहा से "रूस की सडक" शुरू होती थी। लडके को डर था कि उसका पीछा किया जाएगा, इसलिए वह बार-बार मुडकर देख रहा था, लेकिन कोई उसके पीछे नही दौड रहा था। लडका सही सलामत पहले मैदान तक और फिर बडी सडक तक पहुच गया। यहा पर वह रुका, थोडी देर तक कुछ सोचता रहा और फिर धीरे-धीरे सडक के किनारे-किनारे चलने लगा।

वह उन बेघरबार बच्चो मे से एक था, जो साइबेरिया मे बसाए जा रहे किसानो के पीछे अनाथ रह जाते है। उसके मा-बाप रास्ते मे टाइफायड से मर गए थे और स्योम्का बेगाने लोगो के बीच अकेला रह गया था। यहा की प्रकृति भी उसकी जन्मभूमि से बिल्कुल अलग थी। उसे याद था कि उसकी जन्मभूमि मे पत्थर का सफेद गिरजा है, पवन-चक्किया है, उज्यूप्का नदी है, जहा वह अपने दोस्तो के साथ नहाया करता था और बेलये (सफेद) नाम का गाव है। परतु यह जन्मभूमि, वह गाव और नदी कहा है, यह सब उसके लिए उतना ही बडा रहस्य था, जितना कि वह स्थान, जहा पर अब वह था। उसे बस एक बात याद थी कि वे यहा इसी सडक पर आए थे और इससे पहले उन्होने एक बहुत बडी नदी पार की थी और उससे भी पहले कई दिनो तक स्टीमर पर यात्रा की थी, फिर रेलगाडी पर, फिर स्टीमर और रेलगाडी पर। उसे लगता था कि वह बस यह सडक का फासला तय कर ले, तो फिर नदी आएगी, उसके बाद रेलगाडी होगी और फिर बस उज्यूप्का नदी और बेलये गाव आ जाएगा और उसका अपना घर, जहा वह जन्मा और बडा हुआ, जिसके बिना वह नही रह सकता, जहा वह सभी बूढो और लडको को जानता है। उसे यह भी याद था कि कैसे उसके मा-बाप मरे थे, कैसे लोगो ने उन्हे तावूत मे रखकर पेडो के झुरमुट के पीछे किसी अनजान कब्रिस्तान मे दफना दिया था। स्योम्का को यह भी याद था कि कैसे वह रोता रहा था और उसे घर भेज देने को कहता रहा था, मगर उसे यहा बैरक मे रहने पर मजबूर किया गया। यहा उसे रोटी और बदगोभी का सूप 'श्ची' मिलता था और हमेशा कहा जाता था "जा जा तेरे बिना यहा क्या कम काम है'। यहा तक कि बडा साहब अलेक्सान्द्र याकब्लेविच, जो सब पर हुक्म चलाता था, उस पर गरम पडा था और बोला था—चुपके से रहे जाओ, ज्यादा तग करोगे, तो कान नोच डालूगा। और स्योम्का मन मसोसकर वहा रह रहा था। उसके साथ बैरक मे तीन लडकिया और एक लडका और थे, जिन्हे उनके मा-बाप यहा भूल गए थे और पता नही कहा चले गए थे पर वे बच्चे इतने छोटे थे कि स्योम्का न उनके साथ खेल सकता था न शरारते कर सकता था।

एक के बाद एक दिन और हफ्ते गुजरते रहे और स्योम्का इस घिनौनी बैरक मे रहता रहा, कही जाने का साहस वह नही कर पाता था। पर आखिर वह तग आ गया। वह तो रही सडक, जिस पर वे रूस से यहा आए थे। अच्छी तरह से नही जाने देते तो ठीक है, वह भाग जाएगा। कौन सी कोई बहुत देर की बात है? और वह फिर से अपनी नदी उज्यूप्का, अपना गाव बेलये देखेगा और अपने पक्के यारो से मिलेगा, मास्टरनी अफ्रोसिन्या येगोरव्ना के पास जाएगा और पादरी के लौडो के पास, जिनके घर पर बहुत सारे चैरी और सेब के पेड है।

पकडे जाने का डर स्योम्का को कई दिनो तक रोके रहा, परतु अपनी नदी, अपने जन्म के गाव, अपने हमजोलियो को देखने की आशा इतनी प्रबल थी कि स्योम्का ने मन मे यह सपना सजोकर मौका देखा और सदा के लिए फोकट के खाने को लात मारकर सडक पर भाग आया। अब वह बहुत खुश था कि घर लौट रहा है। उसे लगता था कि बेलये जैसी अच्छी जगह और कही नही और सारी दुनिया मे उज्यूप्का जैसी कोई नदी नही है।

चाद क्षितिज पर पहुच रहा था, पौ फट रही थी, पर स्योम्का चलता जा रहा था, ताजी, ओस से भीगी हवा मे सास लेता हुआ और इस बात पर खुश होता हुआ कि हर कदम उसे घर के पास ले जा रहा है।

(२)

लगता है कि इन्सान के लिए जिस किसी बात की भी कल्पना की जा सकती है, वह सब असीम साइबेरिया ने देखा और अनुभव किया है और उसे किसी बात पर आश्चर्य नही हो सकता। इसके रास्तो पर बेडियो मे बद कैदियो ने हजारो मील पार किए है—भारी जजीरे खनखनाते हुए, इसके गर्भ की अधेरी खानो मे उन्होने खुदाई की है, इसकी सडको पर घुघरुओ की झकार के साथ त्रोइका गाडिया हवा से बाते करती चलती है और इसके घने जगलो मे भगोडे कैदी भटकते-फिरते है, जानवरो से जूझते है और कभी बस्तिया जला डालते है, तो कभी ईसा के नाम पर रोटी का टुकडा मागकर पेट भरते है,

रूस से यहा बसने आनेवालो का ताता लगा रहता है, उनके काफिले अपनी गाडियो तले रात काटते है, अलाव के पास बैठकर आग सेकते है, उधर उनके सामने से, उल्टी दिशा मे भी झुड के झुड कगाल हो गए, भूखे, नगे, बीमार लोग बढते जाते ह, और न जाने कितने रास्ते मे मौत का निवाला बनते है, पर यहा किसी के लिए कुछ नया नही है।

साइबेरिया ने इतना ज्यादा पराया दर्द देखा है कि अब आश्चर्य की कोई बात नही रह गई। जब स्योम्का किसी गाव या बस्ती से गुजरता हुआ पूछता "रूस को कौन सी सडक जाती है?", तो इसपर भी किमी को कोई हैरानी न होती।

"यहा सब रास्ते रूस को जाते है," उसे सीधा सा जवाब मिलता और जवाब देनेवाला सडक की ओर इशारा कर देता, मानो उसकी दिशा दिखा रहा हो।

स्योम्का चलता जा रहा था, वह न थकावट महसूस कर रहा था, न उसके मन मे डर था वह अपनी आजादी पर खुश था, रग-बिरगे फूलो वाले मैदान और डाक वाली त्रोइका गाडी की घटियो की टुन-टुन उसके मन मे उमगे भरती थी। कभी-कभी वह घास पर लेट जाता था और जगली गुलाब की झाडी तले गहरी नीद मे सो जाता था या जब गर्मी ज्यादा होती तो सडक किनारे के किसी कुज मे बैठ लेता। उदारमना साइबेरियाई औरते उसे रोटी और दूध दे देती थी और सडक पर जाते किसान कभी-कभी उसे अपनी घोडागाडी पर बिठा लेते थे।

"बाबा, गाडी मे बिठा लो, दया करो।" पास से कोई घोडागाडी गुजरती, तो स्योम्का मिन्नत करता।

"माई, रोटी दे दे," गावो मे वह औरतो से मागता था।

सब को उसपर दया आती थी और स्योम्का का पेट भरा रहता था।

(३)

दो हफ्ते बीत गए।

स्योम्का कई रास्ते और गाव पीछे छोड चुका था। वह हिम्मत नही

हारा था, आराम से चलता जा रहा था। हा, कभी-कभार वह लोगो से पूछ लेता था

"रूस अभी दूर है?'

"रूस? हा, पास नही है। चलते जाओ, जाडो तक पहुच जाओगे, या शायद कुछ पहले ही।"

"और जाडा जल्दी ही आनेवाला है क्या?"

"नही, जाडा आने मे अभी देर है। अभी तो पतझड भी नही आया।"

स्योम्का जब किसी गाव से गुजरता, या जब उसे दूर से ही गिरजे का ऊचा सफेद घटाघर और उसके ऊपर सुनहरी सलीब दिखाई दे जाता, तो उसकी आखो मे आसू आ जाते, मन मे खुशी उमडती। वह टोपी उतार लेता, घुटनो के बल गिर पडता और रोते हुए प्रार्थना करता

"हे, प्रभु, जल्दी से जाडा आ जाए!"

कभी-कभी स्योम्का को सडक के किनारे लकडी का सलीब लगा दिखाई देता, आस-पास कोई घर नही, कही पहरेदार की कोठरी तक नही, बस एक ओर जगल तथा दूसरी ओर स्तेपी ही होती।

ऐसा सलीब देखकर स्योम्का सोच मे पड जाता, हर बार उसे अपने मा-बाप की याद आ जाती, खुले मैदान मे लगा तम्बू याद हो आता, जिसमे वे मरे थे, और स्योम्का सारी थकावट भूल-भालकर, तेज कदम भरने लगता। उसके मुह पर बस एक ही शब्द होता

"घर! घर!"

लो, आखिर एक शहर आ गया

चुगी चौकी से आगे स्योम्का को दाए-बाए लट्ठो के घर दिखाई दे रहे थे। मटमैले घरो की छते हरी, लाल या सुरमई थी। आगे पत्थर के सफेद मकान थे। गलियो मे मुर्गिया घूम रही थी, सूअर घुरघुरा रहे थे। फिर ऊची बाडो और हरे-भरे अहातो का क्रम चला, डाक-चौकी के पास काली-सफेद धारियो वाले मील-खभे लगे हुए थे। खुले चौक मे लोहे के जगले के पीछे ऊचा घटाघर था और उसके बिल्कुल सामने लट्ठो का पतला सा बुर्ज था, उसके ऊपर एक

सिपाही चक्कर काट रहा था और आगे फिर शहर की चौकी की बुर्जिया दिखाई देने लगी थी।

स्योम्का बिना रुके ही शहर से होता हुआ निकल गया और फिर से खुली सडक पर पहुच गया। यहा वह निश्शक होकर अपनी धुन मे मस्त चलता जा सकता था।

(४)

ज्यो-ज्यो स्योम्का दूर जाता जा रहा था, त्यो-त्यो उसे चारो ओर शरद ऋतु के आने की अधिक निशानिया दिख रही थी। "कोई बात नही। जल्दी ही जाडा आ जाएगा,"—स्योम्का के मन मे आता और उसे लगता कि बस उसका गाव अब पास ही आता जा रहा है। खेतो मे रग-बिरगी तितलिया नही फडफडा रही थी, टिड्डे नही फुदक रहे थे, पेडो की पत्तिया झडने लगी थी, घास मुरझाने लगी थी, आसमान पर अक्सर झीने-झीने सुरमई बादल छा जाते थे और राते भी ठडी हो गई थी।

पर स्योम्का सोचता था "अब तो थोडी ही दूर है। बस अब जल्दी ही घर पहुच जाऊगा।" स्योम्का सडक पर चलता जा रहा था। भूख उसे सता रही थी। सुबह से उसने कुछ नही खाया था।

झाडियो मे एक आदमी पालथी मारकर बैठा कुछ चबा रहा था। उसे देखकर स्योम्का थम गया। वह ईर्ष्या भरी नजरो से यह देख रहा था कि कैसे वह आदमी अडा छीलकर दातो से काट रहा था और ऊपर से रोटी खा रहा था।

"क्या चाहिए तुझे?" उस आदमी ने पूछा। वह न उठा और न उसने चबाना ही बद किया।

स्योम्का चुपचाप खडा था।

वह आदमी जवान न था। चेहरे पर छोटी सी खिचडी दाढी थी, आखे सकरी और धसी हुई, मुह की चमडी सावली पड गई थी और खुश्क हवाओ से फट गई थी। पैरो मे वह नमदे के जूते पहने हुए था, कधे पर भडकीले रग का कोट और सिर पर टोप।

"क्या चाहिए तुझे ?" स्योम्का की ओर गौर से देखते हुए उसने फिर से पूछा।

"वावा," स्योम्का डरते-डरते बोला, 'ईसा के नाम पर थोडी सी रोटी दे दो "

"अरे भैया, यहा तो खुद भले लोगो से मागी है पर खैर ले, वाट लेते है।" उसने रोटी का टुकडा वढा दिया और फिर पूछा "किसका है तू ? कहा से आ टपका ?"

"घर जा रहा हू रूस मे।"

"रूस ? मैं भी रूस जा रहा हू। तू काहे को जा रहा है ?"

स्योम्का उसे अपनी सारी कहानी सुनाने लगा। वह वता रहा था कि उसे बैरक मे कितनी ऊव होती थी, वैसे उसका मन घर जाने को होता था और कैसे वह रात को भागा। बूढा उसकी वाते सुनता जा रहा था और यो सिर हिला रहा था, मानो किसी वात पर उसकी प्रशसा कर रहा हो।

"शावाश, वेटे!" स्योम्का का हाथ थपथपाते हुए बूढे ने कहा। "पर जिदगी तेरी खराब ही होगी। लगता है मेरे ही कदमो पर चलेगा न तुझे घर देखने को मिलेगा, न तेरा कोई ठौर-ठिकाना होगा कुत्तो की सी जिदगी विल्कुल कुत्तो की ही!"

"वावा, तुम कौन हो ?" स्योम्का ने वडी दिलचस्पी से पूछा और बूढे के सामने बैठ गया।

"मैं कौन हू ? कुछ भी नही बस, यो ही एक अनजान बुड्ढा।"

बूढे ने गहरी साम ली और मुह पर हाथ फेरा, मानो चेहरा पोछ रहा हो।

"हा, भैया है तो तू छोटा सा ही, पर देख तुझे भी घर की ललक वापस खीच रही है। बस, सदा यही होता है, घर न हुआ, सगी मा हुई ऐसी ललक है, खीचे जाती है, खीचे जाती है इसके बिना कही चैन नही। एक वार जाके उसे नजर भर देख लिया, वस मन को राहत मिल गई।"

"अच्छा तो, बाबा, मैं जाडो तक पहुच जाऊगा रूस कि नही?"

"नही, नही पहुच पाएगा। क्योकि अभी ठड पडने लगेगी और तेरे बदन पर कोई गरम कपडा तक नही। मैं तो गया हू, पता है मुझे। बस कह दिया न नही पहुचेगा, ठड से अकड जाएगा।"

उसकी ये बाते सुनकर स्योम्का के कलेजे पर साप लोटने लगे। बूढा भी सोच मे डूब गया। दोनो सिर झुकाए चुप बैठे रहे।

स्योम्का को तब यह ख्याल आ रहा था कि कैसे वह ठड से अकड जाएगा। और यह सोचकर उसे दुख हो रहा था कि वेलये मे किसी को इसका पता भी नही चलेगा। बूढा अपनी सोच सोच रहा था और चुपचाप मूछे हिलाए जा रहा था।

"तो फिर किधर चला तू?" सहसा अनजान बाबा ने पूछा और उठ खडा हुआ।

"मैं तो, बाबा, घर को जा रहा हू "

"मैं भी घर चल रहा हू। चल, इकट्ठे चलते है।"

दोनो चुपचाप सडक पर पहुचे और पाव घसीटते आगे बढ चले।

(५)

साझ ढल आई थी। दोपहर से बरसते पानी से स्योम्का और बूढा तरबतर हो गए थे।

"चल, भैया मेरे, चल," बूढा उसकी हिम्मत बढा रहा था। "तेज तेज कदम बढा। नही तो यह शरद सचमुच ही आ धमकेगा और हम अभी पहाडो* तक भी नही पहुचे। तब हम क्या करेगे? तब तो बस अपना काम तमाम हो जाएगा।"

"चल रहा हू, बाबा।"

---

* आशय उराल पर्वतमाला से है। —स०

"वैसे ही हमे देर हो गई है। मुझे डर है कही पाला * न पडने लगे। त
तो बहुत बुरी होगी।"

थकावट के बावजूद स्योम्का भला-चगा था। हमराही मिल जाने पर व
खुश था और इससे उसका साहस भी बढा था। अब वह निश्चित था कि भटके
नहीं, कि बाबा उसे ठिकाने तक पहुचा देगा, और फिर बाते करना भी अच्छ
लगता था। बूढा उसे अपने जन्म स्थान की और साइबेरिया की बाते बता
रहता था, कि कैसे साइबेरिया मे सोना खोदा जाता है, कैसा भयानक जाडा व
होता है। बूढा स्योम्का को साइबेरिया की जेलो की और आजादी की कहानिय
सुनाता, बताता कि बसत मे जब हरी-हरी घास निकलती है, तो कै
आदमी घर जाने को तडप उठता, है, रात-दिन उसे चैन नही मिलता

"बाबा, हमने काफी रास्ता पार कर लिया, क्या?" स्योम्का उस
पूछता।

"देख रहा है, यहा खाने-वाने को कम मिलता है, मतलब रूस के पा
पहुच रहे है। जब पहाड पार कर लेगे, तो वहा और भी कम मिलेगा, इसीलि
तो कहता हू जल्दी कर! रूस मे लोग पैसे के भूखे हैं और तेरी-मेरी जेब खाल
है सो बस, जहा मन आए, सोओ, जो चाहो, खाओ। साइबेरिया मे तो
भाई मेरे, लोग भले हैं। पर उनकी भलाई भी हमारे गले मे अटकती है। चल
बेटा, जल्दी चल!"

सडक के एक ओर गाडिया रुकी हुई थी। चारो ओर अधेरा था औ
ठड थी। गाडियो के पास जल रहे अलावो की आग पथिको को अपनी ओ
आकर्षित कर रही थी। गाडी से खोल दिए गए घोडे अधेरे मे मैदान मे भटक
रहे थे, शरद ऋतु की मुरझाई घास नोच रहे थे। गाडियो के बम ऊचे उठे
हुए थे। किसान आग जलाकर हाथ सेक रहे थे और खाना बना रहे थे

"भगवान तुम्हे खूब रोटी-नमक दे!" अलाव के पास जाते हुए बूढे ने
कहा। "जरा आग सेक लेने दो, भाइयो!"

---

* यहा पाला शब्द तापमान शून्य से नीचे चले जाने के अर्थ मे प्रयुक्त
है। — स०

'वैठ जाओ," उदासीन स्वरो मे जवाव मिला।

बूढे ने वैठकर हाथ आग की ओर वढा दिए। स्योम्का भी पास आ गया। उसके गीले कपडे जल्दी ही गर्म हो गए और पीठ पर मीठी मिहरन दौड गई।

"कहा से आ रहे हो?" वहा वैठे लोगो मे से एक ने अनजान वावा के चेहरे को गौर से देखते हुए पूछा।

"वडी दूर से आ रहे है। घर जा रहे है।"

"छोकरा तुम्हारा है क्या?"

"नही, रास्ते मे मिल गया। साइवेरिया वसने जा रहे थे इसके मा-वाप। अनाथ रह गया है।"

"देखो तो वेचारा कैसे भीग गया है!"

स्योम्का की ओर सवका ध्यान गया। वह आग के विल्कुल पास ही वैठा था और ठड से सिकुडते हुए देख रहा था कि कैसे अलाव मे लकडिया जलते हुए ऐठ रही है, कैसे हवा मे सफेद धुआ उठ रहा है और कैसे पतीले मे पकते खाने मे झाग उठ रही है, सू-सू हो रही है।

"अच्छा तो अनाथ है?" किसानो ने पूछा और फिर से स्योम्का की ओर देखने लगे।

फिर वे फसल की, अपने काम की वाते करने लगे, जव खाना तैयार हो गया, तो खाने लगे।

"खा ले, वच्चे, खा ले," स्योम्का को खाना देते हुए वे कह रहे थे। "देखो तो, कैसे ठड से ठिठुर रहा है।"

स्योम्का ने भर पेट खाना खाया और आराम करने को लेट गया। गरम खाने के वाद आग के पास लेटना वडा अच्छा लग रहा था। लकडिया चटख रही थी, धुए की और ताजी छाल की गध आ रही थी – विल्कुल वैसे ही, जैसे उसके गाव वेलये मे हुआ करता था। हा, अगर वह घर पर होता, तो कुछ आलू खोद लाता और उन्हे आग मे डाल देता। स्योम्का को भूने हुए आलू याद हो आए, जिनकी भीनी-भीनी महक आती है और जिनसे हाथ जलते है और जो दातो तले खस-खस करते है।

स्योम्का के सिर के ऊपर तारे चमक रहे थे। वेलये के आसमान मे भी

इतने सारे तारे होते थे और इतने साफ चमकते थे। स्योम्का का मन कहता था, हाय बेलये कही पास ही हो। टागे थकावट से दुख रही थी, पीठ व बगल को जमीन से ठडक पहुच रही थी और चेहरे, छाती व घुटनो को आच की सुहानी गर्मी मिल रही थी।

किसान अभी भी कुछ बाते कर रहे थे और बाबा भी उनके साथ बाते कर रहा था। स्योम्का को उसकी आवाज सुनाई दे रही थी "बडा मुश्किल है जीना, भाइयो, बडा मुश्किल है " किसान भी कह रहे थे कि बडा मुश्किल है। फिर उनकी आवाजे दबी-दबी सी और धीमी हो गई, मानो मधुमक्खिया भिनभिना रही हो फिर स्योम्का की आखो के सामने लाल घेरे बनने लगे, फिर चौडी नदी बहने लगी और उसके पार था बेलये गाव। स्योम्का नदी मे कूदना चाहता था, पर अनजान बाबा ने उसकी टाग पकड ली और कहा "मुश्किल है! मुश्किल है!" इसके बाद फिर से लाल और हरे घेरे बनने लगे, और सब कुछ गडमड हो गया।

स्योम्का सुध-बुध खोए सो रहा था।

(६)

प्रभात वेला मे स्योम्का की आख खुली। आकाश पर बादल तैर रहे थे, बुझे अलाव पर ठडी हवा के झोके आते, राख उठाते और साय-साय करते हुए उसे मैदान मे फैला देते। किसान वहा नही थे। अनजान बाबा गठरी बना जमीन पर पडा हुआ था।

स्योम्का उठकर बैठ गया।

"बाबा!" उसने बूढे को आवाज दी।

"किसान कहा गए?" उसके दिमाग मे यह सवाल कौंधा और सहसा यह सोचकर वह भयभीत हो गया कि बाबा को कुछ हो तो नही गया।

साय-साय करती हवा राख उडा रही थी, काले, अधजले कुदो पर जली टहनियो की सरसर हो रही थी और लगता था मानो सारा मैदान कराह रहा है। स्योम्का का डर बढता जा रहा था।

"बाबा!" वह फिर से चिल्लाया, पर उसकी आवाज को हवा दूसरी ओर ले गई।

स्योम्का की आखे मुद रही थी, सिर भारी हो गया था और कधे पर लुढक-लुढक जाता था। स्योम्का फिर से लेट गया, चारो ओर से उसके कानो मे हवा की गूज आ रही थी। उसे लग रहा था कि डाकुओ ने वावा को मार डाला है, फिर से कही पास ही वेलये गाव दिखा, पर कोई उसे गाव मे घुसने से रोक रहा था, उसे पीछे खीच रहा था, वहा खुले मैदान मे जहा गदी मटमैली बैरक थी। "अच्छा, तू घर जाएगा?!" गुस्से भरी आवाज मे कोई कह रहा था। फिर कोई गर्म-गर्म श्ची लाया और जवरदस्ती स्योम्का के मुह मे डालने लगा, सिर पर उडेलने लगा, वह उडेलता ही जा रहा था, उडेलता ही जा रहा था, स्योम्का के सिर पर गर्म पहाड वन गया, पर वह उडेलता ही जा रहा था सिर फूल गया, अदर आग जल रही थी। स्योम्का की सास रुक रही थी—फिर उसने आखे खोली। वावा उसके ऊपर भुका वैठा था और दुख से सिर हिला रहा था।

'क्यो भैया?' उसके चेहरे को छूते हुए वावा ने कहा और स्योम्का को ऊपर आसमान, सूरज, खिचडी दाढी और धसी हुई आखे दिखाई दी। "क्यो, भैया? लगता है, मामला गडवड है।"

वावा " स्योम्का मुश्किल से वोल पाया।

"उठो तो भैया जरा वैठो तो।"

वूढे ने उसे उठाकर अपनी गोद मे विठाया और सिर अपनी छाती मे लगा लिया।

क्यो, भैया?"

"कुछ नही ' स्योम्का वुदवुदाया।

"थोडा होश सभालो, जैसे-तैसे चलना चाहिए यही तो मरना नही।'

घटे भर वाद वे एक दूसरे की कमर मे वाह डाले धीरे-धीरे सडक पर चल रहे थे। वूढा दृढतापूर्वक नपे-तुले कदम भर रहा था पर स्योम्का अक्सर लडखडा जाता था।

"शहर भी तो वडी दूर है, वूढा कह रहा था। ' तुझे तो अस्पताल म

भरती कराना चाहिए। तेरी बात और है। तू जा सकता है। मुझे तो वहा, शहर मे शकल नही दिखानी चाहिए। ओफ, कैसी जिदगी है!"

थोडी देर बाद स्योम्का रुक गया

"बाबा, चला नही जाता   थोडी देर बैठ ले।'

"चल, उधर पेडो तले चलते है। वहा कुछ गर्माहट होगी। आ जा, मुझे पकड ले। ऐसे! चल, चले।"

पेडो के झुरमुट मे वे बैठ गए। अनजान बाबा ने स्योम्का को सिर गोद मे रखने को कहा। खुद कुछ टहनिया तोडकर उसने बिस्तर बना दिया।"

"लेट जा, भैया। लेट जा।"

"बाबा," स्योम्का ने गिडगिडाते हुए कहा। "मुझे अकेले न छोड जाना! बाबा!"

वह फूट-फूटकर रो पडा। उसके मुह से एक शब्द भी और नही निकला। फिर उसे लगने लगा कि चारो ओर साय-साय हो रही है फिर से कोई उसका सिर पकडकर खीच रहा है, सब कुछ घूम रहा है, जल रहा है

"घर! घर!" स्योम्का के मुह से अस्पष्ट से बोल फूटे और जोर लगाकर उसने आखे खोली, पर कुछ नही दिखा

कभी-कभी उसे अपने आस-पास नए, अनजान चेहरे मडराते लगते, नई बैरक दिखती, कभी मा उसे दिखती, कभी उज्यूष्का नदी, कभी फिर अनजान लोग और कभी वही बाबा, रात-दिन सब गडमड हो गए और आखिर स्योम्का ने फिर से आखे खोली।

वह एक कमरे मे, नरम बिस्तर पर लेटा हुआ था, उसे ऊपर छत साफ-साफ दिख रही थी, खिडकी के बाहर बूची टहनियोवाला पेड हिल रहा था।

वह भयभीत हो उठा "फिर बैरक मे आ गया?" उसने उठकर भाग जाना चाहा, पर उसका शरीर हिलता न था, सिर मानो सिरहाने से चिपका हुआ था।

"बाबा कहा है?' स्योम्का ने आखे घुमाकर परिचित चेहरा ढूढना चाहा।

"बाबा!" वह फिर से चिल्लाया, पर उसकी आवाज को हवा दूसरी ओर ले गई।

स्योम्का की आखे मुद रही थी, सिर भारी हो गया था और कधे पर लुढक-लुढक जाता था। स्योम्का फिर से नेट गया, चारो ओर से उसके कानो मे हवा की गूज आ रही थी। उसे लग रहा था कि डाकुओ ने बाबा को मार डाला है, फिर से कही पास ही बेलये गाव दिखा, पर कोई उसे गाव मे घुसन से रोक रहा था, उसे पीछे खीच रहा था, वहा खुले मैदान मे जहा गदी मटमैली बैरक थी। "अच्छा, तू घर जाएगा?!" गुस्से भरी आवाज मे कोई कह रहा था। फिर कोई गर्म-गर्म श्ची लाया और जबरदस्ती स्योम्का क मुह मे डालने लगा, सिर पर उडेलने लगा, वह उडेलता ही जा रहा था, उडेलता ही जा रहा था, स्योम्का के सिर पर गर्म पहाड बन गया, पर वह उडेलता ही जा रहा था सिर फूल गया, अदर आग जल रही थी। स्योम्का की सास रुक रही थी – फिर उसने आखे खोली। बाबा उसके ऊपर झुका बैठा था और दुख से सिर हिला रहा था।

'क्यो भैया?' उसके चेहरे को छूते हुए बाबा ने कहा और स्योम्का को ऊपर आसमान सूरज, खिचडी दाढी और धसी हुई आखे दिखाई दी। "क्यो, भैया? लगता है, मामला गडबड है।"

"बाबा " स्योम्का मुश्किल से बोल पाया।

"उठो तो भैया जरा बैठो तो।"

बूढे ने उसे उठाकर अपनी गोद मे बिठाया और सिर अपनी छाती से लगा लिया।

"क्यो, भैया?"

"कुछ नही " स्योम्का बुदबुदाया।

"थोडा होश सभालो, जैसे-तैसे चलना चाहिए यही तो मरना नही।'

घटे भर बाद वे एक दूसरे की कमर मे बाहे डाले धीरे-धीरे सडक पर चल रहे थे। बूढा दृढतापूर्वक नपे-तुले कदम भर रहा था पर स्योम्का अक्सर लडखडा जाता था।

"शहर भी तो बडी दूर है ' बूढा कह रहा था। ' तुझे तो अस्पताल म

भरती कराना चाहिए। तेरी वात और है। तू जा सकता है। मुझे तो वहा, शहर मे शकल नही दिखानी चाहिए। ओफ, कैसी जिदगी है!"

थोडी देर वाद स्योम्का रुक गया

"वावा, चला नही जाता थोडी देर बैठ ले।'

"चल, उधर पेडो तले चलते है। वहा कुछ गर्माहट होगी। आ जा, मुझे पकड ले। ऐसे! चल, चले।"

पेडो के झुरमुट मे वे बैठ गए। अनजान वावा ने स्योम्का को सिर गोद मे रखने को कहा। खुद कुछ टहनिया तोडकर उसने विस्तर वना दिया।"

"लेट जा, भैया। लेट जा।"

"वावा," स्योम्का ने गिडगिडाते हुए कहा। "मुझे अकेले न छोड जाना! वावा!"

वह फूट-फूटकर रो पडा। उसके मुह से एक शब्द भी और नही निकला। फिर उसे लगने लगा कि चारो ओर साय-साय हो रही है, फिर से कोई उसका सिर पकडकर खीच रहा है, सब कुछ घूम रहा है, जल रहा है

"घर! घर!" स्योम्का के मुह से अस्पष्ट से बोल फूटे और जोर लगाकर उसने आखे खोली, पर कुछ नही दिखा

कभी-कभी उसे अपने आस-पास नए, अनजान चेहरे मडराते लगते, नई वैरक दिखती, कभी मा उसे दिखती, कभी उज्यूप्का नदी, कभी फिर अनजान लोग और कभी वही वावा, रात-दिन सब गडमड हो गए और आखिर स्योम्का ने फिर से आखे खोली।

वह एक कमरे मे, नरम विस्तर पर लेटा हुआ था, उसे ऊपर छत साफ-साफ दिख रही थी, खिडकी के बाहर वूची टहनियोवाला पेड हिल रहा था।

वह भयभीत हो उठा "फिर वैरक मे आ गया?" उसने उठकर भाग जाना चाहा, पर उसका शरीर हिलता न था, सिर मानो सिरहाने से चिपका हुआ था।

"वावा कहा है?" स्योम्का ने आखे घुमाकर परिचित चेहरा ढूढना चाहा।

पर न वह बूढा था, न जगल और न वडी सडक। स्योम्का दुखी हो उठा क्यो अनजान वावा उसे छोडकर चला गया। ओर उसके सूखे हुए, पीले चेहरे पर आसू वहने लगे।

(७)

एक दिन, वीमारी के वाद कमजोर स्योम्का अस्पताल का चोगा पहने, खिडकी के पास खडा था और विचारमग्न निर्जन सडक को देख रहा था, जहा, हवा सूखी पत्तियो को डबरो के पार उडा रही थी। स्योम्का के पीछे अस्पताल का सिपाही देमीदिच खडा था, वह भी अपनी सोच मे डूवा हुआ बाहर देख रहा था। उसने स्योम्का को बताया था कि कैसे एक बूढा उसे बेहोशी की हालत मे यहा लाया था। सयोग से दरोगा भी यही खडा था। उसने वूढे को देखा और बोला 'आ गया, पट्ठे।'' बूढा वस वही का वही बैठ गया। दरोगा बोला ''फिर भाग निक्ला?' और उसे फौरन पकड लिया गया। तीसरी बार वह कैद से भागा था। तीसरी बार पकडा गया।

ये मव वाते स्योम्का सिपाही से कई वार सुन चुका था। हर रोज वह मुवह-शाम ठडी आहे भरता और सोचता ''हे, भगवान, वावा को वचा लो।''

''आज उन्ह ले जाया जा रहा है,'' सिपाही कह रहा था। ''देख अभी निकलेगे।'

थोडी देर मे स्योम्का को अजीव सी दवी-दवी आवाजे सुनाई दी। फिर कधो पर वदूके डाले सिपाही दिखे और पीछे मटमैले चोगे और गोल टोपिया पहने लोगो की भीड। उनके हाथो और पैरो पर वेडिया खनक रही थी। भीड के दोनो ओर तथा पीछे भी सिपाही चल रहे थे, सव ठड से ठिठुर रहे थे।

स्योम्का का क्लेजा थम गया, वह शीशे से चिपक गया और आखे फाड-फाडकर इस भीड को देखने लगा कि कही वह जाना-पहचाना चेहरा नजर आ जाए। सहसा वह बेतहाशा चीखा और शीशे पर मुट्ठिया मारने लगा

'वावा! वावा! वावा!'

कैदियो मे उसे अनजान वावा दिखाई दे गया था, जो वेडियो मे उलझता हुआ खिडकी के पास से ही गुजर रहा था।

"वावा! वावा!" स्योम्का चिल्ला रहा था। खुशी और भय से वह वदहवास हो गया था।

दस्तक सुनकर कइयो ने मुडकर देखा। अनजान वावा ने भी सिर घुमाया। स्योम्का ने देखा कि वावा ने अपनी धसी हुई वदरग आखो से उसे देखा है, उसने देखा कि वावा ने गहरी सास भरी और सिर हिलाया।

स्योम्का के आसू फूट पडे, छाती मे दिल जोर-जोर से धडक रहा था। इस बीच कैदी और कॉनवाय के सिपाही आगे वढ गए थे और मोड के पीछे छिप गए थे। स्योम्का अभी भी मुक्के मारता जा रहा था और चिल्ला रहा था "वावा, वावा!" सिपाही उदासीन स्वर मे कह रहा था

"अबे, रोता क्यो है? काहे का रोना है तुझे जल्दी ही तेरे घर पहुचा देगे। वच्चा है तू, सो तेरा यहा कोई काम नही। कह दिया न, लौटा देगे, अब चिल्ला मत!"

पर स्योम्का फूट-फूटकर रो रहा था और उधर मोड के पीछे देखने का जतन कर रहा था, जहा सयोगवश ही उसे मिल गया उसका सच्चा, अनजान मित्र अपनी वेडिया घसीटता चला गया था।

लेओनीद अन्द्रेयेव

बस एक याद

१९वी सदी के अंत और २०वी के आरम्भ के जाने माने लेखक लओनीद निकोलायेविच अंद्रेयेव (१८७१—१९१९) ने विशेषत बच्चो के लिए तो कुछ नही लिखा। परंतु आज तक बच्चो के पढने योग्य पुस्तको की सूची म उनकी दो कहानिया 'बर्गामोत और गेराम्का' (१८९८) तथा 'बस एक याद' (१८९९) अवश्य शामिल की जाती हैं।

बचपन म अंद्रेयेव को फेनिमोर कूपर, माइन रीड गुस्ताव ऐमार और एडगर पो की पुस्तके सबसे ज्यादा पसद थी। बस एक याद कहानी रेड इडियनो के जीवन पर रोचक उपन्यास या जासूसी कहानी जैसी तो बिल्कुल नही है। लेकिन इसे बच्चो के पठन पाठ म केवल इसलिए ही स्थान प्राप्त नही है कि इसका नायक एक बालक है, बल्कि इसलिए भी कि जीवन की साधारण सी घटना को लेखक ने असाधारण ढग से प्रस्तुत किया है। एक मामूली सी बात है—शहरी लडका कुछ दिन देहाती इलाके मे रहता है पर उसके लिए यह यात्रा बिल्कुल ही अनोखी यात्रा होती है, जिसमे वह एक बिल्कुल नई खुशियो से भरपूर दुनिया देखता है। इसीलिए कहानी का अत और भी दुखद लगता है—लडके को फिर उसी कठोर, नीरस, निर्मम जीवन म लौटना पडता है।

हा यह कहना भी सही नही होगा कि कहानी पढकर पाठक के मन म पेत्का नामक लडके के प्रति करुणा ही जागती है। पेत्का को आजादी और सुख के जो दो क्षण मिलते है, उनकी याद उसके मन मे सदा के लिए बस जाती है और पाठक के हृदय पर भी वे अपनी छाप छोड जाते है।

नाई ओसिप अब्रामविच ग्राहक की छाती पर मैला सा कपडा ठीक करता, उगलियो से उसे कालर के पीछे घुसेडता और तीखी आवाज मे चिल्लाता

"छोकरे, पानी!"

शीशे मे अपनी शक्ल निहारता ग्राहक देखता कि उसकी ठोडी पर एक आर फुसी निकल आई है और वह मुह लटकाकर नजर मोड लेता, जो सीधी छोटे से, दुबले-पतले हाथ पर पडती। यह हाथ कही एक ओर से बढता और शीशे के पास टीन की कटोरी मे गर्म पानी रख देता। जब ग्राहक नजरे ऊपर उठाता तो उसे नाई का अक्स दिखाई देता—अजीब, टेढा सा और दिखती उसकी धमकी भरी नजर, जो वह नीचे किसी के सिर पर तेजी से डालता। साथ मे नाई के होठो मे बुदबुदाहट की हरकत होती। बुदबुदाहट सुनाई तो न देती, पर उसका मतलब साफ होता। अगर खुद नाई ओसिप अब्रामविच की जगह प्रकोपी या मिखाइला नाम का कोई शागिर्द उसकी हजामत कर रहा होता तो बुदबुदाहट जोरदार होती और उसमे अनिश्चित सी धमकी होती

"ज़रा ठहर, बच्चू!"

इसका मतलब होता कि छोकरे ने पानी जल्दी से नही दिया और उसे सजा मिलेगी।

"इसी लायक है ये," ग्राहक सोचता और गर्दन टेढी करके अपनी नाक के ऐन पास पसीने से लथपथ बडे से हाथ को निहारने लगता। हाथ की तीन उगलिया फैली होती और बाकी दो चिपचिपी व खुशबू मारती उगलिया ग्राहक के गाल और ठोडी का कोमल स्पर्श करती होती, जबकि भोथरा उस्तरा अप्रिय सी सरसराहट के साथ साबुन की झाग और दाढी के सख्त बाल साफ करता।

जिस लडके को सबसे ज़्यादा डाट पडती थी उसका नाम था पेत्का और वह नाई की दुकान मे काम करनेवालो मे सबसे छोटा था। दूसरा छोकरा निकोल्का पेत्का से तीन साल बडा था और जल्दी ही शागिर्द बनने वाला था। अब भी, जब कोई मामूली सा ग्राहक दुकान मे आता और शागिर्दो को मालिक की अनुपस्थिति मे काम करने मे आलस लगता, तो वे निकोल्का को हजामत करने को भेज देते और यह देखकर हसते कि उसे भारी-भरकम जमादार की टाड के बाल देखने के लिए पजो के बल खडा होना पडता है। कभी-कभी ग्राहक चीखता-चिल्लाता कि उसके बाल खराब कर दिए और तब शागिर्द भी निकोल्का पर चिल्लाते। लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता था, सो वह बडो की तरह बनता फिरता था सिगरेट पीता था, दात भीचकर थूकता था, गदी-गदी गालिया देता था। पेत्का के सामने वह इस बात की भी डीग मारता था कि उसने वोद्का पी है, पर यह शायद झूठ ही था। शागिर्दो के साथ वह पडोस की गली मे जोरदार लडाई देखने जाता था और जब वहा से हसता-खेलता लौटता था, तो ओसिप अब्रामविच उसे दो थप्पड रसीद करता था एक गाल पर एक।

पेत्का दस बरस का था। वह न सिगरेट पीता था और न वोद्का ही, गालिया भी नही देता था, हालाकि उसे बहुत सी गालिया आती थी और इन सब मामलो मे उसे अपने साथी से ईर्ष्या होती थी।

जब दुकान मे कोई ग्राहक न होता तो पेत्का और निकोल्का बैठकर बाते करते। ऐसे मौको पर निकोल्का सदा भला बन जाता था और "छोकरे" को यह समझाता था कि कौन सी काट के बाल कैसे काटे जाते हैं।

कभी-कभी वे दोनो खिडकी पर बैठ जाते, जहा मोम का बना औरत का आधा बुत रखा हुआ था। बुत के गाल गुलाबी थे। यहा बैठकर वे बुल्वार की ओर ताकते रहते। बुल्वार पर सुबह से ही जिंदगी की चहल-पहल शुरू हो जाती थी। बुल्वार के पेड धूल से धूसर पड गए थे, तेज धूप मे उनकी एक पत्ती तक न हिलती और उनमे जो छाया पडती वह भी धूसर ही होती, उसमे जरा भी शीतलता न होती। सभी बेचो पर औरते, मर्द बैठे होते – मैले-कुचैले, अजीब से कपडे पहने हुए, औरतो के सिर पर कोई रूमाल नही, मर्दो के सिर पर कोई टोपी नही, मानो वे यही रहते हो और उनका कोई दूसरा घर ही न हो। अक्सर किसी का झबरीला सिर बेबस ही कधे पर लुढक जाता और शरीर अनचाहे ही सोने को जगह ढूढता, तीसरे दर्जे की सवारी की तरह, जिसने एक सीट पर बैठे-बैठे ही हजारो किलोमीटर का सफर किया हो, पर लेटने को कोई जगह न थी। पगडडियो पर नीली वर्दी पहने चौकीदार डडा उठाए घूमता रहता था और देखता था कि कोई बेच पर न लेट जाए, या घास पर न लवा पड जाए, जो तेज धूप से सूख गई थी, पर फिर भी इतनी नरम और ठडी थी।

निकोल्का इन मे से कई लोगो के नाम तक जानता था। वह पेत्का को उनके बारे मे तरह-तरह के किस्से सुनाया करता था और खीसे निपोरता था। पेत्का हैरान होकर सोचता था कि निकोल्का कितना अक्लमद और निडर है, कि कभी वह भी उसके जैसा बन जाएगा। पर अभी तो वह कही और चला जाना चाहता था   बस यही एक ख्वाहिश थी उसकी।

पेत्का के लिए सभी दिन बिल्कुल एक जैसे थे। जाडा हो या गर्मी, उसे बस वही शीशे देखने को मिलते थे, जिनमे से एक मे बाल पडा हुआ था और दूसरा टेढा था। गदी सी, धब्बेदार दीवार पर वही एक ही तसवीर सदा टगी रहती थी। सुबह, शाम, सारा दिन पेत्का के सिर पर एक ही कर्कश आवाज गूजती थी " छोकरे, पानी।" और वह पानी देता रहता था, देता रहता था। उसके लिए कोई छुट्टी या त्यौहार न थे। इतवार को जब दूसरी दुकानो मे कोई रोशनी न होती, नाई की दुकान मे रात गए तक सडक पर तेज रोशनी गिरती रहती। वहा से गुजरते लोग प्राय दुकान के एक कोने मे स्टूल पर गठरी

वनकर बैठे दुवले-पतले लडके को देखते, जो न जाने किसी सोच मे डूबा होता या ऊघ रहा होता। पेत्का बहुत सोता था, तो भी उसे हर समय नीद आती रहती थी और प्राय ऐसा लगता था कि उसके चारो ओर जो कुछ भी है वह सच्चाई न होकर एक लबा, अप्रिय सपना मात्र ही है। अक्सर उससे पानी विखर जाता, उसे "छोकरे, पानी!" की कर्कश चीख ही सुनाई न देती। वह सूखता जा रहा था और उसके मुडे सिर पर पपडी सी जमने लगी थी। ग्राहक इस दुवले-पतले लडके को घिन से देखते थे, जिसकी आखो मे सदा नीद भरी रहती, मुह अधखुला होता और गर्दन व हाथ वेहद गदे। आखो के पास और नाक के तले वारीक-वारीक झुर्रिया वन गई थी, मानो नुकीली सुई से बना दी गई हो और इनके कारण वह बूढा हो गया बौना सा लगता था।

पेत्का नही जानता था कि वह यहा ऊवता है या खुश है, पर उसका मन कही और चले जाने को होता था। उस जगह के वारे मे वह कुछ नही कह सकता था कि वह कहा है और कैसी है। जव उसकी मा, नादेझ्दा वावर्चिन उससे मिलने आती, तो वह विना किसी चाव के मा की दी मिठाई खा लेता, उससे किसी बात की शिकायत न करता, बस इतना ही कहता कि वह उसे यहा से ले जाए। पर जल्दी ही वह अपना यह अनुरोध भी भूल जाता, अनमना सा मा को नमस्ते करता और इतना तक न पूछता कि वह फिर कव आएगी। नादेझ्दा यह सोचकर दुखी होती कि उसके एक ही बेटा है, और वह भी भोदू है।

पेत्का को कुछ पता नही था कि वह कितने दिनो तक यो ही जीता रहा। एक दिन दोपहर के खाने के समय मा आई, उसने ओसिप अब्रामविच से बाते की और बेटे से कहा कि उसे दाचा * जाने की छुट्टी मिल गई है। यह दाचा त्सरीत्सिनो ** मे था और वहा नादेझ्दा के मालिक रहते थे। पहले तो पेत्का

---

* शहर के वाहर रमणीय ग्रामीण इलाके मे स्थित घर, जहा नगरवासी गर्मियो मे रहते और आराम करते है। – अनु०

** मास्को से थोडी दूर स्थित एक सुन्दर स्थल। १७७५-१७८५ मे यहा एक महल बनाया गया था। १७८५ मे जारनी येकातेरीना द्वितीया ने पहला महल तोडकर नया बनाने का आदेश दिया। नये महल का निर्माण पूरा नही हुआ और अव यहा खण्डहर ही बचे हुए है। – स०

कुछ समझा नही पर फिर निश्शब्द हसी से उसका चेहरा बारीक-बारीक झुर्रियो से भर गया और वह मा से जल्दी करने को कहने लगा। नादेझ्दा को अभी शिष्टाचार के नाते ओसिप अब्रामविच से उसकी पत्नी का हालचाल पूछना था, पर पेत्का उसे धीरे-धीरे दरवाजे की ओर धकेल रहा था और बाह खीच रहा था। वह नही जानता था कि यह दाचा क्या होता है, पर उसका ख्याल था यह वही जगह है, जहा जाने का उसका इतना मन था। अपनी खुशी मे वह निकोल्का को भूल ही गया। निकोल्का जेबो मे हाथ डाले पास ही खडा था और सदा की तरह ढिठाई से नादेझ्दा की ओर देखने की कोशिश कर रहा था। पर उसकी आखो मे ढिठाई की जगह गहरा विषाद था उसके मा थी ही नही, और इस क्षण वह इस मोटी नादेझ्दा जैसी औरत को भी मा मानने को तैयार था। बात यह थी कि वह भी कभी दाचा नही गया था।

स्टेशन पर खूब चहल-पहल और भीड-भडक्का था। आती-जाती रेलगाडिया घडघडा रही थी, इजन सीटिया बजा रहे थे – किसी की आवाज ओसिप अब्रामविच जैसी भारी और गुस्से भरी थी और किसी की उसकी बीमार पत्नी जैसी चिचियाती हुई और पतली। सवारिया उतावली सी इधर-उधर आ जा रही थी, लगता था उनका यह सिलसिला कभी खत्म ही न होगा। पेत्का यह सब आखे फाड-फाडकर देख रहा था – वह पहली बार स्टेशन पर आया था। उसके मन मे एक विचित्र अधीरता और अकुलाहट भर रही थी। मा को और उसे भी डर लग रहा था कि कही गाडी छूट न जाए, हालाकि गाडी जाने मे अभी आधे घटे से भी ज्यादा समय था। आखिर जब वे डिब्बे मे बैठ गए और गाडी चल दी, तो पेत्का खिडकी से चिपक गया। बस उसका मुडा हुआ सिर ही पतली गर्दन पर इधर-उधर घूम रहा था, मानो वह लोहे के स्प्रिग पर लगा हुआ हो।

पेत्का का जन्म शहर मे हुआ था और वही पर वह बडा हुआ। जिदगी मे पहली बार वह खेत-मैदान देख रहा था और यहा सब कुछ उसके लिए नया, आश्चर्यजनक और अजीब था। यहा चारो ओर इतनी दूर-दूर तक दिखाई देता था, जगल घास जैसा लगता था और आसमान भी इस नए ससार मे इतना साफ और इतना बडा था, मानो वह छत पर चढकर उसे देख रहा हो। पेत्का

अपनी ओर से उसे देख रहा था और जब वह मा की ओर सिर मोडता, तो सामने की खिडकी से भी उसे नीला आकाश नजर आता और उस पर तैरते सफेद बादल दिखते। पेत्का कभी अपनी खिडकी के पास कुलबुलाता रहता, कभी भागकर डिब्बे के दूसरी ओर चला जाता, सहज भाव से अपना जैसे-तैसे धोया हाथ दूसरे मुसाफिरो के घुटनो और कधो पर रखता जाता और वे जवाब मे मुस्करा देते। एक साहब ने, जो अखबार पढ रहा था और न जाने बेहद थके होने के कारण या ऊब के मारे बराबर जभाइया ले रहा था, दो-एक बार लडके की ओर तिरछी नजरो से देखा। नादेभ्दा फौरन माफी मागने लगी

"पहली बार गाडी पर जा रहा है न   सब कुछ नया है इसके लिए   "

"हु," साहब ने बुदबुदा कर नजरे अखबार मे गाड ली।

नादेभ्दा का बडा मन था कि उसे यह बताए कि पेत्का तीन साल से नाई की दुकान पर काम कर रहा है और नाई ने उसे अपने पैरो पर खडा करने का वायदा किया है और यह बहुत ही अच्छा होगा, क्योकि वह अबला बिल्कुल अकेली है और उसका बीमारी मे या बुढापे मे यही एक सहारा है। पर साहब का चेहरा सख्ती भरा था और नादेभ्दा ने यह सब मन ही मन कह डाला।

रास्ते के दाई ओर छोटे-छोटे ढूहो वाला मैदान था, जो नमी की वजह से गाढे हरे रग का था। उसके सिरे पर मटमैले से मकान बने हुए थे, दूर से वे खिलौनो जैसे लगते थे। आगे ऊचे, हरे टीले पर, जिसके नीचे रजत जल धारा चमचमा रही थी, खिलौने सा ही सफेद गिरजा बना हुआ था।

जब रेलगाडी अचानक तेज हो गई घडघडाहट के साथ पुल पर चढ गई और मानो दर्पण सी नदी के ऊपर हवा मे टग गई, तो पेत्का सहमा डर के मारे काप उठा और झटककर खिडकी से पीछे हट गया, लेकिन पल भर मे ही फिर खिडकी के पास जा पहुचा, कि कही रास्ते का कोई नज़ारा उसकी नजरो से बचा न रह जाए। पेत्का की आखो मे अब उनीदापन न रहा था और झुर्रिया भी गायब हो गई थी, मानो किसी ने इस चेहरे पर गर्म इस्तरी फेरकर झुर्रिया दूर कर दी हो और उसे सफेद व चमकीला बना दिया हो।

दाचा पर पहले दो दिन तो पेत्का को जगल से डर लगता रहा, जो उसके सिर के ऊपर धीर-गम्भीर सा शोर करता था। अधेरा जगल विचारमग्न सा

और भयावह लगता था। जगल के बीच मे छोटे-छोटे हरे-भरे मैदान मानो अपने चटकीले फूलो मे हसते थे, गाते थे और पेत्का को वडे अच्छे लगते थे, वह उन्हे सहलाना चाहता था। गाढा नीला आकाश उसे अपनी ओर वुलाता, मुस्कराता लगता था। पेत्का उद्विग्न हो उठता, कापता, पीला पड जाता और मुस्कराने लगता। बूढो की तरह धीरे-धीरे चलता हुआ वह जगल के बाहर-बाहर और तालाब के झाडीदार किनारे पर घूमता रहता। यही पर वह थककर घनी नम घास पर गिर पडता और उसमे समा जाता, बस उसकी छोटी सी चित्तीदार नाक हरी सतह के ऊपर निकली होती। पहले दिनो मे वह अक्सर मा के पास लौट आता था, उसका दामन पकडता रहता था और जब साहब उससे पूछते कि क्या दाचा पर उसे अच्छा लग रहा है, तो वह सकपका जाता और मुस्कराता हुआ सिर हिला देता।

और फिर वह विकट वन तथा शात जल की ओर चला जाता। वहा घूमता हुआ वह मानो उनसे कुछ पूछता रहता।

दो दिन और बीतते न बीतते पेत्का का प्रकृति के साथ पूर्ण सामजस्य हो गया। ऐसा त्सरीत्सिनो के एक स्कूल छात्र मीत्या के सहयोग से हुआ। मीत्या का सवलाया चेहरा पीलापन लिए था, सिर के बाल खडे रहते थे। धूप से उसके सुनहरी बालो का रग इतना उड गया था कि वे सफेद लगते थे। पेत्का ने जब पहली बार उसे देखा तो वह मछली पकड रहा था। पेत्का बेझिझक उससे बाते करने लगा और जल्दी ही वे घुलमिल गए। मीत्या ने पेत्का को एक वसी पकडने को दी और उसे दूर कही नदी मे नहलाने ले गया। पेत्का को पानी मे घुसते हुए डर लग रहा था, पर जब वह घुस गया, तो फिर बाहर नही निकलना चाहता था। नाक-भौ ऊपर उठाकर, पानी पर हाथ मारते हुए वह ऐसे दिखा रहा था, मानो तैर रहा हो। इन क्षणो मे वह बिल्कुल ऐसा पिल्ला लगता था, जो पहली वार पानी मे घुसा हो। आखिर जब पेत्का ने कपडे पहने तो उसका बदन ठड से नीला पड गया था और दात किटकिटा रहे थे। मीत्या को हमेशा कुछ न कुछ सूझता रहता था। उसी के सुझाव पर वे महल के खडहर देखने गए। महल की छत पर चढ गए, जहा बहुत सारे पेड उग आए थे, विशाल महल की ढह गई दीवारो के बीच घूमते रहे। वहा उन्हे बहुत अच्छा लग रहा

था जगह-जगह पर पत्थरो के ढेर लगे हुए थे, जिन पर मुश्किल से चढा जा सकता था और उनके बीच पेड-पौधे उग रहे थे, पूर्ण निस्तब्धता थी और लगता था कि बस अभी किसी कोने मे से कोई निकल आएगा या खिडकी के टूटे-फूटे झरोखे मे से कोई डरावना चेहरा दिखाई देगा। धीरे-धीरे पेत्का को दाचा पर ऐसा लगने लगा, मानो वह अपने ही घर रह रहा हो और वह यह भूल ही गया कि दुनिया मे ओसिप अब्रामविच और नाई की दुकान का भी अस्तित्व है।

"देखो तो, कितना मोटा हो गया है!" नादेभ्दा खुश होती। वह खुद भी काफी मोटी थी और रसोईघर की गर्मी से उसका चेहरा तावे के समोवार की तरह लाल हो गया था।

नादेभ्दा सोचती थी कि पेत्का को खाना अच्छा मिलता है। परतु वास्तव मे पेत्का बहुत कम ही खाता था इसलिए नही कि उसे भूख नही लगती थी, वल्कि इसलिए कि कौन इतना झझट करे अगर चवाए बिना ही खाना निगाला जा सकता, तो वात और थी, पर यहा तो चबाना पडता था और बीच-बीच मे खाली बैठे टागे हिलानी पडती थी, क्योकि नादेभ्दा बहुत ही धीरे-धीरे खाना खाती थी, हड्डिया चूसती थी, एप्रन से मुह पोछती थी और बेकार की बाते करती जाती थी। उधर पेत्का को न जाने कितने काम थे पाच वार तो नहाने जाना चाहिए, फिर झाडियो से बसी के लिए डडिया काटनी होती है, केचुए ढूढने होते हैं– इस सब के लिए भी तो वक्त चाहिए। अब पेत्का नगे पैर घूमता था, यह मोटे तलवे वाले, घुटनो तक ऊचे बूट पहने फिरने से कही अच्छा था खुरदरी जमीन से कही पैरो मे मीठी जलन होती और कही ठडक पहुचती थी। पेत्का अब उसे मिली पुरानी जैकट भी नही पहनता था, जिसमे वह नाई की दुकान का बडा शागिर्द लगता था। शाम को जब वह साहव लोगो को नावो मे सैर करते देखने के लिए बाध पर जाता था, तभी जैकट पहनता था। सजे-धजे साहव लोग हसते हुए हिलती-डुलती नाव मे बैठते और वह धीरे-धीरे निर्मल जल को चीरती हुई बढ जाती, जल मे प्रतिविम्बित वृक्ष डोलने लगते, मानो हवा का झोका आया हो।

उसी सप्ताह के अत मे साहव "बावरचीन नादेभ्दा" के नाम पत्र लाए और जब उन्होंने उसे पढकर सुनाया तो वह रोने लगी और एप्रन पर लगी

कालिख सारे चेहरे पर पोत ली। इस सबके साथ उसके मुह से निकले कुछ शब्दो से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि चर्चा पेत्का की है। यह सब सध्या समय हुआ। पेत्का पीछे के आगन मे इक्कल-दुक्कल खेल रहा था और गाल फुला रहा था, क्योकि इस तरह कूदना काफी आसान लगता था। स्कूल छात्र मीत्या ने उसे यह निकम्मा, पर दिलचस्प खेल सिखाया था, और अब पेत्का पक्के खिलाडी की तरह अकेले मे अभ्यास कर रहा था। साहब ने बाहर आकर उसके कधे पर हाथ रखा और कहा

"क्यो भई, जाना होगा।"

पेत्का सकपकाया सा मुस्करा रहा था, बोल कुछ नही रहा था।

"है न भोदू!" साहब ने सोचा।

"तूझे जाना होगा।"

पेत्का मुस्कराए जा रहा था। नादेझ्दा आसू बहाती आई और उसने मालिक की बात की पुष्टि की

"बेटा, तुझे जाना पडेगा।"

"कहा?" पेत्का हैरान हो गया।

नगर को वह भूल ही चुका था और दूसरी जगह, जहा वह सदा जाना चाहता था, उसे मिल चुकी थी।

"मालिक, ओसिप अब्रामविच के पास।"

पेत्का अभी भी नही समझ रहा था, हालाकि बात बिल्कुल साफ थी। उसका मुह सूख गया, जीभ मुश्किल से चल रही थी, जैसे-तैसे उसने पूछा

"पर कल मछली कौन पकडेगा? यह देखो – बसी "

"क्या किया जाए! ओसिप अब्रामविच का हुक्म है। कहते हैं प्रकोपी बीमार पड गया, अस्पताल मे दाखिल किया है उसे। काम करनेवाला कोई नही। तू रो मत, शायद फिर छुट्टी दे दे – आदमी तो भला है ओसिप अब्रामविच।"

पर पेत्का रोने की सोच ही नही रहा था, वह कुछ समझ नही पा रहा था। फिर धीरे-धीरे पेत्का के दिमाग मे सारी बात साफ होने लगी। और तब उसने मा को आश्चर्यचकित कर दिया, मालिको को परेशानी मे डाल दिया वह दुबले-पतले शहरी बच्चो की तरह नहीं रोया, वह तो दहाडे मारने लगा,

जमीन पर लोटने लगा। उसके पतले से हाथ की मुट्ठी भिच गई और वह मा के हाथो पर, जमीन पर, जो कुछ भी सामने पडता, उसी पर मुट्ठिया मारने लगा, ककडो-पत्थरो से उसके हाथो मे दर्द हो रहा था, पर वह जैसे उसे और भी तेज करना चाहता था।

आखिर पेत्का शात हो गया। मालकिन दर्पण के सामने खडी बालो मे सफेद गुलाब लगा रही थी और साहब कह रहे थे

"देखा तुमने, चुप हो गया – बच्चो का दुख यही दो पल का होता है।"

"पर मुझे बडा तरस आता है इस बेचारे पर।"

"हा सच ही बडे बुरे हालात मे रहते है ये लोग, पर ऐसे भी लोग है, जिनकी जिदगी इनसे भी बदतर है। तुम तैयार हो?"

वे दिप्मान बाग को चल दिए, जहा उस शाम को नाच होनेवाले थे और फौजी बैड बजने लगा था।

दूसरे दिन सुबह सात बजे की गाडी से पेत्का मास्को जा रहा था। फिर से उसकी आखो के सामने हरे-भरे खेत गुजर रहे थे, जो रात मे पडी ओस से रुपहले लग रहे थे। पर अब ये खेत-मैदान पहले की दिशा मे नही, बल्कि उससे विपरीत दिशा मे बढ रहे थे। पेत्का का दुबला-पतला शरीर स्कूल छात्र की पुरानी जैकट मे लिपटा हुआ था, उसके गरेबान मे से सफेद सूती कालर दिख रहा था। पेत्का हिल-डुल नही रहा था और खिडकी मे भी प्राय नही देख रहा था। वह चुपचाप बैठा हुआ था – पतले-पतले हाथ घुटनो पर रखे हुए थे। आखे उनीदी और उदासीन थी, आखो के पास और नाक तले बारीक-बारीक झुर्रिया पडी हुई थी। खिडकी के पास से खभे और प्लेटफार्म की कडिया गुजरी और फिर गाडी रुक गई।

उतावले मुसाफिरो के बीच धक्का-मुक्की करते वे गडगडाती सडक पर निकले और विराट भूखे शहर ने अनमने भाव से अपने नन्हे शिकार को हडप लिया।

"मेरी बसी छिपा देना!" मा जब उसे नाई की दुकान तक ले आई, तो पेत्का बोला।

"छिपा दूगी, बेटा, छिपा दूगी। देखो, फिर आ ही जाए तू।"

फिर से गदी और उमस भरी नाई की दुकान मे कर्कश चीख गूजती "छोकरे, पानी!" और ग्राहक देखता कि शीशे की ओर मैला सा हाथ बढता और साथ ही उसे धमकी भरी बुदबुदाहट सुनाई देती "जरा ठहर, बच्चू!" इसका मतलब यह होता कि उनीदे छोकरे ने पानी बिखेर दिया या हुक्म ठीक से नही समझा। रात को जहा निकोल्का और पेत्का पास-पास सोते थे, एक पतली सी, मद-मद, उद्विग्न आवाज दाचा के बारे मे बताती, ऐसी-ऐसी बाते सुनाती, जो कभी नही होती, जैसा किसी ने कभी देखा ही नहीं और न सुना ही है। फिर चुप्पी छा जाती और सन्नाटे मे बाल छातियो से निकलती उखडी-उखडी सासे सुनाई देती और एक दूसरी आवाज, जो बच्चे की होते हुए भी रूखी और तीखी थी, कहती

"शैतान कही के! सत्यानास हो इनका!"

"कौन शैतान?"

"कोई नही सभी।"

माल से लदी घोडागाडी पास से गुजरती और उसकी घडघडाहट मे लडको की आवाजे खो जाती।

अलेक्सान्द्र कुप्रिन

मदारी
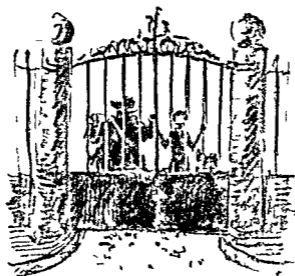
मदारी १६वी मदी के अत और २०वीं मदी के आरम्भ के एक सर्वाधिक प्रतिभावान लेखक अलेक्सान्द्र इवानोविच कुप्रिन की सबसे प्रसिद्ध बाल कथा है।

कुप्रिन का जन्म १८७० मे हुआ। उनके पिता एक छोटे नगर के दफ्तर म काम करते थे। कुप्रिन न अपनी जवानी मे बहुत पापड बेले। वह फौज म रहे, मुक्केबाज थ, एक जागीर का काम सभाला, थियेटर मे अभिनय किया, एक कारखाने के कार्यालय मे काम किया उन्हे सरकस और हवाबाजी का शौक था, दत चिकित्सा की शिक्षा भी उन्होने पाई। अपन समसामयिक रूसी जीवन का जो विविध, समृद्ध ज्ञान उन्होंने पाया, उसे अपनी कहानियो और उपन्यासो म उतारा।

प्रकृति और पशु पक्षियो के बारे मे तथा थियेटर और सरकस की घटनाओ पर कुप्रिन ने बच्चो के लिए कई कहानिया लिखी। मैनाए, 'जेम्बो हाथी', 'चिडियाघर' और दूसरी कहानिया आज तक लोकप्रिय ह। मदारी कहानी उन्होंने १६०४ म लिखी। यह एक वास्तविक घटना पर आधारित है जो कुप्रिन ने क्रीमिया मे अपनी आखो देखी थी।

महान अक्तूबर क्राति क बाद कुप्रिन प्रवास मे रहे। १६३७ मे वह स्वदेश लौट आए। तब उन्होंने सवाददाताओ से कहा था "मेरा बहुत मन है कि मै सोवियत युवाजन के लिए मनमोहक सोवियत बच्चो के लिए लिखू'। किंतु दुर्भाग्यवश, उनकी इन इच्छाओ को पूरा होना न बदा था एक वर्ष बाद कुप्रिन का देहात हो गया।

सकरी पहाडी पगडडियो पर दाचो की एक बस्ती से दूसरी तक एक मदारी क्रीमिया के दक्षिणी तट के किनारे-किनारे बढता जा रहा था। आगे-आगे सफेद कुत्ता दौड रहा था – अपनी लबी, गुलाबी जीभ एक ओर को लटकाए। कुत्ता पूडल नस्ल का था और उसके बाल शेर की तरह काटे हुए थे। चौराहो पर वह रुक जाता और दुम हिलाता हुआ प्रश्न भरी नजर पीछे डालता। न जाने उसे कौन से लक्षण पता थे, पर वह सदा ठीक रास्ता जान लेता ओर मजे मे अपने झबरीले कान हिलाता तेजी से आगे दौड जाता। कुत्ते के पीछे बारह साल का लडका सेर्गेइ चल रहा था। बाए बगल मे वह दरी दबाए हुए था, जिस पर वह कलाबाजी दिखाता था, और दाए हाथ मे छोटा सा, गदा पिजडा उठाए था। पिजडे मे था गोल्डफिंच पक्षी, जो एक डिब्बे मे से तमाशबीनो के भाग्य की रग-बिरगी पर्चिया निकालता था। सबसे पीछे मदारी मर्तीन लदीज्किन पैर घिसटता चल रहा था। अपनी झुकी हुई पीठ पर वह पिटारी वाला बाजा (स्ट्रीट आर्गन) उठाए था।

बाजा बडा पुराना था, उसकी आवाज फटी-फटी थी। दसियो बार उसकी मरम्मत हो चुकी थी। बाजा दो धुने बजाता था लाउनेर का जर्मन वाल्स और 'चीन की यात्रा' ओपेरा की एक धुन। दोनो धुने तीस-चालीस साल पहले खूब चलती थी, पर अब सब लोग उन्हे भूल-भाल चुके थे। इसके अलावा पिटारी मे दो बहुत बडी खामिया थी। एक तो उसमे उच्च स्वर का जो पाइप था उसका गला बैठ गया था, वह बजता ही न था, इसलिए जब उसकी बारी आती, तो सारी धुन लडखडाने लगती, हिचकियो के साथ बजती। एक नीचे स्वर वाला पाइप भी दगाबाज था उसका कपाट फौरन बद नही होता था। एक बार वह बजने लगता, तो बस वही नीची तान खीचता रहता, और दूसरे सारे स्वर उसमे दब-दब जाते, जब तक कि कपाट अपनी मर्जी से बद न हो जाता। मदारी बाबा को खुद भी अपनी पिटारी की इन खामियो का अहसास था और वह मजाक मे कहा करता था

"क्या करे, भैया? बडा पुराना बाजा है बहुत कुछ सह चुका है बजाओ तो साहब लोग बुरा मानते है, कहते है 'थू, कैसा भोडा है!' पर धुने तो बडी अच्छी थी, खूब बजती थी, हा, आजकल के साहबो को हमारे गाने पसद नही। वो तो अब 'गेशा' सुनना चाहते है, या 'दो सिरा उकाब', 'चिडीमार' का वाल्स ऊपर से पिटारी के ये पाइप भी दगा देते है मिस्त्री के पास ले गया था, पर वह हाथ तक नही लगाना चाहता। कहता है नए पाइप लगाने चाहिए या कहता है, सबसे अच्छा तो यह हे कि इसे किसी अजायबघर मे दे दे, वहा इसे पुरानी चीजो की नुमाइश मे रख देगे। ओहो! खैर, भैया, अभी तक यह पिटारी हमारा पेट भरती आई हे, भगवान करेगा, आगे भी भरती रहेगी।"

मदारी के मजाक मे उदासी का पुट मिला होता। उसे अपना बाजा इतना प्यारा था, जितना कोई जीव ही हो सकता है, ऐसा कोई प्राणी, जिससे बहुत ही निकट का रिश्ता हो। अपनी कठोर घुमक्कड जिदगी के बरसो के साथ मे वह पिटारी का इतना आदी हो गया था कि उसे जानदार ही समझने लगा था। कभी-कभार किसी गदी सराय मे रात को बाबा के सिरहाने फर्श पर रखे बाजे से सहसा हल्की सी, कपकपाती, दुखद आवाज निकलती, जैसे बूढे की आह।

तब मदारी हौले से उसकी नक्काशीदार बगल सहलाता और प्यार से बुदबादाता

"क्यो भैया, दुखी हो रहा है? सहे जा, भैया "

बाजे जितना ही, या शायद उससे थोडा ज्यादा ही प्यार मदारी को अपने छोटे साथियो से था आर्तो कुत्ते और नन्हे सेर्गेइ से। लडके को उसने पाच साल पहले एक पियक्कड, रडवे मोची से "किराये" पर लिया था, उसे दो रूबल महीने मे देने का वायदा किया था। पर मोची थोडे दिनो मे मर गया और सेर्गेइ सदा के लिए मन से भी और दाने-पानी के हित से भी मदारी बाबा के साथ बध गया।

(२)

पगडडी तट की ऊची चट्टान पर सौ साला जैतूनो के बीच बल खाती बढ रही थीं। कभी-कभी पेडो के बीच से समुद्र की झलक आती और तब लगता कि वह दूर जाने के साथ-साथ नीली सशक्त दीवार सा ऊपर भी उठ रहा है, रुपहली-हरी पत्तियो के बीच से उसका रग और भी नीला, और भी गाढा लगता। घास और झाडियो मे, अगूरो की बेलो और पेडो मे, चारो ओर रइयो की झकार गूज रही थी, उनकी एकसुरी, निरतर गूज से मानो हवा कपायमान हो रही थी। खासी गर्मी पड रही थी, एक पत्ती तक न हिल रही थी और तपी जमीन से तलवे जल रहे थे।

सेर्गेइ सदा की भाति बाबा के आगे-आगे चल रहा था। वह रुक गया और बाबा के पास आने का इतजार करने लगा।

"क्या बात है, सेर्गेइ?" मदारी ने पूछा।

"बडी गर्मी है, बाबा सही नही जाती! नहा न ले "

बूढे ने चलते-चलते आदतन कधा हिलाकर पीठ पर पिटारी ठीक की और बाजू से मुह का पसीना पोछा। नीचे फैली समुद्र की शीतल नीलिमा को ललचाई नजरो से देखता हुआ बोला

"वो तो बडा अच्छा रहे! पर नहाने के बाद गर्मी और भी तग करेगी।

मुझे एक डाकदर ने बताया था कि यह जो खारा पानी है न यह आदमी को गर्मी मे कमजोर करता है चुस्ती तो क्या आएगी, बदन और भी ढीला पड जाएगा "

"शायद, उसने झूठमूठ कहा हो," सेर्गेइ का मन बाबा की बात पर विश्वास नही करना चाहता था।

"वाह, झूठ काहे को बोलेगा? भरोसेमद आदमी है, पीता नही सेवास्तोपल मे अपना घर है उसका। और फिर यहा तो समुद्र तक उतरने का रास्ता भी नही है। थोडा सब्र कर, अभी मिस्खोर तक पहुच जाए, बस वही अपना पापी शरीर धो लेगे। खाने से पहले तो नहाने मे मजा भी है फिर थोडा सो भी सकते हैं बडा अच्छा रहेगा "

आर्तो ने पीछे बाते सुनी, तो मुडकर लोगो के पास दौड आया। उसकी नीली-नीली, भली आखे गर्मी से सिकुडी हुई थी। वह गद्‌गद सा बूढे और लडके को देख रहा था, बाहर निकली हुई लबी जीभ तेज सास से काप रही थी।

"क्यो, भई आर्तो? गर्मी है?" बाबा ने पूछा।

कुत्ते ने जीभ पाइप की तरह मोडकर जोर से जम्हाई ली, सारा बदन झकझोरा और बारीक सी आवाज मे किकियाया।

"हा, भाई मेरे, कुछ नही किया जा सकता। कहा ह न 'अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा' अब तेरे तो मान लिया वो माथा नही है, थूथनी ही है अच्छा, चल आगे, क्यो पैरो मे आता है मुझे तो सेर्गेइ यह गर्मी अच्छी लगती है। बस यह पिटारी ही तग करती है, नही तो भैया काम न होता तो बस कही घास पर, छाया मे लेट रहता। तोद ऊपर की ओर बस पडे रहे। इन बूढी हड्डियो के लिए तो इस धूप से बढकर और कुछ नही है।"

पगडडी नीचे जाकर चौडे रास्ते से मिल गई। रास्ता पत्थर सा सख्त था और इतना सफेद कि आखे चुधियाती थी। यहा से पुराना काउट पार्क शुरू होता था। उसकी घनी हरियाली मे सुदर-सुदर दाचे बने हुए थे, फूलो की क्यारिया लगी हुई थी, फव्वारे थे। बूढा मदारी इस सारे इलाके को अच्छी तरह जानता था। हर साल अगूर की बहार मे वह एक के बाद एक इन सब

जगहो का चक्कर लगाता था। इस मोसम मे सारा क्रीमिया सजे-धजे अमीर लोगो से भर जाता था। दक्षिण की प्रकृति का वैभव बूढे के मन को नही छूता था, पर सेर्गेइ के लिए, जो पहली बार इधर आया था, यहा बहुत कुछ आश्चर्य जनक था। मैग्नोलिया के पेड, जिनकी सख्त पत्तिया यो चमकती थीं, मानो उन पर पालिश की गई हो और सफेद फूल रकाबियो जितने बडे थे, अगूर की बेलो से घिरे लता-मण्डप और अगूरो के लटकते गुच्छे, उजली छाल और विशाल छत्रो वाले सदियो पुराने चनार वृक्ष, तम्बाकू-बागान, जल धाराए और झरने तथा चारो ओर — क्यारियो, बाडो और दाचो की दीवारो पर चटकीले खुशबूदार गुलाब — यह सारी फलती-फूलती भव्य प्रकृति बालक को विमुग्ध कर रही थी। वह पल-पल मे बाबा का बाजू खीचता और अपनी खुशी व्यक्त करता। एक बाग के बीचोबीच बडा कुड था, बाग के जगले से चिपटकर सेर्गेइ चिल्लाया

'बाबा, बाबा, देखो तो, फव्वारे मे सुनहरी मछलिया है! सच, भगवान कसम सुनहरी मछलिया है! बाबा! वो देखो, आडू! कितने सारे आडू है! एक ही पेड पर!"

"चल-चल, बुधुए! क्या मुह बाए खडा ह!" बाबा ने मजाक से उसे आगे धकेला। जरा सब्र कर। कुछ दिनो मे हम नवारसीस्क तक पहुच जाएगे और वहा से फिर दक्खिन को हो लेगे। वहा है देखने लायक जगह। एक से एक बढकर शहर है, वह तो सोची, फिर आए आदलर, तुआप्से, और फिर भाई मेरे सुखूमी, बतूमी तेरी तो बस आखे फटी की फटी रह जाएगी। वो ताड के पेड को ही लो। देखके दातो तले उगली दबा लेगा! तना उसका ऐसा रोयेदार है जैसे नमदा और पत्ती इत्ती बडी कि हम दोनो उसके तले समा जाए!'

'सच?' सेर्गेइ हैरान और खुश हुआ।

'बस सब्र रख, अपनी आखो देख लेगा। और भी कोई कम चीजे है क्या वहा? माल्टा या वो नीबू ही लो देखा होगा तूने दुकान मे?"

हु?'

'बस ऐसे ही हवा मे लटकता रहता है। पेड पर मजे से यो उगता है, जैसे हमारे यहा सेब या नाशपाती और वहा पर लोग भी तरह-तरह के है

तुर्क, पारसी, चेर्केस सब लबे-लबे चोगे पहने और कमर पर खजर बाधे घूमते है। बडे जावाज लोग है! और वहा हब्शी भी होते है। मैने बतूमी मे कई बार देखे है।"

"हब्शी? हा, मुझे पता हे। उनके सिर पर सीग होते है," सेर्गेइ ने पूरे विश्वास के साथ कहा।

"सीग-वीग तो खैर उनके नही होते, यह सब झूठ है। पर काले होते है, बूटो जैसे और चमकते भी है। मोटे-मोटे होठ उनके लाल सुर्ख होते है, आखे सफेद-सफेद और बाल ऐसे घुघराले जैसे काली भेड के।"

"डर लगता होगा न इन हब्शियो से?"

"क्या बताऊ? पहले-पहल देखके तो आदमी सहम जाता है पर फिर जब देखो कि दूसरे लोग नही डरते, तो अपनी भी हिम्मत बढ जाती है हा भैया, क्या कुछ नही है वहा। वहा जाएगे, खुद देख लेगा। बस एक ही बुरी बात है—वहा ताप फैलता है। चारो ओर दलदल है न, इसीलिए। वहा के लोगो को तो कुछ नही होता, पर बाहर से आए को यह ताप तग करता है। अच्छा, खैर बहुत बाते बना ली। चल, जरा घुस तो इस फाटक मे। इस दाचा मे बडे अच्छे साहब रहते है तू मुझ से पूछ सेर्गेइ मैं सब जानता हू!"

पर आज वे न जाने किसका मुह देखकर निकले थे। कई जगहो से उन्हे दूर से देखकर ही भगा दिया जाता, दूसरी जगहो पर बाजे की फटी-फटी आवाज सुनते ही साहब लोग छज्जे पर बेसब्री से हाथ झटकने लगते और कही नौकर कहते कि साहब लोग अभी आए नही। हा दो दाचो से उन्हे तमाशे के लिए कुछ पैसे मिले, पर बहुत थोडे। वैसे तो बाबा थोडे पैसे लेने मे भी हिचकिचाता नहीं था। दाचा से बाहर निकलते हुए वह खुशी से जेब मे ताबे के सिक्के झनझना रहा था और कह रहा था

"दो और पाच हो गए पूरे सात क्यो, भई सेर्गेइ, ये भी पैसे हैं। सात बार सात और हो गया आधा रूबल। बस हम तीनो का पेट भर जाएगा और रैनबसेरा भी हो जाएगा और बूढा लदीश्किन भी दो बूदो से गला तर कर लेगा, अपनी बूढी हड्डिया सेक लेगा ओह, नही समझते ये साहब लोग! बीस कोपेक देते हुए उन्हे अफसोस होता है और पाच देते शर्म लगती है। बस,

इसीलिए चलता करते है। अरे भई, तुम तीन कोपेक ही दे दो। मैं कोई बुरा थोडे ही मानता हू बुरा काहे का मानना ?"

बूढा मदारी सीधे-सादे स्वभाव का था और जब उसे लोग भगाते, तब भी वह कुछ नही कहता था। पर आज एक मेम साहब की वजह से वह आपे मे न रहा था। गदराए बदन की खूबसूरत सी और देखने मे भली लगनेवाली औरत थी वह। बडा शानदार दाचा था उसका, फूलो के बाग से घिरा। बडे ध्यान से उसने बाजा सुना, और भी ध्यान से सेर्गेइ की कलाबाजी और आर्तो के तमाशे देखे। फिर बडी देर तक कुरेद-कुरेदकर लडके से पूछती रही कि वह कितने साल का है, उसका नाम क्या है, कलाबाजी उसने कहा सीखी, बूढा उसका क्या लगता है, उसके मा-बाप क्या करते थे वगैरह-वगैरह, फिर उसने रुकने को कहा और अदर चली गई।

कोई दस या शायद पद्रह मिनट तक ही वह बाहर नही आई। जितना अधिक समय बीत रहा था, उतनी ही अधिक मदारी और लडके के मन म अस्पष्ट सी आशाए बढती जा रही थी। बाबा ने मुह पर हाथ रखकर लडके के कान मे कहा

' ले, सेर्गेइ, आज तो किस्मत खुल गई, तू बस मेरी बात सुना कर मुझे सब पता है। शायद कोई कपडा-लत्ता दे दे या पुराना जूता। पक्की बात है !"

आखिर मेम साहब छज्जे पर आई, ऊपर से सेर्गेइ की आगे बढी टोपी मे छोटी सा सफेद सिक्का फेका और तुरत ही अदर चली गई। सिक्का पुराना था, दोनो ओर से घिसा हुआ। यही नही, दस कोपेक के इस सिक्के मे छेद भी था। बाबा बडी देर तक हैरान-परेशान सा सिक्के को देखता रहा। वह बाहर रास्ते पर निकल आया था, दाचा काफी पीछे छूट गया था, पर सिक्के को अभी तक हथेली पर रखे हुए था, मानो तोल रहा हो। सहसा वह रुक गया और बोला

"हा-आ ! क्या कहने है ! पूछो मत ! हम तीन बेवकूफ खूब जोर लगा रहे थे। तमाशा दिखा रहे थे। इससे तो अच्छा बटन ही दे देती, जरूरत पडने पर कही सी तो लेते। इस कूडे का मैं क्या करूगा ? मेम साब सोचती होगी कि बूढा अधेरे मे कही चला देगा इसे। नही, मेम साब, गलत सोचती है आप !

बूढा लदीश्किन ऐसी नीचता नही करता! जी हा! यह लो, सभालो अपना कीमती सिक्का! लो!"

और उसने क्रोध और गर्व के साथ सिक्का फेक दिया। सिक्का हौले से खनका और रास्ते की सफेद धूल मे समा गया।

इस तरह बूढा मदारी लडके और कुत्ते के साथ दाचो की इस पूरी बस्ती का चक्कर लगा चुके थे और अब वे नीचे समुद्र की ओर जाने की सोच ही रहे थे। बाई ओर एक आखिरी दाचा बच गया था। ऊची सफेद दीवार से घिरा वह दिखाई न देता था। दीवार के पीछे घनी कतार मे सरू के पतले तने वाले, ऊचे, धूल भरे पेड उग रहे थे, जो दूर से सुरमई तकलो से लगते थे। लोहे के चौडे फाटक पर बडा शानदार काम किया हुआ था और वह लेस से सजा लगता था। इस फाटक मे से ही चटकीले हरे, रेशमी लॉन का एक कोना और फूलो की क्यारी दिखती थी और दूर पीछे अगूर की बेलो से ढकी वीथिका। लॉन के बीचोबीच खडा माली लबे पाइप से गुलाबो को पानी दे रहा था। उसने पाइप के छेद पर उगली रखी हुई थी और इससे अनगिनत छीटो मे धूप इद्र-धनुषी रगो मे चमक रही थी।

बूढा मदारी फाटक से आगे निकलने ही वाला था, पर उसने अदर झाककर देखा और ठिठक गया।

"जरा रुकियो तो सेर्गेइ," उसने लडके को आवाज दी। "लगता है अदर लोग है। क्या तमाशा है? कितने बरस से यहा आ रहा हू, कभी कोई नही दिखा। चल तो सेर्गेइ!"

"'दोस्ती दाचा'। अदर आना मना है'," सेर्गेइ ने फाटक के एक खभे पर खुदे शब्द पढे।

"दोस्ती?" अनपढ बाबा ने पूछा। "आहा! दोस्ती! यही तो असली बात है! सारा दिन हमारा बेकार गया है, पर यहा से हम खाली हाथ नही जाएगे। मुझे इसकी गध आ रही है, यही समझ ले, जैसे शिकारी कुत्ते को दूर से पता चल जाता है। चल रे आर्तो, कुत्ते की औलाद! सेर्गेइ, बढ जा हिम्मत से। तू मुझसे पूछा कर मैं सब जानता हू।"

(३)

बाग की पगडडियो पर मोटी-मोटी रोडी बिछी हुई थी और दोनो ओर बडी-बडी गुलाबी सीपिया लगी हुई थी। क्यारियो मे रग-बिरगी घासो का माना कालीन बिछा हुआ था और उनके ऊपर अजीबोगरीब से चटकीले फूल उठे हुए थे, जिनसे हवा मे भीनी-भीनी सुगध फैल रही थी। जलाशयो मे पारदर्शी जल की कलकल हो रही थी। पेडो के बीच-बीच ऊचाई पर लगे गमलो से लताए लटक रही थी, और घर के सामने सगमरमर के दो ऊचे खभो पर शीशे के गोले लगे हुए थे, जिनमे मदारी और उसके साथियो ने अपनी उल्टी, टेढी-मेढी छवि देखी।

बरामदे के सामने बडा सा पक्का चौक था। सेर्गेइ ने वहा अपनी दरी बिछा दी, बाबा ने पिटारी को एक डडे पर टिकाया और हैडल घुमाने को तैयार हो गया, पर तभी एक विचित्र, अप्रत्याशित दृश्य की ओर उनका ध्यान आकर्षित हुआ।

अदर के कमरो से आठ-दस साल का एक लडका गला फाडकर चीखता हुआ बम की तरह बरामदे पर आ धमका। वह मल्लाहो की हल्की वर्दी जैसे कपडे पहने था – बाहे नगी थी और घुटने भी। लबे-लबे, घुघराले बाल कधो पर बिखरे पडे थे। लडके के पीछे-पीछे और छह लोग दौडे आए एप्रन बाधे दो औरते, लबा कोट पहने बूढा मोटा चोबदार, जिसकी दाढी-मूछे साफ थी पर कनपटियो पर खूब लबे सफेद गलमुच्छे थे, चौखानेदार नीला फ्राक पहने, लाल बालो और लाल नाक वाली दुबली-पतली लडकी, जवान, देखने मे रुग्ण लगनेवाली, पर बहुत सुदर महिला, जो लेसदार आसमानी गाउन पहने थी और सबसे आखिर मे एक मोटा, गजा साहब – सुनहरा चश्मा चढाए। वे सब बहुत व्यथित थे, हाथ झटक रहे थे, जोर-जोर से बोल रहे थे और एक दूसरे को धकेल रहे थे। यह अनुमान लगाना कठिन न था कि उनकी सारी परेशानी का कारण वह लडका है, जो यो अचानक बरामदे पर आ धमका था।

उधर वह लडका लगातार चीखता हुआ दौडते-दौडते पेट के बल जा गिरा, तुरत पीठ के बल उलट गया और बडे जोर-जोर से चारो ओर हाथ-पैर फेकने

लगा। बडे उसके इर्द-गिर्द दौड-धूप करने लगे। बूढा चोवदार मिन्नते करता हुआ अपनी कलफ लगी कमीज पर दोनो हाथ जोड रहा था, गलमुच्छे हिला रहा था और रुआसी आवाज मे कह रहा था

"छोटे मालिक! ऐसा न कीजिए मा को दुखी न कीजिए मेहरबानी करके पी लीजिए। मिक्सचर तो मीठा है, एकदम शर्बत सा। उठ जाइए न "

एप्रन बाधी औरते हाथ झटक रही थी, सहमी-सहमी और साथ ही जी हुजूरी करती हुई अपनी पतली आवाजो मे जल्दी-जल्दी बोल रही थी। लाल नाकवाली मिस बडे दुखद अदाज मे जोर-जोर से कुछ चिल्ला रही थी, पर कुछ समझ मे न आता था, शायद वह किसी विदेशी भाषा मे बोल रही थी। सुनहरा चश्मा चढाए साहब नीची, भारी आवाज मे लडके को मना रहा था, साथ ही वह अपना सिर कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर झुकाता और हाथ फैला देता। सुदर महिला आहे भर रही थी, लेस का महीन रूमाल आखो से लगा रही थी

"ओह, त्रिल्ली, ओह! हे भगवान! मेरे राजा, मैं विनती करती हू। सुन लो मेरी बात, मैं हाथ जोडती हू। पी लो न दवाई देख लेना, तुरत आराम मिलेगा पेट भी ठीक हो जाएगा, सिर भी। पी लो न, मेरी खातिर पी लो, मेरे लाल! त्रिल्ली, बोलो, मा तुम्हारे सामने घुटनो के बल खडी हो जाए? यह देखो, मैं घुटनो पर खडी हू। चलो, सोने का सिक्का लोगे? दो सिक्के? पाच सिक्के? त्रिल्ली! गधा लोगे? जीता-जागता गधा! घोडा? ओह, डाक्टर, कुछ कहिए न इसे!"

"सुनिए, त्रिल्ली, मर्द बनिए," चश्मा चढाए मोटा साहब भारी आवाज मे बोला।

"हाय-हाय-हाय!" लडका चीखता जा रहा था, बरामदे मे छटपटा रहा था और बेतहाशा टागे फेक रहा था।

अत्यधिक उत्तेजित होने के बावजूद वह अपने इर्द-गिर्द जमा लोगो के पेट मे ही जूतो की एडिया दे मारने की कोशिश करता था और वे भी बडी सफाई से बच निकलते थे।

सेर्गेइ आश्चर्यचकित सा बडी देर तक कौतूहल के साथ यह सारा दृश्य देखता रहा। फिर उसने बाबा के बगल मे हौले से कोहनी मारी और फुसफुसाकर पूछा

"बाबा, क्या हुआ इसे? इसकी पिटाई करेगे क्या?"

"हु, पिटाई! अरे, यह तो खुद चाहे जिसकी पिटाई कर दे। बिगडा छोकरा है। बीमार हो गया होगा।"

"पागल है?" सेर्गेइ ने अनुमान लगाया।

"मुझे क्या पता? चुप रह!"

"हाय-हाय-हाय! गधे! बेवकूफ!" लडका और भी जोर-जोर से गला फाड रहा था।

"सेर्गेइ, शुरू कर! मुझे पता है!" अचानक बूढे मदारी ने कहा और दृढ निश्चय के साथ बाजे का हैडल घुमाने लगा।

बडी पुरानी धुन की फटी-फटी, बेसुरी आवाज बाग मे गूज उठी। बरामदे मे सब ठिठक गए, यहा तक कि लडका भी कुछ क्षण को चुप हो गया।

"ओहो! हे भगवान! ये लोग बेचारे त्रिल्ली को और भी परेशान कर देगे।" आसमानी गाउन पहने महिला बोली। "भगाओ इन्हे जल्दी से! यह गदा कुत्ता भी है इनके साथ। कुत्तो को हमेशा ऐसी भयानक बीमारिया होती है। इवान, क्या आप बुत बने खडे है?"

उसने घिन के साथ मदारी की ओर रूमाल हिलाया, चेहरे से वह एकदम थकी-मादी लगती थी। लाल नाक वाली मरियल मिस ने डरावनी आख बनाई, कोई फुफकारने लगा लबा कोट पहने आदमी जल्दी से बरामदे से नीचे उतर आया। उसके चेहरे पर डर का भाव था, दोनो ओर हाथ फैलाए वह दौडा दौडा मदारी के पास आया।

"यह क्या बदतमीजी है?" वह दबी दबी, सहमी हुई, पर साथ ही रोबदार और गुस्से भरी आवाज मे बोला। "किसने तुम्ह आने दिया? भागो यहा से!"

पिटारी मे ची सी आवाज निकली और वह चुप हो गई।

"जी हजूर, वो बात यह है बाबा ने आराम से उसे समझाना चाहा।

"कोई बात-वात नही। दफा हो जाओ!" लबे कोट वाला सीटी की तरह चीखा।

उसका मोटा चेहरा पलक झपकते ही लाल सुर्ख हो गया और आखे तो मानो बाहर ही निकल आई और घूमने लगी। वह इतना डरावना लगता था कि बाबा अनचाहे ही दो कदम पीछे हट गया।

"चल सेर्गेइ, चले," पिटारी को जल्दी-जल्दी पीठ पर रखते हुए वह बोला।

पर वे दस कदम दूर भी न गए थे कि बरामदे से फिर कर्णभेदी चीखे आने लगी।

"हाय-हाय-हाय! देखूगा! हाय! बुलाओ! मै देखूगा!"

"ओह, त्रिल्ली! हे भगवान! त्रिल्ली! अरे, बुलाओ न उन्हे," महिला आहे भरने लगी। "उफ्फ, कैसे मूर्ख हो तुम सब! इवान, सुना आपने क्या कहा मैने? बुलाओ इन भिखारियो को तुरत!"

"सुनो बे! ऐ! मदारी! वापस आओ!" बरामदे से एक साथ कई आवाजे आई।

मोटा चोबदार रबड की गेद की तरह उछलता हुआ मदारी के पीछे दौडा। उसके गलमुच्छे दोनो ओर फैल रहे थे।

"ऐ-ऐ! मदारी! सुनो! चलो वापस!" वह दोनो हाथ हिलाता चिल्ला रहा था, उसकी सास फूल रही थी। "ऐ, बडे मिया,' आखिर उसने बाबा की बाह पकड ली। "चलो वापस! साहब लोग तमाशा देखेगे! चलो जल्दी मे!"

"हु, क्या बला है!" बाबा ने सिर हिलाते हुए उसास छोडी, और बरामदे के पास चला गया। पिटारी उतारकर उसे अपने सामने डडे पर टिकाया जिस जगह अभी-अभी धुन रुकी थी, वही से आगे बजाने लगा।

बरामदे मे भगदड रुक गई। लडके के साथ महिला और सुनहरे चश्मे वाला साहब रेलिग के पास आ गए, बाकी सब पीछे खडे रहे। बाग मे से माली आकर बाबा से थोडी दूर खडा हो गया। न जाने कहा से प्रकट हो गया जमादार माली के पीछे जम गया। वह भीमकाय दढियल आदमी था—तग

माथा और चेचकरू चेहरा। वह नई गुलाबी कमीज पहने था, जिस पर काले काले गोलों की तिरछी कतारें थी।

फटी-फटी हिचकियां भरती धुन की लय में सेर्गेइ ने दरी बिछाई, जल्दी से अपनी किरमिच की पतलून उतारी (वह पुराने बोरे की बनाई गई थी और उसके पीछे के सबसे चौडे हिस्से पर कम्पनी का चौखाना ठप्पा लगा हुआ था), उसने अपनी पुरानी जैकट उतारी और बस अतरीय कपडे पहने रहा। उन पर कई पैबद लगे हुए थे, पर तो भी वे उसके दुबले-पतले, किंतु मशक्त और लचकीले शरीर पर चुस्त लगते थे। बडो की नकल करते हुए उसने पुराने कलाबाज के तौर-तरीके सीख लिए थे। दौडते हुए दरी पर पहुचा और होंठो पर दोनो हाथ रखे, फिर नाटकीय ढग से उन्हें दोनो ओर फैलाया, मानो दर्शको को दो हवाई चुम्बन भेजे।

बाबा एक हाथ से पिटारी का हैडल घुमाता जा रहा था, उसमें से थर थराती, लडखडाती धुन निकाल रही थी और दूसरे से लडके को तरह तरह की चीजे फेक रहा था, जिन्हे वह हवा मे ही पकड लेता। सेर्गेइ थोडे से ही करतब जानता था, पर बडी सफाई से और तत्परता से उन्हे पेश करता था। वह बीयर की खाली बोतल हवा मे यो उछालता कि वह कई बार घूम जाती और फिर अचानक उसे गर्दन की ओर से तश्तरी के सिरे पर पकड लेता और कुछ क्षण तक यो ही सभाले रहता, चार गेदो को एकसाथ उछालता और दो मोमबत्तियो को, जिन्हे वह एक साथ शमादान मे पकड लेता, फिर वह एकसाथ ही तीन अलग-अलग चीजो — पखे लकडी के सिगार और छाते से खेलता। तीनो चीजे हवा मे उडती और फिर सहसा छाता उसके सिर पर आ जाता, सिगार मुह मे और पखा बडे नाज से चेहरे पर हवा करता। अत मे सेर्गेइ ने दरी पर कलाबाजियां लगाई "मेढक" बना, "अमरीकी गाठ" दिखाई और हाथो के बल चला। अपने सारे करतब दिखाकर उसने फिर दर्शको की ओर चुम्बन भेजे और हाफता हुआ बाबा के पास आ गया — पिटारी पर उसकी जगह लेने।

अब आर्तो की बारी थी। कुत्ते को यह अच्छी तरह मालूम था और वह काफी देर से उत्तेजित सा चारो पजो से बाबा पर कूद रहा था, जो पीठ से

पट्टा उतार रहा था। आर्तो रुक-रुककर भौक रहा था, कौन जाने, इस तरह वह समझदार कुत्ता यह कहना चाहता हो कि उसके विचार मे इतनी गर्मी मे यह सब कलाबाजी दिखाना नासमझी ही है। पर बूढे मदारी ने चालाकी दिखाते हुए पीठ पीछे से सटी निकाल ली। "मुझे पता था यही होगा!" आर्तो झल्लाकर आखिरी बार भौका और अलसाया और अनमना से पिछली टागो पर खडा हो गया। पलके झपकाते हुए वह एकटक मालिक को देखता जा रहा था।

"आर्तो, काम करो! ऐसे, ऐसे, ऐसे! " आर्तो के सिर के ऊपर सटी पकडे हुए मदारी बोला। "कलाबाजी खाओ! ऐसे! एक बार और और, और नाच, आर्तो, नाच! बैठ जा! क्या-आ? नही बैठना चाहता? कहा न, बैठ जा। आहा ऐसे! देखा! अब हजूर को सलाम करो! आर्तो!" मदारी ने धमकी भरी आवाज मे कहा।

"भौ!" कुत्ता घिन के साथ भौका। फिर दयनीय आखो से मालिक की ओर देखकर और दो बार भौका "भौ! भौ!"

"नही, मेरा मालिक मेरे मन की बात नही समझता," उसका रूठा स्वर कहता लगता था।

"यह हुई न बात! विनम्रता सबसे बढकर है। चलो अब थोडा कूदे," जमीन से थोडी ऊपर सटी बढाते हुए बूढा कहता जा रहा था। "चलो! अरे, जीभ क्यो निकालता है, भई! शाबाश! ऐसे! फिर से! शाबाश, आर्तो! घर जाके तुझे गाजर दूगा। क्या? तू गाजर नही खाता? अरे, मैं भूल ही गया। तो ले मेरा विलायती टोप्पा, साहब लोगो से कुछ माग ले। शायद वे तुझे कोई बढिया चीज दे दे।"

बूढे ने कुत्ते को पिछली टागो पर खडा किया और उसके मुह मे अपनी गोल, चपटी, चीकट टोपी थमा दी, जिसे वह मीठे व्यग्य के साथ 'विलायती टोप्पा' कहता था। टोपी मुह मे पकडे और अपनी मुड-मुड जाती टागे नखरे के साथ आगे बढाते हुए आर्तो बरामदे के पास पहुच गया। रुग्ण सी दिखनेवाली महिला के हाथ मे सीपी का पर्स प्रकट हुआ। उसके आस-पास खडे लोग सहानुभूति के साथ मुस्करा रहे थे।

"देखा? कहा था न मैने?" बाबा ने सेर्गेइ की ओर झुककर उसे चिकुटी

भरी। 'तू मुझ से पूछ मैं सब जानता हूँ। स्वल से कम नहीं देगी।"

उसी क्षण बरामदे से ऐसी तीखी चीख आई कि लगता था आदमी तो एस चीख ही नही सकता। आर्तो ने सकपकाकर टोपी मुह मे गिरा दी और दुम दबाकर, सहमी-सहमी नजरो से मुडकर देखता हुआ उछलकर मालिक के पैरो मे आ दुबका।

"कुत्ता, हाय, कुत्ता," घुघराले बालो वाला लडका पैर पटकता हुआ बेतहाशा चिल्ला रहा था। "मुझे दे दो, हाय, दे दो! त्रिल्ली को कुत्ता दे दो! हाय-हाय-हाय!"

"हे भगवान! ओह त्रिल्ली! छोटे मालिक! त्रिल्ली, चुप हो जाओ, मे हाथ जोड़ती हू!" फिर मे बरामदे मे भगदड मच गई।

"कुत्ता! हाय, कुत्ता दो! मुए, गधे, उल्लू!" लडका आपे से बाहर हो रहा था।

"ओह, मेरे राजा, परेशान मत हो!" आसमानी गाउन वाली महिला उसे पुचकारने लगी। "तुम कुत्ते को सहलाना चाहते हो? अच्छा, अच्छा, मेरे लाडले, अभी लो। डाक्टर, क्या ख्याल है आपका, त्रिल्ली कुत्ते को सहला सकते है?"

"वैसे तो न करना ही अच्छा हो, पर हा, अगर कुत्ते को बोरिक एसिड या कार्बोलिक के घोल से धो दिया जाए, तो "

"हाय, कुत्ता-आ-आ!"

"अभी, मेरे लाल, अभी। सो, डाक्टर, हम उसे बोरिक एसिड से धोने को कह देते है और तब ओह, त्रिल्ली, ऐसे घबराओ नही! ऐ, मदारी, इधर लाओ तो अपने कुत्ते को। डरो नही, हम तुम्हे पैसे देगे। सुनो, कुत्ते को कोई बीमारी तो नही? बावला तो नही? या खुजली तो नही है इसे?"

"नही, सहलाना नही, मै तो बिल्कुल लूगा!" मुह और नाक मे बुलबुले छोडता हुआ त्रिल्ली चिल्लाए जा रहा था। "मुझे दे दो! गधे, उल्लू! बिल्कुल मुझे! मैं अपने आप खेलूगा! "

"सुनो, मदारी, इधर आओ," महिला उसकी चीख मे भी जोर से चीखने की कोशिश कर रही थी। "ओह, त्रिल्ली, तुम अपनी चीखो से मा की जान

ले लोगे! क्यो आने दिया इन मदारियो को! इधर आओ भी न, पास आओ, कहा न, और पास! ऐसे ओह त्रिल्ली, यो दुखी मत हो मा तुम्हारे लिए सब कुछ कर देगी। मान जाओ। मिस आखिर चुप भी कराओ न बच्चे को डाक्टर, प्लीज। मदारी, बोलो कितने पैसे लोगे?"

बाबा ने टोपी उतार ली। उसके चेहरे पर आदर-सम्मान और साथ ही दीनता का भाव आ गया।

"जो हजूर, माई-बाप की इच्छा हो मालकिन हम तो छोटे लोग है, जो दे देगे, वही अच्छा है आप तो खुद ही बूढे का दिल रखेगे, माई-बाप "

"ओफ्फो, कैसे मूर्ख हो तुम भी! त्रिल्ली, तुम्हारा गला दुखने लगेगा। समझते क्यो नही कुत्ता तुम्हारा है, मेरा नही। बोल कितने लेगा? दस? पद्रह? बीस?"

"हाय-हाय-हाय! दे दो कुत्ता, मुझे कुत्ता दे दो!" गोल-मटोल चोबदार के पेट मे पैर मारते हुए लडका चिल्लाए जा रहा था।

"जी हजूर, वो माफ करना," बूढा सकपका गया। "मैं बूढा बेअक्ल हू एकदम तो समझ मे नही आता और कुछ ठीक से सुनाई भी नही देता जी हजूर ने क्या कहा? कुत्ते के?"

"हे भगवान! लगता है तुम जानबूझकर बेवकूफ बन रहे हो?" महिला ताव मे आ गई। "धाय, जल्दी से पानी दो त्रिल्ली को! मै तुमसे सीधे-सीधे पूछ रही हू, कितने मे बेचोगे अपना कुत्ता? समझे कि नही, कुत्ता!"

"कुत्ता-आ, हाय, कुत्ता-आ! लडका पहले से भी जोर मे चिल्लाए जा रहा था।

बूढा मदारी बुरा मान गया और उसने टोपी पहन ली।

"हजूर, हम कुत्ते नहीं बेचते," उसने सीधे-सीधे, मान के साथ कहा। "और यह कुत्ता तो हम दोनो की,' उसने अगूठे से कधे के पीछे सेर्गेइ की ओर इशारा किया, "रोजी-रोटी कमाता है। सो यह तो बिल्कुल नामुमकिन है कि इसे बेच दे।"

उधर त्रिल्ली इजन की सीटी जैसी तीखी आवाज मे चीखे जा रहा था। उसे गिलास मे पानी दिया गया, पर उसने गुस्से मे पानी मिस के मुह पर दे फेका।

"अरे सुनो तो, पागल कही का! ऐसी कोई चीज नही है, जो विकती न हो," महिला अपनी कनपटियो को हथेलियो से दवाते हुए कहती जा रही थी। "मिस, जल्दी से मुह पोछो और मुझे मेरी सिर दर्द की गोली दो। तुम्हारा कुत्ता क्या सौ रूबल का है? दो सौ का? तीन सौ का? बोलो भी न काठ के उल्लू! डाक्टर, भगवान के वास्ते कुछ कहिए न इसे!"

"सेर्गेइ, उठा अपना सामान," बूढे मदारी ने वडवडाकर कहा। "काठ का उल्लू आर्तो, चल इधर!"

"ऐ, मदारी, रुक," सुनहरे चश्मे वाले साहब ने रोब से कहा। "तू ज्यादा बन मत, समझा? तेरा कुत्ता दस रूबल से ज्यादा का नही है, और वह भी घाल में तेरे साथ गधे, सोच तो, तुझे कितने मिल रहे है!"

"बहुत-बहुत शुक्रिया, हजूर माई-बाप का, पर " बूढे ने कापते हुए पिटारी पीठ पर चढा ली। "पर यह कोई बात नही कि बेच दे। आप कही और कोई कुत्ता ढूढ लीजिए मौज मे रहिए सेर्गेइ, चल आगे!"

"पासपोर्ट है तेरे पास?' सहसा डाक्टर ने चिल्लाकर धमकी दी। "जानता हू मैं तुम हरामजादो को!"

"जमादार! सेम्योन! भगाओ इन्हे!" गुस्से से लाल-पीली होती महिला चीखी।

गुलाबी कमीज पहने मनहूस जमादार डरावनी शक्ल बनाता मदारी के पास आया। बरामदे मे हगामा मच गया त्रिल्ली गला फाड फाडकर चिल्ला रहा था उसकी मा कराह रही थी, धाय और छोटी धाय जल्दी-जल्दी बोल चीख रही थी क्रोधित ततैये की तरह नीची आवाज मे डाक्टर भिनभिना रहा था। पर बाबा और सेर्गेइ को यह देखने की फुरसत न थी कि इस सब का अन्त क्या होगा। आगे आगे भागा डर गया आर्तो और उसके पीछे प्राय दौडते हुए बाबा और सेर्गेइ फाटक की ओर बढ रहे थे। उनके पीछे पीछे जमादार जा रहा था बाबा की पिटारी पर धक्के दे रहा था और धमकिया दे रहा था

"घूमते फिरते है आवारा कही के! शुक्र मना बुड्ढे कि साहब [illegible] नही किया। फिर आएगा तो कोई लिहाज नही करूगा पिटाई कर दूगा और [illegible] के पास [illegible] ले जाऊगा। [illegible]!"

वडी देर तक बूढा और लडका चुपचाप चलते रहे, फिर सहसा, मानो एक ही फैसले से, दोनो ने एक दूसरे की ओर देखा और हस पडे पहले सेर्गेइ खिलखिलाकर हसा और फिर उसे देखते हुए कुछ मकपकाकर मदारी भी मुस्कराया।

"क्यो बाबा? तुम्हे सब पता है?" सेर्गेइ ने चुटकी ली।

"हा, भैया। आज तो हम धोखा खा गए," बूढे मदारी ने सिर हिलाया। "कैसा कमबख्त छोकरा है! कैसे इसे ऐसा पाला है? जरा देखो तो पच्चीस लोग इसके इर्द-गिर्द नाच रहे है। अगर मेरा बस चले, तो मैं इसे सीधा कर दू। कहता है कुत्ता दे दो! क्या कहने है! कल को कहेगा आसमान से चाद ला दो, तो क्या चाद ला दोगे? इधर आ आर्तो, मेरे कुत्ते! कैसा दिन चढा है आज! पूछो मत!"

"हा, कितना बढिया दिन है!" सेर्गेइ बाबा की हसी उडाता जा रहा था। "एक मेम साहब ने कपडे दिए, दूसरी ने पूरा रूबल दे दिया। हा, बाबा, तुम तो सब कुछ जानते हो!"

"तू चुप रह, छुटकू," बूढे ने भी मजाक मे जवाब दिया। "जमादार से डरके कैसे भागा था, याद है? मै तो सोच रहा था कि तेरे साथ चल ही नही पाऊगा। बडा गुस्सैल है यह जमादार।"

पार्क से बाहर आकर मदारी और उसके साथी तेज ढलान वाली रोडीदार पगडडी पर नीचे समुद्र की ओर उतर गए। यहा पहाडियो ने थोडे पीछे हटकर एक छोटे से मैदान के लिए जगह बना दी थी। मैदान ज्वार से घिसे पत्थरो से भरा हुआ था। अब यहा समुद्र की लहरो की हल्की छपछप हो रही थी। किनारे से कोई दो फर्लांग दूर सूसे पानी मे कलाबाजिया खा रही थी, पल भर को उनकी गोल, मोटी पीठे नजर आ जाती। दूर क्षितिज के पास जहा समुद्र की आसमानी रेशमी चादर पर गहरी नीली मखमली किनारी लगी दिखती थी, धूप मे मछेरो की नावो के हल्के गुलाबी से पाल निश्चल खडे थे।

"बाबा, यही नहाएगे," सेर्गेइ ने कहा। उसने चलते-चलते ही, कभी एक पैर और कभी दूसरे पैर पर उछलते हुए पतलून उतार ली थी। "लाओ, बाजा उतरवा दू।"

उसने जल्दी से कपड़े उतारे, अपने नगे, धूप से सवलाए बदन पर चपत मारे और पानी मे जा कूदा। उसके चारो ओर झाग उठने लगी।

बाबा आराम से कपडे उतार रहा था। माथे पर हाथ रखकर आखो को धूप से बचाते हुए और आखे सिकोडते हुए वह स्नेह भरी मुस्कान के साथ सेर्गेइ को देख रहा था।

"लडका अच्छा बन रहा है," बूढा मदारी सोच रहा था। "है तो हड्डियल – सारी पसलिया दिख रही है, पर काठी मजबूत होगी।"

"ऐ, सेर्गेइ! ज्यादा दूर मत जा, नही तो समुद्री सूअर खीच ले जाएगा।"

"मैं उसकी दुम दबा दूगा!" सेर्गेइ दूर से चिल्लाया।

बाबा काफी देर तक धूप मे खडा रहा, अपनी बगले टटोलता रहा। बडी सावधानी से वह पानी मे घुसा और डुबकी लगाने से पहले बडे जतन से अपनी गजी, लाल टाट और अदर को धसी बगले गीली की। उसका शरीर पीला, थलथला ओर अशक्त था, टागे बेहद पतली थी, पीठ पर पखौरे उभरे हुए थे और बरसो तक पिटारी ढोने से वह कुबडा गई थी।

"बाबा, बाबा, देखो!" सेर्गेइ चिल्लाया।

उसने सिर के ऊपर से टागे निकालकर पानी मे कलाबाजी लगाई। बाबा कमर तक पानी मे घुस गया था और मजे से काखता हुआ उठ-बैठ रहा था। वह चितित स्वर मे चिल्लाया

"अरे, अरे, शैतानी मत कर। देख, तेरी खबर लूगा!"

आर्तो किनारे पर दौडता हुआ जोर-जोर से भौक रहा था। वह इस बात से परेशान था कि लडका इतनी दूर निकल गया है। "काहे को बहादुरी दिखाता है?" कुत्ता घबरा रहा था। "जमीन तो है, चलो यही पर। कोई परेशानी न हो।"

वह खुद भी पेट तक पानी मे घुसा था और दो-तीन बार उसे जीभ से चाटा था। पर खारा पानी उसे अच्छा न लगा। किनारे की रोडी पर सरसराती लहरो से उसे डर लगता था। वह तट पर निकल आया और फिर से सेर्गेइ पर भौकने लगा। "क्यो ये बेहूदा हरकते कर रहा है? यही किनारे पर बूढे के साथ बैठा रहता। ओफ्फ, कितना परेशान करता है यह छोकरा!'

"ऐ, मेर्गेइ, चल अब बाहर निकल, बहुत हो गया," बूढे ने आवाज दी।

"अभी आया, बाबा। देखो इजन आ रहा है। छुक-छुक-छुक!"

आखिर वह तट पर आ गया, पर कपडे पहनने से पहले उसने आर्तो को उठाया और उसके साथ समुद्र मे लौटकर उसे दूर फेक दिया। कुत्ता तुरत ही वापस तैरने लगा। उसकी थूथनी और ऊपर उठ आए कान ही बस पानी के बाहर थे। वह जोर-जोर मे और नाराज सा फुफकार रहा था। बाहर आकर उसने सारा बदन झकझोरा, बूढे और सेर्गेइ पर ढेर सारी छीटे पडी।

"अरे सेर्गेइ, देख तो, यह फिर हमारी ओर चला आ रहा है?" बूढे ने गौर से ऊपर पहाडी की ओर देखते हुए कहा।

काले गोलो वाली गुलाबी कमीज पहने वही मनहूस जमादार, जिसने पद्रह मिनट पहले उन्हे दाचा से भगाया था जोर-जोर से कुछ चिल्लाता हुआ और हाथ हिलाता पगडडी पर नीचे उतर रहा था।

"क्या चाहिए इसे?' हेरान-परेशान बाबा ने पूछा।

(४)

भारी-भरकम जमादार बेढब सा नीचे दौडता आ रहा था और चिल्लाए जा रहा था। उसकी कमीज की बाहे हवा मे लहरा रही थी और दामन पाल की तरह फूल गया था।

'अरे ओ! ठहरो तो!"

"तेरा सवा सत्यानास हो,' मदारी गुस्से मे बडबडाया। 'फिर आर्तो के पीछे आया है।

"चलो बाबा, इसकी खबर लेते है! सेर्गेइ ने बडी बहादुरी से कहा।

' जा, पीछा छोड उफ्फ, क्या लोग है। हे भगवान!

' ए सुनो तुम हाफता हुआ जमादार दूर से ही बोलने लगा। ' बेच दो न कुत्ते को। छोटा मालिक बस मे ही नही आता। रोए जा रहा है। कुत्ता ला दो कुत्ता ला दो मालकिन ने कहा है जितने मे भी दे ने आ।'

"बडी बेवकूफ है तेरी मालकिन भी," बूढा सहसा गुस्से मे आ गया। यहा समुद्र तट पर उसे ऐसा कोई डर न था, वह पराये दाचा मे तो था नही। "और फिर वह मेरी मालकिन कैसी? मालकिन होगी तेरी, मेरे ठेंगे से मैं तुझे हाथ जोडता हू, जा तू यहा से, भगवान के वास्ते हमारा पिड छोड।"

पर जमादार मान नही रहा था। वह बूढे के पास ही पत्थरो पर बैठ गया और अपने आगे बेढब सी उगलिया नचाते हुए कहने लगा

"समझता क्यो नही, बेवकूफ "

"बेवकूफ होगा तू," बूढे ने चटाक से जवाव दिया।

"ओहो, ठहर ना यह बात नही कैसा अडियल टट्टू है तू ज़रा सोच तो क्या है यह कुत्ता? कही और पिल्ला ढूढ लिया, दो टागो पर खडा होना सिखा दिया, बस फिर से कुत्ता तैयार। ठीक है कि नही? है?"

बाबा बडे ध्यान से पतलून पर पेटी बाध रहा था। जमादार के आग्रहपूर्ण प्रश्नो का उसने बडी बेफिक्री से जवाब दिया

"बके जा, बके जा मै एक बार मे ही तेरी बातो का जवाब दे दूगा।"

"यहा, भाई मेरे, तुझे एकदम मोटी रकम मिल रही है," जमादार जोश मे आ रहा था। "दो सौ, नही तो पूरे तीन सौ ही! हा, कुछ हिस्सा मेरा भी – इतनी मगजपच्ची कर रहा हू तेरे साथ जरा सोच तो तीन सौ रूबल! अरे ऐसी रकम से तो तू दुकान खोल लेगा।"

यो बोलते हुए जमादार ने जेब से सलामी का एक टुकडा निकाला और कुत्ते की ओर फेका। आर्तो हवा मे ही उसे पकडकर एकबारगी ही निगल गया और दुम हिलाने लगा।

"कह लिया जो कहना था?" बाबा ने पूछा।

"कहने को है ही क्या। कुत्ता दे दे और सौदा तय!"

"अच्छा-आ?जी," बाबा ने व्यग्य के साथ कहा। "तो कुत्ते को बेच दे?"

"साफ बात है, बेच दो। और क्या चाहिए तुझे? सबसे बडी बात तो हमारा छोटा मालिक ऐसा ढीठ है। कुछ मन मे आ जाए – बस सारा घर सिर पर उठा लेगा। दे दो, दे दो – और कोई बात ही नही। बाप के बिना यह हाल है बाप घर पर हो तो हे भगवान! मालिक हमारा इजीनियर है

सुना होगा, अवाल्यानिनव सा'ब? सारे रूस मे रेले बिछाता है। लखपति है! लौडा एक ही है। बस इसीलिए, सिरचढा है। जीता-जागता टट्टू चाहिए – लो जी टट्टू आ गया। नाव चाहिए – लो सचमुच की नाव आ गई। किसी बात मे कही इन्कार ही नही "

"और चाद?"

"क्या मतलब?"

"मैंने कहा, चाद कभी नही मागा उसने?"

"वाह, तू भी क्या बात करता है – चाद!' जमादार सकपका गया। "अच्छा तो भले आदमी सौदा पक्का?"

बाबा ने इस बीच मे अपना मटमैला कोट पहन लिया था। अपनी झुकी कमर के साथ जहा तक हो सकता था, वह तनकर खडा हो गया।

"मै तुझे एक बात कहता हू," बाबा खासे गम्भीर भाव से बोलने लगा। "मान लो, तेरे कोई भाई हो या दोस्त, जो कि एकदम बचपन से ही ऐ, भई, तू बेकार मे कुत्ते को सलामी मत खिलाए जा खुद खा ले इससे वह परचनेवाला नही। हा तो, अगर तेरा कोई एकदम पक्का, मतबल सच्चा दोस्त हो बचपन मे तो तू उसे कितने मे बेच देगा?"

"तूने भी खूब मुकाबला किया!"

"बस मुकाबला ही है। तू यही कह दे, अपने मालिक से, जो रेले बनाता है," बाबा की आवाज तीखी हो गई। "यही कह देना कि जो कुछ खरीदा जा सकता है, वह सब कुछ बिकता नही है। समझा? तू खामखाह कुत्ते को महला मत, इससे कुछ नही होने का। इधर आ वे आर्तो, कुत्ते की औलाद! तेरी ऐसी की सेर्गेइ, चल सामान उठा।"

"गधा कही का," आखिर जमादार से न रहा गया।

"गधा हू, तो अपना बोझा ढोने को। तू नीच है, हरामखोर, नमकहराम, कमीना!" बूढे मदारी ने गाली दी। "अपनी मालकिन को देखेगा, कह दियो लो जी, प्यार से हमारा लबा सलाम। उठा दरी, सेर्गेइ! ओह, मेरी पीठ! चलो।"

"अच्छा-आ, तो यह बात है!" जमादार ने बडे अर्थपूर्ण ढग से कहा।

"बस, यही सभाल लो!" बूढे ने भी पलटकर जवाव दिया।

मदारी और उसके साथी फिर से समुद्र के किनारे-किनारे, उसी रास्ते से ऊपर चल दिए। सेर्गेइ ने यो ही सिर पीछे घुमाया और देखा कि जमादार उन पर नजरे गडाए हुए है। वह विचारमग्न सा और खिन्न लग रहा था। आखो पर उतर आई टोपी के पीछे टाड पर उलझे लाल बालो को वह पूरे पजे से खुजला रहा था।

(५)

बूढे मदारी ने बरसो पहले से मिस्खोर और अलूप्का के बीच एक जगह ढूढ रखी थी – निचली सडक से नीचे की ओर, जहा बडे मजे से खाना खाया जा सकता था। वह अपने साथियो को वही ले गया। कलकल करते गदले पहाडी झरने पर बने पुल से थोडी दूर टेढे-मेढे बलूतो और हेजल की घनी झाडियो की छाया मे जमीन से एक सोता फूटता था। उससे जमीन मे थोडा सा गहरा गोल गड्ढा बन गया था, उसमे से पानी की पतली सी धार घास के बीच चादी सी चमकती हुई झरने मे जा गिरती थी। इस सोते के पास सुबह शाम तुर्को को देखा जा सकता था, जो यहा पानी पीते थे और नमाज पढते थे।

"ओह, हमारे पाप बडे भारी, और झोला खाली," हेजल की झाडी की शीतल छाया मे बैठते हुए बूढे मदारी ने कहा। "आ जा, सेर्गेइ। हे भगवान, तेरा आसरा है!"

उसने किरमिच के झोले मे से डबल रोटी, दसेक लाल-लाल टमाटर, मल्दावियाई पनीर "ब्रीन्जा" का टुकडा और जैतून के तेल की शीशी निकाली। एक कपडे मे, जिसे साफ तो नही कहा जा सकता था, उसने नमक की पोटली बाध रखी थी। खाना खाने से पहले बूढा काफी देर तक सलीब के निशान बनाता रहा और कुछ बुदबुदाता रहा। फिर उसने रोटी के तीन असमान टुकडे किए सबसे बडा टुकडा उसने सेर्गेइ को दिया (बच्चा बढ रहा है, उसे खाना चाहिए) दूसरा उससे कुछ छोटा टुकडा कुत्ते के लिए रखा और सबसे छोटा खुद लिया।

"हे परमपिता परमेश्वर। सबके नेत्र तुझ पर लगे, प्रभु," वह बुदबुदाता जा रहा था और हिस्से बाटता हुआ उन पर शीशी से तेल डाल रहा था। "ले, खा ले, सेर्गेइ।"

बिना किसी जल्दबाजी के, धीरे-धीरे, जैसे कि सच्चे मेहनतकश खाते है, तीनो अपना सीधा-सादा भोजन करने लगे। बस तीन जोडे जबडो के चलने की आवाज आ रही थी। आर्तो अपना हिस्सा एक ओर को बैठा खा रहा था। पेट के बल लेटकर उसने रोटी अगले पजो से दबा ली थी। बाबा और सेर्गेइ बारी-बारी से पके टमाटरो को नमक मे छुआते थे। टमाटरो से उनके होठो और हाथो पर खून सा लाल रस वह रहा था। टमाटर खाकर ऊपर से वे पनीर और रोटी मुह मे डालते। भरपेट खाना खाकर उन्होने जी भरकर पानी पिया। सोते की धार तले मग रखके उसमे वे पानी भर रहे थे। जल निर्मल, अत्यत स्वादिष्ट और इतना ठडा था कि उससे मग भी बाहर से गीला हो गया। दिन की तपस और लबे रास्ते से मदारी और लडका थक गए थे। पौ फटते ही वे निकल पडे थे। बाबा की आखे मुदी जा रही थी। सेर्गेइ जम्हाइया ले रहा था, अगडाइया भर रहा था।

"क्यो, भैया, पल भर को लेट ले, झपकी ले ले?" बाबा ने पूछा। "लाओ, थोडा और पानी पी लू। वाह, कितना अच्छा है," होठो से मग हटाते हुए और भारी सास लेते हुए बाबा ने कहा। उसकी मूछो और दाढी पर उजली बूदे ढरक रही थी। "अगर मै राजा होता, तो बस यह पानी ही पीता रहता सुबह से गई रात तक! आर्तो, इधर आ! लो, भगवान ने पेट भरा, किसी ने नही देखा, जिसने देखा, उसकी नजर नही लगी ओह-ओह-ओह!"

बूढा और लडका सिर तले अपना-अपना पुराना कोट रखकर पास-पास ही घास पर लेट गए। उनके सिरो के ऊपर घने, छतनार बलूतो की पत्तिया सरसरा रही थी। उनके बीच-बीच मे स्वच्छ आकाश की नीलिमा चमक रही थी। एक पत्थर से दूसरे पर बहता झरना ऐसी मीठी कलकल कर रहा था, मानो लोरी सुना रहा हो। बाबा कुछ देर तक कुलबुलाता, काखता रहा, कुछ कहता रहा, पर सेर्गेइ को लग रहा था कि उसकी आवाज़ कही दूर, रहस्यमय लोक से आ रही है और शब्द परी कथाओ जैसे अनबूझ है।

"सबसे पहले तेरे लिए जोडा खरीदूगा गुलाबी, सुनहरी सलमे सितारो वाला जूतिया भी गुलाबी, रेशमी कीयेव, खार्कोव मे या फिर ओदेस्सा मे – पता है वहा कैसे-कैसे सरकस है! बत्तिया अनगिनत बिजली की! लोग पाच हजार तो होते ही होगे या शायद और भी ज्यादा मुझे क्या पता? तेरा कोई नया नाम रखेगे – इतालवी नाम। येस्तिफेयेव या फिर लदीश्किन भी कोई नाम है? बकवास है निरी – कोई रग ही नही। हम इश्तहारो मे तेरा नाम लिखेगे अन्टोनियो या फिर ऐनरिको, यह भी अच्छा है, या अल्फोजो "

इसके आगे लडके को कुछ सुनाई नही दिया। मीठी नीद मे उसका सारा शरीर जकड सा गया, निश्शक्त हो गया। बाबा भी सो गया, सेर्गेइ के लिए सरकस मे उज्ज्वल भविष्य की उसकी कल्पनाओ का ताता सहसा टूट गया। एक बार नीद मे उसे लगा कि आर्तो किसी पर गुर्रा रहा है। पल भर को उसके नीद से भारी सिर मे गुलाबी कमीज वाले जमादार का अर्धचेतन और चिताजनक विचार कौधा, पर नीद, थकावट और गर्मी से वह ऐसा निढाल था कि उठ नही सकता था, आखे मूदे-मूदे ही, अलसाई आवाज मे उसने कुत्ते को पुकारा

"आर्तो किधर जा रहा है? तेरी ऐसी आवारा कही का!"

कितु उसी क्षण उसके विचार गडमड हो गए, भारी निराकार स्वप्नो मे बदल गए।

सेर्गेइ की आवाज से बाबा की आख खुली। लडका झरने के दूसरी ओर आगे-पीछे दोड रहा था, तेज-तेज मीटी बजा रहा था, बेचैन और डरा डरा सा जोर से चिल्ला रहा था

"आर्तो! इधर आ! पुच-पुच-पुच! आर्तो, चल इधर!"

"अरे, चिल्ला क्यो रहा है?" सुन्न हो गई बाह को मुश्किल से सीधा करते हुए बाबा ने पूछा।

"क्यो? क्यो? इधर हम सोते रहे, उधर कुत्ता गायब हो गया," सेर्गेइ ने झुझलाकर जवाब दिया।

उसने जोर से सीटी बजाई और फिर से पुकारा

"आर्तो ओ!"

'बेकार की बाते करता है तू! लौट आएगा" बाबा ने कहा। पर

तुरत ही खडा हो गया और उनीदी, गुस्से भरी आवाज मे कुत्ते को पुकारा

"आर्तो, इधर आ, कुत्ते की औलाद!"

जल्दी-जल्दी, छोटे-छोटे, डगमगाते कदम भरते हुए उसने पुल पार किया, सडक पर बढ गया। वह कुत्ते को पुकारता जा रहा था। सामने दो फर्लांग तक सपाट, चमकीला सफेद रास्ता दिख रहा था, पर उस पर न कोई आकृति थी, न कोई परछाईं।

"आर्तो! आर्तो रे!" बूढा रुआसी आवाज मे चिल्लाया।

सहसा वह रुक गया, जमीन पर झुक गया और पैरो के बल बैठ गया।

"अच्छा-आ! यह बात है!" बुझी-बुझी आवाज मे बूढा बोला। "सेर्गेइ! इधर आ तो, बच्चे!"

"क्या है?" बूढे के पास आते हुए लडके ने रुखाई से कहा। "बीता दिन मिल गया क्या?"

"सेर्गेइ   देख तो यह क्या है?   यह, यह क्या है?   समझा?" बूढे के मुह से शब्द मुश्किल से निकल रहे थे।

वह खोई-खोई, दयनीय नजरो से लडके की ओर देख रहा था और जमीन की ओर इशारा कर रहा उसका हाथ इधर-उधर झूल रहा था।

सडक पर सफेद धूल मे सलामी का काफी बडा अधखाया टुकडा पडा हुआ था और उसके चारो ओर कुत्ते के पजो के निशान थे।

"परचा ले गया, कमीना!" भयभीत स्वर मे बाबा फुसफुसाया। वह पहले की ही भाति पजो के बल बैठा हुआ था। "वही होगा, और कोई नही, साफ बात है   याद है, वहा समुद्र किनारे वह सलामी खिला रहा था।"

"साफ बात है," कटु स्वर मे सेर्गेइ ने दोहराया।

बूढे की फटी-फटी आखो मे आसू भर आए और वे जल्दी-जल्दी झपकने लगी। उसने हाथो मे मुह ढाप लिया।

"अब हम क्या करे, सेर्गेइ? है? क्या करे अब?" बूढा पूछ रहा था। असहाय सा सिसकता हुआ वह आगे-पीछे डोल रहा था।

"क्या करे, क्या करे!" सेर्गेइ ने गुस्से से उसकी नकल उतारी। "उठो बाबा, चलो चले!"

"चल, चले," बूढे ने जमीन से उठते हुए उदास स्वर मे उसकी बात मानी। "हा, सेर्गेइ, चल चले।"

सेर्गेइ धीरज खो बैठा, वह बूढे मदारी पर यो चिल्लाया मानो वह कोई बच्चा हो

"अच्छा, यह बेवकूफी बद करो! यह कहा का कानून है कि पराये कुत्तो को परचा ले गए? क्या आखे फाड-फाडकर देख रहे हो? गलत कहा क्या मैंने? सीधे जाकर कह देगे 'कुत्ता वापिस करो!' नही देगे, तो हवलदार के पास चले जाएगे। सीधी बात है।"

"हा हवलदार के पास हा, वो तो ठीक है," निरर्थक, कटु मुस्कान के साथ बाबा कहता जा रहा था। पर उसकी आखो मे सकोच था। "हवलदार के पास हा पर वो वह बात नही बनती, सेर्गेइ कि हवलदार के पास जाए"

"बात क्यो नही बनती? कानून सबके लिए एक है। क्यो हम उनके आगे दुम हिलाए?" लडका अधीर हो रहा था।

"सेर्गेइ, तू भैया, तू नाराज मत हो। कुत्ता तो वे लौटाने से रहे।" बाबा ने रहस्यमय ढग से आवाज नीची कर ली। "मुझे वह पासपरट का डर है। याद है वो सा'ब क्या कह रहा था? पूछता था 'पासपरट है तेरे पास?' हा, भैया, यह बात है। और मेरा पासपरट," भयभीत चेहरे के साथ हौले से फुसफुसाते हुए बाबा ने कहा "वो बेगाना है।"

"बेगाना कैसे?"

"यही तो बात है कि बेगाना है। मेरा अपना तो तगनरोग शहर मे खो गया था, कौन जाने किसी ने चुरा ही लिया हो। दो साल तक मै भटकता रहा था छिप-छिपकर रहता था, घूस देता था, कई बार अर्जिया लिखी आखिर देखा कि जीना ही हराम हो गया, खरगोश की तरह हर किसी से डर लगता है। दिन-रात चैन नही। तभी ओदेस्सा मे रैनबसेरे मे एक यूनानी मिला। वह बोला यह तो कोई काम ही नही, चुटकी बजाते हो जाएगा। बोला, ला पच्चीस रूबल इधर धर, मैं तुझे पासपरट ला दूगा। मैं सोच मे पड गया फिर मन मे आया जो होगा, सो होगा। बोला, ला दे दे। बस, भैया, तभी से मैं बेगाने पासपरट के साथ रह रहा हू।"

"ओह, बाबा, बाबा!" रुलाई रोकते हुए सेर्गेइ ने गहरी सास ली। "कुत्ते का अफसोस है बडा ही प्यारा कुत्ता था।"

"सेर्गेइ, मेरे बच्चे!" बूढे ने कापते हाथ उसकी ओर बढाए। "अगर मेरे पास सचमुच का पासपरट होता, तो मै क्या किसी की परवाह करता, जाकर टेटुआ पकड लेता! 'यह क्या बात है? क्या हक है तुम्हे दूसरो के कुत्ते चुराने का? ऐसा कौन सा कानून है?' पर अब भैया हम कुछ नही कर सकते। मै पुलिस मे जाऊ, जो सबसे पहले कहगे 'ला पासपरट निकाल! अच्छा तो तू समारा का मर्तीन लदीश्किन ह?' 'जी, हजूर'। पर मैं तो भैया लदीश्किन हू ही नही, मै तो हू इवान दूद्किन। और यह लदीश्किन कौन है, भगवान जाने। मुझे क्या पता कि वह कोई चोर-उचक्का हे या साइबेरिया से कैद से भागा भगोडा है? या शायद हत्यारा ही हो? नही सेर्गेइ, हम कुछ नही कर सकते कुछ भी नही "

बाबा का गला रुध आया। आसू फिर से धूप से काली पडी गहरी झुर्रियो मे बहने लगे। सेर्गेइ असहाय, दुर्बल बूढे की बाते चुपचाप सुन रहा था, उसकी भौहे सिकुडी हुई थी, उत्तेजना से वह पीला पड गया था। अब वह बूढे की बगलो मे हाथ डालकर उसे उठाने लगा।

"चलो, बाबा," उसके स्वर मे आदेश भी था और स्नेह भी। "भाड मे जाए पासपरट, चलो चले! यहा सडक पर थोडे ही रात काटेगे।"

"मेरे बच्चे, मेरे प्यारे," बूढा कह रहा था। उसका सारा शरीर काप रहा था। "बडा ही मजेदार था कुत्ता हमारा आर्तो दूसरा ऐसा कुत्ता नही मिलेगा हमे "

"अच्छा, अच्छा उठो," सेर्गेइ कह रहा था। 'लाओ मै धूल झाड दू। तुम तो बाबा बिल्कुल ही हिम्मत हार बैठे।"

उस दिन फिर उन्होने काम नही किया। अपनी छोटी उम्र के बावजूद सेर्गेइ अच्छी तरह समझता था कि यह भयानक शब्द "पासपरट" गरीबो की जिदगी मे क्या मानी रखता है। इसलिए उसने न तो आर्तो को ढूढने, न हवलदार के पास जाने, न ही कोई और कदम उठाने पर जोर दिया। हा, बाबा के साथ रैनबसेरे तक जाते हुए उसके चेहरे पर एक नया, एकाग्रता और

हठधर्मी का भाव बना रहा, मानो उसने मन ही मन कोई गम्भीर और बडी योजना बना ली हो।

एक दूसरे को कुछ कहे बिना, परतु प्रत्यक्षत एक ही इच्छा से प्रेरित होकर उन्होने काफी लबा चक्कर लगाया, ताकि एक बार फिर 'दोस्ती' दाचा के सामने से गुजर सके। वे फाटक के सामने पल भर को रुके, इस धुधली सी आशा के साथ कि शायद आर्तो को देख पाए या दूर से उसकी आवाज ही सुनाई दे जाए।

लेकिन भव्य दाचा का लोहे का फाटक बद था और छायादार बाग म उदास, सुघड सरू वृक्षो तले दम्भमय, अविचलित, सुगध भरा सन्नाटा छाया हुआ था।

"सा – ह – ब – जादे!" फुफकारती आवाज मे बूढे ने कहा। इस एक शब्द मे उसने अपने हृदय की सारी कटुता उडेल दी।

"छोडो बाबा, चलो अब," लडके ने सख्ती से कहा और मदारी की बाह खीची।

"सेर्गेइ, शायद आर्तो भाग जाए?" बाबा ने फिर सिसकी भरी। "है? क्या ख्याल है तेरा, मुन्ना?"

पर लडके ने बाबा को कुछ जवाब नही दिया। वह दृढतापूर्वक, लबे लबे कदम भरता चला जा रहा था। उसकी आखे जमीन मे गडी हुई और पतली भौहे सिकुडी हुई थी।

(६)

चुप्पी साधे हुए ही वे अलूप्का पहुच गए। बाबा सारे रास्ते काखता और आहे भरता रहा था। सेर्गेइ के चेहरे पर कटुता और दृढ सकल्प का भाव बना हुआ था। एक तुर्क के गदे कहवेखाने मे, जिसका नाम बडा शानदार था 'इल्दीज' यानी 'सितारा', वे रात काटने को ठहरे। उनके साथ कुछ यूनानी राजगीर तुर्क बेलदार, दिहाडी करनेवाले रूसी मजदूर और कुछ सदेहास्पद आवारा लोग भी, जो बडी सख्या मे रूस के दक्षिण मे घूमते-फिरते है, वहा रात काट

रहे थे। जैसे ही निश्चित समय पर कहवाखाना बद हुआ, वे सब दीवारो के साथ लगी बेचो पर और फर्श पर लेट गए। जो लोग कुछ अनुभवी थे उन्होने सावधानी बरतते हुए अपनी जो कुछ भी कीमती चीज या कपडा-लत्ता था उसे सिर तले रख लिया।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी। बाबा के बगल मे फर्श पर लेटा सेर्गेइ हौले से उठा और जरा भी शोर न करने की कोशिश करते हुए कपडे पहनने लगा। बडी-बडी खिडकियो मे से मद-मद चादनी आ रही थी। तिरछी थरथराती किरणे फर्श पर फैल रही थी, गठरी से सोए लोगो पर पड रही थी। चादनी मे उनके चहरे दुखद और मृतको से लगते थे।

"ऐ, चोकरे, किदर जाता है रात को?" दरवाजे के पास कहवेखाने के मालिक जवान तुर्क इब्राहीम ने उनीदी आवाज मे सेर्गेइ को टोका।

"जाने दे, काम है!" सेर्गेइ ने सख्ती से जवाब दिया। "उठ भी न, तुरक-भुरक!"

जम्हाइया लेते, खुजलाते और जीभ से च-च करते इब्राहीम ने दरवाजा खोल दिया। तातार बाजार की सकरी गलियो मे घनी, गहरी नीली परछाईं फैली हुई थी, मडक दातेदार बेल-बूटे से बनी लगती थी, परछाईं सामने के मकानो की दहलीज तक पहुची हुई थी। सामने के घरो की नीची दीवारे चादनी मे चमक रही थी। मुहल्ले के परे कही कुत्ते भौक रहे थे। दूर, ऊपर की सडक पर दौडते घोडे की टापे सुनाई दे रही थी।

हरे गुम्बद वाली सफेद मस्जिद अधेरे घने सरू वृक्षो के झुरमुट से घिरी हुई थी। उसे पार करके लडका तेज ढलान वाली तग गली से बडी सडक पर उतर आया। ज्यादा बोझा न हो, इसलिए सेर्गेइ नीचे के कपडे पहने ही चला आया था। चादनी उसकी पीठ पर पड रही थी और उसके आगे-आगे अजीब सी, छोटी परछाईं दौड रही थी। सडक के दोनो ओर अधेरी झाडिया थी। कोई चिडिया उनमे समान अतराल से कोमल स्वर मे चहक रही थी "सोऊ! सोऊ!" लगता था कि वह रात की नीरवता मे किसी दुखद रहस्य को छिपाए हुए है और निश्शक्त सी नीद और थकावट के साथ सघर्ष कर रही है तथा धीमी-धीमी आवाज मे, बिना किसी आशा के किसी से शिकायत कर रही

है "सोऊ, सोऊ! " अधेरी झाडियो और दूर के जगल के नीले नील शिखरो के ऊपर आयपेत्री पर्वत के दो नुकीले सिरे आसमान को छूते लगते थे। वह सारा इतना हल्का-फुल्का लगता था, मानो चादी लगे गत्ते का बना हो।

इस भव्य नीरवता मे चलते हुए सेर्गेइ के मन मे धुक-धुक हो रही थी, पर साथ ही सारे शरीर मे एक मादक सी निडरता का सचार हो रहा था। एक मोड पर सहसा उसे समुद्र दिखा। असीम शात सागर मे तरगे उठ रही थी। क्षितिज से तट की ओर पतली सी, थरथराती रुपहली पट्टी बढती, समुद्र के बीचोबीच वह ओझल हो जाती, बस कही-कही ही झिलमिल होती, और फिर सहसा तट पर पिघली चादी फैल जाती।

सेर्गेइ जरा भी आवाज किए बिना पार्क के छोटे से लकडी के गेट मे से अदर घुस गया। वहा घने पेडो तले बिल्कुल अधेरा था। दूर से अथक झरने का कलकल सुनाई दे रहा था और उससे ठडी, नम सासे आ रही थी। पुल की लकडियो पर पैरो की ठक-ठक हुई। पुल तले पानी काला और भयावह था। आखिर वह लोहे का, लेस जैसे बेल-बूटो वाला फाटक भी आ गया। फाटक के दोनो ओर बेल लगी हुई थी। पेडो के झुरमुट से छनकर आती चादनी फाटक के बेल-बूटो पर कही-कही चमक रही थी। फाटक के दूसरी ओर अधेरा था और सन्नाटा, जो लगता था जरा सी आहट से ही भग हो जाएगा।

कुछ क्षणो के लिए सेर्गेइ के मन मे शका घिर आई, उसे डर ही लगने लगा। लेकिन उसने अपनी इस कमजोरी पर काबू कर लिया और बुदबुदाया

"नही, जो भी हो, मैं चढ जाऊगा।"

चढना उसके लिए मुश्किल न था। फाटक के बेल-बूटे उसके चीमड हाथो और मजबूत पावो के लिए अच्छा सहारा थे। फाटक के ऊपर एक खभे से दूसरे पर पत्थर की चौडी मेहराब बनी हुई थी। सेर्गेइ टटोलता टटोलता उस पर चढ गया, फिर पेट के बल लेटे-लेटे उसने टागे अदर की ओर नीचे कर दी और धीरे-धीरे सारा धड नीचे करने लगा, साथ ही वह पैरो मे टेक टटोलता जा रहा था। इस तरह वह मेहराब के दूसरी ओर लटक गया, बस उगलिया के सिरो मे वह मेहराब को पकडे हुए था, लेकिन उसके पैरो को कोई टेक नही

मिल रही थी। तव वह यह नही समझ सकता था कि मेहराव वाहर के मुकावले अदर की ओर ज्यादा बडी है। उसकी बाहे सुन्न होती जा रही थी और निश्शक्त हो गया शरीर भारी , मन मे भय समाता जा रहा था।

आखिर वह और न सह सका। नुकीले किनारे पर जमी उसकी उगलिया फिसल गई और वह तेजी से नीचे गिरा।

उसने रोडी की सरसराहट सुनी और घुटनो मे तेज दर्द महसूस किया। कुछ क्षण तक वह हाथो-पैरो के बल पडा रहा, गिरने से वह सुन्न हो गया था। उसे लग रहा था कि दाचा मे अभी सब जाग जाएगे, गुलाबी कमीज पहने जमादार दौडा आएगा, हगामा मच जाएगा लेकिन पहले की ही भाति वाग मे गहरा, दम्भमय सन्नाटा छाया हुआ था। वस, सारे वाग मे अजीव सी साय-साय हो रही थी।

"ओह, यह तो मेरे कानो मे शोर हो रहा है।' सेर्गेइ आखिर समझ गया। वह खडा हो गया। सव कुछ भयावह, रहस्यमय और अति सुदर था, सुगधित स्वप्न लोक सा। अधेरे मे मुश्किल से दिख रहे फूल हौले-हौले डोल रहे थे, मानो एक दूसरे के कान मे कुछ कह रहे थे, चुपके-चुपके देख रहे थे और अस्पष्ट सी चिता से सिर हिला रहे थे। अधेरे, सुघड, सुगधित सरू धीरे-धीरे अपने नुकीले शिखर हिला रहे थे, मानो विचारमग्न से किसी बात का उलाहना दे रहे थे। झरने के पार झाडियो के झुरमुट मे नन्ही सी थकी-मादी चिडिया नीद से जूझ रही थी और निराश, शिकायत करती सी दोहरा रही थी

"सोऊ! सोऊ! सोऊ! "

रात को पगडडियो पर उलझी परछाइयो मे सेर्गेइ इस जगह को पहचान ही न पाया। वह बडी देर तक सरसर करती रोडी पर भटकता रहा और आखिर मकान के पास पहुच गया।

जीवन मे पहले कभी भी लडके को ऐसे न लगा था कि वह इतना असहाय है, एकाकी है। उसे लग रहा था कि इस विशाल घर मे निर्मम शत्रु छिपे वैठे है, जो दुष्टता भरी मुस्कान के साथ अधेरी खिडकियो मे से छोटे से, दुर्वल बालक की हर गतिविधि पर नज़र लगाए हुए है। ये शत्रु चुपचाप अधीरतापूर्वक

किसी सकेत की, किसी के क्रोधपूर्ण, जोरदार आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"नही, घर मे नही घर मे वह नही हो सकता!" सेर्गेइ मानो सपने मे बुदबुदाया। "घर मे वह किकियाएगा, तग करेगा "

उसने दाचा का चक्कर लगाया। पिछली ओर खुले अहाते मे कुछ मामूली सी इमारते थी, शायद नौकरो के लिए। बडे घर की ही भाति यहा भी किसी भी खिडकी मे रोशनी नही थी, बस अधेरे शीशो मे चादनी ही धूमिल सी चमक रही थी। "अब कभी भी यहा से नही निकल पाऊगा। कभी भी नही!' गहरी उदासी के साथ सेर्गेइ ने सोचा। पल भर को बाबा, पुरानी पिटारी, कहवेखानो मे रैनबसेरे, शीतल चश्मो के पास खाना – यह सब उसे याद हो आया। "अब यह सब कभी भी नही होगा," सेर्गेइ ने मन ही मन दुख से कहा। परतु उसके विचारो मे जितनी अधिक निराशा आती जा रही थी, उतना ही उसके मन मे मर मिटने का शात, कटु सकल्प बढता जा रहा था।

सहसा उसके कानो से आह जैसी चिचियाहट टकराई। लडका ठिठक गया, सास थामे वह पजो के बल तनकर खडा हो गया। फिर वही आवाज आई। लगता था वह उस तहखाने से आ रही थी, जिसके पास सेर्गेइ खडा था और जिसमे हवा आने-जाने के लिए छोटे-छोटे, चौकोर झरोखे बने हुए थे। किन्ही फूलो पर पैर रखता हुआ सेर्गेइ दीवार के पास गया, एक झरोखे के पास मुह ले जाकर सीटी बजाई। नीचे कही हौले से आहट हुई, पर उसी क्षण शात हो गई।

"आर्तो! आर्तो!" सेर्गेइ ने कापती आवाज मे फुसफुसाकर पुकारा।

सारे बाग मे जोर-जोर से भौकने की आवाज़ गूज उठी। इस आवाज मे हर्ष भी था और शिकायत भी, कटुता भी और शारीरिक वेदना की भावना भी। सेर्गेइ को सुनाई दे रहा था कि अधेरे तहखाने मे कुत्ता पूरा जोर लगाकर किसी चीज से छूटने की कोशिश कर रहा है।

"आर्तो, मेरे कुत्ते, आर्तो," रुआसे स्वर मे लडका भी कहता जा रहा था।

"धत् कमबख्त कही का!" नीचे भोडी आवाज मे कोई चीखा।

तहखाने मे कुछ टकराया। कुत्ता रुक-रुककर जोर से हूकने लगा।

"मार मत, मुए, मत मार कुत्ते को," पत्थर की दीवार को नाखूनो से खरोचते हुए सेर्गेइ चीख उठा।

फिर जो कुछ हुआ, उसकी सेर्गेइ को धुधली सी ही याद थी, मानो बुखार की बदहवासी मे सब कुछ हुआ। तहखाने का दरवाजा खडखडाकर खुल गया और जमादार दौडा-दौडा बाहर आया। वह केवल अतरीय पहने था। नगे पैर, दढियल, चेहरे पर पडती चादनी से पीला जमादार सेर्गेइ को राक्षस सा लगा।

"कौन है? कौन है?" बिजली की तरह उसकी आवाज कडकी। "पकडो-पकडो। चोर! चोर!"

उसी क्षण खुले दरवाजे के अधेरे मे से उछलते सफेद गोले की तरह आर्तो भौकता हुआ बाहर आया। उसकी गरदन मे रस्सी का टुकडा लटक रहा था।

लडके को तो अब कुत्ते की होश न थी। जमादार की डरावनी आकृति से वह आतकित हो उठा था, पैर जैसे काठ के हो गए, सारे शरीर को लकवा मार गया। पर खुशकिस्मती से यह जडता ज्यादा देर न रही। सेर्गेइ ने अनजाने ही तीखी, लबी चीख मारी और सिर पर पैर रखकर तहखाने से दूर भागा, रास्ता तो उसे दिख न रहा था, अनुमान से ही वह दौड चला।

वह हिरन की तरह जल्दी-जल्दी और जोर से जमीन पर पाव मारता दौडता जा रहा था। टागे उसकी सहसा इतनी मजबूत हो गई थी, मानो दो फौलादी स्प्रिग हो। उसके बगल मे ही खुशी से भौकता आर्तो दौड रहा था। पीछे-पीछे रेत पर जोर-जोर से धमधमाता जमादार आ रहा था, गुस्से मे गालिया बक रहा था।

दौडते-दौडते ही सेर्गेइ फाटक तक जा पहुचा, और क्षण भर मे ही सोचकर नही, बल्कि अत प्रेरणा से ही यह समझ गया कि यहा रास्ता नही है। पत्थरो की दीवार और उसके साथ-साथ लगे सरू वृक्षो के बीच सकरा सा अधेरा छेद था। कुछ सोचे-समझे बिना केवल डर की भावना से प्रेरित सेर्गेइ नीचे झुका और उसमे घुस गया, दीवार के साथ-साथ दौडने लगा। सरू की काटेनुमा पत्तिया उसके चेहरे पर जोर-जोर से लग रही थी। वह पेडो की जडो से टकरा जाता, गिरता, हाथ खूनोखून हो जाते, पर वह तुरत ही उठ खडा होता,

पीडा तक न अनुभव करता और आगे दौडने लगता। वह मुडकर दोहरा ही हो गया था, अपनी चीख तक उसे सुनाई न दे रही थी। आर्तो उसके पीछे-पीछे दौड रहा था।

इस तरह वह एक ओर ऊची दीवार और दूसरी ओर सरु वृक्षो की घनी कतार से बने गलियारे मे दौड रहा था—असीम फदे मे फसे, बौखलाए हुए छोटे से जानवर की तरह। उसका गला सूख गया और हर सास के साथ छाती मे हजारो सुइया चुभती थी। जमादार की धमधम कभी दाई ओर से आती और कभी बाई ओर से। बदहवास हो गया लडका कभी आगे दौडता, कभी पीछे, कई बार वह गेट के सामने से गुजरा, अधेरे, तग छेद मे घुसा।

आखिर सेर्गेइ निढाल हो गया। भयभीत मन मे निराशा समाने लगी, वह हर तरह के खतरे की ओर से उदासीन सा होता जा रहा था। वह पेड तले बैठ गया, अपना थकावट से चूर-चूर शरीर तने से टिकाया और आखे मूद ली। शत्रु के भारी कदमो तले रेत की सरसर पास ही आती जा रही थी। आर्तो सेर्गेइ के घुटनो मे थूथनी दुबकाकर हौले से किकिया रहा था।

लडके से दो कदम दूर टहनियो को हाथ से हटाने की आवाज आई। सेर्गेइ ने सहज ही आखे ऊपर उठाई और सहसा असीम हर्ष से भरपूर हो एक ही झटके मे उछलकर खडा हो गया। अब कही उसने देखा था कि जिस जगह वह बैठा था, उसके सामने दीवार नीची ही थी, चार फुट से ज्यादा नही। हा, उसके ऊपर काच लगा हुआ था, पर सेर्गेइ ने इसके बारे मे नही सोचा। पलक झपकते ही उसने आर्तो को धड से उठाया और उसकी अगली टागे दीवार पर रख दी। चतुर कुत्ता तुरत ही सब कुछ समझ गया। वह जल्दी से दीवार पर चढ गया, दुम हिलाने लगा और जीत के स्वर मे भौकने लगा।

उसके पीछे-पीछे ही सेर्गेइ भी दीवार पर चढ गया, ठीक उसी वक्त जब सरू की टहनियो को हटाकर विशाल, काली आकृति प्रकट हुई। दो लचीले, फुर्तीले शरीर तेजी से सडक पर कूद गए। उनके पीछे बादलो की गडगडाहट की तरह गदी-गदी गालिया सुनाई दी।

न जाने जमादार इन दो दोस्तो जैसा फुर्तीला नही था या वह बाग मे दौडता-दौडता थक गया था या उसे उम्मीद नही थी कि इन भगोडो को पकड

पाएगा, जो भी हो उसने इनका पीछा नही किया। किंतु फिर भी वे दोनो काफी देर तक दौडते चले गए, मुक्ति की खुशी से मानो उन्ह पर लग गए थे। कुत्ता शीघ्र ही निश्चित हो गया, पर सेर्गेइ अभी भी सहमा-सहमा पीछे मुडकर देख रहा था। आर्तो उसके ऊपर कूद रहा था, खुशी से कान और रस्सी का टुकडा हिलाता हुआ वह एकदम उछलकर लडके के ऐन होठो पर ही अपनी जीभ फेर लेता।

सोते के पास ही, उसी जगह जहा दिन को उन्होने बाबा के साथ रोटी खाई थी, लडके की जान मे जान आई। एकसाथ ही ठडे सोते पर मुह लगाकर कुत्ता और इन्सान बडी देर तक ताजा, स्वादिष्ट जल पीते रहे। वे एक दूसरे को धकेलते, पल भर को सिर ऊपर उठाकर सास लेते, उनके होठो से टप-टप बूदे गिरती और फिर से वे सोते पर मुह लगा लेते, हौके से पानी पीने लगते। आखिर जब और न पिया गया और वे आगे चल दिए, तो उनके पेटो मे पानी की गुडगुड हो रही थी। खतरा टल गया था, इस रात के सभी डरो का अब नामोनिशान न रहा था और वे दोनो खुशी-खुशी, मजे से चादनी मे चमकती सडक पर चले जा रहे थे। दोनो ओर की अधेरी झाडियो से सुबह की ताज़गी और ओस से भीगी पत्तियो की मीठी गध आ रही थी।

'इल्दीज' कहवेखाने मे इब्राहीम लडके को उलाहना देते हुए बडबडाया "ऐ, चोकरे, कहा घूमता रहता है तू? बरी बुरी बात है "

सेर्गेइ बाबा को जगाना नही चाहता था, पर उसकी जगह आर्तो ने ऐसा किया। फर्श पर गठरियो से पडे शरीरो मे उसने पल भर मे ही बाबा को ढूढ लिया आर वह होश मे आता, इससे पहले ही खुशी से किकियाते हुए उसके गाल, आखे, नाक, मुह चाटे लिए। बाबा जाग गया, कुत्ते की गरदन मे लटकती रस्सी देखी, अपने पास ही लेटे, धूल से सने लडके को देखा और सब कुछ समझ गया। वह सेर्गेइ मे कुछ पूछना-बूछना चाहता था, पर कोई बात न बनी। लडका हाथ फैलाए, मुह खोले सो रहा था।

फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की

पराये घोंसले में
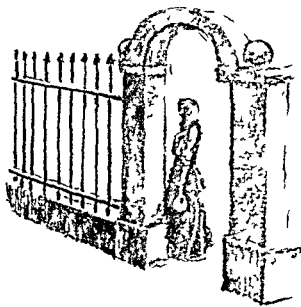
ससार म कौन ऐसा पढा लिखा व्यक्ति होगा, जो 'अपराध और दण्ड', 'करामाजव बधु और बौडम उपन्यासो से परिचित न हो। ये महान लेखक फ्योदोर मिखाइलोविच दोस्तोयेव्स्की की लेखनी की देन है। ससार मे शायद ही दूसरा कोई ऐसा लेखक हो, जिसने लोगो की वेदनाओ उनके विचारो के मथन और उनकी अतरात्मा की व्यथा का इतना मार्मिक चित्रण किया हो। दोस्तोयेव्स्की की प्राय सभी पुस्तके गम्भीर है उन्ह समझना सरल नही।

परतु उनकी प्राय हर रचना म ऐसे अश है, जिन्हे वह अपनी नन्ही वेटी और उसकी सहेलिया को पढकर सुनाया करते थे और जिन्हे सुनकर बच्चो के मनो मे भावनाओ का उद्वेग उठता था। दोस्तोयव्स्की चाहते थे कि कभी खाली समय मिले, तो इन अशो को जमा करके अलग पुस्तक के रूप मे प्रकाशित करे। परतु वह स्वय एसा न कर पाए। १८८१ मे साठ वर्ष की आयु मे उनका देहात हो गया। उसके दो वर्ष बाद ही एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक था 'रूसी बच्चो को। फ्योदोर दोस्तोयव्स्की की रचनाओ स । इसमे क्रिसमस और बालक और किसान मरेइ कहानिया तथा किशोर', 'नतच्चा नज्वानवा अपराध और दण्ड तथा करामाजव बधु' उपन्यासो के अश सकलित थे। तब से यह पुस्तक कई बार छपी।

दोस्तोयेव्स्की को बाल आत्मा का बडा अच्छा ज्ञान था। बचपन की अपनी यादो को ही वह पर्याप्त नही मानते थे। अपने एक मित्र को उन्होने लिखा "बच्चो के बारे म जो कुछ भी आप जानते हो मुझे लिख उनकी आदते रोचक घटनाए, उत्तर शब्द उनके लक्षण विश्वास, उनकी बुरी हरकते और भोलापन " बच्चो के प्रति अपने प्रेम के बारे मे उनका कहना था 'मै उनका अध्ययन करता हू, सारी उम्र करता आया हू और अतरतम मे उन्ह प्यार करता हू।

परतु यह प्रेम दोस्तोयेव्स्की के एक वयस्क नायक के शब्दो मे ही सबसे अच्छी तरह व्यक्त हुआ है निर्दोष पीडित बच्चे के एक आसू के लिए मै स्वर्ग का टिकट विनम्रतापूर्वक लौटाता हू ।

'असहाय जीव को पहुचाए गए जरा से दुख उसके एक आसू म ही बुरी तरह व्यथित होनेवाले व्यक्ति के हृदय म बच्चो के प्रति जो गहरा प्रेम है उस प्रेम न ही लेखक म ये शब्द निकलवाए होगे हमारे समसामयिक सोवियत कवि सर्गेई मिखल्कोव कहते है। १९७१ म दोस्तोयेव्स्की की १५०वी वर्षगाठ पर उनकी बच्चो के लिए पुस्तक प्रकाशित हुई। उसकी भूमिका म ही मिखल्कोव न यह लिखा है। इसी पुस्तक म यहा प्रस्तुत कहानी ली गई है। यह एक जमीदार और साधारण किसान औरत की अवैध सतान की कहानी है। लडके को ल्यावका ऊच घराने के बच्चो के बोर्डिंग स्कूल म दाखिल करा दिया जाता है और कैसे उसे दूसरे लडको से और मास्टरो से क्या-क्या अपमान सहने पडते है यही है इस कहानी का विषय।

घटा दो या बल्कि तीन सेकड मे ही एक बार जोर से और बिल्कुल स्पष्टत बज रहा था, लेकिन यह मुनादी का घटा नही था, यह तो एक प्रिय नाद था, जो मद लय मे गुजायमान हो रहा था। सहसा मुझे लगा कि यह तो जाना-पहचाना नाद है, कि सत निकोलस के गिरजे मे घटा बज रहा है। मास्को का यह पुराना लाल गिरजा हमारे बोर्डिंग स्कूल के सामने ही था, जार अलेक्सेइ मिखाइलविच * ने इसे बनवाया था – बेलबूटेदार, बहुत सारे गुम्बदो और स्तम्भो वाला गिरजा। मुझे यह भी ख्याल आया कि अभी-अभी ईस्टर सप्ताह बीता है और अब स्कूल के बगीचे मे पतले-पतले भोज वृक्षो पर नई-नई निकली हरी-हरी पत्तिया कपायमान हो रही होगी। ऐसा ही दिन था तब। हमारी कक्षा मे ढलती दुपहरी की तिरछी धूप पड रही थी। कक्षा के बाई ओर वाले छोटे से

---

* सन् १६४५ से १६७६ तक रूस का जार। – स०

कमरे मे, जहा साल भर पहले तुशार ने मुझे काउटो और सीनेटरो के बच्चो से अलग ले जाकर रखा था, एक मेहमान बैठी थी। हा, हा मे किसी ऊचे घराने का नही था, तो भी मेरे पास एक महिला आई थी। जब से मैं तुशार के यहा रह रहा था, पहली बार मुझसे मिलने कोई आया था। जैसे ही वह अदर आई थी मैं उन्हे पहचान गया था यह मेरी मा थी हालाकि उस दिन से जब गाव के गिरजे मे उन्होने मुझे युखारिस्त दिलाया था और गुम्बद के नीचे एक कबूतर उडा था, मैंने उन्हे कभी नही देखा था। हम दोनो अकेले बठे थे और मे उन्हे आखे चुराकर अजीब तरह मे घूर रहा था। बाद मे कई वर्ष पश्चात मुझे पता चला था कि तब वह अपनी मर्जी से जिन लोगो के सरक्षण मे उन्हे रखा गया था उनसे चोरी-चोरी ही मास्को आई थी, हालाकि उनके पास पैसे भी बहुत थोडे थे, तो भी वह मात्र मुझे देख पाने को ही आई थी। यह भी एक अजीब बात थी कि अदर आकर और तुशार से बात करने के बाद उन्होने मुझे एक शब्द भी नही कहा कि वह मेरी मा हे। वह मेरे पास बैठी थी, और मुझे आश्चर्य हो रहा था कि वह इतना कम बोलती ह। वह अपने साथ एक गठरी लाई थी। उन्होने गठरी खोली, उसमे छह माल्टे थे कुछ प्रियानिक* और दो मामूली फ्रेच बद। मुझे उनका फ्रेच बद लाना अच्छा न लगा, और मैंने बुरा सा मुह बनाकर कहा कि हमे यहा भोजन बहुत अच्छा मिलता है और हमे रोजाना चाय के साथ फ्रेच बद मिलते हैं।

"कोई बात नही, बेटा, मैं तो अपने भोलेपन मे सोच रही थी कि शायद उन्हे वहा स्कूल मे खाना अच्छा न मिलता हो। बुरा न मानना, बच्चे।"

"जी, वह अन्तनीना वसील्येव्ना (तुशार की पत्नी) को भी बुरा लगेगा। और साथी भी मेरा मजाक उडाएगे '

"तो, नही लोगे क्या? ले लो, खा लेना।"

'अच्छा, रहने दीजिए "

उनकी सौगात को मैने हाथ तक न लगाया, माल्टे और प्रियानिक मेरे सामने मेज पर रखे थे और मैं आखे झुकाए, पर बडे आत्मगौरव की भावना के

---

* शहद, मुरब्बे आदि के साथ बनाये जानेवाले रूसी बिस्कुट। – स०

साथ बैठा हुआ था। कौन जाने, हो सकता है, मेरा तब यह छिपाने का बिल्कुल भी मन न रहा हो कि उनके यो मिलने आने मे मैं दूसरे लडको के सामने शर्मिदा हू, या कम से कम उन्हे यह जताना चाहता था ताकि समझ जाए कि 'देखिए आपके कारण मेरा अपमान हो रहा है और आप स्वय भी यह नही समझती है"। ओह, मै उन दिनो तुशार के पीछे ब्रुश उठाए चलता था, उसके कोट की धूल झाडता था! मै यह भी कल्पना कर रहा था कि मा के जाते ही मुझे लडको से कैसी-कैसी बाते सुननी होगी और हो सकता है, स्वय तुशार भी मेरी खिल्ली उडाए। सो मेरे मन मे मा के लिए रत्ती भर भी सद्भावना न थी। कनखियो से मै उनका पुराना सा, गाढे रग का लिबास देख रहा था, उनके हाथ कैसे खुरदुरे थे–मजदूरो जैसे, और जूतिया तो बिल्कुल ही घटिया थी, चेहरा दुबला पड गया था, माथे पर झुर्रिया पडने लगी थी। हा, यह सच है कि बाद मे, मा के चले जाने पर शाम को अन्तनीना वसील्येव्ना ने कहा था "आपकी maman अवश्य ही कभी देखने मे खासी अच्छी रही होगी"।

ऐसे ही हम बैठे हुए थे और सहसा नौकरानी अगाफ्या ट्रे लिए अदर आई। ट्रे पर कॉफी का कप रखा हुआ था। दोपहर के खाने के बाद का समय था और इस समय तुशार दम्पति सदा अपनी बैठक मे कॉफी पिया करते थे। परतु मा ने धन्यवाद कहा और कॉफी नही ली। बाद मे मुझे पता चला कि उन दिनो वह कॉफी बिल्कुल ही नही पीती थी, क्योकि उससे उनका जी घबराने लगता था। बात यह थी कि तुशार और उसकी पत्नी मन ही मन, प्रत्यक्षत यह सोच रहे थे कि मा को मुझे से मिलने की अनुमति देकर उन्होने बहुत बडा उपकार किया है, अत मा के लिए कॉफी का कप भेजना तो उनकी मानवीयता का पराक्रम ही था जो उनकी सभ्यता और यूरोपीय चाल-चलन के लिए अत्यत मान की बात थी। और मा ने मानो जान-बूझकर कॉफी से इन्कार कर दिया था।

मुझे तुशार के पास बुलाया गया, और उसने यह आज्ञा दी कि मै अपनी सभी कापिया और पुस्तके ले जाकर मा को दिखाऊ, ताकि 'वह देख ले कि आपने मेरे स्कूल मे कितना ज्ञान पाया है"। तभी अन्तनीना वसील्येव्ना ने होठ सिकोडकर और मुह बनाते हुए उपहास के स्वर मे कहा

'लगता है आपकी maman को हमारी कॉफी पसद नही आई।"

मैंने कापिया उठाई और मा को दिखाने ले चला। कक्षा मे काउटो और सीनेटरो के बच्चे झुड बनाए खडे थे और चोरी-चोरी मेरे कमरे मे झाक रहे थे। मुझे तुशार की आज्ञा का अक्षरश पालन करना अच्छा ही लगा। मैं एक-एक करके कापिया खोलने और बताने लगा "यह देखिए – यह फ्रासीसी व्याकरण का पाठ है, यह इमला हमने लिखी है, यह रहे क्रियाओ के रूप, यह भूगोल की कापी है, यूरोप के प्रमुख नगरो और ससार के सभी भागो का वर्णन," इत्यादि। आधे घटे तक मै एकसुरी, धीमी आवाज मे बताता गया और सारा समय बडे शिष्ट बालक की भाति आखे झुकाए रहा। में जानता था कि मा की समझ मे यह सब नही आता, हो सकता है उन्हे पढना-लिखना भी न आता हो, परतु मुझे अपनी यही भूमिका बहुत अच्छी लग रही थी। किंतु मै उन्हे थका न पाया – वह सुनती जा रही थी, एक बार भी मुझे टोका नही, बडे ध्यान से और आदर भाव से सुनती रही। अतत मै स्वय ही ऊब उठा और मैंने बोलना बद कर दिया। हा, मा की आखो मे तब उदासी थी और चेहरे पर दयनीय भाव।

आखिर वह जाने को उठ खडी हुई। सहसा स्वय तुशार अदर चला आया और भोंडे दम्भ से पूछने लगा "क्या आप अपने पुत्र की सफलता पर सतुष्ट हैं?" मा कुछ बुदबुदाने लगी और कृतज्ञता प्रकट करने लगी, अन्तनीना वसील्येव्ना भी आ गई। मा उन दोनो से विनती करने लगी "अनाथ को न छोडना – अब तो इसे अनाथ ही समझिए, इसे आप अपने आश्रय मे रखे रहे " उनकी आखे भर आई और वह उन दोनो के सामने कमर तक झुक गई, ठीक वैसे ही जैसे मामूली लोग जब बडे लोगो से कुछ मागने आते हैं, तो झुक-झुककर सलाम करते है। तुशार और उसकी पत्नी को इसकी आशा तक न थी, प्रत्यक्षत अन्तनीना वसील्येव्ना का दिल पिघल गया और उसने, निस्सदेह, तभी कॉफी के कप के बारे मे अपना मत बदल लिया। तुशार और भी अधिक अहमन्यता के साथ, मानवीयता दर्शाते हुए बोला कि वह "बच्चो मे भेदभाव नही करता, कि यहा सभी उसके अपने बच्चे है, और वह उनका पिता, कि वह मेरे साथ काउटो और सीनेटरो के बच्चो के समान ही वर्ताव करता है और इसकी कद्र करनी चाहिए", इत्यादि, इत्यादि। मा झुक-झुककर

सलाम करती जा रही थी, पर फिर वह सकपका गई और आखिर मेरी ओर मुडी। उनकी आखो मे आसू चमके, बोली

अलविदा, मेरे लाल!"

और उन्होने मुझे चूमा, नही, मैने उन्हे अपना गाल चूमने दिया। वह तो शायद बारम्बार मुझे चूमना, बाहो मे भरना, गले लगाना चाहती थी, पर न जाने लोगो के सामने उन्हे स्वय ही सकोच हो उठा, या किसी और बात से मन कडवा हो गया, या समझ गई कि मैं शर्मिंदा हो रहा हू, बस वह जल्दी-जल्दी तुशार और उसकी पत्नी के सामने झुकी और बाहर चल दी। मै खडा रहा।

Mais suiver donc votre mère अन्तनीना वसील्येव्ना बोली। 'il n a pas de cœur cet enfant! *

तुशार ने जवाब मे कधे बिचका दिए, निस्सदेह इसका अर्थ था "आखिर मैं इसे नौकर यो ही तो नही समझता।"

आज्ञापालन करते हुए मै मा के पीछे पीछे सीढिया उतरने लगा। हम बाहर निकल आए। मै जानता था कि वे सब अब खिडकी से झाक रहे है। मा गिरजे की ओर मुडी और तीन बार जमीन तक झुककर सलीब का चिह्न बनाया। उनके होठ काप रहे थे। घण्टे का नाद गूज रहा था। वह मेरी ओर मुडी, उनसे रहा न गया, दोनो हाथ मेरे सिर पर रख दिए और रो पडी।

'मा, बस करिए न शर्म आती है वे सब खिडकी से देख रहे ह "

उन्होंने झटके से सिर उठाया और जल्दी-जल्दी बोलने लगी

'हे भगवान भगवान तेरी रक्षा करे हे देवदूत, हे माता मरियम, ईसा के प्यारे सत निकोलस रक्षा करो हे भगवान, हे भगवान!" वह जल्दी जल्दी बोलती जा रही थी, और मेरे ऊपर ज्यादा से ज्यादा सलीब के निशान बनाने की कोशिश कर रही थी। 'मेरे लाल मेरे लाडले! ठहर तो मेरी आख के तारे

---

* मा को छोडने जाओ न कैसा निर्मम लडका है! (फ्रासीसी)।

उन्होने जल्दी से जेब मे हाथ डाला और रूमाल निकाला, नीला सा चौखानेदार रूमाल था और उसके सिरे पर कसकर गाठ बधी हुई थी। वह गाठ खोलने लगी, पर गाठ खुलती ही न थी।

"अच्छा, लो रूमाल समेत ही रख लो, साफ है, काम आ जाएगा। क्षमा करना, बेटा, ज्यादा तो मेरे पास है ही नही, लाल।"

मैंने रूमाल ले लिया, कहना चाहता था कि "हमे श्रीमान तुशार और अन्तनीना वसील्येव्ना से सब कुछ मिलता है और हमे किसी वस्तु की आवश्यकता नही", पर अपने को रोक लिया और रूमाल रख लिया।

आखिर वह चली गई। मेरे लौटने से पहले ही काउटो और सीनेटरो के बच्चे सारे माल्टे और प्रियानिक खा गए थे। बीस-बीस कोपेक के चार सिक्क लम्ब्वेर्त ने तुरत मुझ से छीन लिए, इन पैसो से लडको ने पेस्टरिया और चाकलेट खरीदे, मुझे दिए तक नही।

पूरे छह महीने बीत गए। अक्तूबर का महीना आया, तेज ठडी हवाए चलने लगी, दिन-दिन भर पानी बरसता रहता। मै मा को बिल्कुल भूल ही चुका था। ओह, तब मेरे हृदय मे घृणा घर कर चुकी थी, मुझे सबसे घृणा थी, घोर घृणा, मै अभी भी तुशार के कपडो पर ब्रुश करता था, पर रोम-रोम से उससे घृणा करता था और मेरी यह घृणा दिन प्रति दिन बढती ही जा रही थी। तभी एक दिन उदासी भरी सध्या के झुटपुटे मे मैं अपने बक्से मे कुछ ढूढ रहा था और सहसा मुझे एक कोने मे वह सादा सा नीला रूमाल दिखा। मैंने जैसे उसे बक्से मे डाल दिया था, वैसे ही वह पडा हुआ था। मैंने उसे निकाला और कुछ कौतूहल के साथ देखने लगा, रूमाल के सिरे पर अभी तक गाठ का निशान बना हुआ था, सिक्को की गोल छाप तक साफ नजर आ रही थी। मैंने रूमाल वापस रख दिया और बक्सा नीचे खिसका दिया। यह त्योहार से पहले के दिन की बात थी, तभी गिरजे मे जगराते की पूजा का घटा बजा। सभी लडके दोपहर के खाने के बाद ही अपने-अपने घर जा चुके थे। इस बार अकेला लम्ब्वेर्त ही स्कूल मे रह गया था, न जाने क्यो उसे लिवाने कोई नही आया था। वह अभी भी मुझे पहले की तरह पीटा करता था, पर अब बहुत कुछ मुझे बताने लगा था और उसे मेरी जरूरत थी। हम सारी शाम

लेपाभ्र* की पिस्तौलो की बाते करते रहे, जो हम दोनो मे से किसी ने भी देखी नही थी, और चेर्केसो** की तलवारो की बाते, कि क्या धार होती है उनकी, कि अगर अपना एक दस्यु गिरोह बना लिया जाए तो कितना अच्छा रहे दस बजे हम सोने को लेटे, मैने सिर तक कम्बल ओढा और सिरहाने तले से नीला रूमाल निकाल लिया घटे भर पहले मैं न जाने क्यो उसे बक्से मे से निकाल लाया था और जब हमने बिस्तर लगाए, तो उसे सिरहाने तले रख दिया था। मैने रूमाल अपने मुह से लगा लिया और सहसा उसे चूमने लगा। "मा, मा," मैं बुदबुदा रहा था, मा को याद करके मेरा कलेजा मला जा रहा था। आखे मूदता, तो मुझे उसका चेहरा नजर आता और कापते होठ, जब वह गिरजे के सामने सलीब के निशान बना रही थी और फिर मुझ पर, और मैं कह रहा था "शर्म आती है, देख रहे है"। "मा, प्यारी मा, जीवन मे एक बार तो तुम मेरे पास आई थी कहा हो तुम अब, मा? तुम्हे अपने बेटे की याद आती है, जिससे मिलने तुम आई थी? अब एक बार मुझे दिख जाओ, सपने मे ही आ जाओ, बस एक बार, और मैं तुम्हे कह दू कि तुम्हे कितना प्यार करता हू, तुम्हारे गले लग जाऊ, तुम्हारी नीली आखे चूम लू, तुम्हे कह लू कि अब मुझे तुमसे बिल्कुल शर्म नही लगती, कि मैं तब भी तुम्हे प्यार करता था, मेरे दिल मे तब कैसा दर्द हो रहा था, बस मैं चाकर सा बना बैठा ही हुआ था। मा, तुम कभी न जान पाओगी कि मुझे तुमसे तब कितना प्यार था! मा, मेरी मा, कहा हो तुम, सुन रही हो मेरी आवाज? मा, याद है वह कबूतर, गाव मे? "

---

* १६ वी सदी मे सारे यूरोप मे मशहूर पिस्तौलो का निर्माता। – स०
** काकेशिया मे बसनेवाली एक जाति। – स०

द्मीत्री ग्रिगोरोविच
रबड़ का पुतला

रूसी बाल-साहित्य मे "रबड का पुतला" सम्भवत सबसे दुखद कहानी है। १८८३ म दमीत्री वसील्येविच ग्रिगोरोविच ने यह कहानी लिखी। इस प्रतिभाशाली लेखक ने भूदासता के युग म रूसी जीवन का बडा सटीक और मार्मिक वर्णन किया है। अपने बचपन के कटु अनुभव उनकी रचनाओ मे प्रतिबिम्बित हुए है।

ग्रिगोरोविच का जन्म १८२२ मे हुआ। उनके पिता जमीदार थ। दमीत्री छोटे ही थे, जब पिता का देहात हो गया। मा फ्रासीसी थी उन्हे रूसी नहीं आती थी और वह अपने चारो ओर के जीवन को नही समझती थी। मा बेटा भी कभी एक दूसरे को न समझ पाए। पिता के बूढ भूदास—निकोलाई बाबा ने दमीत्री को पाला। कालान्तर मे लेखक ने लिखा "अपने स्नेह और ममता से वचित एकाकी बचपन म मुझे निकोलाई बाबा के साथ बिताए क्षणो म ही थोडा बहुत लाड प्यार मिला।"

किस्मत का मारा बच्चा निष्ठुर कलाबाज बेक्कर के हाथो पड जाता है, जो उसे आत्मसतुष्ट और निठल्ले लोगो के तमाशे के लिए साधता है। यह कहानी पढकर अनाथ, असहाय बच्चे के एकाकी स्नेहरिक्त जीवन की दुखदायी अनुभूति से पाठक का कलेजा मसला जाता है।

(१)

कलाबाज बेक्कर का शागिर्द केवल इश्तहारो मे ही "रबड का पुतला" कहलाता था, उसका असली नाम था पेत्या, वैसे तो उसे अभागा बालक कहना ही सबसे उचित होगा।

उसकी कहानी बिल्कुल छोटी सी है, लबी व जटिल हो भी कैसे जबकि वह केवल आठ बरस का ही हुआ है।

वह पाच बरस का भी नही हुआ था, जब मा मर गई, पर फिर भी उसे मा याद थी। अभी तक उसे वह आखो के सामने जीती-जागती नजर आती दुबली-पतली सी औरत, जिसके हल्के पयाल के रग के झीने बाल सदा उलझे पुलझे रहते और जो कभी उसे दुलारती, हाथ मे जो आ जाता हरा प्याज, पाड, मछली, रोटी उसके मुह मे ठूसती जाती और कभी बेबात ही उस पर बरस पडती, चीखने-चिल्लाने लगती, जो भी हाथ मे पड जाता, उससे जहा भी हाथ पड जाता मारने लगती। तो भी पेत्या उसे अक्सर याद करता था।

पेत्या को वह दिन भी अच्छी तरह याद था, जब मा को दफनाया गया

जनवरी की मनहूस सुबह थी, आसमान पर छाए नीचे बादलो से बारीक हिम गिर रहा था, हवा के झोको से चेहरे पर वह सुइयो की तरह चुभता और ठड से जकडी सख्त जमीन पर लहरो सा बढता जाता। पेत्या तावूत के पीछे-पीछे नानी और वर्वारा धोबिन के बीच चल रहा था। उसके हाथो-पावो मे ठड से असह्य जलन हो रही थी। वैसे भी उसके लिए इन ओरतो के साथ चलना मुश्किल था। वह इधर-उधर से लिए गए कपडो मे लिपटा हुआ था कही से बूट ढूढ लिए गए थे, जो उसके पैरो से बहुत बडे थे, कफ्तान भी इतना बडा था कि अगर उसे पीछे से उठाकर कमर पर बाध न दिया गया होता, तो वह चल ही न सकता, कनटोप भी जमादार से मागा हुआ था, जो पल-पल बाद आखो पर गिर जाता था ओर पेत्या रास्ता न देख पाता था।

कब्रगाह से लौटते हुए नानी और वर्वारा बडी देर तक ये बाते करती रही कि अब लडके का क्या किया जाए। कहा उसे कुछ सीखने-वीखने को दिया जाए? और कौन इस सबका इतजाम करे?

लडका इधर-उधर कभी एक कोने मे, कभी दूसरे कोने मे, कभी एक बुढिया, कभी दूसरी के पास रहता रहा। अगर वर्वारा धोबिन उसकी परवाह न करती, तो न जाने उसका क्या हुआ होता।

धोबिन मखवाया सडक पर एक बडे मकान के पिछले अहाते मे तहखाने वाली मजिल मे रहती थी। उसी अहाते मे ऊपर की मजिल मे कुछ सरकस वाले रहते थे। उनके पास कुछ कमरे थे, जो बगल के अधेरे गलियारे से एक दूसरे से जुडे हुए थे। वर्वारा सबको अच्छी तरह जानती थी, क्योकि वह हमेशा उनके कपडे धोती थी। उनके यहा जाते हुए वह अक्सर पेत्या को अपने साथ ले जाती थी। सब को उसकी कहानी मालूम थी सब जानते थे कि वह अनाथ है, उसका कोई आगा-पीछा नही। बातो-बातो मे वर्वारा कई बार यह जता चुकी थी कि अगर कोई अनाथ पर तरस खाकर उसे अपना काम सिखाने को अपने पास रख ले, तो बडा अच्छा हो। पर कोई हा न करता था, लगता था, किसी को अपने झझटो मे ही फुरसत न थी। बस एक ही ऐसा साहब था, जो न

हा कहता था, न ना। कभी-कभी यह साहब बडे ध्यान से लडके को देखता। यह था जर्मन कलाबाज बेक्कर।

यह अनुमान लगाया जा सकता था कि उसके और बर्बारा के बीच गुप चुप कुछ बात चल रही थी, क्योकि एक दिन ऐसा मौका देखकर, जब बाकी सरकस वाले रिहर्सल पर चले गए और घर मे अकेला बेक्कर रह गया, बर्बारा जल्दी-जल्दी पेत्या को ऊपर ले गई और सीधे बेक्कर के कमरे मे घुस गई।

बेक्कर बैठा किसी का इतजार करता ही लगता था। वह कुर्सी पर बैठा चीनी मिट्टी का पाइप पी रहा था, जिसकी डडी मुडी हुई थी और उस पर झालर लटक रही थी। उसके सिर पर छोटे-छोटे रग-बिरगे मोतियो से काढी चपटी टोपी एक ओर को खिसकी हुई थी। उसके सामने मेज पर बीयर की तीन बोतले रखी हुई थी—दो खाली और एक अभी-अभी शुरू की गई।

कलाबाज का फूला हुआ चेहरा और साड सी मोटी गर्दन लाल थी, अह से भरपूर वह तनकर बैठा था। उसे देखकर इस बात मे जरा भी सदेह नही रह जाता था कि यहा, घर पर भी वह अपने डीलडौल की खूबसूरती पर गुमान कर रहा है।

"लो, कार्ल बग्दानविच यह लडका है " पेत्या को आगे बढाते हुए बर्बारा ने कहा।

"अच्छा बात है," कलाबाज बोला। "मगर हम ऐसा नही देखता, लडका का कपडा उतारो "

पेत्या अभी तक बुत बना खडा था और सहमी-सहमी नजरो से बेक्कर को देख रहा था, उसकी यह बात सुनकर वह पीछे को लपका और बबारा का लहगा कसकर पकड लिया। बेक्कर ने दुबारा से उसके कपडे उतारने को कहा और बर्बारा पेत्या का मुह अपनी ओर मोडकर उसके कपडे उतारने लगी, तो पेत्या ने थरथराते हुए उसे पकड लिया, चीखने और छटपटाने लगा, जैसे बावर्ची की छुरी तले चूजा।

"अरे, क्या बात है? बुद्धू कही का! डरता काहे को है? उतारने दे कपडे, भैया कोई बात नही देखो तो, कैसा बुद्धू है!" धोबिन लडके की

उगलिया छुडाने की कोशिश करते हुए और साथ ही जल्दी-जल्दी उसकी पतलून क बटन खोलते हुए कहती जा रही थी।

पर लडका कुछ करने न देता था, वह न जाने क्यो बुरी तरह से डर गया था और कभी बेल की तरह बल खाता या एकदम सिमट जाता या फर्श पर लेट-लेट जाता। चीख-चीखकर उसने सारा घर सिर पर उठा लिया। आखिर कार्ल बग्दानविच का धीरज टूट गया। उसने पाइप मेज पर रखा और लडके के पास आया, इस बात की ओर जरा भी ध्यान दिए बिना कि लडका ओर भी जोर से लोटने लगा बेक्कर ने उसे जल्दी से अपनी बाहो मे भर लिया। पेत्या को पता भी न चला कब वह कलाबाज के मोटे घुटनो के बीच दब गया। कलाबाज ने पलक झपकते ही उसकी कमीज और पतलून उतार दी, फिर उसने तिनके की तरह उसे उठाया और अपने घुटनो पर लिटाकर उसकी छाती और बगलो को टटोलकर देखने लगा। जहा उसे तुरत सतोष न होता, वहा वह अगूठे से दबाता और हर बार जब लडका छटपटाता, उसे अपना काम न करने देता, तो वह उसे चपत लगा देता।

धोबिन को पेत्या पर तरस आ रहा था कार्ल बग्दानविच बहुत ही जोर से उसे दबा रहा था, पर दूसरी ओर वह कुछ कहते हुए भी डरती थी, क्योकि खुद ही लडके को यहा लाई थी और कलाबाज ने वायदा किया था कि अगर लडका ठीक निकला, तो वह उसे अपने पास रख लेगा, काम सिखाएगा। लडके के सामने खडी होकर वह जल्दी-जल्दी उसके आसू पोछ रही थी, उसे मना रही थी कि रोए नही, कि कार्ल बग्दानविच उसका कुछ नही बिगाडेगे, वह तो बस उसे देखेगे ही

लेकिन जब कलाबाज ने अचानक लडके को घुटनो के बल बिठाकर उसकी पीठ अपनी ओर कर ली, कधे पीछे को मोडने लगा और पखौरो के बीच उगलियो से चापने लगा, जब बच्चे की नगी, सूखी सी छाती पर पसली आगे को उभर आई, उसका सिर पीछे को झटक गया, पीडा एव आतक से उसकी ऊपर की सास ऊपर और नीचे की नीचे रह गई, तब वर्वारा से न रहा गया, वह उसे छुडाने को लपकी। इससे पहले कि वह ऐसा कर पाती बेक्कर ने लडके को उसके हाथो मे द दिया। पेत्या तुरत ही होश मे आ गया—बस थरथराता और हिचकिया लेता जाए।

"बस, बेटा, बस! देखा, कुछ भी तो नही किया तुझे! कार्ल बग्दानविच तो बस तुझे देखना चाहते थे " बच्चे को दुलारते-पुचकारते हुए धोबिन कहती जा रही थी।

उसने चुपके से बेक्कर की ओर देखा, बेक्कर ने सिर हिला दिया और गिलास मे बीयर भर ली।

दो दिन बाद जब लडके को बेक्कर के हवाले करने का समय आया तो धोबिन को अपनी सारी चालाकी दिखानी पडी। धोबिन ने अपने पैसो से पेत्या के लिए छीट की दो कमीजे और पीपरमेंट के प्रियानिक खरीदे, उसे बहुत सम झाया-बुझाया, लाड-प्यार किया, पर वह मानता ही न था। बेक्कर के कमरे मे बात हो रही थी, सो वह रोने से डरता था। वह अपना आसुओ से फूला मुह उसके दामन मे छिपा लेता और जैसे ही वह दरवाजे की ओर कदम बढाती कसकर उसके हाथ पकड लेता।

आखिर कलाबाज इस सबसे आजिज आ गया। उसने लडके का कालर पकडकर उसे वर्वारा के लहगे से अलग किया और जैसे ही धोबिन के पीछे दरवाजा बद हुआ, उसे अपने सामने खडा किया और कहा कि उसकी ओर देखे।

पेत्या यो थरथरा रहा था, मानो उसे तेज बुखार हो, उसका मरियल सा चेहरा सिकुड गया, उसमे दयनीय, बूढो का सा भाव आ गया।

बेक्कर ने उसकी ठोडी पकडी, मुह अपनी ओर घुमाया और फिर से अपनी ओर देखने को कहा।

"ऐ, लडका, सुन," वह बोला और पेत्या की नाक के सामने तर्जनी चमकाई, "अगर तू उधर चाहता," उसने दरवाज़े की ओर इशारा किया, "तो इधर पाता! " उसने पीठ से थोडी नीचे दिखाया। "और ज़ोर-ज़ोर से पाता।" लडके को छोडकर वह बोला और बाकी बीयर पी ली।

उसी दिन वह पेत्या को सरकस मे ले गया। वहा भाग-दौड मची हुई थी, सामान बाधा जा रहा था।

अगले दिन सरकस अपने सारे माल-असबाब, लोगो और घोडो के साथ गर्मियो भर के लिए रीगा जा रहा था।

पहले क्षणो मे तो इस सबर और नई-नई छापो से पेत्या सहमा ही, उसके

मन मे कोई कौतूहल नही जागा। वह एक कोने मे दुबक गया और जगली जानवर की तरह इधर-उधर जाते लोगो को देखने लगा, जो अजीबोगरीब चीज़े कही ले जा रहे थे। किसी-किसी की नजर अनजान लडके पर पडी, लेकिन उसकी ओर ध्यान देने की किसी को फुरसत न थी और सब पास से गुजरते जा रहे थे।

रीगा तक के दस दिनो के सफर मे पेत्या अपने हाल पर छूटा रहा। डिब्बे मे अब उसके आस-पास जो लोग थे – वे बिल्कुल अनजान न रहे थे। कइयो का वह आदी हो गया था, कई लोग हसमुख थे, हसी-ठट्ठा करते, गाने गाते थे और उसे उनसे डर नही लगता था। जोकर एड्वर्ड्स जैसे कुछ ऐसे भी थे, जो आते-जाते उसका गाल थपथपा देते। एक बार एक औरत ने उसे माल्टे की एक फाक भी दी। सक्षेप मे, यह कहिए कि वह धीरे-धीरे यहा का आदी हो रहा था और उसे यहा अच्छा भी लगता, बशर्ते कार्ल बग्दानविच की जगह कोई और उसे अपने पास रख लेता। उसका वह आदी न हो पा रहा था, उसे देखते ही पेत्या गुमसुम हो जाता, सिमट सा जाता और बस इसी फिक्र मे रहता कि कही रुलाई न फूट पडे।

जब कलाबाज ने उसे काम सिखाना शुरू-किया, तब और भी मुश्किल दिन आए। पहले प्रयोगो के बाद बेक्कर को यह विश्वास हो गया कि लडका उसने ठीक ही चुना है। पेत्या रोये सा हल्का-फुल्का था और उसके जोडो मे लचक थी, हा इन प्राकृतिक गुणो का लाभ उठाने के लिए पट्ठो मे पर्याप्त शक्ति नही थी, लेकिन यह कोई बडी बात न थी। बेक्कर को इस बात मे कतई सदेह न था कि अभ्यास से शक्ति आ जाएगी। इसका सबूत तो कुछ हद तक वह अभी ही देख रहा था। महीने भर तक वह सुबह-शाम लडके को फर्श पर बिठाकर पैरो तक सिर झुकाने का अभ्यास कराता रहा था और अब पेत्या उसकी मदद के बिना खुद ही ऐसा कर लेता था। उसके लिए पीछे मुडना और एडियो से सिर को छूना कही अधिक मुश्किल था, पर धीरे-धीरे वह यह भी सीख रहा था। वह दौडते हुए कुर्सी के ऊपर से भी बडी सफाई से कूद जाता था, लेकिन जब उस्ताद यह माग करता कि वह छलाग लगाकर पैरो पर नही बल्कि हाथो के बल गिरे और टागे हवा मे रहे, तो ऐसा वह बहुत कम

ही कर पाता था। इस असफलता या ऐसे करते हुए लगी चोट का ही दुख होता तो कोई बडी बात न थी, मुसीबत तो यह थी कि हर बार उसे बेक्कर के घूसे खाने पडते। लडके के पट्ठे पहले की ही भाति कमजोर और मूखे थे। प्रत्यक्षत उन्हे जोर लगाकर मजबूत करने की आवश्यकता थी।

बेक्कर के कमरे मे ऊपर से जुडी और नीचे से खुलनेवाली दोहरी सीढी लाई गई। उसकी पटरियो पर फर्श के समानातर कुछ ऊचाई पर एक डडा रखा गया। बेक्कर के आदेश पर पेत्या को दौडते हुए डडा पकड लेना होता और फिर हवा मे लटके रहना होता—पहले पाच मिनट, फिर दस मिनट। दिन मे कई बार उसे यह करना पडता। इस अभ्यास मे विविधता बस यही थी कि कभी तो वह यो ही हवा मे लटकता रहता और कभी उसे डडा पकडे हुए सारा धड पीछे को करना होता और टागो को डडे और सिर के बीच से निकालना होता। इस अभ्यास का अतिम लक्ष्य यह था कि लडका पैरो के पजो से डडा पकड ले और अचानक हाथ छोडकर पजो के बल लटका रहे। सबसे बडी कठिनाई यह थी कि जब पाव ऊपर होते ओर सिर नीचे, तो पेत्या के चेहरे पर मुस्कान फैली होनी चाहिए थी, ऐसा इसलिए करना आवश्यक था कि दर्शक प्रभावित हो, उन्हे किसी भी हालत मे यह आभास नही होना चाहिए था कि मास-पेशियो के तन जाने पर कितनी कठिनाई होती है, लडके के कधो के जोडो मे कितना दर्द होता हे और छाती कैसे दबी जाती है।

यह परिणाम बालक की ऐसी हृदयविदारक चीखो के साथ पाया जाता कि बेक्कर के साथी उसके कमरे मे दौडे आते और बालक को उसके हाथो से छुडाते। गाली-गलौज और झगडा होने लगता और इसके बाद पेत्या की और भी बुरी शामत आती। हा, कभी-कभी ऐसा हस्तक्षेप शातिपूर्वक समाप्त होता। एड्वर्ड्स जोकर के आने पर ऐसा होता। वह बीयर और कुछ चबैने के साथ मामला रफा-दफा करता। इसके बाद की बातचीत मे एड्वर्ड्स हर बार यह समझाने का जतन करता कि बेक्कर का सिखाने का तरीका बिल्कुल गलत है, कि मार-पीट और डरा-धमकाकर बच्चो को तो क्या, कुत्तो, बदरो को भी कुछ नही सिखाया जा सकता, कि भय से मन मे सकोच पैदा होता है और सकोच कलाबाज का सबसे बडा दुश्मन है, क्योकि तब वह अपनी शक्ति मे

विश्वास और निडरता खो वैठता है, और इनके बिना तो वस उसकी नस चढ जाएगी या वह गर्दन नही, तो रीढ की हड्डिया ही तुडवा वैठेगा।

आश्चर्य की बात थी हर बार जब बहस और बीयर से जोश मे आकर एड्वर्ड्स यह दिखाने लगता कि कोई करतब कैसे करना चाहिए तो पेत्या बडी तत्परता और फुर्ती से वह अभ्यास कर दिखाता।

सभी सरकस वाले अब वेक्कर के शागिर्द को जानते थे। बेक्कर ने उसके लिए जोकर के कपडे ले लिए थे, उसके मुह पर पाउडर पोतकर और गालो पर सुर्खी लगाकर वह उसे तमाशे मे ले जाता। कभी-कभी उसे परखने के लिए बेक्कर अचानक उसकी टागे ऊपर उठा लेता और हाथो के बल रेत पर दौडाता। पेत्या तव अपना पूरा जोर लगाता, लेकिन अक्सर कुछ दूर दौडने के बाद उसकी वाहे जवाब दे जाती और सिर रेत मे जा लगता, जिससे दर्शक ठट्ठा लगा उठते।

इसमे कोई सदेह न था कि एड्वर्ड्स से पेत्या बहुत ज्यादा सीख सकता था, वेक्कर के हाथो मे उसके लिए अपने हुनर मे आगे बढना मुश्किल हो रहा था। पेत्या पहले दिन की ही भाति अपने उस्ताद से डरता था। अब इसके साथ ही मन मे एक और भावना भी उठने लगी थी, जिसे वह समझ तो नही पाता था, लेकिन जो उसमे जोर पकडती जा रही थी, उसके विचारो और भावो पर हावी हो रही थी, जिसके कारण रात को तोशक पर लेटे हुए वह वेक्कर के खर्राटे सुन-सुनकर आसू बहाता रहता।

और बेक्कर था कि लडके को अपने साथ परचाने के लिए कुछ भी नही करता था, बिल्कुल कुछ नही। यहा तक कि जब पेत्या कोई करतब अच्छी तरह कर लेता, तो भी बेक्कर उसे प्यार का एक शब्द न कहता, वस अपने पहाड जैसे धड के ऊपर से उस पर एक नजर डाल देता कि हा ठीक है। बेक्कर को इस बात की कोई परवाह न थी कि वर्वारा धोबिन ने लडके को जो दो कमीजे दी थी वे अब चीथडे-चीथडे हो गई थी, कि लडके के नीचे पहनने के कपडे दो-दो हफ्ते तक बदले न जाते, कि उसके कानो और गर्दन पर मैल की तह जम गई थी, कि उसके बूटो ने दात वा दिए थे, उनमे पानी और कीचड भर जाता था।बेक्कर के साथी और सबसे ज्यादा एड्वर्ड्स उसे इसका उलाहना

देते थे, जवाब मे बेक्कर अधीरता से सीटी बजाता रहता और अपनी पतलून पर कोडा सटकारता रहता।

वह पेत्या को काम सिखाता जा रहा था और हर बार जरा सी भी गलती होने पर उसे सजा देता।

सरकस के पीटर्सबर्ग लौट आने के बाद की बात है। एड्वर्ड्स ने पेत्या को एक पिल्ला ले दिया। लडके की खुशी का ठिकाना न था, वह घुडसाल मे, गलियारो मे उसे लिए दौड रहा था, सबको पिल्ला दिखा रहा था, और बार-बार उसकी गीली सी, गुलाबी थूथनी चूम रहा था।

बेक्कर का तमाशा देखकर लोगो ने उसे तालिया बजाकर दुबारा नही बुलाया था और इस बात पर जला-भूना वह अदर के गलियारे मे लौट रहा था। पेत्या के हाथ मे पिल्ला देखकर उसने छीन लिया और जूते की नोक से उसे जोर से ठोकर मारी। पिल्ले का सिर दीवार से टकराया और वह वही ढेर हो गया।

पेत्या फूट-फूटकर रो पडा और उसी क्षण ड्रेसिग रूम से निकले एड्वर्ड्स की ओर लपका। आस-पास लोगो को बुरा-भला कहते सुनकर बेक्कर और भी ज्यादा खिसिया उठा, उसने झटके से पेत्या को एड्वर्ड्स के हाथो से छीना और कसकर थप्पड दे मारा।

पेत्या हल्का-फुल्का और लचकीला जरूर था, पर फिर भी वह रबड का पुतला नही, अभागा बालक ही था।

(२)

काउट लिस्तमीरव के घर मे बच्चो के कमरे दक्षिण को बाग की ओर थे। क्या शानदार जगह थी! जब आसमान पर सूरज चमकता होता तो सुबह मे शाम तक कमरो मे धूप रहती, केवल निचले भाग मे खिडकियो पर नीले पर्दे लगाए गए थे—बच्चो की आखो को तेज प्रकाश से बचाने के लिए। इसी उद्देश्य से सभी कमरो मे कालीन बिछाए गए थे—वे भी नीले रग के और दीवारो पर लगाए गए कागज अधिक उजले रगो के नही थे।

एक कमरे मे दीवार का सारा निचला भाग खिलौनो से भरा हुआ था। रग-विरगी अग्रेज़ी किताबे और कापिया, गुडिया और उनके पालने, तसवीरे, अल्मारिया, छोटी-छोटी रसोइया, चीनी मिट्टी के सेट, पहियेदार भेडे और कुत्ते – यह सब लडकियो के हिस्से मे था और लडको के हिस्से मे थे जस्ते के सिपाही, बडी-बडी आखोवाले सब्जे घोडो की त्रोइका गाडी, जिस पर घुघरू लगे हुए थे, बडा सा सफेद बकरा, घुडसवार, ढोल और पीतल का बाजा, जिसकी आवाज़ से अग्रेज मिस ब्लिक्स हमेशा झुझलाती थी। यह कमरा खिलौनो का कमरा ही कहलाता था।

मास्लेनित्सा* के दिनो मे बुधवार को कमरे मे बडे उत्साह का वातावरण था। बच्चो की खुशी भरी चीखे गूज रही थी। इसमे आश्चर्य की कोई बात न थी, इस दिन बच्चो से कहा गया था

"बच्चो, मास्लेनित्सा के शुरू से ही तुम बडे अच्छे बच्चे रहे हो, कहना मानते रहे हो। आज बुधवार है, अगर आगे भी तुम ऐसे ही रहे, तो शुक्रवार को तुम्हे सरकस ले जाएगे।"

यह बात सोन्या मौसी ने कही थी।

मौसी का यह वायदा करने की देर थी कि बच्चे हुर्रा-हुर्रा करने लगे, उछलने-कूदने लगे और भी कई तरह से अपनी खुशी दिखाने लगे। इस उमग मे पाचवर्षीय बालक पाफ ने सब को आश्चर्यचकित कर दिया। वह सदा से बडा भारी-भरकम था, पर अब कहानिया सुनकर और यह जानकर कि सरकस मे वह क्या देखेगा, वह अचानक हाथो-पैरो पर खडा हो गया और बाई टाग ऊपर उठाकर अपनी जीभ निकालकर गाल पर घुमाने लगा और कमरे मे उपस्थित लोगो को अपनी किर्गिज आखो से देखता हुआ जोकर बनने लगा।

"उठाओ इसे, उठाओ जल्दी से, नही तो इसके सिर पर खून चढ जाएगा।"

---

* फरवरी के अत और मार्च के आरम्भ मे इसाइयो के चालीसे (महा उपवास) के पहले एक हफ्ते तक मनाया जानेवाला त्योहार। इसके दौरान पूए पकाए जाते है और खेल-तमाशे होते है। – म०

फिर से होहल्ला होने लगा, पाफ के चारो ओर उछल-कूद होने लगी, जो उठना ही न चाहता था और कभी एक टाग, तो कभी दूसरी टाग उठा रहा था।

"बच्चो! बस, अब बस! लगता है, तुम अब समझदार नही बनना चाहते कहना नही मानना चाहते," सोन्या मौसी कह रही थी, जिन्हे सबसे ज्यादा उलझन इसी बात की थी कि उन्हे गुस्सा करना नही आता था।

वह इन्हे "अपने बच्चे" ही कहती थी और उन पर लट्टू थी। बच्चे सचमुच ही बडे प्यारे थे।

बडी बच्ची वेरा आठ साल की हो गई थी, उसके बाद थी छह साल की जीना और लडका, जैसा कि कहा जा चुका है पाच साल का था। उसका नाम था, पावेल, पर उसे घर पर कई तरह से पुकारा जाता रहा बेबी, लट्टू, लड्डू और अतत पाफ। अब सब उसे इस नाम से ही पुकारते थे। लडका नाटा सा, गोल-मटोल था, गोरा, गदबद बदन, गेद सा सिर और गोल चेहरा, जिस पर एकमात्र विशिष्टता थी उसकी छोटी-छोटी किर्गिज आखे, जो खाना परोसे जाने पर या खाने की चर्चा होने पर ही पूरी तरह खुलती थी।

जिस क्षण सरकस जाने का वायदा किया गया, उसी क्षण से बडी बेटी सतर्क हो गई और भाई-बहन पर पूरी तरह नजर रखने लगी। उनके बीच कोई झगडा होने ही लगता, तो वह तुरत उनके पास पहुच जाती और रोबीली मिस ब्लिक्स की ओर देखती हुई जल्दी-जल्दी जिजी और पाफ के कानो मे कुछ कहने लगती, बारी-बारी उन्हे चूमती और फिर से सुलह-शाति करा देती।

लो, इतनी अधीरता से प्रतीक्षित शुक्रवार भी आ गया। भोजन कक्ष की बडी घडी ने बारह बजाए। उसी क्षण एक चोबदार ने दरवाजे खोल लिए और मिस ब्लिक्स तथा नौकरानी के साथ बच्चो ने भोजन कक्ष मे प्रवेश किया। नाश्ता सदा की तरह बडे सलीके से किया गया।

वेरा ने जिजी और पाफ को सचेत कर दिया था, सो नाश्ता करते हुए वे बिल्कुल चुप रहे, वेरा भाई-बहन पर नजर लगाए हुए थी और उनकी हर हरकत का ख्याल रख रही थी।

नाश्ता समाप्त हो जाने पर मिस ब्लिक्स ने काउटेस को यह बताना अपना कर्त्तव्य समझा कि इन पिछले दिनो मे बच्चो का आचरण जितना अच्छा रहा

है, उतना पहले कभी नही था। काउटेस बोली कि वह दीदी से यह बात सुन चुकी है और इसलिए उन्होने कह दिया है कि आज शाम को सरकस मे एक बॉक्स ले लिया जाए।

वेरा इतनी देर से अपनी खुशियो के बाध को रोके हुए थी, यह समाचार सुनकर अब उससे न रहा गया। वह झट से कुर्सी से उतरी और इतने जोर से काउटेस के गले लगने लगी कि क्षण भर को उसके घने बालो के पीछे उनका चेहरा छिप गया।

वेरा ग्रैड पियानो के पास गई, जिस पर इश्तहार रखे हुए थे। उनमे से एक पर हाथ रखकर उसने अपनी नीली-नीली आखे मा की ओर उठाई और उतावली भरे कोमल स्वर मे पूछा

"मा ले ले? यह पर्चा ले ले?"

"ले लो।"

"जिजी! पाफ!" वेरा खुशी से चिल्लाई और इश्तहार को हिलाने लगी। "जल्दी चलो! मैं तुम्हे बताऊगी आज हम सरकस मे क्या-क्या देखेगे सब कुछ बताऊगी! चलो अपने कमरो मे चले! "

"वेरा! वेरा " काउटेस ने मीठी उलाहना के साथ कहा।

पर वेरा अब नही सुन रही थी वह उडती जा रही थी और उसके पीछे भाई-बहन। मिस ब्लिक्स हाफती हुई मुश्किल से उनके पीछे चल पा रही थी।

खिलौनो के कमरे मे धूप खिली हुई थी, अब वहा की रौनक और भी बढ गई।

नीची सी मेज को खिलौनो से खाली करके इश्तहार रखा गया।

वेरा का आग्रह था कि सभी उपस्थित लोग सोन्या मौसी और मिस ब्लिक्स, सगीत की अध्यापिका और धाय, जो अभी-अभी मुन्ने को उठाए अदर आई थी—सभी मेज के पास बैठ जाए। जिजी और पाफ को बिठाना सबसे मुश्किल था। वे एक दूसरे को धकेलते हुए कभी एक ओर, तो कभी दूसरी ओर से वेरा के पीछे पड रहे थे, स्टूल पर चढ जाते, मेज पर झुक जाते और अपनी कोहनियो से आधा इश्तहार ढक लेते। आखिर मौसी की मदद से उन्हे भी बिठा दिया गया।

वेरा ने बाल पीछे झटके, इश्तहार पर झुकी और बडे जोश से पढा
"'रबड का पुतला। पद्रह फुट ऊचे पोल पर हवाई कलाबाजी!' ओह, मौसी! यह तो आप हमे बताइये! आपको बताना ही होगा! यह कैसा पुतला है? पुतला कैसे कलाबाजी दिखाएगा?"

"यह शायद कोई लडका है, जो बहुत लचकीला है, इसलिए उसे रबड का पुतला कहते हैं तुम खुद ही देख लेना।"

"नही, नही, आप हमे बताइए न, वह पोल पर हवा मे कलाबाजी कैसे करेगा?"

"कैसे करेगा?" जिजी भी बोली।

"कैसे?" पाफ के मुह से बस इतना ही निकला।

"बच्चो, तुम तो पता नही क्या-क्या पूछने लगते हो मुझे सचमुच कुछ नही पता। आज शाम को तुम अपनी आखो से यह सब देख लोगे। वेरा, तुम आगे पढो न। आगे क्या है?"

आगे क्या था, यह वेरा ने बिना किसी विशेष उत्साह के ही पढा, इसमे किसी की रुचि न रही थी। सारी रुचि रबड के पुतले पर ही केद्रित थी, अब उसी की बाते होने लगी, अटकले लगाई जाने लगी और बहस भी होने लगी।

जिजी और पाफ आगे क्या है, यह सुनना भी नही चाहते थे, वे अपने अपने स्टूल से उतर गए और शोर मचाते हुए खेलने लगे। वे यह कल्पना कर रहे थे कि रबड का पुतला क्या तमाशा दिखाएगा। पाफ फिर से हाथो पैरो पर खडा हो गया, जोकर की तरह बाई टाग ऊपर उठाकर और जीभ को गाल तक ले जाते हुए वह सबको अपनी किर्गिज आखो से देखता। हर बार जब वह ऐसा करता तो सोन्या मौसी आह भरती उन्हे डर था कि कही उसके सिर पर खून न चढ जाए।

जल्दी-जल्दी इश्तहार पढकर वेरा भी भाई-बहन के साथ खेलने लगी।

खिलौनो के कमरे मे पहले कभी भी ऐसा आनद का वातावरण न बना था। बाग के पीछे मकानो की छतो पर झुकते सूरज की किरणे भी हर्षोल्लास से भरपूर, लाल-लाल गालो वाले बच्चो के साथ खेल रही थी, कमरे मे बिखरे रग-बिरगे खिलौनो को चमका रही थी, कालीन पर फैल रही थी, सारे

कमरे को गुलाबी धूप मे भर रही थी। यहा खुशियो और उमगो का राज प्रतीत होता था।

खाना खाते हुए बच्चे यही पूछते रहे कि मौसम कैसा है और कितने बजे है। मौन्या मौसी व्यर्थ ही यह जतन करती रही कि बच्चो के विचारो को दूसरी दिशा मे मोडे और उन्हे कुछ ज्ञान करा पाए। खाने के बाद मौसी बच्चो के कमरे मे लौटी, उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। वह बोली काउट और काउटेस ने बच्चो को कपडे पहनाने और सरकस ले जाने को कहा है।

कमरे मे तूफान मच गया। अब यह धमकी देनी पडी कि जो कहना नही मानेगा, ठीक से कपडे नही पहनाने देगा उसे घर पर छोड जाएगे। थोडी देर म बच्चो को बडी सीढी पर ले जाया गया। वहा फिर से ध्यान से देखा गया, कपडे ठीक किए गए और अतत दरवाजे से बाहर निकाला गया। वहा चार सीटोवाली बद स्लेज गाडी घोडो मे जुती खडी थी। वह चारो ओर हिम से घिरी थी।

गाडी के दरवाजे बद हुए, चोबदार उछलकर कोच-बॉक्स पर बैठ गया और वे चल दिए।

(३)

सरकस का शो अभी शुरू नही हुआ था। सरकस ठसाठस भरा हुआ था, खास तौर पर ऊपर की कतारो मे खूब भीड थी। बडे लोग हमेशा की तरह देर से आ रहे थे। बैड बज रहा था। सरकस के गोल रिंग पर अगल-बगल और ऊपर से तेज रोशनी पड रही थी। पाचो से उसे सपाट कर दिया गया था और वह अभी खाली था।

सहसा बैड की धुन तेज हो गई। अस्तबल की ओर का पर्दा खुला और उधर से डोरियो वाली लाल वार्दिया तथा ऊचे चमकीले बूट पहने कोई बीस लोग आए। उनके सिरो पर बालो की कुडले बनी हुई थी और क्रीम से चमक रही थी।

सरकस मे ऊपर से नीचे तक प्रशसा भरी फुसफुसाहट दौड गई। तमाशा शुरू हो रहा था। अभी ये वर्दीधारी मदा की तरह दो-दो की कतार बना भी न पाए थे कि अस्तबल की ओर से खिलखिलाहट और ची-ची करके हसने की जोरदार आवाज आई, जोकरो का झुड का झुड लोटता-पोटता, हाथो पर कूदता, हवा मे उछलता रिग पर आ पहुचा।

सबसे आगे जो जोकर था उसके कोट की छाती और पीठ पर बहुत बडी तितली बनी हुई थी। दर्शक अपने प्यारे जोकर एड्वर्ड्स को पहचान गए।

' हुर्रा, एड्वर्ड्स, हुर्रा।" चारो ओर से आवाजे आई।

परतु इस बार एड्वर्ड्स ने दर्शको की आशा के अनुसार रग नही जमाया। उसने कोई खास करतब नही दिखाया, एक-दो बार सिर के बल कलाबाजिया खाई, फिर नाक पर मोर का पख सभालते हुए रिग का चक्कर लगाया और जल्दी से चला गया। दर्शको ने बहुत तालिया बजाई, आवाजे लगाई, पर वह फिर से रिग पर नही आया।

उसके स्थान पर जल्दी-जल्दी एक मोटा सफेद घोडा लाया गया और पद्रह वर्ष की सुदर युवती अमालिया ने चारो ओर झुकते हुए आदाब बजाया।

अमालिया के बाद बाजीगर आया, बाजीगर के बाद सधे हुए कुत्तो के साथ जोकर, उसके बाद रस्से पर नाच हुआ, फिर घोडे, बिना काठी के घुडसवारी हुई, फिर दो घोडो पर काठी के साथ – सक्षेप मे यह कि इटरवल तक तमाशा अपने क्रम से चलता रहा।

"मौसी, प्यारी मौसी, अब रबड का पुतला होगा न?" वेरा ने पूछा।

"हा, इश्तहार मे लिखा है कि वह इटरवल के बाद होगा। तो बच्चो, कैसा लग रहा है? मजा आ रहा है?"

"ओह, बडा मजा आ रहा है! बडा!" वेरा ने खुशी से चहचहाते हुए कहा।

"जिजी, तुम्हे? पाफ, तुम्हे मजा आ रहा है?"

"यहा ठा-ठा होगी?" जिजी ने पूछा।

"अरे नही, बेटा, घबराओ नही। कह दिया न, नही होगी।'

पाफ से कुछ कहलवाना असम्भव था। इटरवल के शुरू से ही उसका

सारा ध्यान फेरीवाले पर लगा हुआ था, जो सेव और मिठाइया वेच रहा था।

फिर से वैड वजने लगा, फिर से लाल वर्दी वाले दो कतारो मे खडे हुए। सरकस का दूसरा भाग आरम्भ हुआ।

"रवड का पुतला कव आएगा?" हर बार जव एक के वाद दूसरा तमाशबीन आता, तो वच्चे पूछते। "कव आएगा?"

"अभी "

सचमुच ही वह आ गया। वाल्स नृत्य की धुन के साथ पर्दा खुला और भीमकाय कलावाज वेक्कर दुवले-पतले सुनहरी वालो वाले लडके की उगली पकडे प्रकट हुआ। दोनो वदन से सटी, त्वचा के रग की पोशाक पहने थे, जिस पर सलमे-सितारे चमक रहे थे। उनके पीछे-पीछे दो नौकर लवा सुनहरी पोल लाए, जिसके एक सिरे पर लोहे की आडी छड लगी हुई थी।

रिग के बीचोबीच पहुचकर वेक्कर और लडके ने चारो ओर भुककर सलाम किया, फिर वेक्कर ने लडके की पीठ पर दाया हाथ रखकर उसे तीन वार हवा मे घुमाया। पर यह तो केवल शुरुआत ही थी। फिर से उन्होने भुककर सलाम किया, बेक्कर ने पोल उठा लिया, उसका मोटा सिरा पेट पर वधी सुनहरी पेटी पर टिकाया, और उमके दूसरे सिरे को सतुलित करने लगा, जो सरकस के गुम्वद को छूता लगता था। इस तरह पोल को सतुलित करके कलावाज ने लडके से फुसफुसाकर कुछ कहा और वह पहले उसके कधो पर चढा और फिर धीरे-धीरे पोल पर चढने लगा। लडके की हर गति से पोल हिलने लगता और वेक्कर पैर वदलता हुआ उसे सतुलित करता।

जव लड़के ने पोल के ऊपर चढकर दर्शको को हवाई चुम्वन भेजा तो सरकस तालियो की गडगडाहट से गूज उठा। फिर से सन्नाटा छा गया, वस वैड ही वाल्स की धुन बजाता जा रहा था। इस बीच लडका लोहे की छड पकडकर सीधा हो गया और फिर हौले-हौले पीछे को हटते हुए अपने सिर और छड के बीच से टागे निकालने लगा, पल भर को उसके नीचे को लटकते सुनहरी वाल और धौकनी की तरह चलती छाती ही दिखी, जो सलमे-सितारो से चमक रही थी। पोल एक ओर मे दूसरी ओर को हिल रहा था और यह प्रत्यक्षत देखा जा सकता था कि वेक्कर के लिए उमे सतुलित रखना कितना कठिन है।

"वाह! वाह! शावाश!" फिर से हाल गूज उठा।

"वस! वस!" दो-तीन जगहो से आवाजे आई।

लेकिन जब लडका फिर से आडी छड पर वैठा दिखा और वहा से उसने हवाई चुम्वन भेजा, तो हाल मे तालिया गडगडा उठी। वेक्कर एकटक लडके को देखे जा रहा था, उसने फुसफुसाकर कुछ कहा। लडका धीरे धीरे दूसरा करतव दिखाने लगा। हाथो से छड पकडे हुए वह सावधानी से टागे नीचे करने और पीठ के वल लेटने लगा। अब उसे सबसे मुश्किल काम करना था उसे पीठ के वल लेटकर छड पर इस तरह टिकना था कि सिर और टागो मे सतुलन आ जाए और फिर सहसा पीठ पर पीछे को सरक जाना था, छड को घुटनो के नीचे से ही पकडे रहना था।

सब ठीक-ठाक चल रहा था। हा पोल काफी जोर से हिल रहा था, पर रवड का पुतला आधा रास्ता तय कर चुका था, वह नीचे ही नीचे झुकता जा रहा था और पीठ पर सरक रहा था।

"वस! वस! वहुत हो गया!" कुछ जोरदार आवाजे आई।

लडके की पीठ सरकती जा रही थी और वह धीरे-धीरे सिर के वल नीचे झुकता जा रहा था

अचानक एक चमक हुई, हवा मे वल खाता हुआ कुछ घूम गया, उसी क्षण रिग पर कुछ गिरने की धम्म सी आवाज आई।

पलक झपकते ही हाल मे तहलका मच गया। कुछ लोग शोर मचाने लगे, चीखने की आवाजे आई, डाक्टर की पुकार सुनाई दी। रिग पर भी भाग दौड मची हुई थी, नौकरो और जोकरो ने जल्दी-जल्दी अदर आकर वेक्कर को घेर लिया। कुछ लोगो ने कुछ उठाया और नीचे को झुकते हुए जल्दी से पर्दे की ओर ले गए, जिसके पीछे अस्तवल का दरवाजा था, रिग पर वस सुनहरा पोल रह गया, जिसके एक ओर लोहे की आडी छड लगी हुई थी। मिनट भर को थम गए वैड को इशारा किया गया और वह फिर से बजने लगा। चीं चीं करते, कलावाजिया खाते कुछ जोकर रिग पर आए, लेकिन उनकी ओर किसी ने ध्यान नही दिया। लोग बाहर निकल रहे थे।

इस सव भाग-दौड और शोर-शराबे मे भी कई लोगो का ध्यान नीली

टोपी पहने सुनहरी बालो वाली प्यारी सी लडकी की ओर गया , काली पोशाक पहने स्त्री के गले मे बाहे डाले वह दहाडे मारकर रो रही थी और जोर-जोर से चिल्ला रही थी

"हाय , लडका ! लडका !"

अगले दिन सुबह सरकस के इश्तहार मे "रबड के पुतले" के करतबो का ज़िक्र न था। बाद मे भी उसका नाम इश्तहारो मे नही आया। आ भी कैसे सकता था रबड का पुतला इस दुनिया मे नही रहा था।

कोन्स्तन्तीन स्तन्युकोविच

मक्सीम्का
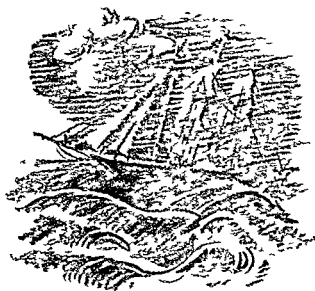
मक्सीम्का कहानी (१८६६) की घटनाए रूस के असीम मैदानो या पहाडो मे नही बल्कि उष्णकटिबंधीय महासागर के नीले विस्तार मे सैनिक जलपोत पर घटती हैं। कहानी कोन्स्तन्तीन मिखाइलोविच स्तन्युकोविच (१८४३—१६०३) ने लिखी है, जो मल्लाहो के जीवन के बारे मे कहानियो के लिए प्रसिद्ध है। उनकी 'समुद्री कहानियो' और चील पोत पर ससार की यात्रा पुस्तक को बाल साहित्य मे स्थान प्राप्त है।

ग्यारह वर्ष की आयु मे कोन्स्तन्तीन को उनके एडमिरल पिता ने पीटर्सबर्ग क नेवी कैडट कोर मे भरती कराया। सत्रह वर्ष की आयु मे भावी लेखक 'कलेवाला' युद्ध पोत पर ससार की परिक्रमा पर निकला, जो तीन साल मे पूरी हुई। बाईस वर्ष की आयु मे नौसेना की सेवा छोडकर स्तन्युकोविच ने पहले एक ग्रामीण विद्यालय मे शिक्षक का काम किया और फिर पत्रकारिता के क्षेत्र मे उतरे। क्रातिकारियो के साथ सम्पर्क के आराप मे उन्हे साइबेरिया निवासित किया गया। यहा साइबेरिया मे उन्होंने समुद्री जीवन पर कहानिया लिखनी शुरू की, जिनसे उन्हे ख्याति मिली।

स्तन्युकोविच की पुस्तको पर उनके बचपन की यादो की अमिट छाप है। बचपन मे वह सेवास्तोपल किले मे रहते थे, जहा उनके पिता फौजी गवर्नर थे। उन्हे यहा रूसी सैनिको और मल्लाहो की वीरता साहस और उच्च मानवीयता के अनक उदाहरण देखने को मिले। साथ ही वह यह भी देखते थे कि उन्हे कोई अधिकार प्राप्त नही हैं, व अपने कमाडरो और अफसरो की मनमर्जी पर पूरी तरह निर्भर है और उन्हे उनसे कितने अपमान सहने पडते है। अपनी कहानियो मे स्तन्युकोविच ने भूदासता के प्रति अपना आक्रोशपूर्ण विरोध व्यक्त किया है। अपनी किशोरावस्था मे उन्होंने आम लोगो की यह गुलामी देखी थी। उनकी कहानियो का उज्ज्वल पक्ष है रूसी मल्लाहो की मानवीयता और उदारहृदयता, उनकी भाईचारे की भावना, बच्चो के प्रति उनका प्रेम तथा कोई भी भाषा बोलनेवाले, चमडी के किसी भी रग के लोगो की सहायता करने की उनकी तत्परता।

(१)

अभी-अभी घटा बजा था। अटलांटिक महासागर के उष्णकटिबंध में सुहावनी सुबह के छह बजे थे।

क्षितिज से असीम ऊंचाइयो को उठते आकाश का रंग कोमल, पारदर्शी सा फिरोजी था। कही-कही ही हिमश्वेत लेस जैसे छोटे-छोटे तीतर पखी बादल छाए हुए थे। स्वर्णिम सूर्य तेजी से चढ रहा था। महासागर की लहरदार जलराशि पर वह हर्षमय आलोक बरसा रहा था। क्षितिज की नीली रेखा महासागर की अनत दूरी को सीमाबद्ध कर रही थी।

चारो ओर एक भव्य निस्तब्धता छाई हुई थी।

बस सशक्त उजली-नीली लहरे धूप मे अपने रुपहले शृग चमचमाती और एक दूसरी से टकराती मधुर गुजन करती प्रतीत होती थी। और यह गुजन मानो कहता था कि इन अक्षातरो मे यह चिरकालीन महासागर सदा उदार होता है। स्नेही पिता के समान वह अपने विशाल वक्ष पर जलपोतो

को सभाले हुए बहाता है और उन्हे तूफानो का कोई डर नही होता।

चारो ओर शून्यता का राज था।

न कही कोई सफेद पाल झिलमिला रहा था, न ही कही क्षितिज से उठता धुआ दिख रहा था। महासागर का मार्ग यहा एकदम खुला था।

विरले ही कभी कोई उडती मछली धूप मे चमचमा उठती, जलक्रीडा करती व्हेल की काली पीठ दिखती और वह जोर से पानी का फव्वारा छोडती, आकाश मे काला सा फ्रिगेट या हिमधवल एल्बाट्रोस उडते जाते, जल के पास ही छोटा सा, सुरमई समुद्रकाक उडता दिखता। वे अफ्रीका या अमरीका के सुदूर तटो को जा रहे होते। और फिर से चारो ओर शून्य विस्तार होता। फिर वही गरजता महासागर और सूर्य एव आकाश – उजले, स्नेहिल, मृदुल।

महासागर की तरगो पर डोलता हुआ वाष्पचालित रूसी क्लिपर युद्धपोत 'लडाकू' तेजी से दक्षिण की ओर बढ रहा था और उत्तर से निरतर दूर ही दूर होता जा रहा था, उस उत्तर से जहा धुध थी, ठड थी, पर फिर भी वह इतना प्रिय था।

'लडाकू' पोत बहुत बडा तो न था, वह बिल्कुल काला था और उसकी बनावट सुघड, सुदर थी। थोडा पीछे को झुके, ऊचे मस्तूलो पर ऊपर से नीचे तक पाल लगे हुए थे, निरतर एक ही दिशा मे प्राय एक ही गति से बह रही उत्तर-पूर्वी हवा पालो को फुला रही थी और वह घटे मे सात आठ समुद्री मील पार करता बढता चला जा रहा था, हवा की ओर वाला बगल थोडा झुका हुआ था। 'लडाकू' सहज ही एक लहर से दूसरी पर चढता हुआ हल्के शोर के साथ अपने पनकट से उनको काटता जा रहा था। पनकट के पास पानी मे झाग उठ रही थी और बूदे हीरो सी चमक रही थी। लहरे उसके बगलो को चूम रही थी। दबूसे के पीछे चौडी रुपहली पट्टी छूट रही थी।

डेक पर और नीचे झडा फहराने से पहले यानी आठ बजे से पहले की आम सफाई हो रही थी। आठ बजे ही युद्धपोत पर दिन शुरू होता था।

चौडे नीले कालरो वाली सफेद कमीजे पहने मल्लाह डेक को, जहाज के पहलुओ, तोपो और ताबे को घिस-घिसकर, रगड-रगडकर साफ कर रहे थे। उनकी धूप मे सवलाई गरदने दिख रही थी, पतलूने घुटनो तक चढी हुई

थी और वे नगे पैर थे। वे उसी तरह बडी लगन और ध्यान से अपने जहाज को चमका रहे थे, जैसा कि सदा युद्धपोतो पर होता है, जहा मस्तूलो के शिखरो से लेकर खाव तक गजब की सफाई होनी चाहिए और जहा हर हिस्सा जिसे ईट या चीथडे से घिसा-रगडा जा सकता है, चमचमाना चाहिए।

मल्लाह बडी लगन और जतन से काम कर रहे थे। मल्लाहो का मेट, पुराना नाविक, मत्वेइच जिसका चेहरा धूप से और तट पर चलनेवाले शराब के दौरो से लाल-सुर्ख था, सफाई के दौरान बीच-बीच मे ऐसी करारी और लबी-चौडी गाली देता कि इनके आदी रूसी नाविक भी दग रह जाते। मत्वेइच किसी को डाटने-डपटने के लिए नही, बल्कि जैसा कि वह खुद कहता था "कायदे के लिए" ही ऐसा करता था।

लेकिन कोई उसकी इन गालियो का बुरा नही मानता था। सब जानते थे कि वह भला आदमी है, खामखाह किसी को तग नही करता, अपनी सत्ता का दुरुपयोग नही करता। सब इस बात के आदी हो चुके थे कि वह दो शब्द भी गाली के बिना नही कह सकता था। और आश्चर्य एव प्रशसा के साथ यह देखते थे कि वह एक ही गाली कितनी तरह से घुमा-फिराकर देता है। इस मामले मे उसका कोई सानी न था।

कभी-कभी मल्लाह डेक के अग्रभाग मे जाते, जहा पानी का ड्रम रखा था और एक डिब्बे मे सुलगती रस्सी, ताकि जल्दी-जल्दी तेज तबाकू का पाइप पी ले, दो बाते कर ले। और फिर से सफाई मे जुट जाते, तोपे चमकाने लगते, जहाज के बगल धोते। सुबह-तडके से ही बडा अफसर जहाज़ पर इधर-उधर चक्कर लगा रहा था, भाक रहा था। ऊचे कद के, दुबले से अफसर को पास आता देखकर मल्लाह और भी जतन से अपना काम करते।

सुबह चार बजे से सुनहरी बालो वाला जवान अफसर ड्यूटी पर था। पहरे के पहले आधे घटे का आलस वह कब का दूर कर चुका था। वह एकदम सफेद कपडे पहने था, कमीज के बटन खुले हुए थे। जहाज के चबूतरे पर चक्कर लगाता हुआ वह ताज़ी हवा मे गहरी सासे ले रहा था। हवा अभी धूप से तपी न थी। कभी-कभी रुक जाता और कुतुबनुमा देखता कि कर्णधार पतवार ठीक चला रहे है या नही, या पालो पर दृष्टि डालता कि वे ठीक फूले हुए हैं या नही,

या क्षितिज की ओर नजर दौडाता – कही तूफानी बादल तो नही दिख रहा। ऐसे क्षणो मे गुद्दी का कोमल स्पर्श करती हवा जवान लेफ्टिनेट को बहुत भाती सब ठीक-ठाक था, और लेफ्टिनेट के लिए ड्यूटी पर करने को कुछ नही था।

और वह फिर से चबूतरा नापने लगता और बहुत जल्दी ही उस क्षण का सपना देखने लगता, जब ड्यूटी खत्म होगी और वह जाकर ताजे, नरम-नरम बदो के साथ एक-दो गिलास चाय पिएगा। अफसरो का बावर्ची बद बडे अच्छे बनाता था, हा, अगर मैदे मे खमीर लाने के लिए जो वोद्का वह डालता था, उसे अपने हलक मे नही उतार लेता था, तब।

(२)

अचानक डेक पर प्रहरी की, जो गलही पर बैठा आगे देख रहा था, बहुत ही जोर की और व्यथित चीख गूजी।

"समुद्र मे आदमी है!'

मल्लाहो ने तुरत अपना काम छोड दिया, आश्चर्यचकित और उद्विग्न से वे दाडे-दौडे डेक के अग्रभाग पर गए और समुद्र पर नजरे लगा दी।

"कहा है? कहा है?" चारो ओर से प्रहरी से पूछा जा रहा था। वह हल्के पयाल के रग के बालो वाला जवान मल्लाह था, उसका चेहरा कागज सा सफेद पड गया था।

"वहा" कापते हाथ से उसने इशारा किया। "अब दिखाई नही दे रहा। अभी-अभी मैंने देखा था मस्तूल पर था शायद बधा हुआ है," उत्तेजित स्वर मे मल्लाह कह रहा था और नजरो से उस आदमी को ढूढने की कोशिश कर रहा था, जिसे उसने अभी-अभी देखा था।

ड्यूटी पर खडा लेफ्टिनेट प्रहरी की चीख से ठिठक गया, और बाइनोकुलर मे आखे गाडकर उसे जहाज के आगे के विस्तार मे घुमाने लगा।

सिग्नलमैन भी दूरबीन मे उधर ही देख रहा था।

दिखा?" लेफ्टिनेट ने पूछा।

"जी, सा'ब   थोडा वाए घुमाइए   "

पर उसी क्षण अफसर ने भी लहरो के बीच मस्तूल का टुकडा और उस पर मानव आकृति देख ली।

और कापती आवाज मे जल्दी-जल्दी, अपने स्वस्थ फेफडो का पूरा जोर लगाकर वह चीखा

"ऊपर आने की सीटी दो! अगला और वडा पाल उतारो! नाव तैयार करो!"

सिग्नलमैन की ओर मुडकर उत्तेजित स्वर मे कहा

"खोना नही उसे अपनी नजरो से!"

"सब ऊपर चल!" सीटी वजाने के बाद मल्लाहो का मेट अपनी फटी सी, भारी आवाज मे चिल्लाया।

मल्लाह बावलो से अपनी-अपनी जगह दौडे।

कप्तान और बडा अफसर दौडते हुए चबूतरे पर चढ रहे थे। उनींदे अफसर चलते-चलते ही वर्दी के कोट पहनते हुए सीढिया चढकर डेक पर आ रहे थे।

जैसा कि सबको ऊपर आने के हुक्म पर सदा होता है, बडे अफसर ने कमान सभाली। उसके मुह से जोर-जोर से आदेश निकलते और मल्लाह तत्क्षण उन्हे पूरा करने मे जुट जाते। उनके हाथ मशीनो की तरह चल रहे थे। हर कोई मानो यह समझता था कि एक-एक पल कितना कीमती है।

सात मिनट भी न वीते थे कि दो-तीन पाल छोडकर वाकी सब उतार दिए गए, जहाज खडा हो गया, थिर सा समुद्र मे डोलने लगा, और सोलह खेवैयो के साथ नाव भी पानी मे उतार दी गई। उसकी पतवार एक अफसर ने सभाल रखी थी।

"जाओ, भगवान तुम्हारा साथ दे!" जहाज़ से अलग हुई नाव की ओर चिल्लाकर कप्तान ने कहा।

आदमी को बचाने की जल्दी मे खेवैये पूरा जोर लगाकर नाव खेने लगे।

पर इन सात मिनटो मे, जो जहाज को रोकने मे लगे वह कोई मील भर दूर निकल गया था और मस्तूल का टुकडा वाइनोकुलर मे भी नही दिख रहा था।

पर कुतुबनुमे से वह दिशा देख ली गई थी, जिधर आदमी था और नाव उस ओर बढती जा रही थी।

'लडाकू' पोत के सभी मल्लाहो की नजरे नाव पर लगी हुई थी। महासागर की लहरो पर चढती-उतरती नाव एक तुच्छ सा टुकडा लगती थी।

शीघ्र ही वह भी एक छोटा सा काला धब्बा लगने लगी।

(३)

डेक पर ख़ामोशी छाई हुई थी।

क्वार्टर डेक पर भीड लगाए खडे मल्लाह बस कभी-कभार दबी दबी आवाज मे कुछ कह देते थे।

"किसी डूब गए जहाज का मल्लाह होगा।"

"यहा पर जहाज डूबना तो मुश्किल है। हा, अगर बिल्कुल ही बेकार जहाज रहा हो "

"नही, रात को किसी दूसरे जहाज से टकरा गया होगा।"

"या शायद जल गया हो।"

"एक ही आदमी बचा है बस!"

"शायद दूसरे नावो पर हो, इसे भूल गए हो "

"पता नही जिदा है कि नही।"

"पानी तो गरम है। शायद जिदा ही हो।"

"कैसे इसे शार्क मछली नही खा गई। यहा तो कितनी है ये शार्के!"

"हा भाइयो! यह जहाज की नौकरी बडी ख़तरनाक है। ओफ, कितनी ख़तरनाक!" उसास भरते हुए बिल्कुल जवान से मल्लाह ने कहा। वह नौसेना मे पहले साल ही था और सीधा विश्व परिक्रमा कर रहे जहाज पर लग गया था।

उसके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। टोपी उतारकर उसने सलीब का निशान बनाया, मानो भगवान से प्रार्थना कर रहा हो कि उसे समुद्र मे ऐसी भयानक मौत से बचा ले।

व्यग्रता भरी प्रतीक्षा मे कोई पौना घटा बीता।

आखिर सिग्नलमैन, जो सारे वक्त दूरबीन पर आखे गडाए हुए था, खुशी से चिल्लाया

"नाव वापिस चल दी!"

जब वह पास आने लगी, तो बडे अफसर ने सिग्नलमैन से पूछा

"वह आदमी है नाव पर?"

"दिख नही रहा, सा'ब!" उसने जवाब दिया। अब उसकी आवाज इतनी खुश न थी।

"लगता है मिला नही!" कप्तान के पास जाते हुए बडे अफसर ने कहा।

'लडाकू' पोत का कमाडर अधेड उम्र का नाटे कद का, मजबूत काठी का आदमी था। उसके मासल गालो और ठोडी पर घने काले बाल थे, जो अब सफेद होने लगे थे। आखे उसकी छोटी-छोटी थी, बाज जैसी और वैसी ही तीक्ष्ण दृष्टि थी उसकी। उसने कधा विचकाया, प्रत्यक्षत अपनी झुझलाहट छिपाते हुए, और बोला

"नही। नाव पर अच्छा अफसर है, अगर आदमी न मिलता, तो वह इतनी जल्दी न लौटता!"

"पर वह नाव पर दिख तो नही रहा।"

"हो सकता है, नीचे लेटा हो, इसीलिए दिख नही रहा खैर, अभी पता चल जाएगा।"

और कप्तान चबूतरे पर चक्कर काटने लगा। रह-रहकर वह रुक जाता और पास आ रही नाव पर नजर डालता। आखिर उसने बाइनोकुलर मे देखा, बचाया हुआ आदमी तो उसे नजर नही आया, लेकिन गलही पर बैठे अफसर के शात, प्रसन्न चेहरे को देखकर वह समझ गया कि उन्होने आदमी को बचा लिया है।

कप्तान के खिन्न चेहरे पर सतोष की मुस्कान फैल गई।

और कुछ मिनट बीतने पर नाव जहाज के पास आ गई और लोगो समेत उसे जहाज पर चढा लिया गया।

अफसर के पीछे-पीछे खेवैये उसमे से निकलने लगे। उनके चेहरे लाल

पड गए थे, पसीने से वे तर-ब-तर थे और हाफ रहे थे। एक खेवैये का महारा लेकर वह आदमी भी डेक पर उतरा, जिसे बचाया गया था। वह दस-ग्यारह साल का नीग्रो लडका था। फटी हुई कमीज पहने था, जो उसके दुबले, सूखे, काले, चमचमाते शरीर का थोडा सा हिस्सा ही ढके हुए थी। वह बुरी तरह से भीग गया था।

लडका मुश्किल से खडा हो पा रहा था, बुरी तरह से काप रहा था, उसकी बडी-बडी धसी हुई आखो मे अपार हर्ष था और साथ ही विस्मय भी, मानो उसे विश्वास न हो रहा हो कि बच गया।

"बिल्कुल अधमरे को मस्तूल से उतारा। बडी मुश्किल से बेचारे को होश मे लाए है," अफसर कप्तान को रिपोर्ट दे रहा था।

"जल्दी से इसे रोगी कक्ष मे ले जाओ!" कप्तान ने आदेश दिया।

लडके को तत्क्षण रोगी कक्ष मे ले जाया गया, उसका शरीर पोछ कर सुखाया गया, बिस्तर मे लिटाकर उसे कबल ओढा दिए और डाक्टर उसकी टहल करने लगा। उसके मुह मे ब्राडी की कुछ बूदे डालने लगा।

लडका हौले से ब्राडी निगल गया। आखो से ही मिन्नत करता हुआ वह डाक्टर की ओर देख रहा था, मुह की ओर इशारा कर रहा था।

ऊपर पाल चढाए जाने लगे और पाच मिनट बाद ही 'लडाकू' पोत अपने पहले वाले मार्ग पर बढ चला। मल्लाह भी अपना बीच मे छूट गया काम पूरा करने लगे।

"हब्शी छोकरे को बचा लिया!" चारो ओर मल्लाह खुशी खुशी कह रहे थे।

"कैसा दुबला-पतला सा है!"

कुछ लोग रोगी कक्ष मे जा रहे थे, यह पता लगाने कि लडके का क्या हुआ।

"डाक्टर इलाज कर रहा है। देखो, शायद बचा ले!"

घटे भर बाद कोर्शुनव नाम का मल्लाह यह खबर लाया कि हब्शी लडका गहरी नीद सो रहा है, डाक्टर ने उसे गरम-गरम सूप के कुछ चम्मच दिए और वह सो गया

"अरे भाइयो, छोकरे के लिए डाक्टर ने ऐसा सूप बनवाया, कुछ भी नही डाला उसमे, बस सिर्फ गोश्त का उबला पानी ही समझो," कोर्शुनव बडे जोश से कहे जा रहा था। वह इस बात पर खुश था कि मशहूर गप्पी होने के बावजूद इस वक्त सब उसकी बातो पर विश्वास कर रहे है और इस बात पर भी कि वह इस वक्त झूठ नहीं बोल रहा और सब ध्यान से उसकी बाते सुन रहे है।

और मानो इस मौके का फायदा उठाते हुए वह कहे जा रहा था

"वो छोटा डाक्टर कह रहा था कि जब छोकरे को खाना खिला रहे थे, तो वह कुछ गिटपिट कर रहा था, मतबल कह रहा था 'और दो, वो सूप' वह तो डाक्टर के हाथ से प्याला ही छीन रहा था पर ज्यादा नही दिया, एकदम ज्यादा खा लेगा, तो मर जाएगा।"

"तो छोकरे ने क्या किया?"

"कुछ नही, मान गया।"

उसी समय पानी के ड्रम के पास कप्तान का अरदली सोइकिन आया और उसने कप्तान के सिगार का टुर्रा सुलगाया। सबका ध्यान अरदली की ओर गया, किसी ने पूछा

"अरे सोइकिन, कुछ सुना, हब्शी छोकरे का बाद मे क्या करेगे?"

लाल बालो वाला सोइकिन खूब बन-ठन कर रहता था। वह अपने निजी कपडे की बनी मल्लाहो की वर्दी की पतली कमीज और किरमिच के जूते पहने था। बडी शान से उसने सिगार का कश भरा और ऐसे अदाज मे मानो वह बहुत कुछ जानता हो, बोला

"करेगे क्या? गूड केप पर छोड देगे, जब जहाज वहा पहुचेगा तो।"

केप ऑफ गुड होप को वह गूड केप कहता था।

थोडी देर तक वह चुप रहा और फिर रोब सा दिखाता हुआ, कुछ घिन के से भाव के साथ बोला

"और करना भी क्या है, काले हब्शी का? न कोई धरम इनका, न जात। एकदम जगली है।"

"जगली हो, चाहे कुछ हो, हे तो सब खुदा के बदे कुछ रहम होना चाहिए!" बूढे बढई जखारिच ने कहा।

तवाकू पीने को जमा हुए मल्लाहो को जमाग्चि की बात अच्छी लगी थी।

"और वहा से छोकरा अपने घर कैसे पहुचेगा? उसके भी तो मा-बाप होगे।" किसी ने कहा।

"गूड केप मे इन हब्शियो की भरमार है। अपने आप पता लगा लेगे, कहा से है," सोइकिन ने जवाब दिया और टुर्रा पीकर चलता बना।

"बडा बनता फिरता है, अरदलिया!" बूढे बढई ने गुस्से से उसके पीछे चिल्लाकर कहा।

(४)

अगले दिन नीग्रो बालक अभी कमजोर ही था, पर हा सदमे के बाद वह इतना ठीक हो गया था कि मोटे, अधेड डाक्टर ने खुलकर मुस्कराते हुए लडके का गाल थपथपाया और उसे प्याला भरकर शोरबा दिया। वह देख रहा था कि बालक कैसे जल्दी-जल्दी शोरबा निगल रहा है। अपनी बडी-बडी काली आखो से, जिनकी सफेदी पर तारे चमक रहे थे, कृतज्ञतापूर्वक डाक्टर की ओर देख रहा था।

इसके बाद डाक्टर ने यह जानना चाहा कि लडका कैसे समुद्र मे गिरा, कितनी देर भूखा रहा। लेकिन रोगी के साथ बातचीत करना असम्भव सिद्ध हुआ, बावजूद इसके कि डाक्टर खूब अच्छी तरह इशारो से अपनी बात समझा रहा था। नीग्रो बालक को प्रत्यक्षत डाक्टर से ज्यादा अग्रेजी आती थी लेकिन डाक्टर की ही भाति वह भी जो थोडे बहुत शब्द जानता था, उन्हे तोड-मरोडकर बोलता था।

वे एक दूसरे की बात नही समझ रहे थे।

तब डाक्टर ने अपने सहायक को जवान वारट अफसर को बुलाने भेजा, जिसे अफसरो के कमरे मे सब 'पेत्या' कहकर बुलाते थे।

"पेत्या, आप तो अग्रेजी अच्छी बोल लेते है, जरा इससे बात तो कीजिए, मेरे से नही हो पा रही," डाक्टर ने हसते हुए कहा। "और इसे यह भी कह दीजिए कि तीन दिन मे मैं इसे छुट्टी दे दूगा।"

वारट अफसर खाट के पास बैठकर वालक से सवाल पूछने लगा। वह छोटे-छोटे वाक्य बोल रहा था और वे भी धीरे-धीरे, बिल्कुल स्पष्टत। नन्हा नीग्रो शायद उसकी सारी बात तो नही, पर काफी कुछ समझ रहा था और थोडे-वहुत जो शब्द जानता था, उनको ही उल्टे-सीधे बोलते हुए जल्दी-जल्दी जवाब दे रहा था, हा साथ ही अर्थपूर्ण ढग से इशारे भी करता जा रहा था।

काफी लबी और मुश्किल वातचीत के वाद वारट अफसर ने अफसरो के कमरे मे नीग्रो लडके की मोटे तौर पर सही कहानी सुनाई।

लडका अमरीकी जहाज 'वेट्सी' पर था और कप्तान का नौकर था (अफसर ने अपनी ओर से कहा कमीने कप्तान का), लडका कप्तान के कपडो से धूल झाडता था, जूते साफ करता था और कॉफी के साथ व्राडी या ब्राडी के साथ कॉफी देता था। कप्तान लडके को 'बॉय' कहता था और नीग्रो वालक को यह विश्वास था कि यही उसका नाम है। मा-बाप की उसे याद न थी। कप्तान ने साल भर पहले मोजम्वीक मे लडके को खरीदा था और रोज उसे पीटता था। जहाज सेनेगाल से रियो जा रहा था, हब्शियो को लादकर ले जा रहा था। दो रात पहले दूसरा जहाज उससे जोर से टकराया (इसका अनुमान अफसर ने इस बात से लगाया कि नीग्रो बालक ने दो-तीन बार "ठा-ठा-ठा" कहा और फिर रोगी कक्ष की दीवार पर धीरे से मुक्का मारा)। जहाज डूब गया। लडका पानी मे जा गिरा, मस्तूल के टुकडे से अपने आप को वाध लिया और उसी पर दो दिन, दो राते काटी।

अपने भयानक जीवन की कहानी अगर बालक शब्दो मे कह भी सकता, तो भी वे इतने भावपूर्ण न होते। शब्दो से अधिक अच्छी तरह उसकी कहानी उसकी नजरे कह रही थी, जिनमे इस बात पर आश्चर्य था कि उसके साथ इतना अच्छा सलूक किया जा रहा है। दयनीय पिल्ले की भाति कृतज्ञता भरी आखो से वह डाक्टर, उसके सहायक और वारट अफसर को देख रहा था। इन सबसे भी बढकर प्रभावित करती थी उसकी पतली सी, चमकती हुई काली पीठ, जिस पर सारी पसलिया दिखती थी—सारी पीठ कोडे लगने से साटो से भरी हुई थी।

वारट अफसर और डाक्टर की बाते सुनकर अफसरो के कमरे मे सब

स्तब्ध रह गए। किसी ने कहा कि इस बेचारे को केपटाउन मे रूसी वाणिज्यदूत के सरक्षण मे दे देना चाहिए और लडके के लिए चदा जमा करना चाहिए।

नन्हे नीग्रो की कहानी से मल्लाह और भी अधिक प्रभावित हुए। उसी दिन शाम को वारट अफसर के अरदली अर्तेमी मूखिन के मुह से उन्होंने वारट अफसर की बताई कहानी सुनी। अर्तेमी कहानी मे अपनी ओर से नमक-मिर्च लगाने से भी बाज न आया ताकि यह पता चले कि अमरीकी कप्तान कैसा जल्लाद था।

"अरे, भैया रे, हर रोज कमबख्त लौडे को पीटता था। जरा सी कोई बात हुई, बस जबडे पर घूसे मारने लगा, एक दो, तीन खूनोखून कर देता और खूटी से कोडा उतारता, कोडा भी भैया रे ऐसा-वैसा नही था, सबसे मोटी पेटी का बना और बस बेचारे की धुनाई करने लगता," अर्तेमी कह रहा था, अपनी कल्पना की उडान से वह अधिकाधिक जोश मे आता जा रहा था, वह नीग्रो बच्चे का जीवन भयानकतम रूप मे दिखाना चाहता था। "हरामी का पिल्ला यह तक न देखता था कि उसके सामने बेजबान बच्चा है, हब्शी हुआ तो क्या अभी तक बेचारे की सारी पीठ साटो से भरी हुई है। डाक्टर कह रहा था देखा नही जाता!" भावुक अर्तेमी ने कहा।

मल्लाह स्वय ही अतीत मे भूदास थे, उनके लिए यह सब नमक-मिर्च लगाने की कोई जरूरत न थी। उन्हे याद था कि कैसे उनकी पीठे सेकी जाती थी। उनकी सारी सहानुभूति बालक के साथ थी और अमरीकी कप्तान को वे खूब बददुआए दे रहे थे, अगर अभी तक शार्के उसे हडप नही गई, तो जल्दी से जल्दी हडप जाए।

"हमारे यहा तो अब तक सब ईसा के भक्तो को आजादी मिल गई होगी।* पर इन अमरीकियो के यहा अभी भी गुलाम है क्या?" किसी अधेड मल्लाह ने पूछा।

"हा, अभी तक है।"

"अजीब बात है आजाद लोग है, पर फिर भी " अधेड मल्लाह ने धीरे-धीरे बोलते हुए कहा।

---

* अभिप्राय भूदास प्रथा खत्म होने से है। – स०

"उनके यहा हब्शी हमारे यहा के दासो जैसे है।" अर्तेमी ने कहा, जो अफसरो के कमरे मे इस सिलसिले मे कुछ बाते सुन चुका था। "इसी बात को लेकर उनकी आपस मे लडाई हो रही है।* कुछ अमरीकी चाहते है कि सारे हब्शी, जो उनके यहा रहते है, आजाद हो, और दूसरे यह बात नही मानते, ये वही है, जिनके पास गुलाम हब्शी है। बस इसी बात पर एक दूसरे को भून रहे है सा'ब लोग कहते है कि जो अमरीकी हब्शियो के साथ है न, वही जीतेगे। अमरीकी जमीदारो का सफाया कर देगे!" खुश होते हुए अर्तेमी ने कहा।

"हा, भगवान उनकी मदद करेगा हब्शी भी तो आजादी से रहना चाहते है चिडिया तक कैद मे नही रह सकती, फिर आदमी तो आदमी है," जखारिच बढई ने कहा।

सावला जवान मल्लाह, वही जो कह रहा था कि जहाज की नौकरी खतरनाक है, बडे ध्यान से सारी बातचीत सुन रहा था, आखिर उसने पूछा

"तो, भई अर्तेमी, अब यह हब्शी छोकरा आजाद होगा?"

"और नही तो क्या? साफ बात है आजाद होगा," अर्तेमी ने दृढतापूर्वक कहा, हालाकि मन ही मन उसे इस बात पर पूरा विश्वास नही था, क्योकि स्वामित्व के अमरीकी कानूनो के बारे मे वह कुछ भी नही जानता था।

लेकिन उसकी अपनी समझ यह कहती थी कि लडका आजाद होना चाहिए। मुआ मालिक तो मछलियो का निवाला बन चुका है, तो फिर और क्या बात हो सकती है।

और वह बोला

"अब बस गूड केप मे छोकरे को पासपरट मिल जाए और बस फिर जहा जी चाहे वह जाए।"

पासपोर्ट के इस विचार ने उसके बचे-खुचे सदेह भी दूर कर दिए।

"हा, बस यही तो बात है!" सावला मल्लाह खुशी से बोला।

---

* कहानी अमरीका मे गृहयुद्ध के दिनो की है। – ले०

उसके लाल गालो और नेक आखो वाले चेहरे पर मीठी मुस्कान छा गई, जिससे अभागे नीग्रो के लिए उसकी खुशी प्रकट होती थी।

साझ का झुटपुटा तेजी से उष्णकटिबध की सुहानी रात मे बदल गया। आकाश पर असख्य तारे चमक उठे, मखमली ऊचाइयो मे उनकी उज्ज्वल झिलमिल हो रही थी। दूरी मे महासागर काला पड गया, जहाज के अगल-बगल और दबूसे के पीछे उसमे स्फुर-दीप्ति हो रही थी।

शीघ्र ही प्रार्थना की सीटी बजी और फिर जिन मल्लाहो को तडके ड्यूटी देनी थी वे खाटे लेकर डेक पर सो गए।

जो मल्लाह ड्यूटी पर थे, वे रस्सो पर बैठे धीमी आवाज मे बतियाने लगे। उस रात को कई झुडो मे नीग्रो लडके की ही चर्चा होती रही।

(५)

दो दिन बाद सदा की भाति सुबह सात बजे डाक्टर रोगी कक्ष मे आया, अपने एकमात्र रोगी की जाच की और यह पाया कि वह ठीक हो गया है, बिस्तर से उठ सकता है और ऊपर जाकर मल्लाहो का खाना खा सकता है। यह सब उसने लडके को इशारो से ही समझाया, जो इस बार जल्दी ही समझ गया। लडके के चेहरे पर रौनक आ गई थी और वह यह भूल ही गया लगता था कि कुछ दिन पहले वह मौत के पजो मे था। वह झट से खाट से उछल खडा हुआ। वह मल्लाहो का लबा कुर्ता, जो उसके बदन पर बोरे सा लगता था, पहने हुए ही ऊपर जाकर धूप सेकना चाहता था। लेकिन उसकी यह वेशभूषा देख कर डाक्टर जोर से हसने लगा और सहायक भी खी-खी कर उठा, लडका सकपका गया। वह केबिन के बीचोबीच खडा था, उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे और क्यो डाक्टर उसकी कमीज खीचता हुआ हसे जा रहा है।

तब नीग्रो बालक ने जल्दी से कमीज उतार दी और नगा ही खिसक जाना चाहा, पर सहायक ने उसकी बाह थाम ली और डाक्टर हसते हुए कहता जा रहा था

"नो, नो, नो।"

और इसके बाद इशारे से लडके को समझाया कि वह बोरेनुमा-कमीज पहन ले।

"इसे क्या पहनाए फिलीपव?" डाक्टर चितित सा घुघराले बालो वाले बाके से तीस वर्षीय सहायक से पूछ रहा था। "इसकी तो हमने सोची ही नही।"

"जी हा, इसकी तो कल्पना नही हुई। अब अगर इसकी कमीज घुटनो तक काट दे और कमर पर पेटी बाध दे, तो खूब जोड बैठेगा," सहायक ने कहा। जब वह कोई बढिया बात कहना चाहता था तो अटपटे शब्द कह डालता था, जिससे सब उसका मजाक उडाते थे।

"जोड बैठेगा का क्या मतलब?" डाक्टर मुस्कराया।

"जी, वही जोड बैठेगा सब जानते है हुजूर, जोड बेठैगा का मतबल क्या है!" सहायक ने बुरा मानते हुए कहा। "आरामदेह भी होगा, अच्छा भी लगेगा।"

"नही, भई, यह तो कोई 'जोड नही बैठेगा'। बस हसी की बात ही होगी। हा, कुछ तो पहनाना चाहिए इसे, जब तक मैं कप्तान से इसके नाप के कपडे सिलवाने की आज्ञा नही ले लेता।"

"जी हा, कपडे तो बढिया सिल सकते हैं जहाज पर है ऐसे मल्लाह, जो दर्जी का काम जानते है। वे सी देगे।"

उसी क्षण रोगी कक्ष के दरवाजे पर किसी ने हौले से दस्तक दी।

"कौन है? आ जाओ," डाक्टर ने कहा।

दरवाजे मे पहले तो लाल सा, थोडा फूला हुआ चेहरा दिखा, जिसके अगल-बगल सन के रग के गलमुच्छे लटक रहे थे, नाक अजीब से, "सदेहास्पद" रग की थी, पर आखो से फुर्ती और नेकी टपकती थी। इसके बाद मल्लाह इवान लूच्किन की नाटी, सुघड और मजबूत आकृति प्रकट हुई।

मल्लाह अधेड था, लगभग चालीस बरस का, पद्रह बरस से फौजी बेडे मे था। इस क्लिपर पोत पर वह एक सबसे अच्छा मल्लाह था और तट पर सबसे बढकर पियक्कड। कई बार तो वह अपने कपडे तक बेचकर शराब पी

डालता और केवल अतरीय पहने जहाज पर लौटता। अगले दिन सुबह एकदम बेफिक्र सा सजा सुनने को हाजिर होता।

"हजूर, यह मैं " लूच्किन खोखली आवाज मे बोला। वह खड़ा-खड़ा पैर बदल रहा था। उसके नगे पावो पर उभरी नसे दिख रही थी। खुरदरे हाथ से वह अपनी पतलून को मसोस रहा था।

दूसरे हाथ मे छोटी सी गठरी थी।

वह डाक्टर की ओर ऐसे सकोच और दोषी भाव से देख रहा था, जो पियक्कडो और अपने ऐब जाननेवाले लोगो के चेहरे और आखो मे प्राय होता है।

' क्या चाहिए लूच्किन ? बीमार पड गया क्या ?"

"बिल्कुल नही, हजूर, वो छोकरे के लिए कपडे लाया हू। सोचा नगा है, सो सी दिए, नाप भी मैंने पहले ले लिया था। इजाजत हो तो दे दू, हजूर।"

"जरूर दो भई बडी खुशी की बात है," डाक्टर चकित सा कह रहा था। "हम इसी सोच मे पडे हुए थे कि छोकरे को क्या पहनाए, तुमने हमारे से पहले ही सब सोच लिया।"

"खाली वकत था हजूर," लूच्किन मानो क्षमा माग रहा था।

इतना कहकर उसने छीट के रूमाल मे से मल्लाहो की वर्दी वाली छोटी सी कमीज और वैसी ही पतलून निकाली। उन्हे झटका और भौचक्के खडे लडके को सौपा।

"ले मक्सीम्का! कपडा वेरी गुड है भैया! ले पहन ले, देखता हू कैसे बैठता है। चल, मक्सीम्का!" नीग्रो बालक की ओर स्नेह से देखते हुए उसने खुशी से कहा, अब उसकी आवाज मे दोष की भावना नही थी, जैसी कि डाक्टर से बाते करते समय थी।

"अरे, तू इसे मक्सीम्का क्यो कह रहा है?" डाक्टर हस पडा।

"और क्या हजूर ? मक्सीम्का ही है, क्योकि इसे सत मक्सीम के दिन बचाया था, सो बस यह मक्सीम्का ही हुआ और फिर इसका कोई नाम भी तो नही, कैसे बुलाएगे इसे।'

नए कपडे पहनकर तो लडके की खुशी का वार-पार न रहा। लगता था पहले कभी भी उसने ऐसे कपडे नही पहने।

लूच्किन ने लडके को इधर-उधर घुमा कर देखा, कमीज खीची, सहलाई और पाया कि कपडे बिल्कुल ठीक बैठे है।

"अब चल ऊपर चले मक्सीम्का धूप सेकना। इजाजत है, हजूर?"

डाक्टर ने सद्भावना से मुस्कराते हुए सिर हिलाया और मल्लाह नीग्रो बालक का हाथ पकडकर डेक के अग्रभाग मे ले गया। दूसरे मल्लाहो को उसे दिखाते हुए उसने कहा

"सो, यह रहा मक्सीम्का! बस अब भूल जाएगा दुष्ट अमरीकी को। जानता है कि रूसी मल्लाह इसका मन नही दुखाएगे!"

उसने प्यार से लडके का कधा थपथपाया और उसके घुघराले सिर की ओर इशारा करते हुए कहा

"कोई बात नही, भैया टोपी भी बना देगे और जूते भी, बस थोडा समय चाहिए।"

लडका कुछ नही समझ रहा था, पर मल्लाहो के सवलाए चेहरे, उनकी महानुभूति भरी मुस्काने देखकर वह यह अनुभव कर रहा था कि यहा उसे कुछ नही होगा।

और वह अपने चमकीले, दूधिया दात दिखाता हस रहा था, दक्षिण के अपने प्यारे सूरज की गर्मी पा रहा था।

इस दिन से सब उसे मक्सीम्का कहने लगे।

(६)

डेक पर मल्लाहो जैसे कपडे पहने नन्हे नीग्रो से मल्लाहो को परिचित कराके लूच्किन ने तुरत ही यह घोषणा की कि वह लडके की देखभाल करेगा, उसका खास ख्याल रखेगा, इसका उसे हक है, क्योकि उसने लडके को सजाया है और उसका नाम रखा है।

लूच्किन ने किसी से इस बारे मे एक शब्द भी नही कहा कि इस दुबले-पतले अभागे हब्शी बच्चे को देखकर जिसने अपने जीवन के आरम्भ मे ही अमरीकी कप्तान के हाथो कितने दुख झेले है, उसके मन मे कैसी अनुकम्पा जागी है, कि उसकी अपनी ठूठ सी जिदगी भी पहले कितनी दुख भरी रही है। आम रूसी लोगो की ही भाति वह दूसरो के सामने अपनी भावनाए प्रकट करते हुए शर्माता था और शायद इसीलिए मक्सीम्का का ख्याल रखने की अपनी इच्छा का कारण यह बताया कि हब्शी बडा मजेदार है, बिल्कुल बदर जैसा।

हा, साथ ही उसने पेत्रोव मल्लाह की ओर नजर दौडाते हुए, जो नए मल्लाहो को तग करने के लिए मशहूर था दृढतापूर्वक कहा कि अगर ऐसा "एकदम कमीना आदमी" निकलेगा, जो 'अनाथ' बच्चे को छेडेगा, तो उसका वास्ता सीधे लूच्किन से होगा। और मानो यह स्पष्ट करते हुए कि उससे वास्ता पडने का मतलब क्या है, वह बोला

"ऐसा हुलिया बना दूगा कि बस वह याद रखेगा। बच्चे को तग करना सबसे बडा पाप है ईसाई हो या हब्शी, है तो बच्चा ही और कोई उसे हाथ नही लगाए।"

सब मल्लाहो ने तत्परता से मक्सीम्का पर लूच्किन का अधिकार स्वीकार कर लिया। हा, कई ऐसे भी थे, जिन्हे इस बात मे कोई खास विश्वास नही था कि लूच्किन ने अपने ऊपर जो दायित्व लिया है, उसे ठीक से निभा सकेगा।

ऐसा पियक्कड और दुस्साहसी मल्लाह लडके की देखरेख क्या करेगा?

एक पुराने मल्लाह ने चुटकी लेते हुए पूछा

"तो तू लूच्किन मक्सीम्का की दाई बनेगा?"

"दाई ही समझ लो," लूच्किन ने हसते हुए जवाब दिया। मजाक की उसने कोई परवाह नही की। "क्यो भाइयो, इतना भी नही कर सकता क्या मैं? अरे किसी साहबजादे की देखभाल थोडे ही करनी है इस कलुए के लिए भी कपडो का इतजाम करना है दूसरा जोडा सीना होगा, टोपी बनानी होगी डाक्टर कहता था, जहाज से सरकारी माल ले देगा आखिर मक्सीम्का जब गुड केप पर रह जाएगा, तो याद करेगा रूसी मल्लाहो को। कम से कम नगा तो नही होगा।"

"तू इससे बाते कैसे करेगा ? न वह तेरी कुछ समझता है, न तू उसकी।"

"कर लेगे बाते भी। तुम देखते रहना!" अनबूझ विश्वास के साथ लूच्किन ने कहा। "हब्शी है तो क्या हुआ, है तो समझदार अरे, मैं उसे अपनी बोली सिखा दूगा सब समझ लेगा वह "

और लूच्किन ने नन्हे नीग्रो पर स्निग्ध नजर डाली, जो जहाज के पहलू से सटा कौतूहलवश इधर-उधर देख रहा था।

नीग्रो बालक ने प्रेम और स्नेह मे पगी यह दृष्टि देखी और अपने सफेद दात चमकता हुआ मुस्करा दिया। बिना शब्दो के ही वह यह समझ रहा था कि यह मल्लाह उसका मित्र है।

साढे ग्यारह बजे मल्लाहो ने अपना सुबह का काम खत्म किया। डेक पर वोद्का का ड्रम लाया गया और दोनो मेटो और आठ जूनियर अफसरो ने घेरा बनाकर सीटी बजाई। मल्लाह इस सीटी को "कोयल की कूक" कहते थे। लूच्किन खुशी से मुस्कराया और अपने मुह की ओर इशारा करते हुए लडके से बोला "मागता है!" और दौडता हुआ पिछले डेक पर चला गया। लडका असमजस मे खडा रहा।

पर उसका असमजस शीघ्र ही दूर हो गया।

वोद्का की तेज गध सारे डेक पर फैल गई। मल्लाह अपने खुरदरे हाथो से नाक पोछते पिछले डेक से आ रहे थे, उनके गम्भीर चेहरो पर सतोष छलक रहा था। नीग्रो बालक को याद आया कि 'बेट्सी पर भी मल्लाहो को हफ्ते मे एक बार रम का गिलास मिलता था और यह कि कप्तान रोजाना ही रम पीता था और लडके को लगता था कि वह जरूरत से ज्यादा पीता है।

लूच्किन मक्सीम्का के पास लौट आया था। वह बडे अच्छे मूड मे था, उसने लडके की पीठ थपथपाई और बोला

"गूड वोद्का! वेरी गूड, मक्सीम्का!"

मक्सीम्का ने भी सिर हिला दिया और बोला

"वेरी गुड!"

यह देखकर कि लडका इतनी जल्दी उसकी बात समझ गया, लूच्किन बहुत खुश हुआ और चिल्लाया

"अरे वाह मक्सीम्का! सब समझता है चल अब खाना खाने चले भूख लगी है?"

और वह जबडे चलाने लगा।

यह समझना भी कठिन न था, खास तौर पर इसलिए कि लडके ने नीचे से मल्लाहो को लकडी के बडे-बडे डोगो मे खाना लाते देखा, जिनसे बडी प्यारी गध आ रही थी।

नन्हा नीग्रो भी सिर हिलाने लगा और उसकी आखे खुशी से चमक उठी।

"देखो तो सब समझता है! कैसा अक्लमद है!" लूच्किन ने कहा। हब्शी लडके से उसका लगाव पल-पल बढ रहा था और इस बात का भी उसे मान था कि वह लडके को अपनी बात समझा सकता है। मक्सीम्का का हाथ पकडकर वह उसे ले चला।

डेक पर तिरपाल बिछाकर बारह-बारह के झुड बैठे थे। श्ची से भरे डोगो के गिर्द घेरा बनाकर वे बैठे थे और चुपचाप बडी लगन से, जैसे कि आम आदमी खाते है, खाना खा रहे थे। श्ची उस बदगोभी से बनी थी, जिसे क्रोन्श्तात मे ही काटकर और नमक लगाकर लकडी के पीपो मे जहाज पर रख लिया गया था।

खाना खाते लोगो के बीच सभलकर बढते हुए लूच्किन मक्सीम्का को अपने साथियो के पास ले गया। उन्होने लूच्किन के इतजार मे अभी खाना शुरू नही किया था। लूच्किन उनसे बोला

"क्यो भाइयो, मक्सीम्का को अपने साथ बिठाओगे?"

"अरे पूछने की बात क्या है? बैठो दोनो जने!" बूढे बढई ज़खारिच ने कहा।

"शायद और किसी को ऐतराज हो साफ-साफ कह दो, भई!" लूच्किन ने फिर से पूछा।

सब ने एक स्वर मे जवाब दिया कि मक्सीम्का उनके साथ खाना खाए और थोडा हटकर उन दोनो के बैठने के लिए जगह बनाई। मल्लाह मज़ाक करने लगे

"अरे क्या, हमारे हिस्से का खा जाएगा!"

"सारा गोश्त तो नही हडप जाएगा।"

"तेरे कलुए के लिए हमने चम्मच भी ले लिया है।"

"मै तो, भाइयो, इसलिए पूछ रहा था कि यह हब्शी है ईसाई नही," लूच्किन ने बैठकर और अपने पास मक्सीम्का को बिठाते हुए कहा। "पर मैं तो यह समझता हू कि भगवान के सामने सब बराबर है रोटी तो हर कोई खाना चाहता है।"

"और नही तो क्या? भगवान ने सबको जमीन पर बसाया है। उसके लिए तो कोई फर्क नही। वो तो सोइकिन अरदलिये जैसे बेवकूफ ये बाते करते है कि ईसाई है, नही है!" बूढे जखारिच ने फिर से कहा।

जखारिच की बात से सब सहमत लगते थे। रूसी मल्लाह तो सदा ही जिन अलग-अलग धर्मो, नस्लो के लोगो से मिलते है, सबके प्रति बडी सहिष्णुता दिखाते है।

लूच्किन के दल के साथियो ने मक्सीम्का का खुले दिल से स्वागत किया। किसी ने उसे चम्मच दिया, दूसरे ने भिगोया हुआ रस और सब बडे प्यार से सहमे-सहमे बैठे लडके को देख रहे थे। लगता था वह गोरी चमडी वालो से ऐसा प्यार पाने का आदी नही है। सब लोग मौन नजरो से उसे न डरने को कह रहे थे।

"अच्छा तो, चलो शुरू करे, नही तो श्ची ठडी हो जाएगी।" जखारिच बोला।

सबने सलीब का निशान बनाया और अपने-अपने चम्मच से बारी-बारी डोंगे मे से श्ची लेने लगे।

"मक्सीम्का तू खाता क्यो नही? खा न, बुद्धू! बडी अच्छी श्ची है! गूड श्ची!" चम्मच की ओर इशारा करते हुए लूच्किन कह रहा था।

नीग्रो बालक को अमरीकी जहाज पर कभी गोरो के साथ खाना नही दिया जाता था, वहा उसे जूठन ही मिलती थी, जिसे वह कही अधेरे कोने मे दुबककर खाता था। वह ललचाई आखो से श्ची की ओर देख रहा था, राल निगल रहा था, पर खाने मे झिझक रहा था।

"देखो तो कैसा डरपोक है! उस अमरीकी शैतान ने बडा डराया होगा

वेचारे को!" मक्सीम्का के बगल मे बैठे जखारिच ने कहा। और उसका सिर सहलाते हुए अपना चम्मच उसके मुह के पास ले गया

इसके बाद मक्सीम्का की सारी झिझक दूर हो गई और कुछ ही क्षणो मे वह दबादब श्ची खाने लगा, फिर नमकीन गोश्त और बाजरे की खिचडी भी उसने खाई।

लूच्किन रह-रहकर उसकी हिम्मत बढा रहा था, कह रहा था

"गूड मक्सीम्का! वेरी गूड, भैया! खाए जा, मजे से।"

(७)

सारे जहाज पर खाना खाकर सो रहे मल्लाहो के खर्राटे सुनाई दे रहे थे। सिर्फ ड्यूटी वाले मल्लाह नही सो रहे थे, और कही-कही कोई मल्लाह खाली समय का लाभ उठाते हुए अपने जूते ठीक कर रहा था, कमीज सी रहा था या कपडे-लत्ते की मरम्मत कर रहा था।

'लडाकू' पोत के पालो मे हवा भरी हुई थी और उसे बढाए लिए जा रही थी। ड्यूटी के मल्लाहो के लिए करने को कुछ था ही नही। हा अगर कही काली घटा बढती दिखती, तो उन्हे ठीक समय पर पाल समेटने होते, ताकि उष्णकटिबध की मूसलाधार बारिश और तेज हवा का सामना तैयार, यानी खाली मस्तूलो से किया जा सके, जिससे झझा के प्रतिरोध का क्षेत्रफल कम से कम हो।

परतु क्षितिज एकदम साफ था। कही पर भी वह सुरमई धब्बा नही दिख रहा था, जो तेजी से बढता है, विशाल काली घटा बनकर क्षितिज और सूरज को अपने गर्भ मे छिपा लेता है। हवा के तेज झोके जहाज को एक ओर को झुका-झुका देते है, डेक पर मूसलाधार पानी बरसता है, मल्लाहो को बुरी तरह से भिगो देता है और जितनी तेजी से यह झझा आती है, उतनी ही तेजी से चली भी जाती है।

फिर से धूप खिल उठती है, डेक, रस्सो, पालो और मल्लाहो की कमीजो को सुखाती है। फिर से ऊपर नीला आकाश और नीचे नीला महासागर होता

है, जिसके वक्ष पर सारे पाल चढाए जहाज हवा के बल बढता चला जाता है।

इस समय भी चारो ओर सुहावना दृश्य था। जहाज पर भी शाति थी। सब आराम कर रहे थे और इस समय नितात आवश्यक होने पर ही मल्लाहो को बुलाया जा सकता था, अन्यथा नही – यह जहाजो की पुरानी परम्परा है।

अगले मस्तूल के पास छाया मे लूच्किन बैठा था, वह भी आज नही सो रहा था। ड्यूटी वाले यह देखकर दग थे, वे जानते थे कि लूच्किन सोने मे उस्ताद है।

कुछ गुनगुनाता हुआ लूच्किन किरमिच के टुकडे से जूते काट रहा था। रह-रहकर वह अपने पास ही मीठी नीद मे सोए मक्सीम्का और उसके पावो की ओर देखता, मानो यह अनुमान लगा रहा हो कि उसने खाने के तुरत बाद ही इन पावो का जो नाप लिया है, वह ठीक है या नही।

उसका नाप ठीक ही लगता था, वह फिर से काम मे जुट गया और अब सफेद पतलून मे से दिख रहे काले पावो की ओर उसका ध्यान नही जा रहा था।

यह सोचकर कि वह इस अभागे अनाथ बच्चे के लिए 'अव्वल दरजे' के जूते बना देगा और भी उसे जो कुछ चाहिए सी देगा, लूच्किन का मन हर्ष-विभोर हो रहा था। फिर उसे अपनी मल्लाह की जिदगी याद हो आई। उसमे याद करने को कुछ खास था नही अधाधुध पीना और सरकारी कपडा-लत्ता बेचकर पी लेने पर कोडे खाना – यही थी उसकी सारी जिदगी।

लूच्किन इस निष्कर्ष पर अकारण ही नही पहुचा कि अगर वह इतना दुस्साहसी मल्लाह न होता, जिसकी निडरता देखकर सभी कप्तान और अफसर दग रह जाते थे, तो वह कब का कैदियो की टुकडी मे होता।

"काम देखकर दया करते थे!" उसने अपने आप से कहा न जाने क्यो गहरी सास ली और बोला "यही तो अड़ा है।

यह अड़ा किस बात मे था इस बात मे कि वह बेतहाशा पीता था और किसी भी बदरगाह मे (सिवाय क्रोन्स्टात के) सबसे पास वाले अड्डे से आगे कभी नही पहुचा, या इस बात मे कि वह निडर मल्लाह था और केवल इसलिए कैदियो की टुकडियो म जाने से बचा रहा था, – यह कहना मुश्किल था। पर बात निस्सदेह थी जीवन के किसी अन्य के प्रश्न पर

लूच्किन सोच मे पड गया था, उसका गुनगुनाना बद हो गया और आखिर वह बोला

"मक्सीम्का के लिए बडी भी सीनी चाहिए   बडी के विना भला कैसे काम चलेगा?"

खाने के वाद के आराम के एक घटे मे लूच्किन ने मक्सीम्का के जूतो के लिए साज और तलवे काट लिए। तलवे नए ही थे, सरकारी माल के, जो लूच्किन ने सुवह ही एक किफायती मल्लाह से उधार लिए थे, जिसके पास अपने जूते थे। लूच्किन जानता था कि उसके पास पैसे नही रहते थे, खास तौर पर तट पर उतरने पर, इसलिए उसने खुद ही यह सुझाया कि कर्जे के पैसे मेट ही उसकी तनख्वाह मे से काट कर दे देगा।

मेट की सीटी बजी और उसके वाद मेट वसीली येगोरोविच, या जैसा कि मल्लाह उसे कहते थे–येगोरिच "भोपू"–ने उठने का हुक्म दिया। लूच्किन मीठी नीद सो रहे मक्सीम्का को जगाने लगा। लूच्किन के विचार मे मक्सीम्का "सवारी" ही था, पर तो भी उसे मल्लाहो की तरह रहना चाहिए था, ताकि कोई अप्रिय बात न हो, खास तौर पर येगोरिच की ओर से। लूच्किन यह मानता था कि येगोरिच नेक आदमी है, पर ताव मे आकर वह नीग्रो बालक को भी "कायदा बिगाडने" के लिए झापड रसीद कर सकता था, सो अच्छा हो कि वह शुरू मे ही कायदा सीखे।

"उठ, मक्सीम्का!" बालक का कधा झकझोडते हुए लूच्किन प्यार से कह रहा था।

मक्सीम्का ने अगडाई ली, आखे खोली और चारो ओर नजर दौडाई। यह देखकर कि सभी मल्लाह उठ खडे हुए है और लूच्किन अपना काम समेट रहा है, मक्सीम्का झट से उठ खडा हुआ और वफादार कुत्ते की तरह लूच्किन की आखो मे झाकने लगे।

"अरे तू डर नही, भैया   है न वुद्धू   हर बात से डरता है! यह देख, तेरे लिए जूते बना रहा हू।"

नीग्रो बालक की समझ मे कुछ नही आ रहा था कि लूच्किन उसके पावो और किरमिच के टुकडो की ओर दिखाते हुए क्या कह रहा है, पर वह मुस्कराए

जा रहा था, यह महसूस करते हुए कि उससे कुछ अच्छी बात कही जा रही है। लूच्किन ने उसे इशारा किया और वह उसके पीछे-पीछे मल्लाहो के रहन के निचले डेक पर चला गया। वहा बडे कौतूहल से वह देखने लगा कि कैसे लूच्किन ने कपडो से भरी अपनी किरमिच की सदूकची मे काम रखा। लूच्किन ने अपनी टोपी उतारी और कभी टोपी तो कभी लडके के सिर की ओर इशारा करते हुए शब्दो से भी और इशारो से भी यह समझाने का यत्न करने लगा कि मक्सीम्का के पास भी ऐसी ही टोपी होगी, सफेद खोल और नीले फीते वाली, पर वह फिर से कुछ नही समझ पा रहा था और बस कृतज्ञतापूर्वक मुस्कराए जा रहा था।

नन्हा नीग्रो अपने सारे हृदय से इन गोरे लोगो की सद्भावना अनुभव कर रहा था, जो 'बेट्सी' के गोरो से बिल्कुल अलग भाषा बोलते थे। यह लाल मिर्च जैसी नाक और सन के रग के बालो वाला मल्लाह तो कितना उदार था—ऐसे शानदार कपडे उसने दिए थे, इतना अच्छा खाना खिलाया था और ऐसे प्यार मे देखता था, जैसे कभी किसी ने उसे नही देखा था, सिवाय काले नारी चेहरे पर दो बडी-बडी आखो ने।

सहृदयता और स्नेह भरी ये दो आखे उसकी स्मृति मे अतीत की, धुधली याद के रूप मे केले और नारियल के पेडो से घिरी झोपडियो की यादो के साथ घुली-मिली, बनी हुई थी। यह उसकी कल्पना थी या बचपन की छापे—उसके लिए कहना मुश्किल था। हा, ये आखे कभी-कभी सपने मे उसे दिखती, उसे सात्वना देती थी। और अब उसने प्रकट रूप मे स्नेह भरी आखे देखी थीं।

युद्धपोत पर बिताए ये दिन उसे उन मीठे सपनो जैसे ही लग रहे थे, जो नींद मे आते है—अभी थोडे दिन पहले की ही उसकी जिदगी, दुख और डर से भरी जिदगी से ये इतने भिन्न थे।

आखिर लूच्किन ने टोपी की बाबत समझाना छोडकर सदूकची मे से चीनी की डली निकाली और मक्सीम्का को दी। वह गद्‌गद हो उठा। उसने मल्लाह का खुरदरा, गट्टेदार हाथ पकडा और सहमा-सहमा स उसे सहलाने लगा। वह लूच्किन की आखो मे झाक रहा था, उसके चेहरे पर ऐसे पददलित जीव का भाव था, जिसे अतत कुछ लाड-प्यार मिला हो। उसकी आखो मे

भी और चेहरे से भी कृतज्ञता टपक रही थी लडके ने चीनी की डली मुह मे डालने से पहले अपनी मातृ भाषा मे जल्दी-जल्दी और बडे जोश से कुछ शब्द कहे, उनके कठ्य स्वरो मे भी यही कृतज्ञता छलकती थी।

"देखो तो, कैसे लाड लेता है। कभी किसी ने तुझ दुखियारे को प्यार के दो शब्द नही कहे लगते!" मल्लाह अपनी फटी-फटी आवाज मे जितनी कोमलता उडेल सकता था, उतनी कोमलता से बोला। "खा ले न! बडी स्वाद है!"

निचले डेक के इस अधेरे कोने मे स्नेह के आदान-प्रदान के बाद मल्लाह और नीग्रो बालक की मैत्री पक्की हो गई। दोनो एक दूसरे से पूरी तरह खुश थे।

"हा, भैया, मक्सीम्का, तुझे हमारी बोली जरूर सिखानी चाहिए, नही तो कुछ समझ मे ही नही आता क्या गिटपिट करता है तू कलुए। अच्छा, चलो ऊपर चले। अभी गोलदाजी का अभ्याम होगा! देखना!"

वे ऊपर चले आए। शीघ्र ही ढोलची ने खतरे का ढोल बजाया। मक्सीम्का मस्तूल से सटकर खडा हो गया, ताकि बेतहाशा दौडते जा रहे मल्लाहो के पावो तले आकर गिर न जाए। पहले तो वह तोपो की ओर दौडते जा रहे मल्लाहो को देखकर डर ही गया, पर फिर वह शात हो गया और प्रशसा भरी नजरो से यह देखने लगा कि कैसे मल्लाहो ने बडी-बडी तोपो को पीछे धकेला, कैसे जल्दी से उनमे ब्रुश डालकर साफ किया, फिर से तोपे जहाज के पहलू के बाहर निकाल दी। और उनके पास सावधान खडे हो गये। लडके को उम्मीद थी कि अभी गोलाबारी होगी और वह परेशान था कि किस पर गोले दागेगे, क्योकि चारो ओर कही कोई दूसरा जहाज न था। वह इस गोलाबारी से परिचित था और अपनी आखो से यह देख चुका था कि कैसे 'बेट्सी' के दबूसे के पीछे धम से कुछ आ गिरा था। 'बेट्सी' जहाज तब हवा का रुख लेकर किसी तीन मस्तूलो वाले पोत से बचकर भाग रहा था, जो हब्शियो से लदे 'बेट्सी' का पीछा कर रहा था। लडके ने देखा था कि कैसे जहाज पर सब डर गए थे और कैसे जहाज का कप्तान गालिया देता रहा था, जब तक कि तीन मस्तूलो वाला पोत काफी पीछे न छूटने लगा। उसे यह पता

नही था कि यह उन ब्रिटिश क्रूजरो मे से एक था, जिन्हे हब्शियो का व्यापार करनेवालो को पकडने के लिए नियुक्त किया गया था, और वह भी खुश हो रहा था कि उनका जहाज बच निकला और इस तरह उसका जल्लाद कप्तान पकडा नही गया और उसे लोगो का व्यापार करने के लिए मस्तूल पर लटका नही दिया गया।*

लेकिन कोई गोला नही दागा जा रहा था। मक्सीम्का बडे उत्साह से ढोल बजते सुन रहा था और लूच्किन पर नजरे टिकाए हुए था, जो डेक के अग्रभाग की तोप के पास खडा था और निशाना साधने के लिए बार-बार झुक रहा था।

अभ्यास का दृश्य मक्सीम्का को बहुत अच्छा लगा और उससे भी ज्यादा अच्छी रही अभ्यास के तुरत बाद मिली चाय। पहले तो मक्सीम्का यह देखकर हैरान होता रहा कि कैसे सब मल्लाह मगो मे से गरम पानी की चुस्किया भर रहे है, चीनी की डली कुतर रहे है और पसीने से तर-ब-तर होते जा रहे है। पर जब लूच्किन ने उसे भी मग और चीनी की डली दी, तो मक्सीम्का को भी मजा आया और वह दो मग पी गया।

उसी दिन शाम को जब गर्मी कुछ कम होने लगी और जब लूच्किन के शब्दो मे "दिमाग मे बात बिठाना" आसान होता है, तभी उसने रूसी का पहला पाठ शुरू किया। वह लडके को यह समझाना चाहता था कि उसका नाम मक्सीम्का है और उसके शिक्षक का नाम लूच्किन। लेकिन उसे अपने प्रयासो मे कतई सफलता नही मिल रही थी और दूसरे मल्लाह उसका खूब मजाक उडा रहे थे।

---

* पुराने जमाने मे जब हब्शियो का व्यापार खूब जोरो पर था, तो यूरोप के प्राय सभी देशो के बीच इस अन्याय का विरोध करने के हेतु अतर्राष्ट्रीय सधि हुई थी। इसके अतर्गत फ्रास और इगलैड अफ्रीका और अमरीका के तटो की ओर अपने युद्धपोत भेजते थे। पकडे गए लोगो के साथ सख्ती बरती जाती थी। कप्तान और उसके सहायक को फासी दे दी जाती थी और मल्लाहो को कठोर श्रम-कारावास की सजा मिलती थी। नीग्रो आजाद घोषित कर दिए जाते थे और पकडे गए जहाज उन्हे पकडनेवालो का पुरस्कार होते थे। –ले०

लूक्किन का मत था कि नाम का ज्ञान सारी शिक्षा की नींव है। यद्यपि वह कभी शिक्षक नही रहा था, परतु अपने ध्येय की प्राप्ति मे वह जिस अध्यवसाय से लगा हुआ था, जितने धीरज और नम्रता मे वह मिथा रहा था, उस पर पेशेवर शिक्षको को भी ईर्ष्या हो सकती थी, और फिर उन्हे तो शायद ही कभी ऐसी कठिनाइयो का सामना करना पडा हो, जैसी मल्लाह के सामने थीं।

वह अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए नए-नए चतुराई भरे रास्ते सोचता और तुरत ही उन पर अमल करने लगता।

वह नन्हे नीग्रो की छाती पर उगली रखकर कहता "मक्सीम्का" और फिर अपनी ओर इशारा करके कहता "लूक्किन"। कई बार ऐसा करने पर भी उसे सतोपजनक परिणाम नही मिला, तब वह कुछ कदम दूर हटकर चिल्लाने लगा "मक्सीम्का!" लडका धीमे निपोडता, पर इस तरह भी उसके पल्ले कुछ नही पडा। तब लूक्किन ने नया तरीका सोचा। उसने एक मल्लाह से कहा कि वह "मक्सीम्का" पुकारे और जब उसने ऐसा किया, तो लूक्किन सफलता के विश्वास के साथ खुश होते हुए लडके की ओर इशारा किया और वह पूरी तरह समझ जाए इसलिए उसका कालर भी हौले से झकझोडा। पर, अफसोस! मक्सीम्का खिलखिलाकर हस रहा था। प्रत्यक्षत कालर झकझोडने का मतलब उसने यह समझा कि उसे नाचने को कहा गया है, क्योकि वह तुरत ही उछला और सब मल्लाहो तथा स्वय लूक्किन को खुश करता हुआ नाचने लगा।

आखिर जब नाच खत्म हुआ, तो लडका यह अच्छी तरह समझ गया कि सब उसके नाच से बहुत खुश है, क्योकि कई मल्लाहो ने उसका कधा, पीठ, सिर थपथपाया और हसते हुए बोले

"गूड, मक्सीम्का! शाबाश, मक्सीम्का!"

यह कहना कठिन है कि मक्सीम्का को उसके नाम से परिचित कराने के लूक्किन के नए प्रयास कितने सफल रहते, जो वह फिर से शुरू करना चाहता था, पर तभी डेक पर वारट अफसर आया, जो अग्रेजी बोलता था और मामला आसान हो गया। उसने लडके को समझाया कि उसका नाम "बॉय" नही, मक्सीम्का है और यह भी बता दिया कि उसके मित्र का नाम लूक्किन है।

"अब इसे पता चल गया ह कि तूने इसका क्या नाम रखा हे!" वारट अफसर ने लूच्किन से कहा।

"बहुत-बहुत शुक्रिया हजूर!" खुश होकर लूच्किन ने कहा और बोला "मैं तो बडी देर से मगजपच्ची कर रहा था। छोकरा तो अक्लमद है पर यह नही समझ पा रहा था कि इसका नाम क्या है

"अब जान गया पूछ देखो!'

"मक्सीम्का!"

नन्हे नीग्रो ने अपनी ओर इशारा किया।

"बहुत खूब, हजूर लूच्किन!" फिर मे मल्लाह लडके की ओर उन्मुख हुआ।

लडके ने मल्लाह की ओर इशारा किया।

और वे दोनो खिलखिलाकर हस पडे। बाकी मल्लाह भी हस रहे थे और कह रहे थे

"अरे, कलुआ तो पडित बन रहा ह

आगे के पाठ मे कोई कठिनाई नही आई।

लूच्किन नई-नई चीजे दिखाता और उनके नाम बताता जाता। अगर कोई शब्द वह जरा भी तोड-मरोड सकता तो जरूर ऐसा करता, कमीज की जगह "कमीजा", मस्तूल की जगह "मस्तूला"। उसे विश्वास था कि इस तरह वे विदेशी शब्दो से अधिक मिलते है और मक्सीम्का उन्हे आसानी से याद कर पाएगा।

जब शाम के खाने की सीटी बजी, तो मक्सीम्का लूच्किन के पीछे कुछ रूसी शब्द दोहरा सकता था।

"भई वाह, लूच्किन। फटाफट सिखा दिया कलुए को। ऐसे तो बस गूड केप तक पहुचते-पहुचते वह हमारी बोली ही बोलने लगेगा!" मल्लाह कह रहे थे।

"और नही तो क्या! गूड केप तक तो बीस दिन से कम का रास्ता नही है और मक्सीम्का समझदार है!"

"मक्सीम्का" सुनकर लडके ने लूच्किन की ओर आखे उठाई।

"देखो तो, कैसे अपना नाम जानता है! आ जा, भैया, वैठ जा, खाना खाएगे।"

प्रार्थना के वाद खाटे मिली। लूच्किन ने मक्सीम्का को अपने पास डेक पर सुलाया। मक्सीम्का बहुत सुखी था और कृतज्ञता से ओतप्रोत। वह आराम से मल्लाहो के गद्दे पर सिर तले तकिया रखे और कम्बल ओढे जिस्म तोड रहा था। लूच्किन ने स्टोरकीपर से उसके लिए खाट और विस्तर ले लिया था।

"सो जा, सो जा मक्सीम्का! सुवह जल्दी उठना होगा।"

मक्सीम्का की तो उसके कहे विना ही आखे मुदी जा रही थी। पहला पाठ उसने काफी अच्छी तरह सीख लिया था। सोने से पहले बोला "मक्सीम्का" और "लूचिक", अपने उस्ताद का नाम उसने यो ही समझा था।

मल्लाह ने नन्हे नीग्रो पर सलीव का निशान बनाया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा।

आधी रात से उसकी ड्यूटी थी। अगले मस्तूल पर एक और मल्लाह लेओन्त्येव के साथ वह ड्यूटी दे रहा था।

इधर-उधर देखकर कि सव कुछ ठीक-ठाक है कि नही, वे दोनो वैठ गए और वतियाने लगे, ताकि ऊघे न। क्रोन्दतात की वाते की, पुराने कमाडरो को याद किया और फिर चुप हो गए।

सहसा लूच्किन ने पूछा

"लेओन्त्येव, तू कभी पीता-वीता नही?"

कभी नशा न करनेवाला सयमी लेओन्त्येव अच्छे मल्लाह के नाते लूच्किन का आदर करता था, पर साथ ही उसके पियक्कडपन के कारण उसे घिन से देखता था। उसने दृढतापूर्वक कहा

"कभी नही!"

"कभी हाथ तक नही लगाया!"

"कभी त्योहार-व्योहार पर एकाध गिलास पी ली, तो पी ली।"

"तभी तो तू जहाज पर अपना हिस्सा नही लेता, उसके वदले पैसे लेता है?"

"हा भैया, पैसे तो आखिर काम आएगे रूस लौटेगे, वहा रिटायर हो गए, तो हाथ मे कुछ पैसे होने से अच्छा ही रहेगा "

"सो तो है "

"पर तू लूच्किन, क्यो यह सब पूछने लगा?"

"इसीलिए, लेओन्त्येव, कि तू खुशकिस्मत है "

लूच्किन ने थोडी देर चुप रहकर पूछा

"सुना है इस नशे से छूटने का कोई मतर-वतर है?"

"हा, कुछ लोग पढते है 'कोब्चिक' पर छोटे अफसर ने एक मल्लाह पर पढा था जानता था वह हमारे यहा भी एक आदमी है "

"कौन?"

"जखारिच बढई पर वह किसी को बताता नही। हर किसी पर पढता भी नही। पर तू क्या पीना छोडेगा, लूच्किन?" लेओन्त्येव ने व्यग्य के स्वर मे पूछा।

"छोडना तो क्या, बस यह है कि अधाधुध न पिऊ "

"सोच-समझकर पीने की कोशिश कर "

"कोशिश तो की थी, पर बात बनती नही। बस एक बार पीने लगू, तो फिर छूटती नही। ऐसा ही है मेरा ढग।"

"ढग-वग कुछ नही, अक्ल की कमी है तुझे।" लेओन्त्येव ने उसे समझाते हुए कहा। "हर आदमी को अपनी होश होनी चाहिए तू जखारिच से बात कर देख। हो सकता है, तुझे ना न करे पर तेरे पर मतर-वतर का असर शायद ही पडे।" लेओन्त्येव ने उपहास के साथ कहा।

"हा, मैं भी यही सोचता हू। नही असर पडेगा।" लूच्किन बोला और खुद ही हौले से हस दिया, मानो इस बात पर खुश ही हो कि उस पर किसी मतर का असर नही पडेगा।

(८)

तीन हफ्ते बीत गए। क्लिपर पोत 'लडाकू' केपटाउन से दूर नही था, लेकिन बिल्कुल सामने से और कभी-कभी तो तूफान जैसी तेज बहती हवा की वजह से वह तट के पास नही जा पा रहा था। हवा और लहरे इतनी जोरदार

थी कि भाप का इजन चलाकर भी नही पहुचा जा सकता था। कोयला ही बेकार फूका जाता।

मौसम बदलने की प्रतीक्षा मे पोत पाल समेटे किनारे से थोडी ही दूर खडा था और जोर से धचकोले खा रहा था।

इस तरह छह-सात दिन बीते।

आखिर हवा रुक गई। जहाज पर भाप का इजन चलाया गया और शीघ्र ही सफेद चिमनी से धुआ छोडता पोत केपटाउन को चल दिया।

कहना न होगा कि मल्लाह इस पर कितने खुश थे।

पर जहाज पर एक आदमी था, जो न केवल खुश नही था, बल्कि ज्यो-ज्यो बदरगाह पास आती जा रही थी, त्यो-त्यो वह अधिक उदास नजर आ रहा था।

यह लूच्किन था, जो मक्सीम्का से विछुडनेवाला था।

बीते मास मे मल्लाहो के अनुमान के विपरीत लूच्किन ने मक्सीम्का की देखभाल करनी नही छोडी, बल्कि उसे मक्सीम्का से मोह हो गया और नन्हा नीग्रो भी उससे हिल-मिल गया। वे दोनो एक दूसरे की बाते बडी अच्छी तरह समझ लेते थे क्योकि लूच्किन ने असाधारण अध्यापन योग्यता का परिचय दिया था और मक्सीम्का भी बडा होशियार निकला था। अब वह थोडी बहुत रूसी बोल लेता था। वे एक दूसरे को जितना अधिक जानते जा रहे थे, उतना ही उनका लगाव बढ रहा था। मक्सीम्का के पास दो जोडे कपडे, जूते, टोपी और पेटी पर बधा मल्लाहो का चाकू था। वह बडा समझदार और हसमुख लडका था। जहाज पर सब उसे प्यार करते थे, यहा तक कि येगोरिच मेट भी, जिसे जहाज पर कोई मुसाफिर कतई अच्छा नही लगता था, क्योकि वे कुछ नही करते, वह भी मक्सीम्का के प्रति उदार था, क्योकि मक्सीम्का काम के वक्त सदा दूसरो के साथ रस्से खीचता था और सदा किसी न किसी तरह दूसरो की मदद करने की कोशिश करता था, मुफ्त की रोटी नही खाता था। बदर की तरह बराडल पर चढ जाता था और तूफान आने पर भी डरता नही था, सक्षेप मे यही कहा जा सकता है कि वह पक्का "मल्लाह छोकरा" था।

बडे अच्छे स्वभाव का और स्नेही लडका था वह। डेक पर नाच दिखाकर और सुरीली आवाज मे अपने गाने गाकर वह मल्लाहो का मन बहलाता था। इसलिए सब उसे चाहते थे, लाड-प्यार करते थे और वारट अफसर का अरदली अर्तेमी अफसरो के कमरे मे से उसके लिए बची-खुची पेस्ट्री ले आता था।

यह कहने की तो कोई आवश्यकता ही नही कि मक्सीम्का लूच्किन के प्रति कुत्ते की तरह वफादार था, हमेशा उसके साथ रहता था। मस्तूल पर भी उसके पास चढ जाता था, जब वह वहा ड्यूटी पर होता, या जब वह गलही पर पहरा दे रहा होता, तो उसके पास घटो बैठा रहता, बडे जतन से रूसी शब्द सीखता।

ऊचे कगारो वाला तट अच्छी तरह दिखाई दे रहा था। 'लडाकू' पोत पूरी गति से बढ रहा था। दोपहर तक जहाज केपटाउन मे लगर डालने-वाला था।

इस सुहानी सुबह को लूच्किन का मन बुझा-बुझा था और वह जोर लगा-लगाकर तोप साफ कर रहा था। मक्सीम्का उसके पास ही खडा हाथ बटा रहा था।

"हा, भैया मक्सीम्का, थोडी देर मे हम अलग-अलग जाएगा!" आखिर लूच्किन बोला।

"अलग-अलग क्यो?" मक्सीम्का हैरान हुआ।

"तुझे गूड केप पर छोड जाएगे   और क्या करेगे तेरा?"

लडके ने अपने भविष्य के बारे मे कुछ नही सोचा था और वह ठीक से यह समझ भी नही पा रहा था कि लूच्किन उसे क्या कह रहा है, पर मल्लाह का उदास चेहरा देखकर यह समझ गया कि वह कोई खुशी की बात नही कर रहा। बालक के चेहरे पर उसके मनोभाव तुरत ही झलक उठते थे। पल भर मे उसका चेहरा उतर गया, बोला

"मैं नही समझा, लूचिक।"

"जाएगा मक्सीम्का, जहाज से नीचे   तट पर उतरेगा, मैं आगे चला जाऊगा, तू यहा रहेगा।"

लूच्किन उसे इशारो से समझाने लगा कि बात क्या है।

प्रत्यक्षत नीग्रो बालक सब समझ गया। उसने लूच्किन का हाथ पकड लिया और मिनत करते हुए बोला

"मै तट नही मैं यहा, मक्सीम्का, लूचिक, लूचिक, मक्सीम्का, मैं लूसी मल्ला हा, हा, हा"

सहसा मल्लाह के दिमाग मे एक विचार कौंधा। उसने पूछा

"मक्सीम्का रूसी मल्लाह बनेगा ?"

"हा, हा," मक्सीम्का दोहरा रहा था और पूरे जोर से सिर हिला रहा था।

'अरे हा, कितना अच्छा रहे! पहले क्यो नही आई मेरे दिमाग मे साथियो से बात करनी चाहिए और येगोरिच से वह बडे अफसर से कह देगा।"

कुछ मिनट बाद ही डेक के अग्रभाग पर लूच्किन वहा जमा मल्लाहो से बाते कर रहा था

"भाइयो! मक्सीम्का हमारे साथ रहना चाहता है। हम इजाजत माग लेगे हमारे साथ हमारे जहाज पर रहे। तुम्हारा क्या ख्याल है, भाइयो?"

सब मल्लाहो ने बडे उत्साह से इस प्रस्ताव का स्वागत किया।

तब लूच्किन मेट के पास गया, उसे सारे मल्लाह दल की ओर से बडे अफसर से अनुरोध करने को कहा और अपनी ओर से जोडा

"येगोरिच, मेरी बिनती है, ना मत करना बडे सा'ब से कह दो कि मक्सीम्का खुद भी रहना चाहता है कहा बेचारे अनाथ को अकेला छोड जाएगे। बिल्कुल मारा जाएगा बेचारा तरस आता है लडके पर इतना अच्छा छोकरा है!"

"ठीक है, मैं कह दूगा मक्सीम्का अच्छा लडका है। पर पता नही, कप्तान क्या कहे हब्शी को रूसी जहाज पर रखने को तैयार हो कि नही कही इसमे अडचन न हो"

"कोई अडचन नही होगी, येगोरिच। हम मक्सीम्का को हब्शी नही रहने देगे।"

"सो कैसे ?"

"हमारे रूसी धर्म मे उसका बपतिस्मा कर देगे और वह रूसी हब्शी हो जाएगा।"

येगोरिच को यह विचार पसद आया और उसने तुरत ही बडे अफसर को रिपोर्ट करने का वायदा किया।

बडे अफसर ने मेट की बात सुनी और कहा

"लूच्किन कह रहा है?"

"सारा मल्लाह दल कह रहा है, हजूर कहा उसे छोडेगे? तरस आता है, हजूर वह हमारे जहाज पर छोटा मल्लाह होगा। लडका बडा सुधरा हुआ है, हजूर। और अगर उसका बपतिस्मा कर दे, तो बस आत्मा का भी उद्धार हो जाए।"

बडे अफसर ने कप्तान को रिपोर्ट देने का वायदा किया।

झडा फहराने के समय कप्तान ऊपर आया। बडे अफसर ने जब मल्लाह दल का अनुरोध बताया, तो पहले तो कप्तान न करने लगा था। पर फिर शायद उसे अपने बच्चे याद हो आए, उसने तत्क्षण अपना निश्चय बदल लिया और बोला

"ठीक है, रहे। उसे छोटा मल्लाह बना देगे। और जब हमारे साथ क्रोन्श्तात लौटेगा तो उसे कही दाखिल करा देगे वाकई, क्यो उसे यो छोडा जाए और वह खुद भी नही चाहता! हा उसे लूच्किन की देखभाल मे ही रहने दीजिए है तो यह लूच्किन पक्का पियक्कड, पर देखिए लडके से इतना लगाव मुझे डाक्टर ने बताया था, कैसे उसने नीग्रो के लिए कपडे सिए थे "

डेक पर जब मक्सीम्का को जहाज पर रखे रहने की खबर पहुची, तो सभी मल्लाह बेहद खुश हो उठे। बेशक लूच्किन और मक्सीम्का सबसे ज्यादा खुश थे।

दोपहर के एक बजे पोत ने केपटाउन बदरगाह मे लगर डाला। अगले दिन जो मल्लाह पहली पाली मे ड्यूटी दे चुके थे, उन्हे तट पर जाने की इजाजत मिली। लूच्किन और मक्सीम्का भी जाने को तैयार हुए।

"देख, लूच्किन, कही मक्सीम्का को बेचकर मत पी लेना," येगोरिच ने हसते हुए कहा।

प्रत्यक्षत यह बात लूच्किन को चुभी, उसने जवाब दिया "हो सकता है मक्सीम्का की वजह से मैं बिना पिए लौट आऊ!"

लूच्किन तट से नशे मे धुत्त लौटा, पर सब यह देखकर हैरान थे कि

उसके कपडे सही सलामत थे। बाद मे पता चला कि ऐसा मक्सीम्का की वदौलत ही हुआ। उसने जब यह देखा कि उसका मित्र हद से ज्यादा पी रहा है, तो वह भागा-भागा पास के दूसरे अड्डे पर रूसी मल्लाहो को बुलाने गया और वे लूच्किन को घाट पर उठा लाए और उसे नाव मे लिटा दिया, जहा मक्सीम्का उसके पास से पल भर को भी नही हटा।

लूच्किन के मुह से बोल मुश्किल से निकल रहे थे, पर वह बार-बार कह रहा था

"मक्सीम्का कहा है? इधर दो, मेरे मक्सीम्का को भाइयो, मैंने मक्सीम्का को नही बेचा वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है कहा है मक्सीम्का?"

ओर जब मक्सीम्का उसके पास आया, तो वह तुरत शात हो गया और सो गया।

हफ्ते भर बाद 'लडाकू' पोत केप ऑफ गुड होप से चल दिया। शीघ्र ही धूमधाम के साथ मक्सीम्का का बपतिस्मा किया गया।

तीन साल बाद 'लडाकू' पोत पर चौदह वर्ष की आयु मे मक्सीम्का क्रोन्श्तात पहुचा। जहाज पर वारट अफसर उसे पढाता रहा था और अब वह रूसी अच्छी तरह पढ-लिख लेता था।

कप्तान ने उसे नर्सिंग स्कूल मे दाखिल करवा दिया। लूच्किन भी रिटायर हो गया और क्रोन्श्तात मे ही रहने लगा, ताकि अपने प्यारे बालक के पास हो, जिसे उसने अपने हृदय का सारा स्नेह दिया था और जिसकी खातिर अब वह अपने कपडे बेचकर नही, बल्कि सोच समझकर पीता था।

व्सेवोलोद गार्शिन

सिग्नल

व्सेवोलोद मिखाइलोविच गार्शिन का जन्म १८५५ मे हुआ और ३३ वर्ष की आयु म ही उनका देहात हो गया। अपने इस अल्प जीवनकाल मे वह दस से कुछ अधिक कहानिया लिख पाए। इनमे अधिकाश बडो के लिए ही हैं। किंतु बाल साहित्य और बच्चो के चरित्रनिर्माण की समस्याओ मे भी गार्शिन सदा रुचि लेते रहे। वह पीटर्सबर्ग के शिक्षाकर्मियो की मण्डली मे शामिल हुए। इसका उद्देश्य बच्चो के लिए पुस्तके चुनने मे माता-पिताओ और शिक्षको की सहायता करना था। इस मण्डली के सदस्य के रूप मे गार्शिन ने १८८५ और १८८६ मे प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'बाल साहित्य सर्वेक्षण' का सम्पादन किया। विदेशी लेखको की कुछ बाल कथाओ का भी उन्होंने अनुवाद किया। आज तक सोवियत बच्चे बडी दिलचस्पी से गार्शिन की बाल-कथाए 'गर्वीला ताड', 'मेढकी और गुलाब' पढते हैं। सबसे लोकप्रिय है— मेढक की यात्रा', जो गार्शिन ने पचतत्र की कछुए और सारसो की कहानी के आधार पर लिखी।

सिग्नल कहानी १८८७ मे बडो के लिए पत्रिका म प्रकाशित हुई, लेकिन तुरत ही बच्चो की प्रिय पुस्तक बन गई। सरल और रोचक ढग से लिखी गई इस कहानी मे लेखक इस प्रचलित विचार का खण्डन करता है कि ससार मे बुराई का ही प्रभुत्व है। लेखक ने अपनी कहानी मे भलाई मे, मेहनतकश इन्सान के उत्तम नैतिक गुणो मे विश्वास की पुष्टि की है।

सेम्योन इवानोव रेलवे मे लाइनमैन का काम करता था। उसकी चौकी से एक स्टेशन नौ मील दूर था और दूसरा कोई सात मील। कोई तीन मील दूर पिछले साल एक बडी कताई मिल खुली थी। जगल के पीछे से उसकी काली चिमनी दिखाई देती थी। आस-पास लाइनमैनो की चौकियो के अलावा कोई घर नही था।

सेम्योन इवानोव बीमार और टूटा हुआ आदमी था। नौ साल पहले वह लडाई मे गया था। एक अफसर का अर्दली था वह और उसके साथ पूरे अभियान मे रहा था। वहा उसे भूखा भी रहना पडा था और कडकडाती ठड व चिलचिलाती धूप भी सहनी पडी थी। सर्दी-गर्मी मे वह तीस-तीस, चालीस-चालीस मील चला था। गोलियो की बौछार मे भी चलना पडा था, पर भगवान की दया से एक भी गोली उसे नही लगी थी। एक बार उनकी रेजिमेट मोर्चे की अगली लाइन मे रही थी, हफ्ते भर तक तुर्को के साथ गोलिया चलती रही

इधर हमारी टुकडी थी और खड्ड के पार तुर्कों की, सुबह से शाम तक गोलिया चलती रहती थी। सेम्योन का अफ्सर भी उसी टुकडी मे था, दिन म तीन बार रेजिमेट के रसोईघर से सेम्योन उसके लिए खाना और गर्म समोवार ले जाया करता था। खुली जगह पर वह समोवार लेकर चलता, साय-साय करती गोलिया बरसती, पत्थरो से टकराती, सेम्योन का डर के मारे बुरा हाल होता, वह रोता, पर चलता जाता। अफसर लोग उससे बहुत खुश थे उन्हे चौबीसो घटे गर्म चाय मिलती रहती थी। इस अभियान से वह सही-सलामत लौटा, बस हाथ-पैर टूटने लगे थे। तब से उसे बहुत दुख झेलना पडा था। घर लौटा तो बूढा बाप मर गया, गले की बीमारी थी उसे, सेम्योन घरवाली के साथ अकेला रह गया। खेतीबारी उनकी ठीक नही चली, फूले हाथो-पैरो से जमीन जोतना भी आसान नही था। अपने गाव मे रहना उनके लिए नागवार हो गया और वे नई जगह सुख-चैन ढूढने निकल पडे। सेम्योन अपनी बीवी के साथ खेर्सोन भी गया, दोन के इलाके मे भी, पर कही उसे सुख नही मिला। बीवी नौकरानी का काम करने लगी और सेम्योन पहले की ही तरह भटकता फिर रहा था। एक बार वह रेलगाडी मे कही जा रहा था, एक स्टेशन पर क्या देखता है कि स्टेशन मास्टर जाना-पहचाना लगता है। सेम्योन उसकी ओर ताक रहा था और स्टेशन मास्टर भी सेम्योन को गौर से देख रहा था। दोनो एक दूसरे को पहचान गए वह उनकी रेजिमेट का ही अफसर था।

"अरे, इवानोव है क्या?" उसने पूछा।

"जी हजूर, मै ही हू।"

"तू यहा कैसे आ पहुचा?"

सेम्योन ने उसे अपनी सारी कहानी सुनाई।

"अब कहा जा रहा है?"

"कुछ पता नही, हजूर।"

"वाह रे भोदू, कैसे पता नही?"

"ठीक बात है, हजूर। कोई ठौर-ठिकाना तो है नही। कोई काम वाम ढूढना चाहिए, हजूर।"

स्टेशन मास्टर ने उसकी ओर देखा, फिर कुछ सोचकर बोला

"अच्छा, सुन, तू अभी स्टेशन पर ही ठहर जा। तू तो शादीशुदा है न? बीवी कहा है?"

"जी हजूर, शादीशुदा हू। बीवी कूर्स्क मे एक व्यापारी के घर नौकर है।"

"अच्छा तो बीवी को लिख दे कि यहा चली आए। मैं उसके लिए मुफ्त के टिकट का इतजाम कर दूगा। हमारे यहा एक चौकी खाली होनेवाली है, मैं डिवीजन मैनेजर से तेरी सिफारिश कर दूगा।"

"बहुत-बहुत शुक्रगुजार हू, हजूर, माई बाप," सेम्योन ने जवाब दिया।

और वह स्टेशन पर रहने लगा। स्टेशन मास्टर के रसोईघर मे कुछ काम कर देता था, लकडिया चीरता, आगन की, प्लेटफार्म की झाड़ू-बुहारी कर देता। दो हफ्ते बाद बीवी आ गई और सेम्योन हथट्राली मे सामान लादकर अपनी चौकी को चल दिया। चौकी नई ही थी, अदर गर्म थी, लकडी की कोई कमी न थी, पहले वाले लाइनमैन ने पास ही सब्जी-बब्जी के लिए कुछ क्यारिया बना रखी थी और रेल लाइन के इधर-उधर कोई दो बीघा जमीन भी थी। सेम्योन खुश हो गया, सोचने लगा कि कैसे अपनी खेती करने लगेगा, गाय-घोडा खरीद लेगा।

काम के लिए सभी जरूरी चीजे उसे मिल गई हरी झडी, लाल झडी, लालटेने, बिगुल, हथौडा, ढिबरिया कसने की चाबी, सब्बल, बेलचा, झाड, बोल्ट और कीले। साथ मे दो किताबे भी मिली—एक नियमो की और दूसरी टाइमटेबल की। शुरू-शुरू मे तो सेम्योन राते नही सोता था, टाइमटेबल रटता रहता था, गाडी दो घटे बाद जानेवाली होती, पर वह पहले से ही अपने हिस्से का चक्कर लगा आता, चौकी के पास बेच पर बैठ जाता और ध्यान से देखता-सुनता रहता पटरी तो नही हिल रही, गाडी की आवाज तो नही आ रही। सारे नियम भी उसने जबानी रट लिए, पढता तो वह मुश्किल से था—एक-एक अक्षर जोडकर, फिर भी सब रट लिए।

गर्मियो के दिन थे, काम कोई ज्यादा मुश्किल नही था, बर्फ हटाने की जरूरत नही और गाडिया भी उस लाइन पर कम ही चलती थी। सेम्योन दिन मे दो बार अपना पौन मील का चक्कर लगा आता, कही-कही कोई

ढिबरी कस देता, गेडी ठीक कर देता, पानी के पाइप देख लेता और अपनी खेती करने घर लौट आता। खेती मे एक बडी अडचन थी जो भी करना हो फोरमैन से पूछो, वह डिवीजन मैनेजर को लिखेगा, जब तक इजाजत मिलती, वह काम करने का वक्त ही निकल चुका होता। सेम्योन और उसकी बीवी इसके मारे ऊबने भी लगे।

कोई दो महीने बीत गए, सेम्योन अपने आस-पास के लाइनमैनो से जान-पहचान करने लगा। एक तो बिल्कुल बूढा था, उसे बदलने की सोच रहे थे मुश्किल से चौकी मे से बाहर निकलता था। उसकी घरवाली ही उसकी जगह लाइन का चक्कर लगाती थी। दूसरा लाइनमन, जो स्टेशन की ओर वाली चौकी पर था, जवान ही था—दुबला-पतला सा, नसे उभरी हुई। एक बार लाइन पर दोनो की मुलाकात हो गई, सेम्योन ने टोपी उतारी, झुककर सलाम किया, बोला

"कहो भई पडोसी कैसे हो? मजे मे तो हो?"

पडोसी ने कनखियो से उसकी ओर देखा।

"नमस्ते!" और मुडकर वापस चल दिया। इसके बाद एक बार दोनो की बीवियो की मुलाकात हो गई। सेम्योन की अरीना ने पडोसिन को नमस्ते की उसने कोई बात नही की और चली गई। एक दिन सेम्योन ने उसे देखा, बोला

"क्या बात है, बीबी, मर्द तेरा बात ही नही करता?"

वह कुछ देर चुप रही। फिर बोली

"बाते क्या करे? हर किसी की अपनी जिंदगी है जाओ, तुम अपनी देखो।"

खैर, और एक महीना बीतते न बीतते दोनो की जान-पहचान हो गई। लाइन पर सेम्योन और वसीली मिलते, किनारे पर बैठ जाते, पाइप पीते और इधर-उधर की बाते करते। वसीली तो ज्यादातर चुप ही रहता, सेम्योन उसे अपने गाव की, लडाई की बाते बताता रहता। एक दिन सेम्योन बताने लगा

"उम्र तो मेरी खास कुछ नही, पर दुख बहुत देखे है मैने। सुख नही

मिला कही भी। आदमी की किस्मत मे जो लिखा होता ह बस वही मिलता है उसे। यही बाते हे, भाई मेरे।"

वसीली ने पाइप रेल पर ठोका और उठ खडा हुआ, बोला

"हमारे पर किम्मत की मार नही, लोगो की मार हे। इम दुनिया मे आदमी से बढकर दुष्ट जानवर और कोई नही। भेडिया भेडिये को नही खाता पर आदमी आदमी को जीते जी हडप जाता है।"

"नही, भाई मेरे। यह बात तो नही। भेडिया तो भेडिये को खा जाता है।

"वो तो मैने बात मे बात कह दी। पर फिर भी आदमी स कठोर कोई नही। अगर लोगो की दुष्टता और लालच न हो, तो चैन से जिया जा सकता है। हर कोई इसी ताक मे रहता है कि कैसे तुझे काट ले, हडप ले।'

सेम्योन सोच मे पड गया, फिर बोला

"पता नही, भैया। हो सकता हे, ऐसा ही हो। पर ऐसा है भी तो सब भगवान की मर्जी है।"

वसीली बोला

"अगर ऐसा हे, तो फिर मुझे तुमसे कोई बात नही करनी। हर अन्याय को भगवान की दुहाई देकर बैठे सहते रहो, तो फिर आदमी आदमी नही, जानवर है। मै तो यही कहूगा।"

और वह मुडकर चल दिया, नमस्ते भी नही की। सेम्योन भी उठ खडा हुआ, चिल्लाया

"वसीली, अरे नाराज क्यो होता है, भई!"

पर उसने मुडकर नही देखा और चलता गया। सेम्योन देर तक उसे जाता देखता रहा जब तक कि मोड पर वसीली आखो से ओझल नही हो गया। घर लौटकर बीवी से बोला

"कैसा पडोसी है हमारा, अरीना। आदमी नही ततैया है।"

पर खैर उनमे मन-मुटाव नही हुआ। अगले दिन फिर मिले और पहले की तरह बाते करने लगे, फिर वही चर्चा छिड गई।

"अरे भैया, अगर लोगो का जुल्म न होता, तो हम यहा इन चौकियो म न बैठे होते,' वसीली बोला।

चौकी भी क्या बुरी है जिया जा सकता है।"

"ओफ्फो, जिया जा मकता है जिया जा मकता है वहुत जिए, पर कुछ नही पाया, वहुत देखा, पर कुछ नही जाना। गरीब आदमी चाहे चौकी मे रहे या और कही, उसकी जिदगी जिदगी थोडे ही है! ये कमवख्त जीते जी खाते रहते है। मारा खून निचोड लेते है और जब बूढे हो जाओगे, तो फोक की तरह उठा फेकेगे सूअरो के खाने को। तुम्हे कितने पैसे मिलते है?"

"कोई खास नही, भैया। वस वारह रूवल ही।"

"मुझे साढे तेरह मिलते है। अब तुम यह वताओ कि क्यो? कायदे से सबको एक सी तनख्वाह मिलनी चाहिए महीने मे पद्रह रूवल और आग, दिया-बत्ती अलग से। किसने यह तय किया कि हमे वारह या साढे तेरह मिले? किसकी जेब मे वाकी तीन या डेढ रूवल जाते है, कौन इनमे अपना दोजख भरता है, तुम बताओ तो मुझे! और तुम कहते हो जिया जा सकता है! समझते क्यो नही, बात डेढ या तीन रूवल की नही। चाहे पूरे पद्रह ही क्यो न दे। अभी पिछले महीने मैं स्टेशन पर गया था। जनरल मैनजर जा रहा था देखा था मेने उमे। ऐमे भाग खुले थे मेरे कि दर्शन हुए उनके! अपना अलग वोगी मे साहब जा रहे है, प्लेटफार्म पर निकले, ठाठ से खडे है, तोद पर सोने की जजीरे लटक रही हैं, गाल लाल-सुर्ख खून पी-पीकर लाल हो गया, साला। ओह अगर इन हाथो मे ताकत हो! नही, मै यहा नही रहूगा, चला जाऊगा कही, जिधर भी सिर उठेगा।"

"कहा जाएगा, भाई मेरे! रोटी को लात मारकर कोई रोटी ढूढता है क्या? यहा पर तुझे घर भी मिला हुआ है, जाडो मे घर गरमाने को लकडी है और थोडी-वहुत जमीन भी है! औरत तो तेरी मेहनती है "

"क्या जमीन है! तुम आकर देखो तो मेरी जमीन। एक ठूठ तक नही उगता। वसत मे मैंने वदगोभी उगाने की सोची थी, तो फोरमैन आ निकला, चिल्लाने लगा 'यह क्या करते हो। रपट क्यो नही दी? विना इजाजत के क्यो वोई? उखाडो अभी, इमका नामोनिशान तक न रहे यहा।' पिए हुए था साला। और कोई मौका होता तो कुछ भी न कहता, पर उस दिन भूत सवार था उस पर 'तीन रूवल जुर्माना!'"

वसीली चुप हो गया पाइप के दो कश खीचे फिर धीरे से बोला

"बस थोडी देर की और कसर थी, साले का काम तमाम कर दिया होता।"

"अरे भैया, बडा क्रोधी है तू!"

"क्रोधी-वोधी कुछ नही, मैं सच बात करता हू, सब समझता हू अच्छी तरह। खैर मैं भी उस लाल थूथने को मजा चखाके रहूगा। डिवीजन मैनेजर से शिकायत करूगा। देख लेना!"

और सचमुच ही उसने शिकायत की।

एक बार डिवीजन मैनेजर रास्ते की जाच-पडताल करने आया। उसके तीन दिन बाद पीटर्सबर्ग से कुछ बडे साहब इस्पेक्शन करने आनेवाले थे, सो उससे पहले सब कुछ ठीक-ठाक करना था। रोडी-वोडी डाल दी, सब बराबर कर दिया, स्लीपर सारे देखे, कीले ठोक-ठाक दिए, ढिबरिया कस दी, खभो पर रग कर दिया, क्रासिगो पर पीली रेत डालने का हुक्म हुआ। पडोसिन लाइनमैन ने अपने बूढे को भी बाहर निकाल दिया — घास नोचने को। सेम्योन सारा हफ्ता डटकर काम करता रहा, सब कुछ ठीक-ठाक कर दिया, अपने कपतान की भी मरम्मत कर ली, धो-धा लिया और ताबे के बिल्ले को भी ईंट से रगड-रगडकर चमका लिया। वसीली भी काम मे जुटा हुआ था। डिवीजन मैनेजर ट्राली पर आया, चार मजदूर हैडल घुमाते थे, गियर सर-सर करते, घटे भर मे ट्राली पद्रह मील पार कर लेती। सेम्योन ने सावधान खडे होकर सिपाही की तरह रपट दी। सब कुछ ठीक-ठाक निकला।

"कब से है तू यहा?" मैनेजर ने पूछा।

"दूसरी मई से, हजूर।"

"अच्छा। शुक्रिया तेरा। एक सौ चौसठ नम्बर मे कौन है?"

फोरमैन भी उसके साथ ट्राली मे जा रहा था, बोला

"वसीली स्पिरीदव।"

"स्पिरीदव, स्पिरीदव यह वही है न, जिसके बारे मे तुमने पिछले साल कुछ कहा था।"

"जी, साहब, वही है।"

'अच्छा, देखते है इस वसीली स्पिगीदव को भी। चलो।"

मजदूर हैडल घुमाने लगे, ट्राली चल पडी।

सेम्योन उन्हे जाते देख रहा था और मन ही मन मोच रहा था "जरूर कोई तमाशा होगा वहा।"

दो घटे बाद वह लाइन का चक्कर लगाने निकला। देखता क्या है कि पटरी पर कोई चला आ रहा है, सिर पर सफेद सा कुछ नजर आ रहा है। सेम्योन ध्यान से देखने लगा – वसीली था। हाथ मे छडी पकडे हुए, कधे पर छोटी सी गठरी, गाल पर रुमाल बधा हुआ।

"कहा चल दिया, वसीली?" सेम्योन चिल्लाया।

वसीली बिल्कुल पास आ गया, उसका चेहरा एकदम उतरा हुआ था, चूने जैसे सफेद, आखे फटी-फटी, बोला, तो आवाज कापने लगी।

"शहर जा रहा हू मास्को बडे दफ्तर "

"बडे दफ्तर अच्छा! तो शिकायत करने जा रहा है? रहने दे, भैया, भूल जा यह सब! "

"नही, भैया, नही भूलूगा। भूलने का वक्त नही रहा अब। देख रहे हो, कैसे मुह पर मारा है, खूनोखून कर दिया। जब तक जिदा हू, ऐसे नही छोडूगा। इन खून चूसनेवालो को सबक सिखाना चाहिए।"

सेम्योन ने उसका हाथ पकड लिया

"रहने दो, वसीली, मै ठीक कह रहा हू कुछ बनने का तो है नही।"

"बने बनाएगा क्या! मुझे खुद ही पता है कि कुछ नही होना-होवाना, मच ही कह रहे थे तुम – जो किस्मत मे लिखा है। मेरा तो कुछ बनेगा नही, पर न्याय के लिए मै जरूर लडूगा।"

"तुम यह तो बताओ कि यह सब हुआ कैसे?"

"होना क्या था सब कुछ देख लिया उसने, ट्राली से उतरा, चौकी मे झाककर देखा। मे जानता था कि सख्ती से देखेगे, सब ठीक-ठाक कर रखा था। वह तो चलने ही वाला था, तभी मैं शिकायत लेकर बढा। वह बरस पडा 'हरामजादे यहा तो सरकारी इस्पेक्शन होनेवाला है और तुझे शिकायत करने की पडी है! यहा तो बडे-बडे साहब आनेवाले है और तुझे अपनी बदगोभी

की फिक्र है!' मुझसे रहा न गया, मुह से बात निकल गई, कोई खास नही, पर उसे बुरी लगी। कसके हाथ दे मारा ओफ, कमबख्त हमारा धीरज! यही पर उसे देता पर मै बुत बना खडा रहा, मानो ऐसे ही होना चाहिए। वे चले गए, तब होश आया, मुह धोकर चल दिया।"

"चौकी का क्या होगा?"

"बीवी तो है, सभाल लेगी। भाड मे जाए ये सब और इनकी रेल!"

वसीली उठा, चलने को हुआ।

"अच्छा तो, सेम्योन भैया! पता नही कही न्याय मिलेगा कि नही।"

"पैदल जाएगा क्या?"

"स्टेशन पर मालगाडी मे बैठ जाऊगा, कल मास्को पहुच जाऊगा।"

पडोसियो ने हाथ मिलाया, वसीली चला गया और कई दिनो तक उसकी कोई खबर न मिली। उसकी बीवी उसका सारा काम करती थी, रात-दिन नही सोती थी, मर्द की बाट जोहते-जोहते सूख गई। तीसरे दिन इस्पेक्शन की गाडी गुज़री इजन, माल डिब्बा और दो फर्स्ट क्लास के डिब्बे। वसीली अभी तक नही लौटा था। चौथे दिन सेम्योन ने उसकी बीवी को देखा चेहरा रो-रोकर फूल गया था, आखे लाल हो रही थी।

"लौट आया?" उसने पूछा।

वसीली की औरत ने हाथ झटक दिया, कुछ नही कहा और अपनी चौकी की ओर चली गई।

* * *

सेम्योन ने अपने लडकपन मे बेत की टहनियो से बासुरी बनानी सीखी थी। टहनी को अदर से गर्म सीख से खोखला कर लेता, फिर उसमे जहा छेद करने होते छेद कर लेता, एक सिरे पर डाट लगा देता और ऐसी बढिया बासुरी बना देता कि जो चाहे बजाओ। खाली समय मे वसीली बहुत सी बासुरिया बना लेता था और अपने एक जान-पहचान के मालगाडी के गार्ड के साथ शहर भेज देता था। वहा बाजार मे वे दो-दो कोपेक की बिक जाती थी। इस्पेक्शन के बाद तीसरे दिन शाम को उसने घरवाली को छह बजे की गाडी को झडी

दिखाने को छोडा और खुद चाकू लेकर जगल को चल दिया, टहनिया काटने। वह अपने टुकडे के आखिर तक पहुचा – उस जगह रेल लाइन मे तेज घुमाव था, वहा से नीचे उतरकर वह जगल-जगल चल दिया। कोई डेढ फर्लांग दूर एक दलदल था, ओर उसके पास बासुरियो के लिए बहुत अच्छी झाडिया उगती थी। उसने ढेर सारी टहनिया तोडकर गट्ठर बाधा और घर को चल दिया। वह जगल-जगल जा रहा था, सूरज क्षितिज की ओर झुक रहा था, जगल मे सन्नाटा था, बस चिडियो के चहकने और पैरो तले सूखी लकडियो के चटखने की आवाज आ रही थी। सेम्योन काफी दूर आ गया था, अब रेल लाइन आने ही वाली थी। सहसा उसे लगा कि और कोई आवाज भी आ रही है, मानो कही लोहे से लोहा टकरा रहा हो। सेम्योन तेज-तेज चलने लगा। उन दिनो उनके हिस्से मे पटरी की कोई मरम्मत-वरम्मत तो होनेवाली नही थी।

"क्या है यह सब?" मन ही मन वह सोच रहा था। जगल के बाहर पहुचा – सामने रेल लाइन का पुश्ता था, ऊपर एक आदमी उकडू बैठा कुछ कर रहा था, सेम्योन चुपके-चुपके उसकी ओर चढने लगा सोचा कोई ढिबरिया चुराने आया है। पर देखता क्या है कि वह आदमी भी खडा हो गया, उसके हाथो मे सब्बल था, उसने सब्बल पटरी तले अटकाया और झटके से पटरी एक ओर को खिसका दी। सेम्योन की आखो आगे अधेरा छा गया, चिल्लाना चाहता था, पर आवाज़ नही निकल रही थी। देखा – ऊपर वसीली था, दौडने लगा, पर वसीली सब्बल और चाबी लेकर दूसरी ओर ढलान पर लुढक गया।

"वसीली, अरे, भैया रे। लौट आ, रे, लौट आ! दे दे मुझे सब्बल। आ जा, रेल जोड दे, किसी को कुछ पता नही चलेगा। लौट आ! क्यो अपने सिर ऐसा पाप लेता है।"

वसीली नही मुडा, जगल मे चला गया।

सेम्योन उखडी पटरी पर खडा था, टहनियो का गट्ठर उसके हाथो से गिर गया। गाडी आनेवाली थी, वह भी मालगाडी नही सवारी गाडी। उसे रोका भी नही जा सकता झडी नही है। पटरी ठीक की नही जा सकती, खाली हाथो कीले तो ठुकेगे नही। दौडकर चौकी पर जाना चाहिए, जल्दी से। हे भगवान, मदद करो!

सेम्योन अपनी चौकी की ओर दौडा, सास फूल गई, बस अभी गिरा कि गिरा। जगल पार किया, चौकी मुश्किल से दो-ढाई सौ गज दूर थी। तभी फैक्टरी का भोपू बजा। छह बज गए! छह बजकर दो मिनट पर गाडी गुजरेगी। हे भगवान! निर्दोष जानो को बचाओ! सेम्योन की आखो के सामने यह नजारा घूम गया इजन का बाया पहिया उखडी पटरी से टकराएगा, इजन काप उठेगा, एक ओर को झुकेगा और स्लीपरो के चीथडे करता चला जाएगा, और आगे तेज घुमाव है और ढलान भी, नीचे पूरे पच्चीस गज तक, उधर तीसरे दर्जे मे लोग ठसाठस भरे हुए है, छोटे-छोटे बच्चे अभी वे सब बैठे होगे, बेखबर! हे भगवान, में क्या करू! नही, चौकी तक जाने और लौटने का वक्त नही रहा।

सेम्योन उल्टे पाव वापस दौड चला, पहले से भी तेज। बदहवास सा दोडता जा रहा था, उसे खुद भी पता नही था क्या करेगा। उखडी पटरी पर गट्ठर पडा हुआ था। झुककर एक टहनी निकाल ली, खुद को भी पता नही किसलिए, और आगे दौड चला। उसे लगा, गाडी आ रही है। दूर से सीटी सुनाई दी, पटरिया धीरे-धीरे कापने लगी थी आगे दौडने की हिम्मत नही रही, उस भयानक जगह से सौ गज दूर रुक गया तभी दिमाग मे एक विचार कौधा। उसने टोपी उतारी, उसमे तह करके रखा सफेद सूती रूमाल निकाला, घुटनो तक ऊचे बूट मे से चाकू निकाला, छाती पर सलीब का निशान बनाया हे भगवान, तेरा आसरा है।

उसने बाए बाजू मे कोहनी से ऊपर चाकू घोप दिया, खून की धार फूटी, गर्म-गर्म खून, उसमे उसने रूमाल भिगोया, उसे खोला, टहनी पर बाधा और लाल झडी ऊपर उठा ली।

खडा-खडा वह लाल झडी हिला रहा था, गाडी दिखाई दे रही थी। इजन ड्राइवर उसे नही देख रहा था, पास आ गया, तो सौ गज मे इतनी भारी गाडी रोक न पाएगा!

उधर खून बहता ही जा रहा था, वह घाव को बगल से दबा रहा था, पर खून रुक नही रहा था, गहरा घाव हो गया था। सिर चकराने लगा, आखो आगे तितरिया सी नाचने लगी, फिर बिल्कुल अधेरा छा गया, कानो

मे जैसे घडियाल गूज रहे हो। उसे न गाडी दिख रही थी, न उसकी आवाज़ सुनाई दे रही थी, दिमाग मे बस एक ही विचार घूम रहा था "खडा नही रह सकूगा, गिर जाऊगा, झडी छूट जाएगी, गाडी मेरे ऊपर से निकल जाएगी हे भगवान, मदद करो, किसी को भेज दो "

आखो मे घुप्प अधेरा छा गया, मन मे सन्नाटा और झडी उसके हाथ से निकल गई। पर खून से रगी पताका ज़मीन पर नही गिरी एक हाथ ने आगे बढकर उसे पकड लिया और ऊचा उठा लिया, बढती आ रही गाडी के सामने हिलाने लगा। इजन ड्राइवर ने पताका देख ली, रेगुलेटर बद किया, पीछे को भाप दी और गाडी रुक गई।

* * *

डिब्बो मे से लोग कूद-कूदकर बाहर निकले। भीड लग गई। सबने देखा खून से लथपथ आदमी बेहोश पडा हुआ है और उसके पास एक दूसरा – डडी पर खून मे भीगा कपडा पकडे।

वसीली ने नज़र घुमाकर सबको देखा और सिर झुका लिया।

"मुझे पकड लो, मैंने पटरी उखाडी है।"

लेव तोलस्तोय

कोहकाफ़ का बंदी

युद्ध और शाति तथा आना करेनिना जैसे विश्वविख्यात उपन्यासो के लेखक लेव तोनस्तोय (१८२८—१९१०) के जीवन के अनेक वर्ष बाल साहित्य की रचना और बच्चो की शिक्षा दीक्षा मे बीते। अपने एक पत्र मे उन्होने लिखा था "बच्चो और अध्यापन से मुझे गहरा लगाव है तोलस्तोय का जन्म अभिजात कुल मे हुआ। वह काउट थे, उनकी अपनी ज़मीदारी थी। अपनी जागीर यास्नया पल्याना मे उन्होने किसान बच्चो के लिए स्कूल खोला और वह स्वय ही उसमे पढाते थे। उन्होने शैक्षिक पत्रिका 'यास्नया पल्याना का प्रकाशन किया ओर १८७२ मे अपनी प्रसिद्ध 'अक्षरमाला' लिखी, जिसके साथ पाठमाला' (रीडर) की चार पुस्तके भी थी।

इन पुस्तको को लिखने के लिए तोलस्तोय ने विशेषत प्राचीन यूनानी भाषा सीखी अरबी और हिन्दी पढनी सीखी। अपनी 'पाठमाला' मे उन्होने शार्ल पेर्रो, ग्रीम बधुओ और हान्स एडरसन की कथाओ, अलिफ लैला' की कथाओ और रूसी लोक कथाओ को अपने शब्दो मे प्रस्तुत किया। तोलस्तोय दूसरे जनगण की आत्मिक सम्पदा से रूसी बच्चो को परिचित कराना चाहते थे। 'पाठमाला' की बहुत सी कहानिया उन्होने स्वय लिखी, जिनमे कोहकाफ का बदी भी है। यह कहानी दिखाती है कि ससार के सभी लोगो मे नेक भावनाए होती है, तथा यह कि विभिन्न जातियो के बीच वैमनस्य, शत्रुता और युद्ध कितने निरर्थक और अमानवीय है।

तोलस्तोय के जीवन काल मे ही उनकी 'अक्षरमाला' को रूस के जन विद्यालयो के लिए पाठ्य पुस्तक के रूप मे स्वीकार किया गया। आज तक सोवियत सघ मे सभी बच्चे 'कोहकाफ का बदी और तोलस्तोय की दूसरी कहानिया अवश्य पढते है। जन शिक्षा की एक विलक्षण कर्मी, लेनिन की बहन आन्ना उल्यानवा ने लिखा था इन कहानियो को उनकी अन्य रचनाओ की ही भाति हमारे साहित्य की स्वर्ण निधि मे स्थान मिलना चाहिए। किसी भी सच्ची कलात्मक रचना की भाति ये कहानिया पढकर सुख की अनुभूति होती है और इनका अकृत्रिम, सादगी भरा आकर्षण छोटी उम्र से ही सचेत पठन पाठन की इच्छा जगाता है।"

(१)

एक था साहब। उसका नाम था झीलिन। वह फौज मे अफसर था और काकेशिया मे तैनात था।

एक दिन उसे घर से चिट्ठी मिली। बूढी मा ने लिखा था "बेटा, मैं तो अब बिल्कुल बूढी हो चली। मरने से पहले बस एक बार अपने आख के तारे को देखना चाहती हू। आ जाओ बेटा, अपनी मा से विदा ले लो। मुझे दफनाके फिर से फौज मे नौकरी करने चले जाना। मैंने बहू भी देख रखी है समझदार है, सुदर है और अपनी जागीर भी है उसकी। तुम्हे पसद आ जाए, तो शादी-ब्याह भी हो जाए, फिर तो फौज मे लौटने की भी जरूरत न रहे।"

झीलिन सोच मे पड गया। मा सचमुच ही बहुत बूढी हो गई थी, ज़िदगी का कोई भरोसा नही, जाने फिर मिलना हो न हो। क्यो न चला जाए, और अगर लडकी अच्छी है, तो शादी भी की जा सकती है।

तब वह कर्नल के पास गया, उनसे छुट्टी ली, साथी अफसरो से विदाई

ली, अपने सिपाहियो को चार बाल्टिया वोद्का की दी और चलने को तैयार हो गया।

काकेशिया मे तब लडाई चल रही थी। रात हो या दिन रास्ते पर चलना खतरे से खाली नही था। कोई रूसी पैदल या घोडे पर ही किले से थोडी दूर निकल जाता, तो तातार उसे मार डालते या पकडकर पहाडो मे ले जाते। सो यह कायदा था कि हफ्ते मे दो बार एक किले से दूसरे किले मे गारद के साथ काफिला जाता था। आगे-पीछे सिपाही चलते थे और बीच मे लोग।

गर्मियो के दिन थे। सुबह-तडके किले के बाहर काफिला जमा हो गया, गारद के सिपाही आए और सब चल दिए। भीलिन घोडे पर जा रहा था और उसका सामान गाडी पर लदा हुआ काफिले के साथ आ रहा था।

अठारह मील का रास्ता था। काफिला धीरे-धीरे बढ रहा था। कभी सिपाही रुक जाते, कभी काफिले मे किसी की गाडी का पहिया उतर जाता या घोडा अड जाता और सबको रुककर इतजार करना पडता।

दोपहर हो चुकी थी, पर काफिला अभी आधा रास्ता ही तय कर पाया था। चिलचिलाती धूप थी, धूल उड रही थी। कही शरण लेने की जगह नही, चारो ओर स्तेपी थी, न कोई पेड, न झाडी।

भीलिन थोडा आगे बढ गया और रुककर इतजार करने लगा कि कब काफिला आए। तभी उसे बिगुल सुनाई दिया—काफिला फिर रुक गया था। भीलिन सोचने लगा "क्यो न मै अकेला ही चल दू, गारद के बिना ही? घोडा मेरा तेज है, अगर तातारो से सामना हो भी गया, तो भाग निकलूगा। जाऊ या न जाऊ?"

ऐसे ही खडा-खडा वह सोच रहा था। तभी घोडे पर सवार एक दूसरा अफसर कस्तीलिन वहा आया। उसके पास बदूक थी। वह बोला

"चलो, भीलिन अकेले ही चलते हैं। मुझ से अब नही रहा जाता, भूख लगी है, ऊपर से यह गर्मी। मै तो पसीने से तर हो गया।"

कस्तीलिन खासा भारी-भरकम था, गर्मी के मारे उसका मुह लाल हो रहा था और पसीना चू रहा था। भीलिन कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला

"बदूक मे गोलिया तो है?"

"है।"

"तो चलो, चलते है। पर एक बात है रास्ते मे अलग-अलग नही होना, साथ-साथ चलना होगा।"

बस वे दोनो आगे बढ चले। बाते करते, इधर-उधर नजर डालते हुए वे स्तेपी मे चले जा रहे थे। चारो ओर दूर-दूर तक दिखाई देता था। आखिर उन्होने स्तेपी पार कर ली, आगे रास्ता दो पहाडो के बीच से जाता था। झीलिन बोला

"पहाडी पर चढके देख लेना चाहिए नही तो अचानक कही पहाडी के पीछे से निकल आएगे, पता भी नही चलेगा।"

पर कस्तीलिन ने कहा

"देखना क्या है? चले चलो।"

झीलिन ने उसका कहना नही माना और घोडे को बाई ओर पहाडी पर चढा दिया। घोडा शिकारी था (झीलिन ने सौ रूबल मे बछेडा खरीदा था और खुद ही उसे निकाला था), हवा से बाते करते हुए वह पहाडी पर चढ गया। ऊपर पहुचते ही झीलिन ने क्या देखा कि उसके बिल्कुल सामने चारेक बीघा दूर घुडसवार तातार खडे है, कोई तीस लोग होगे। उन्हे देखते ही वह पीछे मुडा, तातारो ने भी उसे देख लिया, उसकी तरफ घोडे दौडा दिए और बदूके निकालने लगे। झीलिन घोडे को ढलान पर सरपट दौडाने लगा। उसने कस्तीलिन से चिल्लाकर कहा

"बदूक निकालो!" मन ही मन वह अपने घोडे से मिन्नत कर रहा था "ले चल, भैया, कही ठोकर न लेना, गिर गया, तो बस काम तमाम समझो। एक बार बदूक तक पहुच जाऊ, फिर मैं इनके हाथ नही आऊगा।"

कस्तीलिन इतजार करने के बजाय तातारो को देखते ही जान छोडकर किले की ओर दौडा। वह कभी इस बगल से कभी उस बगल से घोडे पर कोडे बरसाता जा रहा था। धूल के बादल मे बस घोडे की दुम हिलती नजर आ रही थी।

झीलिन ने देखा कि मामला गडबड है। बदूक चली गई, एक तलवार से वह क्या कर लेगा। उसने घोडे को वापस गारद की ओर घुमाया – सोचता था निकल जाएगा। पर देखा क्या कि उधर से उसका रास्ता काटने को छह

घुडसवार दौडे चले आ रहे है। उसका घोडा तेज था, पर उनके घोडे और भी ज्यादा तज़ थे और ऊपर से वे उसका रास्ता भी काट रहे थे। झीलिन ने घोडे को रोकना चाहा, दूसरी ओर मोडना चाहा, पर घोडा इतनी तेजी से दौडा जा रहा था कि रोका नही जा सकता था, वह सीधा तातारो की ओर बढता जा रहा था। झीलिन ने देखा कि सब्जे घोडे पर सवार लाल दाढी वाला तातार उसके पास आ रहा है। वह खीसे निपोडे हुए चीख रहा था, बदूक ताने हुए था।

झीलिन मन ही मन सोच रहा था "जानता हू मैं तुम कमबख्तो को अगर जिदा पकड लिया, तो गड्ढे मे डाल दोगे, कोडे मारोगे। नही, जीते जी मै तुम्हारे हाथ नही आनेवाला "

झीलिन था तो नाटा सा ही, पर बडा साहसी। उसने तलवार निकाली और घोडे को सीधे लाल तातार की ओर बढाया, सोच रहा था "या तो घोडे से कुचल दूगा, या तलवार से सिर उडा दूगा "।

एक घोडे का फासला रह गया, तभी पीछे से किसी ने गोली चला दी, गोली घोडे को लगी। घोडा धडाम से जमीन पर गिरा, झीलिन की टाग उसके तले दब गई।

झीलिन उठना चाहता था, पर दो तातार उसके ऊपर चढ गये थे, उसकी बाहे पीछे मरोड रहे थे। झीलिन ने झटके से उन्हे उतार फेका, पर तभी और तीन तातार घोडो से उतर आए, बदूको के कुदे उसके सिर पर मारने लगे। झीलिन की आखो आगे अधेरा छा गया टागे लडखडा गयी। तातारो ने उसे पकड लिया। जीनो पर लगे फालतू तग उतारे, उसकी बाहे पीठ पीछे मरोडकर तातारी गाठ बाध दी और घसीटते हुए काठी की ओर ले चले। किसी ने उसकी टोपी उतार ली, घुटनो तक ऊचे बूट खीच लिए, सारी जेबे टटोल-टटोलकर पैसे, घडी जो कुछ मिला निकाल लिया, कपडे फाड डाले। झीलिन ने अपने घोडे पर नजर डाली वह बेचारा जिस बल गिरा था, उसी बल पडा हुआ था, बस हवा मे टागे फेक रहा था, लेकिन टाप जमीन पर नही पड रहे थे। सिर मे छेद था और छेद मे से खून की धार फूट रही थी, चारो ओर हाथ भर मिट्टी खून से रग गई थी।

एक तातार घोडे के पास जाकर काठी उतारने लगा – घोडा टागे हवा

मे फेके जा रहा था। तातार ने छुरा निकाला और उसकी गर्दन काट दी। गर्दन से सू की आवाज निकली, घोडा छटपटाया और उसके प्राण पखेरु उड गए।

तातारो ने काठी उतार ली, साज उतार लिया। लाल दाढी वाला तातार घोडे पर सवार हो गया, दूसरो ने भीलिन को उठाकर उसकी काठी पर बिठा दिया, वह गिरे न, इसलिए उसकी कमर पर पेटी खीचकर तातार मे बाध दी। और फिर वे उसे पहाडो मे ले चले।

अब भीलिन तातार के पीछे बैठा धचके खा रहा था। उसका चेहरा तातार की पीठ से टकरा-टकरा जाता था। उसकी आखो के सामने बस तातार की चौडी पीठ थी, गर्दन की फूली हुई नसे या टोपी के नीचे से मुडी हुई टाड ही उसे नजर आ रही थी। भीलिन का सिर फूटा हुआ था, आखो के ऊपर खून जम गया था। न तो वह घोडे पर ठीक से होकर बैठ सकता था, न खून पोछ सकता था। हाथ इतने कसकर बाधे गए थे कि हसली मे दर्द हो रहा था।

बडी देर तक वे चलते रहे, एक पहाडी से दूसरी पर चढते-उतरते। एक नदी पाभ पर हलकर पार की। सडक पर पहुचे और तग घाटी मे होकर जाने लगे।

भीलिन रास्ता याद करना चाहता था कि उसे किधर ले जा रहे है, पर आखे खून मे सनी हुई थी और सिर भी नही घुमा सकता था।

भुटपुटा होने लगा। उन्होने एक और नदी पार की, फिर पथरीली पहाडी पर चढने लगे। धुए की गध आई, कुत्ते भौकने लगे। वे लोग गाव मे पहुच गए। तातार घोडो से उतर गए, उनके बच्चे जमा हो गए, उन्होने भीलिन को घेर लिया। खुशी से चीखते-चिल्लाते वे भीलिन को ककड मारने लगे।

तातार ने बच्चो को भगा दिया, भीलिन को घोडे पर से उतारा और नौकर को आवाज दी। एक नगाई* आया—गालो की हड्डिया उभरी हुई, कुर्ता मा पहने। कुर्ता फटा हुआ था, सारी छाती उघडी हुई थी। तातार ने उसे

---

* कावेशिया (कोहकाफ) मे बसनेवाली एक जाति। इन लोगो की भाषा तातारो से मिलती-जुलती है।—स०

कुछ कहा। नौकर बेडी लाया बलूत की लकडी के दो कुन्दे, उन पर लोहे के कडे लगे हुए, एक कडे मे कुडा और ताला लगा हुआ।

झीलिन के हाथ खोलकर पैरो मे बेडी चढा दी और कोठरी मे ले गया, उसे कोठरी मे धकेलकर बाहर से दरवाजा बद कर दिया। झीलिन गोबर पर गिरा। अधेरे मे टटोलते हुए उसने नरम जगह ढूढी और लेट गया।

(२)

उस रात झीलिन सो नही सका। राते छोटी थी। उसने देखा दरार मे उजाला हो रहा है। उठकर दरार के पास गया, कुरेदकर दरार बडी की और देखने लगा।

दरार मे से उसे सडक दिखाई दे रही थी, जो पहाडी के नीचे चली गई थी। दाई ओर तातारो का घर था, उसके पास दो पेड उग रहे थे। दहलीज पर काला कुत्ता लेटा हुआ था, बकरी मेमनो के साथ टहल रही थी, वे सब दुम हिला रहे थे। झीलिन ने देखा ढलान पर से जवान तातार औरत चढी आ रही थी, वह रग-बिरगी, खुली कमीज और सलवार पहने थी, पावो मे घुटनो तक ऊचे बूट थे, सिर कफ्तान से ढका हुआ था और सिर पर टीन की झज्झर थी, पानी से भरी हुई। चलते हुए उसकी कमर लचक रही थी। सिर मुडे लडके की उगली पकडे उसे साथ लिए जा रही थी, लडके ने बस एक कुर्ता ही पहन रखा था। पानी उठाए तातार औरत घर मे चली गई। घर मे से तातार निकला – वही कल वाला, लाल दाढी वाला। उसने रेशमी अगरखा पहन रखा था, कमरबद पर चादी के काम वाला खजर लटक रहा था, बिना जुराबो के ही जुतिया पहन रखी थी। सिर पर ऊची टोपी थी, काली भेड की खाल की, पीछे को मोडी हुई। बाहर निकलकर उसने अगडाई ली, अपनी लाल दाढी सहलाई। थोडी देर खडा रहा, फिर नौकर से कुछ कहा और कही चल दिया।

दो लडके घोडो पर सवार नदी की ओर गए। फिर कुछ और सिर मुडे लडके घरो से बाहर निकले, सब निरा कुर्ता पहने, नगे पैर थे। वे एक झुड मे खडे हो गए, फिर कोठरी के पास आए, दरार मे तिनके डालने लगे। झीलिन

ने जोर से आवाज की, वच्चे चीखे और भाग उठे, वस उनके नगे घुटने ही चमकते रहे।

भीलिन को प्यास लगी थी, गला सूख रहा था। वह मन ही मन कह रहा था कोई खबर लेने ही आ जाता। तभी उसे कोठरी खुलने की आवाज सुनाई दी। लाल तातार आया और उसके साथ एक काला तातार भी, उससे थोडे छोटे कद का आखे काली-काली, लाल गाल, छोटी सी, छटी हुई दाढी। चेहरे मे खुशमिजाज लगता था, हसता जा रहा था। इसने और भी अच्छे कपडे पहने रखे थे नीला अगरखा, जिस पर डोरिया लगी हुई थी, कमर पर चादी के काम वाला खजर लटक रहा था। पैरो मे पतले चमडे की लाल जूतिया पहने था—जरी के काम वाली और उनके ऊपर मोटे जूते। सिर पर सफेद भेड की ऊची टोपी।

लाल तातार अदर आया, कुछ वोला, मानो नाराज हो रहा हो और भरेठ का सहारा लेकर खडा हो गया। खजर हिलाता हुआ और भौहे सिकोडकर खूख्वार भेडिये की तरह भीलिन को देखने लगा। काला तातार बडा तेज था, लपकता हुआ चलता था। भीलिन के पास आ गया, उकडू होकर बैठ गया, खीसे निपोड ली, भीलिन का कधा थपथपाने लगा और जल्दी-जल्दी अपनी भाषा मे कुछ बोलने लगा, साथ मे आख मारता जाए, जीभ से च-च करे और वीच-वीच मे बोलता जाए "अच्छा उरूस*। अच्छा उरूस!"

भीलिन कुछ नही समझा, वोला "पानी दो, पानी।"

काला हसता जा रहा था। "अच्छा उरूस," अपनी बोली मे वोलता जा रहा था।

भीलिन ने होठो और हाथो से दिखाया कि उसे प्यास लगी है।

काला तातार समझ गया, हस पडा, दरवाजे की ओर देखा और किसी को पुकारा 'दीना!'

एक लडकी भागी आई दुवली पतली, कोई तेरह साल की, शक्ल-सूरत

---

* तातार रूसियो को उरूस कहते थ और उनके लिए हर रूसी का नाम इवान था।—स०

बिल्कुल काले तातार जैसी। उसकी बेटी ही होगी। उसकी आखे भी काली, चमकदार थी और चेहरा सुदर। लबी, नीली कमीज पहने थी, चौडी बाहो वाली ओर कमरबद के बिना। कमीज के दामन, छाती और बाजुओ पर लाल गोट लगी हुई थी। सलवार पहने थी। पैरो मे पतली जूतिया और उनके ऊपर ऊची एडी की दूसरी मोटी जूतिया। गले में पचास कोपेक के रूसी सिक्को की हवेल। सिर नगा था, काली चोटी और चोटी मे रिबन गुथा हुआ, रिबन पर पतरिया और चादी का रूबल लगा हुआ था।

बाप ने उसे कुछ कहा। वह दौडी गई और फिर लौट आई, जस्ते की सुराही लाई। झीलिन को पानी दिया और खुद उसके सामने उकडू बैठ गई ऐसे गठरी बन गई कि कधे घुटनो से नीचे हो गए। आखे फाड-फाडकर देखने लगी कि कैसे झीलिन पानी पी रहा है, मानो वह कोई जानवर हो।

झीलिन ने उसे सुराही लौटाई। वह जगली बकरी की तरह उछलकर पीछे हटी। उसका बाप भी हस पडा। फिर उसे कही भेज दिया। उसने सुराही उठाई और दौडी गई। गोल पटरी पर फीकी रोटी लाई, फिर बैठ गई, गठरी बन गई, टकटकी लगाकर झीलिन को देखती जाए।

तातार चले गए, दरवाजा बद कर गए।

थोडी देर बाद नगाई आया, बोला

"ऐ, मालिक, ओ-ओ!"

उसे भी रूसी नही आती थी। पर झीलिन समझ गया कि कही जाने को कह रहा है।

झीलिन बेडी पहने चल दिया, लगडाता जाए, पैर नही रखा जा रहा था – एक ओर को मुड-मुड जाता था। झीलिन नगाई के पीछे-पीछे बाहर निकला। देखा दसेक घरो का गाव है और मीनार वाली मस्जिद। एक घर के पास तीन घोडे खडे थे – जीन कसे हुए। लडको ने लगामे पकड रखी थी। उस घर से काला तातार निकला, हाथ हिलाने लगा कि झीलिन उधर आए। हसता जा रहा था और अपनी बोली मे कुछ बोल रहा था, फिर दरवाजे में घुस गया। झीलिन घर के अदर गया। बैठक अच्छी थी, दीवारो पर चिकनी मिट्टी से पुताई की हुई थी। सामने की दीवार के आले मे रग-बिरगे तकियो का ढेर

लगा हुआ था, अगल-बगल कीमती कालीन टगे हुए थे, कालीनो पर बदूके, पिस्तौले, सब पर चादी का काम। एक दीवार मे फर्श के पास ही अगीठी बनी हुई थी। फर्श भी मिट्टी का था, बिल्कुल साफ, सामने के सारे कोने मे नमदा बिछा हुआ था नमदे पर कालीन और उन पर परो के तकिये। कालीनो पर पतली जूतिया पहने तातार बैठे थे काला, लाल और तीन मेहमान। सब की पीठ पीछे मसनद तकिये थे। उनके सामने गोल पटरे पर बाजरे की टिकिया रखी थी और एक प्याले मे पिघला हुआ मक्खन। सुराही मे तातारो की बियर रखी थी—बूजा। वे हाथो से खा रहे थे, उगलिया मक्खन मे सनी हुई थी।

काला तातार खडा हो गया, भीलिन को एक ओर बिठाने को कहा, कालीन पर नही, नगे फर्श पर। फिर से वह कालीन पर जा बैठा, मेहमानो को टिकिया और बूजा देने लगा। नौकर ने भीलिन को उसकी जगह पर बिठा दिया, खुद ऊपर के जूते उतारे, उन्हे दरवाजे के पास रखा, जहा दूसरो के जूते भी रखे हुए थे और मालिको के पास नमदे पर बैठ गया, उन्हे खाते देखता जाए और लार टपकाता जाए।

तातारो ने टिकिया खा ली। एक औरत आई, लडकी जैसी ही सलवार-कमीज पहने, सिर पर कसाबा बाधे थी। वह मक्खन और टिकिया ले गई, लकडी की चिलमची और पतली टोटी वाली सुराही लाई। तातार हाथ धोने लगे, फिर घुटनो के बल बैठ गए, हाथ जोडे, चारो ओर फूक मारी और दुआ पढी। आपस मे बाते करने लगे। फिर मेहमानो मे से एक तातार भीलिन की ओर मुडा और रूसी मे बोलने लगा

"तुझे काजी मुहम्मद ने पकडा है," लाल तातार की ओर इशारा किया, "और अब्दुल मुराद को दे दिया," काले तातार की ओर दिखाया, "अब अब्दुल मुराद तेरा मालिक है।"

भीलिन चुप बैठा रहा। अब्दुल मुराद बोलने लगा, बार बार भीलिन की ओर दिखाता जाए और हसता जाए, बोला "उरूस सिपाही अच्छा उरूस"। दुभाषिया बोला "वह कहता है तू घर चिट्ठी लिख, ताकि तेरे बन्ने पैसे भेज। जब पैसे आ जाएगे, तो वह तुझे छोड देगा।"

भीलिन कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला

"कितने पैसे चाहता है?"

तातार बाते करने लगे, दुभाषिया बोला

"तीन हजार सिक्के।"

"नही, इतने मैं नही दे सकता," झीलिन ने जवाब दिया।

अब्दुल उछलकर खडा हो गया, हाथ हिलाने लगा और झीलिन से कुछ कहने लगा – सोच रहा था कि वह समझ जाएगा। दुभाषिये ने बताया "कितना देगा तू?" झीलिन सोचता रहा, फिर बोला "पाच सौ रूबल"। सब तातार एकसाथ जल्दी-जल्दी बोलने लगे। अब्दुल लाल तातार पर चिल्लाने लगा, ऐसे जोर-जोर से गिटपिट करने लगा कि मुह से थूक निकलने लगी। लाल तातार बस आखे सिकोडता जाए और जीभ से च-च करता जाए।

वे चुप हो गए तो दुभाषिये ने कहा

"मालिक के लिए ५०० रूबल थोडे है। उसने खुद तेरे बदले २०० दिए है। काजी मुहम्मद उसका कर्जदार था। उसने तुझे कर्जे के बदले लिया है। तीन हजार रूबल से कम नही हो सकता। नही लिखेगा, तो तुझे गड्ढे मे बिठा देगे, कोडो से सजा मिलेगी।"

झीलिन ने मन ही मन सोचा "इनके आगे झुकने से तो और बुरा ही होगा।"

वह उठ खडा हुआ और कहने लगा

"तू उससे कह दे कि अगर वह मुझे डराना चाहता है, तो एक कोपेक भी नही दूगा और घर लिखूगा भी नही, मैं तुम लोगो से न कभी डरा हू, न डरूगा।"

दुभाषिये ने उसकी बात उन्हे बता दी, फिर सब एकसाथ बोलने लगे। बडी देर तक गिटपिट करते रहे, फिर काला तातार उठा, झीलिन के पास आया, कहने लगा

"उरूस जिगीत, जिगीत उरूस!'

जिगीत का उनकी बोली मे मतलब है बडा अच्छा है। तातार खुद हसता जा रहा था, उसने दुभाषिये से कुछ कहा और वह बोला

"चल, एक हजार दे दे।"

झीलिन अपनी बात पर अड गया "५०० रूबल से ज्यादा नही दूगा। अगर मार डालोगे, तो कुछ भी नही पाओगे।"

तातारो ने आपस मे बात की, नौकर को कही भेजा और खुद कभी झीलिन और कभी दरवाजे की ओर ताकने लगे। नौकर आया, उसके पीछे कोई मोटा सा आदमी चला आ रहा था—नगे पैर, फटे हाल, उसके पाव मे भी बेडी थी।

झीलिन देखकर दग रह गया। कस्तीलिन को पहचान गया। उसे भी पकड लिया था। दोनो को उन्होंने पास-पास बिठा दिया। वे दोनो एक दूसरे को आपबीती बताने लगे, तातार चुपचाप उन्हे देखते रहे। झीलिन ने उसके साथ जो कुछ हुआ था बताया। कस्तीलिन ने बताया कि उसका घोडा अड गया, बदूक भी चली नही, और बस इसी अब्दुल ने उसे जा पकडा था।

अब्दुल उचककर खडा हुआ, कस्तीलिन की ओर इशारा कर-करके कुछ कहने लगा। दुभाषिये ने बताया कि अब वे एक ही मालिक के है, जो पहले पैसे देगा, वही पहले छूट जाएगा। झीलिन से कहने लगा

"देख, तू गुस्सा करता है, और तेरा साथी ठडे मिजाज का है, उसने घर लिख दिया है, पाच हजार सिक्के भेजेगे। अब उसे खाना भी अच्छा मिलेगा और तग भी नही करेगे।"

झीलिन ने जवाब दिया

"साथी जो चाहे करे हो सकता है वह अमीर हो, पर मै अमीर नही। जैसे मैने कह दिया, वही होगा। जी मे आए तो मार डालो, तुम्हारे हाथ कुछ लगने का नही। पर मैं ५०० से ज्यादा नही लिखूगा।"

सब चुप रहे। फिर अब्दुल झटके से उठ खडा हुआ, सदूकची ली, उसमे से कलम निकाली, कागज का टुकडा और स्याही, झीलिन को सब दिया और उसके कधे पर हाथ मारा, हुक्म दिया "लिख"। राजी हो गया पाच सौ पर।

"ठहर जा," झीलिन ने दुभाषिये से कहा, "तू इससे कह दे कि हमे खाना अच्छा दे और ढग के जूते-कपडे भी कि हमे इकट्ठा रखे—ऐसे हम अच्छे रहेगे, और हमारी बेडिया भी उतार दे", कहते हुए वह मालिक की ओर देखकर हसता जा रहा था। मालिक भी हस रहा था। उसने सारी बात सुनी और बोला

"कपडे वहुत वढिया दूगा चोगा भी आर ऊचे वूट भी, ऐसे कि पहनकर शादी कर सको। अगर इकट्ठा रहना चाहते है तो रहे कोठरी मे। पर बेडी नही उतारी जा सकती – भाग जाएगे। रात को सिर्फ उतार दिया करेगे।" उठा और झीलिन का कधा थपथपाया। "तेरा अच्चा, मेरा अच्चा!"

झीलिन ने चिट्ठी लिख दी, पर पता ठीक नही लिखा। मन ही मन सोचा "भाग जाऊगा।"

झीलिन और कस्तीलिन को कोठरी मे ले जाया गया। उनके लिए करबी ले आए, दो पुराने चोगे और घुटनो तक ऊचे वूट, सिपाहियो के। मारे गए सिपाहियो के उतारे हुए होगे। रात को उनकी बेडिया उतारकर उन्हे कोठरी मे वद कर दिया।

(३)

झीलिन और उसका साथी महीने भर ऐसे ही रहे। मालिक जब देखता, हसता "तू इवान अच्वा, हम अब्दुल अच्चा!" खाना जैसा-तैसा ही देता था – सिर्फ वाजरे की फीकी रोटिया और वे भी कभी कच्ची, कभी पकी हुई।

कस्तीलिन ने एक बार और घर चिट्ठी लिखी, बस इसी इतजार मे रहता था कि कब पैसे आए। सारा-सारा दिन कोठरी मे बैठा दिन गिनता रहता था कि कब चिट्ठी आएगी या सोता रहता था। झीलिन जानता था कि उसकी चिट्ठी घर तक नही पहुचेगी और दूसरी चिट्ठी उसने लिखी नही।

वह सोचता था "मा के पास इतने पैसे कहा से आएगे? वैसे ही मैं जो भेजता था, उसी से उसकी गुज़र होती थी। ५०० रूबल जमा करने के लिए तो उसे कगाल होना पडेगा, खुद ही किसी तरह निकल जाऊगा।"

खुद वह हर वक्त इसी ताक मे रहता था कि कैसे भागा जा सकता है।

गाव मे सीटी वजाता घूमता रहता, या बैठा-बैठा कुछ बनाता रहता कभी चिकनी मिट्टी से गुडिया बना देता, कभी बेल की टहनियो से कोई चीज। झीलिन ऐसे काम करने मे होशियार था।

एक दिन उसने गुडिया बनाई, छोटी सी नाक, बाहे और टागे भी, तातारो जैसी ही कमीज और छत पर उसे सुखाने को रख दिया। तातार लडकिया पानी लेने चली। मालिक की बेटी दीना ने गुडिया देख ली, दूसरी लडकियो को बुलाया। सबने झज्झरे उतार कर रख दी गुडिया देखती जाए और हसती जाए। झीलिन ने गुडिया उतारकर उनकी ओर बढाई। वे हसती जाए, पर लेने की हिम्मत न करे। गुडिया वही रखकर वह कोठरी मे चला गया, चुपके चुपके देखने लगा, अब क्या होगा?

दीना दौडी दौडी आई, इधर-उधर देखा, गुडिया उठाई और भाग गई।

अगले दिन सुबह उसने देखा दीना गुडिया उठाए दहलीज पर आई। गुडिया को उसने लाल चिथडो से सजा लिया था और अब बच्चे की तरह गोद मे झुला रही थी, अपनी बोली मे लोरी सुना रही थी। एक बुढिया बाहर निकली, उसे डाटने लगी, गुडिया छीनकर तोड डाली और दीना को कुछ काम करने भेज दिया।

झीलिन ने एक और गुडिया बनाई, पहली से भी अच्छी और दीना को दे दी। एक दिन दीना सुराही लेकर आई, उसके पास रख दी, बैठकर उसकी ओर देखने लगी, सुराही की ओर इशारा करके हसती जाए।

"इतनी खुश क्यो हो रही है?" झीलिन ने सोचा। सुराही उठाई और पीने लगा। उसने सोचा था पानी होगा, पर उसमे दूध था। झीलिन ने दूध पी लिया और बोला "आहा! बहुत अच्छा!" कितनी खुश हुई दीना!

"अच्छा इवान, अच्छा!" उछलकर तालिया बजाने लगी। सुराही छीनी और भाग गई।

तब से वह रोजाना उसके लिए चुपके-चुपके दूध लाने लगी। तातार बकरी के दूध का पनीर बनाकर उसे मोटी रोटियो की शक्ल मे छत पर सुखाते है। कभी-कभी दीना ऐसी रोटी भी चुपके से ले आती थी। एक बार मालिक के घर भेड कटी, दीना बाजू मे छिपाकर मास का टुकडा ले आई। बस फेक देती और भाग जाती।

एक दिन खूब बादल गरजे, घटे भर तक मूसलाधार बारिश होती रही। सारी नदिया उफनने लगी। जहा पाझ थी, वहा तीन-तीन फुट पानी हो गया,

पत्थर बहते जाए। हर जगह पानी की धारे वह रही थी, पहाडो मे खूब शोर हो रहा था। जब बारिश रुकी, तो गाव मे जगह-जगह पानी बह रहा था। झीलिन ने मालिक से चाकू माग लिया, लकडी छील-काटकर धुरी, गोल पटरिया और चक्के बनाए, चक्को पर पर लगा दिए और पहिए के दोनो ओर गुडिया बना दी।

लडकिया चीथडे ले आई, उसने गुडियो को कपडे पहना दिए – एक आदमी बन गया, एक औरत, उन्हे ठीक तरह जोडा और पहिया पानी की धार पर रख दिया। पहिया घूमे और गुडिया उछले।

सारा गाव जमा हो गया लडके, लडकिया, औरते और तातार भी, जीभ से चटखारे भरते जाए

"वाह, उरूस, वाह, इवान!"

अब्दुल के पास रूसी घडी थी, खराब हो गई थी। उसने झीलिन को बुलाया, घडी दिखाई और च-च करने लगा। झीलिन बोला

"लाओ, ठीक कर दू।"

घडी लेकर उसे चाकू से खोल डाला, एक-एक पुर्जा अलग किया, फिर जोड दिया और दे दी। घडी चलने लगी। मालिक खुश हो गया, अपना पुराना, फटा हुआ अगरखा लाकर उसे दे दिया। क्या करता, ले लिया और कुछ नही तो रात को ओढने के काम आएगा।

तब से झीलिन की मशहूरी हो गई कि वह अच्छा कारीगर है। दूर के गावो से भी लोग आने लगे, कोई बदूक या पिस्तौल का घोडा ठीक कराने, कोई घडी ठीक कराने। मालिक ने उसे औजार ला दिए चिमटी, बरमा, रेती।

एक बार एक तातार बीमार पड गया, झीलिन को बुलाया गया "चल, इलाज कर!" झीलिन को कुछ पता नही था कैसे इलाज-विलाज किया जाए। गया, तातार को देखा और मन ही मन सोचा 'कौन जाने अपने आप ही ठीक हो जाए।" कोठरी मे चला गया, थोडा पानी लिया और उसमे रेत मिला दी। तातारो के सामने पानी पर मत्र पढ दिया और बीमार को पिला दिया। उसकी खुशकिस्मती से तातार ठीक हो गया।

झीलिन उनकी बोली भी थोडी-थोडी समझने लगा। जो तातार उसके कुछ आदी हो गए थे, उन्हे जब जरूरत पडती, पुकारते "इवान, इवान!" कुछ ऐसे भी थे जो तिरछी नजरो से ऐसे देखते थे जैसे वह कोई जानवर हो।

लाल तातार को झीलिन फूटी आखो न सुहाता था। उसे देखते ही वह मुह मोड लेता या गाली देता। एक और बूढा था उनके यहा। वह गाव मे नही रहता था पहाडी के नीचे से कही से आता था। वह मस्जिद मे नमाज पढने जब आता, तभी झीलिन उसे देखता। कद उसका छोटा था, टोपी पर सफेद दुपट्टा बधा हुआ था, दाढी और मूछे छटी हुई थी, बिल्कुल सफेद थी। चेहरा सारा झुर्रियो से भरा था और ईट सा लाल। नाक उसकी बाज जैसी थी और आखे सुरमई, कठोरता भरी, मुह मे बस दो दात रह गए थे। वह अपनी पगडी पहने, बैसाखी का सहारा लिए चलता आता और खूंख्वार भेडिये की तरह इधर-उधर घूरता जाता। झीलिन को देखते ही, गुर्राने लगता और मुह मोड लेता।

एक दिन झीलिन पहाडी उतरकर देखने गया कि बूढा कहा रहता है। पगडडी पर नीचे उतरा, देखा, पत्थरो की बाड के पीछे बाग है, बाग मे चैरी और दूसरे फलो के पेड लगे हुए है। और बीच मे सपाट छत वाला मकान। और पास गया, देखा, पयाल के बने मधुमक्खियो के छत्ते रखे हुए है और मधुमक्खिया उड रही है, भिनभिना रही है। बूढा घुटनो के बल खडा छत्ते के पास कुछ कर रहा है। झीलिन ने उचककर देखना चाहा, बेडी की आवाज हुई। बूढे ने पलटकर देखा और चीख उठा, कमरबद से पिस्तौल निकाली और झीलिन पर गोली चला दी। झीलिन मुश्किल मे पत्थर के पीछे झुक पाया।

बूढे ने आकर मालिक से शिकायत की। मालिक ने झीलिन को बुलाया, हसते-हसते पूछा

"तू क्यो गया था इसके घर?"

"मैंने इसका कुछ बिगाडा नही। मैं तो बस देखना चाहता था कि यह कैसे रहता है।"

मालिक ने बूढे को बताया। बूढा गुस्मे से लाल-पीला होता जाए, गिटपिट करता जाए, नुकीले दात बाहर निकल आए, झीलिन की ओर हाथ झटकाता जाए।

झीलिन सारी बात तो नही समझा, पर इतना समझ गया कि बूढा मालिक को कह रहा रूसियो को मार डालो, गाव मे मत रखो। फिर बूढा चला गया।

झीलिन मालिक मे पूछने लगा "कौन है यह बूढा?" मालिक ने बताया "यह बहुत बडा आदमी हे! बडा शूरवीर था यह, इसने बहुत सारे रूसियो को मारा है, खूब अमीर था। तीन बीविया थी इसकी ओर आठ बेटे। सब एक ही गाव मे रहते थे। रूसी आए, उन्होने गाव तबाह कर दिया, सात बेटो को मार डाला। एक बेटा बच गया, वह रूसियो से जा मिला। बूढे ने भी जाकर अपने आपको रूसियो के सुपुर्द कर दिया। तीन महीने उनके पास रहा, वहा अपने बेटे को ढूढ लिया, उसे मार डाला और भाग गया। तब से इसने लडना छोड दिया। मक्का गया, हज करने। इसीलिए वह पगडी पहनता है। जो मक्का हो आता है, उसे हाजी कहते है और वह पगडी पहनता है। उसे तुम रूसी अच्छे नही लगते। वह कहता है कि मैं तुझे मार डालू, पर मै मार नही सकता – मैंने तेरे बदले पैसे दिए है। और तू तो, इवान, मुझे अच्छा लगने लगा है। तुझे मारना तो क्या, मै तुझे छोड भी नही, पर मैंने वचन दिया है।" वह हसने लगा और रूसी मे बोला "तू, इवान अच्चा, हम अब्दुल अच्चा।"

(४)

इसी तरह एक महीना और बीत गया। झीलिन दिन मे गाव मे घूमता रहता या कुछ बनाता रहता। रात पडती, गाव मे सन्नाटा हो जाता, तो वह कोठरी मे जमीन खोदने लगता, पत्थरो के कारण खोदना मुश्किल था, पर वह रेती से पत्थर रगडता था और अब दीवार तले इतना बडा छेद कर लिया था कि उसमे से निकला जा सकता था। वह सोचता रहता "अब बस किसी तरह इस जगह का ठीक से पता चल जाए कि किधर जाना चाहिए, पर तातार कुछ बताते ही नही।"

आखिर, उसने ऐसा मौका देखा, जब मालिक कही गया हुआ था, दोपहर

मे गाव के बाहर पहाडी पर जाने लगा – वहा से सारी जगह देखना चाहता था। मालिक जब घर से जा रहा था, तो छोटे बेटे से कह गया था कि झीलिन पर नजर रखे। लडका झीलिन के पीछे दौडा, चिल्लाया

"नही जा उधर! अब्बा ने मना किया है। नही तो अभी मै लोगो को बुला लूगा।"

झीलिन उसे मनाने लगा, बोला

"मै दूर नही जाऊगा, बस उस पहाडी पर, मुझे एक बूटी ढूढनी है – तुम्हारे लोगो के इलाज के लिए। चल मेरे साथ, बेडी पहने हुए मै भाग थोडे ही जाऊगा। कल मैं तेरे लिए तीर-कमान बना दूगा।"

छोटा मान गया, और वे चल दिए। पहाडी देखने मे तो पास ही थी, पर बेडी पहनकर चलना बडा मुश्किल था। चलता गया, चलता गया और जैसे-तैसे चढ ही गया। झीलिन बैठ गया और जगह देखने लगा। दोपहर मे जहा सूरज होता है, उस ओर कोठरी के पीछे तग घाटी थी, उसमे घोडे चर रहे थे और नीचे एक दूसरा गाव दिख रहा था। उस गाव से एक ओर पहाडी चली गई थी, इस से भी बडी और उसके पीछे एक और पहाडी थी। पहाडियो के बीच नीला-नीला जगल दिख रहा था, आगे पहाड ऊपर ही ऊपर चले गए थे। सबसे ऊपर थे हिमाच्छादित पर्वत। टोपी सा एक हिम पर्वत सबसे ऊचा था। सूर्योदय और सूर्यास्त की ओर भी ऐसे ही पहाड थे, कही-कही दर्रो मे गावो का धुआ उठ रहा था। "अच्छा, तो यह सब तो इनका ही इलाका है," झीलिन ने सोचा और वह रूसी इलाके की ओर देखने लगा, नीचे नदी थी और गाव, जहा से वह आया था, चारो ओर बाग लगे हुए थे। नदी किनारे गुडियो सी लग रही औरते कपडे धो रही थी। गाव के पीछे, थोडी नीचे को एक पहाडी और उसके पीछे और दो पहाडिया, उन पर जगल था, दो पहाडियो के बीच धुधला सा सपाट मैदान नजर आ रहा था और उस मैदान मे बहुत दूर मानो धुआ फैल रहा था। झीलिन यह याद करने लगा कि जब वह किले मे रहता था, तो सूरज किधर से निकलता था और किधर डूबता था। उसने देखा – ठीक, उसी घाटी मे किला होना चाहिए, इन दोनो पहाडियो के बीच ही भागना चाहिए।

सूरज डूबने लगा। सफेद पहाड लाल हो गए, नीचे की पहाडियो मे अधेरा छा गया, तग घाटियो मे से कोहरा उठने लगा और वह बडी घाटी जिसमे किला होना चाहिए, सूर्यास्त की किरणो से आग की तरह चमक उठी। झीलिन गौर से देखने लगा—घाटी मे डोलायमान सा कुछ दिख रहा था, मानो चिमनी से उठता धुआ हो। उसका मन कहता था कि बस यही रूसी किला हो।

देर हो गई थी। मुल्ला की अजान सुनाई दी। मवेशी लौट रहे थे, गाये रभा रही थी। लडका कई बार घर चलने को कह चुका था, पर झीलिन का जाने को मन ही नहीं हो रहा था।

वे घर लौट आए। झीलिन सोच रहा था "अब जगह का पता चल गया, भागना चाहिए।" वह उसी रात भागना चाहता था। राते अधेरी थीं, कृष्ण पक्ष था। पर बदकिस्मती से शाम तक तातार लौट आए। कई बार ऐसा होता था कि वे लौटते तो अपने साथ मवेशी खदेडकर लाते, हसते-गाते आते। पर इस बार कुछ नही लाए, बस एक काठी पर मारे गए तातार को लाए। वह लाल दाढी वाले का भाई था। सब जले-भूने लौटे थे। दफनाने के लिए जमा हुए। झीलिन भी बाहर निकलकर देखने लगा। तातारो ने मुर्दे को कफन मे लपेट दिया। ताबूत के बिना ही, गाव के बाहर चिनार के पेडो तले ले जाकर घास पर लिटा दिया। मौलवी आया, बूढे जमा हुए, टोपियो पर दुपट्टे बाधे हुए, जूते उतारकर मुर्दे के सामने घुटनो के बल बैठ गए।

आगे मौलवी, पीछे तीन बूढे, पगडी बाधे—पास-पास ही, और उनके पीछे बाकी तातार। बैठकर सिर नीचे झुका लिए और काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे। मौलवी ने सिर उठाया और बोला

"अल्लाह।" यही एक शब्द कहा और फिर सिर झुका लिया, देर तक चुप बैठे रहे, ज़रा भी हिले-डुले नही। फिर मौलवी ने सिर उठाया

"अल्लाह!" सब बोले "अल्लाह!" और फिर चुप हो गए।

मुर्दा घास पर रखा हुआ था, और वे भी मुर्दो की तरह बैठे थे, कोई भी जरा सा हिलता-डुलता तक न था। बस चिनार की पत्तियो की खडखडाहट ही सुनाई दे रही थी। फिर मौलवी ने दुआ पढी, सब उठे, मुर्दे को उठाया

और ले चले। एक गड्ढे के पास लाए। गड्ढा मामूली नही था, जमीन के नीचे तहखाने की तरह बगली बनी हुई थी। तातारो ने मुर्दे को बगलो और जाघो से पकडकर उठाया, मोड दिया, हौले से नीचे किया, बैठे हुए को जमीन के नीचे घुसा दिया और उसके हाथ पेट पर टिका दिए।

नगाई हरे सरकडे लाया, गड्ढे मे उन्होने सरकडे रखे और ऊपर से जल्दी जल्दी मिट्टी डाल दी और बराबर कर दी। मुर्दे के सिर की ओर एक पत्थर खडा करके लगा दिया। जमीन को दबाया और फिर से कब्र के सामने बैठ गए। काफी देर तक चुप बैठे रहे।

"अल्लाह! अल्लाह!" गहरी सास ली और उठ गए। लाल दाढी वाले ने बूढो को पैसे दिए, फिर उठा, कोडा लिया, तीन बार अपने माथे पर मारा और घर चल दिया।

अगले दिन सुबह झीलिन ने देखा कि लाल दाढी वाला घोडी को गाव के बाहर ले जा रहा था और तीन तातार उसके पीछे-पीछे जा रहे थे। गाव के बाहर पहुचकर लाल तातार ने अगरखा उतारा, कमीज की बाहे ऊपर चढाई– मोटे-तगडे बाजू थे उसके, खजर निकाला, पत्थर पर धार तेज की। तातारो ने घोडी का सिर ऊपर उठाया, लाल दाढी वाले ने आकर घोडी की गर्दन काट दी, घोडी को गिरा दिया और उसे चीरने लगा–अपनी विशाल मुट्ठियो से खाल उतारता जाए। औरते-लडकिया आई, घोडी की अतडिया धोने लगी। फिर घोडी के टुकडे करके घर मे ले गए। और सारा गाव शोक मनाने लाल तातार के यहा जमा हुआ।

तीन दिन तक वे घोडी का गोश्त खाते रहे ओर बूजा पीते रहे। सारे तातार घर पर ही रहे।

चौथे दिन झीलिन ने दोपहर को देखा कि कही जाने की तैयारिया हो रही है। घोडे लाए गए, उन पर साज कसा गया और कोई दस लोग चल दिए। लाल दाढी वाला भी चला गया। पर अब्दुल घर पर ही रहा। चाद अभी चढती कला मे आया ही था रातें अधेरी ही थी।

"बस, आज भाग लेना चाहिए," झीलिन ने सोचा और कस्तीलिन से कहा। पर वह डरने लगा।

"भागेगे कैसे, हमे तो रास्ते का भी नही पता।"

"मैं जानता हू रास्ता।"

"रात भर मे तो पहुच भी नही पाएगे।"

"नही पहुचेगे, तो जगल मे रात काट लेगे। मैंने कुछ रोटिया जमा कर रखी है। आखिर कितने दिन यहा बैठे रहेगे? पैसे आ गए तो ठीक है, पर कोन जाने तुम्हारे घर वाले इतनी वडी रकम न भी जमा कर पाए। तातार आजकल गुस्से मे हैं कि रूसियो ने उनके आदमी को मार डाला है। सो हमे मारना चाहते है।"

कस्तीलिन सोचता रहा, सोचता रहा, फिर बोला

"अच्छा, चलो!"

(५)

झीलिन छेद मे घुस गया, उसे थोडा और खोदकर खुला किया, ताकि कस्तीलिन भी निकल सके, अब वे बैठे इतजार कर रहे थे कि कब गाव मे सब शात हो जाए।

जैसे ही गाव मे सोउता पडा, झीलिन दीवार के नीचे घुसा और बाहर निकल आया। कस्तीलिन भी घुसा, पर उसका पाव पत्थर से अटक गया, शोर हुआ। मालिक ने रखवाली के लिए एक कुत्ता पाला हुआ था, बडा ही कटखना, उसका नाम था उल्याशिन। झीलिन ने उसे पहले से ही परचाया हुआ था। उल्याशिन ने शोर सुना, भौकने लगा और लपका, उसके पीछे दूसरे कुत्ते भी। झीलिन ने हौले से सीटी बजाई और रोटी का टुकडा फेका। उल्याशिन उसे पहचान गया, दुम हिलाने लगा, भौकना बद कर दिया।

मालिक ने आवाज सुनी और अदर से कुत्ते को शुशकारा "लोह! लोह! उल्याशिन!"

झीलिन कुत्ते के कानो के पीछे खुजला रहा था। कुत्ता चुप था, उसके पैरो से थूथनी रगड रहा था, दुम हिला रहा था।

कोने के पीछे दुबककर वे कुछ देर बैठे रहे। चारो ओर सन्नाटा छा गया,

बस एक कोठरी मे भेड मिमिया रही थी और नीचे पत्थरो पर बहते पानी का शोर हो रहा था। अधेरा था, तारे छिटक गए थे, पहाडी के ऊपर हसिये जैसा चाद उठ रहा था। तग घाटियो मे दूध सा सफेद कोहरा फैला हुआ था।

झीलिन उठा, कस्तीलिन से बोला "चलो, चले।"

चल दिए, दो कदम ही हटे थे कि सुना मुल्ला अजान दे रहा है "अल्लाह, हो अकबर।" तो अब लोग मस्जिद जाएगे। वे फिर दीवार के पास दुबककर बैठ गए। बडी देर तक बैठे रहे, जब तक कि सब लोग नही गुजर गए। फिर से खामोशी हो गई।

"चलो, चले भगवान का नाम लेकर।" उन्होने छाती पर सलीब का निशान बनाया और चल दिए। आगन पार करके ढलान पर नदी तक उतर गए। नदी पार की और तग घाटी मे चलने लगे। कोहरा घना था और नीचे नीचे था। ऊपर तारे बिल्कुल साफ-साफ नजर आ रहे थे। झीलिन तारे देख-देखकर अनुमान लगा रहा था कि किधर जाना चाहिए। कोहरे से हवा मे ताजगी थी, चलना आसान था, पर बूट तग कर रहे थे, एक ओर से ज्यादा घिसे हुए थे। झीलिन ने अपने बूट उतारकर फेक दिए और नगे पैर चलने लगा। एक पत्थर से दूसरे पर उछलता जाए और तारे देखता जाए। कस्तीलिन पीछे रहने लगा, बोला

"जरा धीरे चलो न, कमबख्त बूट सारे पाव मे लग रहे है।"

"तो उतार दो न, ज्यादा अच्छा रहेगा।"

कस्तीलिन नगे पाव चला तो और भी ज्यादा तकलीफ हुई ककडो से सारे पाव छलनी हो गए और वह पीछे ही पीछे रहता जाए। झीलिन ने उससे कहा

"पाव छिल जाएगे, तो ठीक भी हो जाएगे, पर पकडे गए, ता तातार मार डालेगे।"

कस्तीलिन कुछ नही बोला, बस हाफता, काखता चलता गया। काफी देर तक वे निचाई मे चलते रहे। अचानक दाई ओर से कुत्तो के भौकने की आवाज आई। झीलिन रुक गया, इधर-उधर गौर से देखा, पहाडी पर चढने लगा, हाथो से टटोलकर देखा, बोला

"ओफ, गलती हो गई। ज्यादा दाए को आ गए। यहा दूसरा गाव है, मैंने पहाडी से देखा था। हमे पीछे जाना चाहिए, बाए की पहाडी के ऊपर। वहा जगल होना चाहिए।"

कस्तीलिन बोला

"थोडी देर तो ठहर जाओ, जरा आराम करने दो, मेरे पाव सारे खूनोखून हो गए।"

"ओहो, कोई बात नही, ठीक हो जाएगे। तुम हौले से कूदो न। ऐसे!"

और झीलिन पीछे, बाई ओर को दौडने लगा, ऊपर पहाडी पर, जगल मे चला। कस्तीलिन आहे भरता जाए और पीछे छूटता जाए। झीलिन उसे झिडकता और खुद चलता जाता।

आखिर वे पहाडी पर चढ गए। वहा सचमुच ही जगल था। जगल मे घुसे, तो काटो से सारे कपडे फट गए। जगल मे उन्हे रास्ता मिला। वे उस ओर चल दिए।

"ठहरो!" रास्ते पर टाप सुनाई दी। वे रुक गए, कान लगाकर सुनने लगे। घोडे की सी टाप सुनाई दी और रुक गई। वे चल दिए, तो फिर टाप सुनाई दी। वे रुक जाए—तो वह भी रुक जाए। झीलिन रेग-रेगकर पास गया, रोशनी मे देखा—सडक पर कोई खडा था पता नही घोडा था या क्या, और उसके ऊपर कुछ अजीब सा, आदमी की शक्ल का नही। झीलिन ने सुना—उसने फुफकार भरी। "क्या अजूबा है!" झीलिन ने धीरे से सीटी बजाई—वह बिजली की तरह जगल की ओर लपका और जगल मे तडतड होने लगी, मानो आधी आई हो, सूखी टहनिया तोड रही हो।

कस्तीलिन तो डर के मारे थरथराने लगा। झीलिन हसता जाए, बोला

"अरे, यह तो बारहसिगा था। सुन रहे हो कैसे सीगो से टहनिया तोडता जा रहा है। हम उससे डर रहे थे और वह हमसे।"

आगे चल दिए। उजाला होने मे ज्यादा देर न थी। पर उन्हे यह पता न था कि वे ठीक दिशा मे जा रहे हैं या नही। झीलिन को लग रहा था कि इसी रास्ते उसे यहा लाया गया था, और किला यहा से कोई सात मील दूर होगा, पर कोई पक्की निशानी न थी और रात को पता भी तो नही चल सकता। ऐसे

ही चलते-चलते वह एक छोटे से मैदान तक पहुचे। कस्तीलिन वैठ गया और वोला

"तुम जो चाहो करो, पर मैं तो नही पहुच पाऊगा टागे नही चलती।"

झीलिन उसे मनाने लगा।

"नही, नही पहुच पाऊगा, नही चला जाता," वह बोला।

झीलिन को गुस्सा आ गया, उसने थू किया और कस्तीलिन को फटकारा।

"ठीक है, मैं अकेला चला जाऊगा, वैठे रहो यही।"

कस्तीलिन उठा और चल दिया। कोई तीन मील तक वे चलते गए। जगल मे कोहरा और भी ज्यादा घना था, सामने कुछ दिखाई नही देता था, तारे भी जरा-जरा ही दिख रहे थे।

सहसा उन्हे आगे से घोडे की टाप सुनाई दी। नाल के पत्थरो से टकराने की आवाज आ रही थी। झीलिन पेट के बल लेट गया और जमीन को कान लगाकर सुनने लगा।

"हा, इधर ही कोई घुडसवार आ रहा है।"

वे रास्ते से उतरकर झाडियो मे छिप गए और इतजार करने लगे। झीलिन रेग-कर रास्ते के पास गया, देखा—घुडसवार तातार आ रहा है, गाय ला रहा है, गुन-गुनाता जा रहा है। तातार गुजर गया। झीलिन कस्तीलिन के पास लौट आया।

"बचा लिया भगवान ने, उठो चले।"

कस्तीलिन उठने को हुआ, पर गिर गया।

"नही चल सकता, हे भगवान, नही चल सकता मैं, हिम्मत नही रही।"

वह भारी-भरकम आदमी था, पसीना आ गया था उसे और यहा जगल मे ठडा कोहरा था, पाव भी फट गए थे—इसीलिए वह निढाल हो गया था। झीलिन जोर लगाकर उसे उठाने लगा तो वह चिल्ला पडा

"हाय दर्द होता है!"

झीलिन की बस जान सूख गई।

"चिल्लाते क्यो हो? तातार पास ही है, सुन लेगा तो?" मन ही मन सोचने लगा "यह सचमुच ही टूट गया है, क्या करू मै इसका? साथी को छोडकर जाना तो ठीक नही।" फिर बोला

"अच्छा, उठो, मेरी पीठ पर बैठ जाओ, चल नही सकते, तो मैं उठा ले चलूगा।"

उसने कस्तीलिन को पीठ पर बिठाया, जाघो तले से उसे पकड लिया और रास्ते पर आकर आगे चलने लगा।

"अरे, भगवान के वास्ते मेरा गला तो मत दबाओ, कधो से पकडे रखो।"

झीलिन को बडी मुश्किल हो रही थी – उसके पाव भी खूनोखून थे और वह थक भी गया था। वह नीचे झुकता, कस्तीलिन को उछालता, ताकि वह पीठ पर ऊपर को बैठा रहे और आगे पाव घसीटने लगता।

तातार ने कस्तीलिन के चिल्लाने की आवाज सुन ली लगती थी। झीलिन ने सुना पीछे से कोई घोडे पर आ रहा है, अपनी बोली मे कुछ चिल्ला रहा है। झीलिन झाडियो की ओर लपका। तातार ने बदूक निकाली, गोली चलाई – निशाना ठीक नही बैठा, अपनी बोली मे चीखकर उसने कुछ कहा और घोडा वापस दौडा ले गया।

झीलिन बोला "बस भई, अब गए हम! वह कमबख्त तातारो को जमा कर लाएगा हमारा पीछा करने को। अगर हम दो मील दूर न भाग निकले, तो बस गए।" मन ही मन वह कस्तीलिन के बारे मे सोच रहा था "क्यो मैं यह बोझ अपने साथ ले आया। अकेला कब का निकल गया होता।"

कस्तीलिन बोला

"जाओ, तुम अकेले चले जाओ। मेरे लिए क्यो मरते हो।"

"नही, अकेला नही जाऊगा। साथी को छोडना ठीक नही।"

फिर से उसने कस्तीलिन को पीठ पर लादा और चल दिया। इस तरह वह कोई पौन मील चला होगा। जगल-जगल ही जा रहा था, जगल का अत न दिखता था। कोहरा छटने लगा और मानो बादल छाने लगे – तारे दिखाई नही दे रहे थे। झीलिन का बुरा हाल हो रहा था।

आखिर एक जगह पहुचे सडक किनारे चश्मा था। वह रुक गया, कस्तीलिन को उतार दिया, बोला

"थोडा आराम कर लू, पानी पी लू। आओ रोटी खा ले। अब तो थोडी ही दूर होना चाहिए।"

वह पानी पीने को झुका ही था, कि पीछे से टापे सुनाई दी। वे फिर दाई ओर लपके ढलान पर झाडियो मे दुबक गए।

ऊपर से तातारो की आवाजे आने लगी। तातार उसी जगह रुके थे, जहा से वे रास्ते से दाई ओर मुडे थे। तातारो ने कुछ बाते की, फिर शुशकारने लगे। झाडियो में कुछ चटखा और एक अनजान कुत्ता सीधा उनकी ओर बढ आया। रुक गया और भौकने लगा।

तातार भी बढ आए। उन्हे भी झीलिन नही जानता था। उन्होने इन दोनों को पकडकर बाध दिया, घोडो पर बिठाया और ले चले।

कोई दो मील गए थे कि मालिक अब्दुल और दो तातार मिले। उन्होने तातारो से कुछ बात की, इन दोनो को अपने घोडो पर बिठाया और वापस गाव ले चले।

अब्दुल अब हस नही रहा था और न इनसे कोई बात ही उसने की।

सुबह-तडके उन्हे गाव ले आए। गली मे बिठा दिया। लडके जमा हो गए। पत्थरो, कोडो से उन्हे मारने और चीखने लगे।

तातार एक घेरे मे जमा हुए। पहाडी के नीचे से वह बूढा भी आया। बाते करने लगे। झीलिन ने सुना कि उनकी ही बाते हो रही है, कि क्या किया जाए उनका। कोई कह रहा था कि और दूर पहाडो मे भेज देना चाहिए। पर बूढा कह रहा था "मार डालो।" अब्दुल नही मान रहा था, कहता था "मैने इनके लिए पैसे दिए है। मैं पैसे वसूल करके रहूगा।" पर बूढा कहता था "कुछ नही देने-वेने के, बस कोई आफत ही खडी करेगे। रूसियो को रोटी देना ही पाप है। मार डालो और बस बात खत्म।"

सब चले गए, तो मालिक झीलिन के पास आया, कहने लगा

"अगर मुझे तुम्हारे बदले पैसे न मिले, तो मै दो हफ्ते बाद कोडे मार-मारकर दम निकाल दूगा और अगर तूने फिर से भागने की सोची, तो कुत्ते की मौत मरेगा। चिट्ठी लिख, अच्छी तरह लिख!"

नौकर ने उन्हे कागज लाकर दिया, उन्होने चिट्ठिया लिख दी। उन्हे बेडिया पहनाकर तातार मस्जिद के पार ले गए। वहा एक गड्ढा था कोई बारह फुट गहरा। उन्हे वहा गड्ढे मे उतार दिया गया।

(६)

अव उनका जीना विल्कुल दूभर हो गया। बेडिया उतारी नही जाती थी और बाहर भी नही निकाला जाता था। गड्ढे मे ही उन्हे कच्ची रोटिया फेक दी जाती थी, कुत्तो की तरह और रस्सी से सुराही मे पानी उतार देते थे। गड्ढे मे बदबू, उमस और सीलन थी। कस्तीलिन तो बिल्कुल ही बीमार पड गया, फूल गया, सारे शरीर मे टूटन होने लगी। वह कराहता रहता या सोता रहता। झीलिन भी गुमसुम हो गया देख रहा था कि मामला बिल्कुल बिगड गया। कुछ समझ नही पा रहा था कि कैसे यहा से निकला जाए।

वह जमीन खोदने लगा, पर मिट्टी फेकने की कोई जगह न थी, मालिक ने देख लिया और मार डालने की धमकी दी।

एक दिन वह गड्ढे मे उकड बैठा था, आजाद जिदगी के बारे मे सोचकर उदास हो रहा था। अचानक सीधे उसके घुटनो पर एक रोटी आ गिरी, फिर दूसरी, और चैरिया भी गिरी। ऊपर देखा, तो वहा दीना बैठी थी। दीना उसकी ओर देखकर हसी और भाग गई। झीलिन सोचने लगा "शायद दीना कुछ मदद कर दे।"

पर अगले दिन दीना नही आई। झीलिन को घोडो की टाप सुनाई दी। कुछ लोग गुजरे और फिर तातार मस्जिद के पास जमा हो गए। वे चिल्ला रहे थे, बहस कर रहे थे, रूसियो का जिक्र कर रहे थे। बूढे की आवाज भी झीलिन को सुनाई दी। ठीक-ठीक तो उसकी समझ मे नही आया, हा, इतना पता चला कि शायद रूसी कही पास ही आ गए है ओर तातारो को डर है कि कही गाव मे न आ जाए, और वे यह तय नही कर पा रहे कि वदियो का क्या करे।

वाते करके सब चले गए। सहसा झीलिन ने सुना—ऊपर कुछ सरसराहट हुई। देखा दीना बैठी थी, घुटने सिर से ऊपर दिख रहे थे, नीचे झुक गई, हवेल के सिक्के लटक रहे थे, गड्ढे के ऊपर हिल रहे थे, आखे तारो सी चमक रही थी। बाजू मे से पनीर की दो रोटिया निकाली और फेक दी। झीलिन ने ले ली और बोला

"आई क्यो नही थी इतनी देर तक? मैंने तेरे लिए खिलौने वनाए हैं। यह ले!" और वह एक-एक करके ऊपर फेकने लगा।

वह सिर हिला रही थी और उधर देख नही रही थी।

"रहने दो!" बोली। चुप बैठी रही, फिर बोली

"इवान, तुझे मारना चाहते है।" और अपनी गर्दन पर हाथ फेरा।

"कौन मारना चाहता है?"

"अब्बा। बूढो ने उसे कहा है। मुझे तुम पर तरस आता है।"

तब झीलिन ने कहा

"अगर तुझे तरस आता है, तो तू मुझे बल्ली ला दे।"

उसने सिर हिला दिया कि नही हो सकता। उसने हाथ जोडे।

"दीना, बच्ची, ला दे न!"

"नही ला सकती," वह बोली, "देख लेगे, सब घर पर है।" और चली गई।

शाम हो गई। झीलिन बैठा सोच रहा था "अब क्या होगा?" रह-रहकर वह ऊपर देखता। तारे दिख रहे थे, पर चाद अभी नही निकला था। मुल्ला ने अजान दी। चारो ओर सन्नाटा था। झीलिन को झपकी आने लगी। सोच रहा था "डर रही होगी वह।"

अचानक उसके सिर पर मिट्टी गिरी ऊपर देखा – बल्ली गड्ढे के दूसरे सिरे पर अटक रही थी। फिर नीचे आने लगी। झीलिन खुश हो गया, हाथ बढाकर बल्ली पकड ली, नीचे उतार ली। बल्ली मजबूत और लबी थी। उसने मालिक की छत पर पहले भी वह बल्ली रखी देखी थी।

ऊपर देखा तारे छिटक गए थे, और गड्ढे के ऐन ऊपर अधेरे मे दीना की आखे बिल्ली की आखो सी चमक रही थी। वह गड्ढे के सिरे पर झुक गई और फुसफुसाई

"इवान, इवान!" खुद मुह के पास हाथ हिलाती जाए कि "धीरे बोल।"

"क्या?" झीलिन बोला।

"सब चले गए, बस दो जने घर पर है।"

झीलिन बोला

"चल कस्तीलिन चले, आखिरी बार कोशिश करते है, मैं तुझे पीठ पर बिठा लूगा।"

कस्तीलिन कुछ सुनना ही न चाहता था।

"नही, मेरी किस्मत मे यहा से निकलना नही लिखा। कहा जाऊगा मै, करवट तक तो ली नही जाती ?"

"अच्छा, तो भूल-चूक माफ करना।" दोनो ने एक दूसरे को चूमा। झीलिन ने बल्ली पकड ली, दीना से कहा कि सभाले रखे और ऊपर चढने लगा। दो बार उसका हाथ छूटा, बेडी तग कर रही थी। कस्तीलिन ने उसे सहारा दिया, जैसे-तैसे वह ऊपर चढ गया। दीना अपने दुबले हाथो से उसे कमीज पकडकर खीच रही थी, हस रही थी।

झीलिन ने बल्ली निकाली और बोला

"जा, इसे वापस रख आ, किसी ने देख लिया बल्ली नही है, तो तुझे मार डालेगे।"

वह बल्ली ले चली। झीलिन पहाडी उतरने लगा। ढलान से उतरकर नुकीला पत्थर उठाया और बेडी का ताला निकालने की कोशिश करने लगा। ताला मजबूत था, टूटता ही न था और हाथ भी तो ठीक नही बैठता था। पहाडी से किसी के दौडने, हौले से कूदते आने की आवाज आई। उसने सोचा "दीना ही होगी।" दीना आई, पत्थर उठाया और बोली

"लाओ, मैं करती हू।"

घुटनो के बल बैठकर ताला तोडने लगी। पर हाथ तो दुबले-पतले थे, जरा भी ताकत नही। उसने पत्थर फेक दिया और रो पडी। झीलिन फिर से ताला तोडने की कोशिश करने लगा, दीना उसके पास पजो के बल बैठ गई, उसका कधा पकड लिया। झीलिन ने मुडकर देखा, बाई ओर पहाडी के पीछे लाली छा गई थी, चाद उग रहा था। उसने सोचा "चाद निकलने से पहले वह तग घाटी पार कर लेनी चाहिए, जगल तक पहुच जाना चाहिए।" उठा, पत्थर फेक दिया, बेडी पहने हुए ही सही पर चलना चाहिए।

"अच्छा, दीना," झीलिन बोला। "सारी उम्र तुझे याद रखूगा।" दीना ने उसे पकड लिया, हाथो से टटोलने लगी, ढूढ रही थी कि कहा रोटिया रखे। उसने रोटिया ले ली, बोला

"जीती रह, बच्ची। कौन तुझे अब गुडिया बना के देगा।" और उसका सिर सहलाया।

दीना के आसू फूट पडे, उसने मुह हाथो से ढाप लिया और पहाडी पर दौड गई, बकरी की तरह फुदकती जा रही थी। अधेरे मे से उसकी चोटी मे उलझ रहे सिक्को की खनक ही आ रही थी।

झीलिन ने सलीब का निशान बनाया, हाथ से बेडी का ताला पकडा, ताकि वह खडखडाए न और रास्ते पर चल दिया। बडी मुश्किल से पैर घसीटते हुए झीलिन उधर आसमान की ओर देखता जा रहा था, जिधर चाद निकल रहा था। उसने रास्ता पहचान लिया। अगर सीधे चला जाए तो कोई पाच मील का फासला है। अब चाद निकलने से पहले जगल पहुच जाना चाहिए। उसने नदी पार की, पहाडी के पीछे रोशनी सफेद हो गई, आसमान पर उजाला हो गया और तग घाटी के एक ओर उजाला बढता ही जा रहा था। छाया पहाडी तले रेग रही थी, झीलिन के पास आती जा रही थी।

झीलिन पहाडी की छाया-छाया मे चलता जा रहा था। वह जल्दी कर रहा था, पर चाद और भी तेजी से चढ रहा था, दाई ओर के पेडो के शिखरो पर भी चादनी पडने लगी। जगल पास ही आ चला था, चाद भी पहाडी के पीछे से निकल आया चारो ओर दिन सा उजाला हो गया। पेडो पर एक-एक पत्ती देखी जा सकती थी। पहाडियो पर चादनी फैली हुई थी, सन्नाटा था मानो कही कोई जान न हो। बस नीचे से नदी की कलकल सुनाई दे रही थी।

झीलिन जगल तक पहुच गया, किसी से सामना नही हुआ। उसने जगल मे अधेरी जगह ढूढी और आराम करने बैठ गया।

आराम किया, रोटी खाई। एक पत्थर ढूढकर, फिर से बेडी तोडने लगा। हाथ छिल गए, पर बेडी न टूटी। उठा और रास्ते पर चल दिया। कोई तीन फर्लांग चला होगा, निढाल हो गया–टागे बुरी तरह दुख रही थी। दस कदम भरना और रुक जाता। सोचता जाता "कोई बात नही, जब तक दम है चलता जाऊगा। अगर बैठ गया, तो फिर उठ नही पाऊगा। किले तक तो मैं पहुच नही पाऊगा, पौ फटते ही जगल मे कही छिपकर लेट जाऊगा, दिन काट लूगा और रात को फिर चल दूगा।"

सारी रात चलता गया। बस दो घुडसवार तातार रास्ते मे आए, पर झीलिन ने दूर से ही उनकी आहट पा ली और पेड पीछे दुबक गया।

चाद फीका पडने लगा, ओस गिरी, भोर हो रही थी, पर झीलिन अभी जगल के सिरे तक न पहुचा था। मन ही मन कहने लगा "बस तीस कदम और चल लू, फिर जगल मे मुड जाऊगा और बैठ जाऊगा।" तीस कदम चला और देखा कि जगल खत्म हो रहा है। जगल के सिरे पर पहुचा, बिल्कुल उजाला था, उसके सामने स्तेपी थी और किला मानो हथेली पर रखे हो। बाई ओर पास ही पहाडी के नीचे, आग जल-बुझ रही थी, धुआ फैल रहा था और अलावो के पास लोग बैठे हुए थे।

झीलिन ने गौर से देखा बदूके चमक रही थी – रूसी सिपाही थे।

झीलिन खुश हो गया, आखिरी जोर लगाकर उधर चल दिया। मन ही मन सोचता जाए "भगवान न करे यहा खुले मैदान मे कोई घुडसवार तातार देख ले, अपनो के पास ही हू, पर बचकर न निकल पाऊगा।"

सोचने की देर थी कि देखा बाई ओर टीले पर तीन तातार खडे थे, कोई आठ बीघा दूर। उन्होने झीलिन को देख लिया और घोडे दौडाए। झीलिन का कलेजा सुन्न हो गया। हाथ हिलाने लगा, पूरे जोर से चिल्लाया

"बचाओ, भाइयो, बचाओ!"

रूसियो ने सुन लिया। घुडसवार उछले और उसकी ओर घोडे दौडा दिए – तातारो का रास्ता काटते हुए।

रूसी दूर थे, तातार पास। पर झीलिन ने भी सारा दम लगाया, बेडी को हाथ से सभाला और अपने लोगो की ओर बेतहाशा दौडा, सलीब का निशान बनाता जाए, चिल्लाता जाए

"भाइयो! भाइयो! भाइयो!"

रूसी घुडसवार कोई पद्रह थे।

तातार डर गए – आधे रास्ते मे ही रुकने लगे। और झीलिन अपने लोगो के पास पहुच गया।

उन्होने उसे घेर लिया, पूछने लगे "कौन है? कहा से आया?" पर झीलिन को अपनी होश न थी, वह रोता जाए और बस कहता जाए

पाठको से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे मे आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमे बडी प्रसन्नता होगी। कृपया हमे इस पते पर लिखिये

रादुगा प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुल्वार,
मास्को, सोवियत सघ।

प्रकाशित हो चुकी है

गैदार अर्कादी चूक और गेक। कहानी

अर्कादी गैदार (१६०४–१६४१) की यह कहानी सोवियत बाल साहित्य की एक सर्वोत्कृष्ट रचना है। विश्व की ६० भाषाओ मे इसका अनुवाद हो चुका है और इसपर फिल्म भी बनायी जा चुकी है। कहानी चूक और गेक नामक दो नन्हे भाइयो की है, जो मास्को से अपनी मा के साथ सुदूर ताइगा जा रहे है जहा उनका पिता एक भूवैज्ञानिक खोज दल म काम कर रहा है। गैदार बडी विनोदपूर्ण शैली मे बच्चो की यात्रा, उनकी शरारतो साहसिक कार्यो पिता के साथ मुलाकात, आदि के बारे मे बताते है। पुस्तक की चित्रसज्जा सुप्रसिद्ध सोवियत ग्राफिककार राज्य पुरस्कार विजेता अकादमीशियन द० दुबीन्स्की ने की है।

प्रकाशित हो चुकी है

व० गलीश्किन।
समुदर की गोद मे।

पायोनियर शिविर आर्तेक की कहानिया। अनुवादक मानवेन्द्र गुप्ता।

स्कूल की छोटी कक्षाओ के बच्चे ही आधुनिक सोवियत लेखक वसीली गलीश्किन के नायक है। लखक न काले सागर के सुदर तट पर स्थित आर्तेक नामक पायानियर शिविर मे बच्चो के जीवन का वर्णन किया है।

आर्तेक मे बच्चो के बहुभाषी परिवार का चचल जीवन मजेदार खेल-कूद और उत्सवो इत्यादि से भरा हुआ है। यहा पर सोवियत बच्चे और देश विदेश स आये हुए बालक मैत्री-सूत्रो मे बधते रहते है।

यह पुस्तक सन् १९८७ म रादुगा प्रकाशन से प्रकाशित हो रही है।